भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ५०

आचार्यनागार्जुनविरचितः

चतुःस्तवः

(संस्कृत पाठ, भोटीय संस्करण एवं हिन्दी अनुवाद)

༄༅། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་
བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་
བཞུགས་སོ།།



अनुवादक एवं सम्पादक
ज्ञलछेन नमडोल (आचार्य)

पर्यवेक्षक
प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द : २५४५

ख्रीस्ताब्द : २००१

TIP-36/89/6050

घोषणा-पत्र

ग्रन्थ का नाम- आचार्य नागार्जुन प्रणीत चतुःस्तवः ।

ग्रन्थ का विषय- इन चारों स्तोत्रों का प्रमुख विषय प्रतीत्यसमुत्पाद और शून्यता जैसे गम्भीर विषयों का स्तोत्र के माध्यम से निरुपण है। प्रतीत्यसमुत्पाद और शून्यता की देशना करने वाले भगवान् बुद्ध की इन स्तोत्रों द्वारा आचार्य नागार्जुन ने स्तुति की है।

बौद्ध जगत् में आचार्य नागार्जुन की सर्वाधिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान है। बुद्धशासन की चिरस्थिति के लिए उन्होंने न केवल सूत्र, तन्त्र एवं शास्त्रीय विषयों पर महनीय रचनाएं की हैं, अपितु तान्त्रिक साधना विधि के द्वारा अद्भुत एवं असाधारण सिद्धियाँ भी प्राप्त की हैं। अतः उनकी द्वितीय शास्ता के रूप में ख्याति है।

आचार्य नागार्जुन के नाम से १४० से अधिक ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। उन्हें हम सूत्र और तन्त्र इन दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। सूत्र में भी षड्युक्तिगण, स्तोत्रगण, परिकथागण आदि अनेक वर्ग संनिविष्ट हैं, उनमें प्रस्तुत ग्रन्थ **'चतुःस्तवः'** स्तोत्रगण के अन्तर्गत परिगणित है। आचार्य ने लगभग १९ स्तोत्रों की रचना की है, उनमें से **लोकातीतस्तव, निरौपम्यस्तव, अचिन्त्यस्तव तथा परमार्थस्तव-** इन चार स्तोत्रों का संग्रह **'चतुःस्तवः'** नाम से प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में स्तोत्रों के मूल संस्कृत पाठ का चार विभिन्न पाण्डुलिपियों से तथा तिब्बती में अनूदित पाठ से मिलान करके यथासम्भव शुद्ध संस्करण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साथ ही, प्रामाणिक तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है। अपि च, जिज्ञासुओं की सुविधा के लिए हिन्दी-अनुवाद के साथ ग्रन्थ का सम्पादन किया है।

विस्तृत भूमिका में ग्रन्थगत स्तोत्रों के साथ स्तोत्रविषयक प्रचुर सामग्री भोटभाषा एवं हिन्दी भाषा में दी गई है। ग्रन्थ-सारांश में महत्त्वपूर्ण तथ्य एवं उनकी पृष्ठभूमि पर पर्याप्त विचार-विमर्श प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में बुद्धवचन एवं उनकी टीकाग्रन्थों में उपलब्ध तथा अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों में उपलब्ध लगभग ९०० से अधिक बौद्ध स्तोत्रों की विशाल सूची संस्कृत और भोटभाषा में दी गई है। इस तरह सौभाग्य से यह ग्रन्थ स्तोत्रविषयक जानकारी के लिए अद्वितीय एवं महत्त्वपूर्ण बन गया है।

लेखक का नाम और पता :

ज्ञलछेन नमडोल, आचार्य
३/१६, स्टाफ कालोनी, तिब्बती संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७, उ.प्र.

संस्थान का नाम (जिसमें लेखक कार्यरत है) :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय *****)

लेखक का प्रमाण-पत्र :

(क) मैं प्रमाणित करता हूँ कि मेरी उपर्युक्त रचना मौलिक/अनूदित/नवीन व्याख्या/प्रमाणिक अनुवाद के साथ प्रथम बार वर्ष २००१ में प्रकाशित हुई है।

(ख) यह रचना शोध ग्रन्थ है/नहीं है।

(ग) मैं जन्म से उत्तर प्रदेश का निवासी हूँ/गत दस वर्षों से उत्तर प्रदेश में रह रहा हूँ।

चतुःस्तवः

བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི།

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - L

CATUḤSTAVAḤ
of
Ācārya Nāgārjuna

(Sanskrit text with Tibetan version and Hindi translation)



Translated and critically edited by
Gyaltsen Namdol, Ācārya

Supervisor
Prof. Ram Shankar Tripathi

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2545 C.E. 2001

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - L

Chief Editor: *Prof. Geshe Ngawang Samten*
Publication Incharge: *Samten Chhosphel*

First Edition: 550 copies, 2001

Price: Hardback: Rs. 190.00
Paperback: Rs. 130.00

Publisher:
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

Printed at Surabhi Printers, Maldiya, Varanasi

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ५०

आचार्यनागार्जुनविरचित:

चतु:स्तव:

(संस्कृत पाठ, भोटीय संस्करण एवं हिन्दी अनुवाद)

༄༅། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་
བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་
བཞུགས་སོ།།



अनुवादक एवं सम्पादक

ज्ञलछेन नमडोल (आचार्य)

पर्यवेक्षक

प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द : २५४५ खीस्ताब्द : २००१

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - ५०

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे नवङ समतेन

प्रकाशन प्रभारी : श्री समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २००१

मूल्य : सजिल्द : १९०·००
अजिल्द : १३०·००

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक : सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी ।

དཔར་སྐྲུན་པའི་ཆེད་བརྗོད།

༄༅། །སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་དང་དགྲ་བཅོམ་པ་སོགས་མངོན་པར་བསྟོད་ཡུལ་དུ་གྱུར་པའི་སྐྱེས་མཆོག་རྣམས་ཀྱི་བླ་ན་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་རྣམས་ལ་ཤེས་ནས་དད་པ་ཐོབ་པའི་རྐྱེན་བྱས་ནས་ཞིང་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་དག་ལ་བློ་ཐག་ཉེ་བའི་མོས་གུས་དང་། རེ་ལྟོས་བཅའ་བའི་བསམ་པས་ཀུན་ནས་བླངས་ཏེ། དད་གུས་ཆེན་པོས་བསྔགས་པ་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་ནི་བསྟོད་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་ཡང་དད་པ་གཙོ་བོར་བྱས་པའི་བསྟོད་ཚུལ་དང་། རིགས་པ་ཡང་དག་གི་ལམ་ནས་ཚད་མས་ངེས་པ་དྲངས་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་བསྟོད་ཚུལ་གཉིས་ལས། ནང་པ་སངས་རྒྱས་པའི་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་རྣམས་སུ་གསལ་བའི་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་རྣམ་གྲངས་མང་བའི་བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་བསྟོད་ཚུལ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མའི་དབང་དུ་བྱས་པ་གཙོ་ཆེ་བ་ཡོད། སྐབས་འབྲེལ་སློབ་དཔོན་གྱི་གཞུང་འདི་དག་ཀྱང་སྤྱི་ཚན་དེར་གཏོགས་པ་ཤ་སྟག་ཡིན། དེ་དག་གི་བསྟོད་ཚུལ་ལ་ཡང་ཚིག་སྦྱོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་རྒྱན་གྱི་ཉམས་དང་སྦྱོར་བ་རྨད་དུ་བྱུང་བས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་ཅིང་སྤྱད་མ་སྤྱད་ཅི་རིགས་ཀྱི་ཐོག་བཅད་ལྷུག་སྤེལ་མ་གང་རུང་གི་ཚུལ་དུ་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་པ་མང་པོས་བསྟོད་པའི་རྣམ་གྲངས་རྒྱ་ཆེ་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། ཕྱིར་བསྟོད་ཡུལ་གྱི་ཞིང་དང་བསྟོད་པ་མཛད་པ་པོ་གཉིས་ཀའི་ཆ་ནས་བཏག་ན་མཐོ་ས་སངས་རྒྱས་ནས་དམའ་ས་སོ་སྐྱེ་ཐ་མལ་པའི་བར་གྱི་གང་ཟག་དག་ཀྱང་འདུས་ཡོད།

སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་གཞུང་"བསྟོད་པ་བཞི་པ"ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་དེ་རང་རེ་གངས་ཅན་པའི་མཁས་པ་རྣམས་ལ་གྲགས་ཆེ་བ་ཞིག་ཡིན་

པར་མི་མངོན་ལ། ཐ་སྙད་དེ་ཇི་ལྟར་བྱུང་ཚུལ་གྱི་ཐད་ལ་སྤྱིར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པའི་གཞུང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་སོགས་གཞུང་བཞི་པོ་ཁོ་ན་ཟུར་འདོན་གྱིས་དེ་དག་ལ་ཐ་སྙད་དེ་ལྟར་བཏགས་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་དང་རྒྱབ་ལྗོངས་ཀྱི་བྱུང་རིམ་ལོ་རྒྱུས་སོགས་ལ་ངེས་གཏན་ཆེ་བ་མངོན་དཀའ་ན་ཡང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་བཞི་ལྷན་ཅིག་ཏུ་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཀྱི་ཐོག་ཉམ་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་ནི་གལ་འགངས་ཆེ་བའི་གནས་སུ་མངོན་ཏེ། ཇི་ལྟར་དེང་གི་དུས་སུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་དང་བཅས་པའི་ཕྱུག་དཔེ་རྣམས་ཐོག་མའི་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་ཆ་ལག་ཚང་ཞིང་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་པ་ཆེས་དཀོན་ཞིང་མཁོ་གལ་ཆེ་བ་ལྟར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་དག་ཀུང་དེ་བཞིན་ཡིན་ལ། བསྟོད་པའི་གཞུང་བཞི་པོ་འདི་དག་ཏུ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཟབ་མོ་སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་གི་ལྟ་བ་ཇི་ལྟར་བསྟན་པའི་ཚུལ་ལ་ཐུགས་རབ་ཏུ་འཕྲོག་པའི་སྒོ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་གནད་དོན་དེ་ཉིད་གཞུང་གི་བརྗོད་བྱའི་གཙོ་བོར་བཟུང་བའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་མཛད་ཡོད།

གཞུང་འདི་དག་གི་ཐོག་ལ་འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་རྩོམ་སྒྲིག་ལས་རོགས་ཏན་པ་རྒྱལ་མཚན་རྣམ་གྲོལ་ལགས་ཀྱིས་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྩ་གཞུང་རྣམས་བོད་དཔེ་དང་མཚུངས་བསྡུར་དང་། དེ་བཞིན་བོད་དཔེ་རྣམས་དཔར་མ་ཁག་དང་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་དང་། གླེང་བརྗོད་ཞིབ་རྒྱས་བརྩམས་པ་དང་སྦྲགས། སྤྱིར་བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཞིབ་ཚགས་པོའི་ཉམས་ཞིབ་དང་འབྲེལ་བསྟོད་ཚོགས་

ཁག་གི་དཔེ་ཐོ་གང་རྒྱས་བཀོད་རྒྱུའི་འབད་རྩོལ་གནང་ཡོད་པར་ལེགས་སོའི་བསྔགས་བརྗོད་ཡོད།

ཕབ་བསྒྱུར་དག་ཞུས་སོགས་ཀྱི་ལས་དོན་གྱི་ཐོག་ལ་ནང་ཆོས་རིག་གཞུང་གི་སྐོར་ལ་དོན་གྱི་མཁས་པ་པཎྜི་ཏ་རཱམཤངྐརཏྲིཔཱཋི་མཆོག་གིས་ཐུགས་འཁུར་ཆེ་བཞེས་ཀྱི་གྲོ་ནས་རོགས་མགོན་དང་ལམ་སྟོན་རྒྱ་ཆེ་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན། དེ་བཞིན་དཔར་སྐྲུན་སྡེ་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་ལས་རོགས་ཀྱིས་དཔེ་དེབ་འདི་ཉིད་དུས་ཚོད་ངེས་ཅན་ནང་དཔར་བསྐྲུན་ཐུབ་པར་རྗེས་སུ་ཡི་རངས་ཡོད།

ད་རེས་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་ནས་དོན་གཉེར་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དགོས་འདུན་བསྐང་བའི་ཆེད་བསྒྲོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་བགྱིས་པའི་གཞུང་འདི་དཔར་བསྐྲུན་གྱི་ལམ་ནས་འགྲེམ་སྤེལ་བགྱིས་པར་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ལྟ་གྲུབ་དང་ནང་པའི་བསྒྲོད་པའི་སྐོར་ལ་རྒྱ་ཆེའི་མཁྱེན་རྟོགས་ཡོད་པའི་རེ་སློན་བཅས་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྟོན་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས། ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༧ ཟླ་ ༡༢ ཚེས་ ༡༠ དགའ་ལྡན་ལྔ་མཆོད་ཆེན་མོའི་དུས་ཆེས་བཟང་པོར་བྲིས་པ་དགེའོ།།

प्रकाशकीय

बुद्ध, बोधिसत्त्व, अर्हत् आदि स्तुतिक्षेत्रों अर्थात् स्तुत्य जनों के महनीय गुणों के प्रति अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर उनसे निकटतम भावना और अनुग्रह की इच्छा से समुत्थित श्रद्धा एवं सम्मान के साथ प्रशंसान्वित वचनात्मक उद्‌गार ही 'स्तोत्र' कहलाते हैं। वे भी श्रद्धाप्रधान और प्रज्ञाप्रधान के भेद से दो प्रकार के होते हैं। इनमें से बौद्ध धर्म एवं दर्शन से सम्बद्ध आगम और शास्त्रों में विद्यमान अधिकांश स्तुतियाँ युक्ति और प्रमाण से समन्वित होने के कारण द्वितीय वर्ग अर्थात् 'प्रज्ञाप्रधान' वर्ग में परिगणित होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ इसी वर्ग में सम्मिलित है। इन स्तोत्रों में भी मधुर एवं मनोरम शब्दालङ्कारों और अर्थालङ्कारों से युक्त होना अथवा नहीं होना आदि अनेक प्रकार हैं। उनमें भी गद्यात्मक, पद्यात्मक और मिश्रित आदि अनेक भेद हैं। स्तुतिकर्ताओं में भी परम श्रेष्ठ बुद्ध से लेकर सामान्य पृथग्जन पर्यन्त अनेकविध पुद्‌गल दृष्टिगोचर होते हैं।

आचार्य नागार्जुन द्वारा प्रणीत प्रस्तुत ग्रन्थ का 'चतु:स्तव' यह नामकरण तिब्बती विद्वत्परम्परा में अधिक प्रसिद्ध नहीं प्रतीत होता। यद्यपि आचार्य ने अनेक स्तोत्रों की रचना की है, उनमें से लोकातीतस्तव आदि इन चार स्तोत्रों को ही क्यों एक साथ रख कर उनका 'चतु:स्तव' यह नामकरण किया गया है? इसका कोई ठोस आधार दृष्टिगोचर नहीं होता, फिर भी उनका अपनी मूल भाषा संस्कृत में उपलब्ध होना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। जैसे बुद्धवचनों और शास्त्रों का मूल संस्कृत में उपलब्ध होना महत्त्वपूर्ण होता है, वैसे ही इन स्तोत्रों का उपलब्ध होना भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

इन स्तोत्रों में आचार्य द्वारा परम गम्भीर शून्यता एवं प्रतीत्यसमुत्पाद के उपदेष्टा होने के कारण भगवान् तथागत के प्रति अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर (उनकी) सत्कारपूर्वक स्तुति की गई है।

संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रस्तुत 'चतु:स्तव' ग्रन्थ को श्रद्धालु जिज्ञासुओं के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। संस्थान के वरिष्ठ सहायक सम्पादक श्री ज्ञलछेन नमडोल ने भोटपाठ से मिलान करके न केवल मूलपाठ का समीक्षात्मक सम्पादन किया है, अपितु साथ में विस्तृत भूमिका, मूल-भोटपाठ एवं हिन्दी-अनुवाद भी प्रस्तुत किया है। इसके अलावा अनेक

स्तोत्रगणों की सूची प्रस्तुत करते हुए गहराई से शोधपूर्ण सूचनाएं भी दी हैं। उनके इस कार्य में संस्थान के शोध-आचार्य एवं बौद्ध विद्याओं के मर्मज्ञ विद्वान् प्रो० रामशंकर त्रिपाठी ने न केवल पूरा सहयोग प्रदान किया है, अपितु सम्यक् पर्यवेक्षण भी किया है। हम इन दोनों विद्वानों को इस पुण्य कार्य के लिए साधुवाद देते हैं।

प्रकाशन-अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी हम साधुवाद देते हैं, जिनके मनोयोगपूर्वक सहयोग से यह ग्रन्थ सुचारु रूप से शीघ्रता के साथ प्रकाश में आ सका है।

आशा है इस ग्रन्थ के प्रकाशन से सुधी जनों को स्तोत्रविषयक विपुल जानकारी प्राप्त होगी और वे नागार्जुन के महान् दर्शन से अवगत होंगे।

भवतु सर्वमङ्गलम्।

दि० १० दिसम्बर, २००१

प्रो० ङ वङ् समतेन
निदेशक

अहो बुद्धनयं दिव्यमहो बोधिनयोत्तमम् ।
अहो धर्मनयं शान्तमहो मन्त्रनयं दृढ़म् ॥

(गुह्यसमाजतन्त्रम्, पटल-१३, पृ० ४८)

ཨེ་མའོ་སངས་རྒྱས་ཚུལ་རེ་བཟང་། |
ཨེ་མའོ་བྱང་ཆུབ་ཚུལ་གྱི་མཆོག། |
ཨེ་མའོ་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་རེ་ཞི། |
ཨེ་མའོ་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་རེ་བརྟན། |

གསང་འདུས་རྩ་རྒྱུད། (རྒྱུད། 'ཅ' ༡༡༣)

शास्तारं प्रणिपत्य गौतममहं तद्धर्मतावस्थितान्
सम्बुद्धान् सकलं जिनात्मजगणं धर्मं च तैर्भाषितम् ।
चक्षुर्भूतमनन्तबुद्धवचनस्यालोचने देहिनाम्
योऽमुं मध्यमकं चकार कृपया नागार्जुनस्तं नमे ॥

(चन्द्रकीर्तिकृतायाः प्रसन्नपदाया अन्तिमांशभूता मध्यमकशास्त्रस्तुतिः, पृ० १५५)

སྟོན་པ་གཽ་ཏམ་དང་ནི་དེའི་ཆོས་ལ་ཞུགས་···
···རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་མཐའ་དག་དང་།།
རྒྱལ་བའི་སྲས་པོའི་ཚོགས་དང་དེ་དག་གིས་གསུངས་····
···ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས།།
སངས་རྒྱས་གསུང་མཐའ་ཡས་ལ་བལྟ་ཕྱིར་···
···ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་མིག་གྱུར་དབུ་མ་ནི།།
གང་གི་ཐུགས་རྗེའི་སྒོ་ནས་མཛད་པའི་···
···ཀླུ་སྒྲུབ་དེ་ལ་བདག་ནི་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

(དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་མཛད་བྱང་གི་ཆ་ཤས། དབུ་མ། 'འ' ༣༠༠)

དཀར་ཆག विषयानुक्रमणी

མངྒལཾ།

སྔོན་གླེང་།

༄༅། །དེ་ཡང་མཆོག་ཏུ་དང་བ་ཆེན་པོས་མཆོད་བསྟོད་གུས་བསྐུར་ཞུ་ཡུལ་གྱི་ཞིང་དམ་པ་བླ་ན་མ་མཆིས་པ། ཆེ་བའི་ཆེས་མཆོག་སྟོབས་བཅུ་མི་འཇིགས་བཞིའི་རྒྱལ་མཐའ་དག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ཤིང་། ཟུང་འཇུག་ཁ་སྦྱོར་ཡན་ལག་བདུན་ལྡན་གྱི་གོ་འཕང་མངོན་དུ་མཛད་པ་རྒྱལ་བ་རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་ངོ་བོ་དབྱེར་མ་མཆིས་པའི་བླ་མ་ཡིད་དམ་དང་། སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་སོགས་ཀྱི་བསྟོད་ཡུལ་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་དག་ལ། མཆོད་བསྟོད་མཛད་པ་པོ་ཡང་ཚད་མའི་ཉིན་འབྱེད་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་སྲས་ཉན་ཐོས་དང་བཅས་པས་གཙོས་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་གཉིས་སོགས་འཕགས་ཡུལ་གྱི་པཎ་གྲུབ་གསེར་གྱི་རི་བོ་མཆར་དུ་མང་བ་དག་དང་། བོད་གངས་ཅན་གྱི་སྐྱེས་ཆེན་ནམ་མཁའི་སྐར་ཚོགས་ལྟ་བུ་དག་བཅས་ཀྱིས་སྐབས་ཡུལ་བླ་ན་མེད་པ་དེ་དག་གི་ཚད་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་དང་། མཛད་པ་འཕྲིན་ལས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དག་ལ་ཚད་མས་དྲངས་པའི་ངེས་ཤེས་ཀྱིས་དད་པ་ཐོབ་པའི་རྐྱེན་བྱས་ནས། མཆོག་ཏུ་གུས་པ་ཆེན་པོས་བསྟོད་པ་རྩོམ་ཚུལ་སོ་རིག་བཞི་ལ་དབང་འགྱུར་ཞིང་། མཐར་ཐུག་པའི་རྩོམ་རྒྱལ་གྱི་དཔལ་ཡོན་རབ་ཏུ་རྫོགས་ཤིང་། ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་ལ་རྨད་དུ་བྱུང་བའི་བརྗོད་དོན་གྱི་འགངས་དང་། སྙན་ཞིང་འཇེབས་ལ་ཆེས་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་ཚིག་རྒྱན་གྱི་ཉམས་དང་། རན་ཞིང་འཚམ་པའི་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་དཔེ་དོན་གྱི་འབྲེལ་གང་ཐད་ནས་ཚིག་སྦྱོར་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་སྒོ་ནས་མཆོག་ཏུ་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་འདབ་བརྒྱའི་

ཕྲེང་བ་མཆར་དུ་མང་རབ་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཕྱོགས་བརྒྱར་སྤྲོ་བར་མཛད་ཡོད་པས། མཐའ་དག་པ་ཚུར་མཐོང་སོ་སྐྱེའི་བསམ་སྤྱོད་ཀྱི་ར་བའི་སྐྲོམ་གཞིར་གཞར་ཡང་ཆུད་རེ་བྲལ་བས་བྲིས་བརྗོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་སོ། །

དེ་ལྟ་ན་ཡང་དེང་གི་དུས་སུ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་འདིར་སྤྱིར་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཕྱི་ནང་གི་མཁས་པ་དག་གིས་བྲིས་པའི་བརྩམས་ཆོས་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་སྨོས་ཅི་དགོས། ལྷག་པར་དུ་ནང་པའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་བཀའ་དགོངས་འགྲེལ་གསུང་འབུམ་དང་བཅས་པའི་ཁྲོད་དུ་བསྟོད་པའི་སྐོར་གྱི་གཞུང་ཚན་ཆེས་མང་པོ་ཡོད་པ་ལས། མཐའ་དག་པའི་ཕྱོགས་བསྡུའི་བསྟོད་ཚོགས་དང་། བྱུང་རིམ་འགྲེལ་བརྗོད་དང་སྒྲིགས་གསལ་འགོད་བྱ་རྒྱུ་ལྷ་བའི་གནས་ཤིག་མིན་པས། འདིར་སྐབས་སུ་བབས་པ་རྒྱ་གར་འཕགས་ཡུལ་ནས་དར་ཞིང་། དེའི་མཁས་པས་བརྩམས་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་རགས་ཙམ་གླེང་བར་འདོད་པས། དེ་ལ་ཡང་སྐད་ཡིག་གི་ཆ་ནས་རྩ་བའི་མ་ཕྱི་ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་འགྱུར་གཉིས་ཀའི་ཐོག་ཡོད་པ་དང་། བོད་འགྱུར་ཐོག་ཡོད་ལ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ཉམས་བརླག་ཏུ་སོང་པ་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་ལ་བོད་སྐད་ཐོག་མ་བསྒྱུར་བ་བཅས་སྡེ་ཚན་གསུམ་གྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད། དེ་དག་ལ་གཞི་བྱས་ནས་ཕྱིས་སུ་ཧིན་རྡི་དང་། དབྱིན་སྐད་སོགས་སྐད་ཡིག་གཞན་གྱི་ཐོག་བསྒྱུར་བ་ཡང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད། །

(༡) ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

དེ་དག་ལས་དང་པོ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཆ་མཚོན་ན། སྤྱིར་དེང་གི་དུས་སུ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་དངོས་སུ

བཞུགས་ཡོད་མེད་ཀྱི་ཐད་ལ་གནས་དུས་ཕྱི་ཕྲག་པ་རི་ཟུང་ནང་མ་མཐོང་བ་དང་། མ་ཉེད་པ་ཙམ་རྒྱུ་མཚན་དུ་བྱས་ནས་ཡོད་མེད་ཀྱི་ཐག་གཅོད་དང་། ཁ་ཚོན་བཅད་གང་ཐུབ་བྱེད་པ་ནི་ཆེས་མི་འཐད་པའི་གནས་སུ་སྣང་ངོ། མི་ལོ་སྟོང་ཕྲག་སྔོན་གྱི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་མང་པོ་དང་། དེ་དག་གི་དཔེ་རྒྱུན་ཆེས་མང་པོ་གནས་དུས་འདྲ་མིན་མང་པོར་ཉེད་སོན་བྱུང་དང་འབྱུང་མུས་སུ་ཡོད་ལ། ལྷག་པར་དུ་རྒྱ་གར་དབྱིན་ཇིའི་མངའ་འོག་ཏུ་ཡོད་སྐབས་ཕྱི་མི་དོན་གཉེར་ཅན་མང་པོས་དེ་འདྲའི་ལག་བྲིས་ཀྱི་མ་དཔེ་མང་པོ་རྒྱ་གར་དང་བལ་ཡུལ་སོགས་ནས་འཚོལ་སྒྲུབ་བྱས་ནས་ཨིང་ལིནཊ་དང་། ཕ་རན་སི་དང་། ཉི་འོངས་དང་། ཛར་མན་དང་། ཨ་རི་དང་། ཨི་ཊ་ལི་དང་། རུ་སུ་སོགས་ཡུལ་ཁག་མང་པོའི་ནང་ཁྱེར་ནས་བདག་ཉར་གཅེས་བསྐྱུང་དང་འབྲེལ་རྒྱ་དཔེ་དེ་དག་གི་ཐོག་ཞིབ་བསྒྱུར་སོགས་ཀྱི་ཕྱག་ལས་དང་། མ་དཔེ་ཇི་ཡོད་ཀྱི་དཔེ་ཐོ་དང་། ངོ་སྤྲོད་དཀར་ཆག་སོགས་སུ་དཔེ་མཚན་སྟོང་ཕྲག་མང་པོའི་གསལ་ཁ་ཤར་བསྐྲུན་གྱི་ལམ་ནས་རང་རེའི་མཐོང་ཡུལ་དུ་ཡོད་པ་དེ་དག་གིས་མཚོན་ཐུབ།

བསྟོད་པ་མང་པོ་ཕྱོགས་བསྡུའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལ་མཚོན་ན།

(༡) བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཡོངས་མ་དཔེའི་དཔེ་མཛོད་ཁང་ (नेपाल राष्ट्रीय अभिलेखागार) ནས་ཉེད་སོན་བྱུང་བ། སྔོན་གྱི་ཡིག་རྙིང་ཐོག་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ (बौद्धस्तोत्रसंग्रह) ཞེས་པའི་ལག་བྲིས་ཀྱི་མ་དཔེ་དེ་

ལ་རྒྱས་པ་ཤོག་ལྷེབ་ ༣༠༠ བྲིས་པ་ནས་བསྡུས་པ་ཤོག་ལྷེབ་ ༡༦ ཙམ་ཡོད་པ་སོགས་རྒྱས་བསྡུས་འདྲ་མིན་དང་། བསྟོད་པ་མང་ཉུང་ཅི་རིགས་ཡོད་པའི་གཞུང་ཚན་འདྲ་མིན་ཉི་ཤུ་ཙམ་ཡོད་སྐོར་དང་། དེ་དག་ལས་རྒྱས་པ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༡༧༦ ཙམ་ཡོད་ཅིང་། དེ་དག་ལས་བསྟོད་པ་ ༦༣ ལ་མ་གདོགས་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད་ཅིང་། མ་དཔེ་ཕལ་ཆེ་བ་ཚང་ཡོད་སྐོར་སོགས་'དྷཱིཿ'དུས་དེབ་དང་པོའི་ནང་གསལ་སྟོན་གནང་ཡོད།

(༢) ཡང་དུས་དེབ་གཉིས་པའི་ནང་གོང་སློས་ཀྱི་དཔེ་མཛོད་དེ་ཉིད་ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་བའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ (बौद्धस्तोत्रसंग्रहः) ཞེས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་ ༣༨ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད་ཅིང་། དེར་བསྟོད་པ་ ༦ ལ་མ་གདོགས་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད།

(༣) མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པ་སོགས་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ (नामसङ्गीतिस्तोत्रसंग्रहः) ཞེས་པ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་ ༥༨ ཡོད་ཅིང་། བསྟོད་པ་ ༡༤ ལ་མ་གདོགས་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད།

(༤) གཟུངས་སྔགས་སོགས་ཕྱོགས་བསྡུས་ (धारण्यादिसंग्रहः) ཞེས་པ་དེར་སྤྱིར་ཆོས་ཚན་འདྲ་མིན་ ༣༧༡ གི་མཚན་བྱང་འཁོད་ཡོད་ཁོངས་ནས་གཟུངས་སྔགས་ཀྱི་སྐོར་ ༣༦༣ དང་། བསྟོད་པའི་སྐོར་ ༤༨ དང་། ཕྲས་ ༦༠ གཞུང་གཞན་ཡིན་སྐོར་གསལ་ཡོད། དེར་ཡང་བསྟོད་པ་ ༦ ལ་མ་གདོགས་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད།

(༥) 'དྷཱིཿ'དུས་དེབ་ཨང་༡༠,༡༡གཉིས་དང་། ཟུར་དུ་སྤར་འདེབས་

འདེབས་བྱས་པའི་དེབ་སྔ་རྗེས་གཉིས་ཀྱི་ནང་ "གསུང་རབ་དཀོན་རིགས་ཁག་གི་རྩ་བའི་མ་དཔེ་" (दुर्लभ ग्रन्थों की आधार सामग्री) ཞེས་པའི་དཔེ་ཐོ་རྒྱས་པ་ཞིག་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་གནང་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་ནང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་བསྟོད་པ་དང་། དེ་དང་འབྲེལ་ཡོད་བཅས་ཀྱི་གཞུང་ཚན་འདྲ་མིན་ ༨༨༠ ཙམ་གྱི་གསལ་ཁ་བཀོད་ཡོད། དེ་དག་གི་ནང་བསྟོད་པ་བྱེ་བྲག་པ་རེ་རེ་བཞིན་གྱི་མཚན་དང་། མཛད་པ་པོའི་མཚན་གང་རྙེད་ཀྱི་གསལ་ཁ་དང་། དཔེ་ཐོ་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱ་ཡུལ་གྱི་གནས་རྟེན་གང་ཡིན་གྱི་གསལ་ཁ་དང་། ཤོག་ལྡེབ་ཀྱི་གྲངས་ཚད་དང་། ཚང་ཡོད་མེད་དང་། མ་དཔེའི་གནས་བབས་དང་ཡིག་རིགས་གང་གི་ཐོག་ཡོད་མེད། འདི་གའི་དཔེ་མཛོད་ཁང་དུ་འགྱུར་ཡོད་མེད་སོགས་ཀྱི་གསལ་ཁ་བཀོད་ཡོད། དཔེ་ཐོ་དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་བསྟོད་པ་དངོས་ཀྱི་དཔེ་ཐོ་དང་ལྷན་དུ་ "བསྟོད་པ་མང་པོ་ཕྱོགས་བསྡུ་" བྱས་པའི་གཞུང་མཚན་ཡང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་ངོ་སྤྲོད་མཚོན་པ་ཙམ་བཀོད་ན།

(༢) गीतस्तोत्रादिसंग्रह (བསྟོད་གླུ་སོགས་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དེ་བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཡོངས་མ་དཔེ་ཁག་གི་དཔེ་མཛོད་ (RAK)ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་ལག་བྲིས་ཤོག་ལྡེབ་ ༦༥ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད།

(༣) पञ्चशतस्तोत्रसंग्रह (བསྟོད་པ་ལྔ་བརྒྱ་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དེ་ཨ་རི་(IASWR)དང་། ཉི་འོངས་(SMTUL)གཉིས་ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་ལག་བྲིས་ཤོག་ལྡེབ་ ༡༠༠ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད། མ་དཔེ་དེ་ཡིག་གཟུགས་ཆེས་གསལ་ཁ་ཞན་པོ་དང་། མ་ཚང་བའི་གྲས་སུ་ངོས་འཛིན་བྱས་

ཡོད། གཞན་དུ་ན་དངོས་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ ༥༠༠ ཕྱོགས་བསྡུ་བྱས་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ཤོག་ལྷེབ་བརྒྱའི་ནང་ཚུད་རྒྱུ་ཤིན་ཏུ་དཀའ་བས་དེ་ལས་ཀྱང་གྲངས་མང་བ་ཞིག་ཅིས་ཀྱང་ཡོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ། །

(༣) पीठस्तव एवं अन्यस्तोत्र (གནས་གཞིའི་བསྟོད་པ་དང་བསྟོད་པ་གཞན་) ཞེས་པ་དེ་ཉི་འོངས་ (MLBMDLT)ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་ཤོག་ལྷེབ་ ༣༠༣ ཡོད་སྙོར་གསལ་ཡོད་པས་བསྟོད་པའི་སྙོར་ཆོས་ཚན་མང་ཙམ་ཡོད་ཆོག་པར་མངོན།

(༤) पूजास्तोत्रसंग्रह (མཆོད་བསྟོད་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དང་། (༥) वसुन्धारास्तोत्रादिसंग्रह (དབྱིག་འཛིན་གྱི་བསྟོད་པ་སོགས་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དེ་གཉིས་བལ་ཡུལ་ (RAK) ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེ་གཉིས་ལ་རིམ་པ་བཞིན་ཤོག་ལྷེབ་ ༧ དང་ ༦ ལས་མེད་པ་ནི་མ་དཔེ་མ་ཚང་བ་དང་། ཆེས་རྙིང་སྙིན་ཆེ་བའི་དབང་གིས་ཡིན་སྙོར་གསལ་ཡོད།

(༦) बौद्धस्तुतिसंग्रह (ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དེ་ཡང་བལ་ཡུལ་ (RAK) ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་ལག་བྲིས་ཤོག་ལྷེབ་༤༡ ཡོད།

(༧) बौद्धस्तोत्रसंग्रह (ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་) ཞེས་པ་དེའི་གསལ་ཁ་ཕ་རན་སི་ (CABATON) ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་ཤོག་ལྷེབ་ ༣༨༤ ཡོད་སྙོར་གསལ་ཡོད་པས་བསྟོད་པའི་སྙོར་ཆོས་ཚན་མང་པོ་ཡོད་ཆོག་པར་མངོན།

གོང་གསལ་གྱི་བསྙད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་དེ་དག་ལས་ཁག་ཅིག ‘སྤྱིན་ཤོག’ (M.Film)ཐོག་འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་དཔེ་མཛོད་དུ་འཇོག་ཡོད། འོན་ཀྱང་དེ་དག་ཕལ་ཆེ་བ་སྔོན་གྱི་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ཐོག་ཡོད་པ་ལས་སྤྱར་དུ་ཐོན་མེད་པས། དེ་དག་གི་ནང་བསྙད་པ་རྒྱས་བསྡུས་འདྲ་མིན་ཇི་ཙམ་ཡོད་མེད་དང་། རེ་རེ་བཞིན་ཚང་མ་ཚང་དང་། དེ་དག་གི་ཁྲིད་བོད་འགྱུར་གྱི་རིགས་ཇི་ཙམ་ཡོད་མེད་སོགས་བརྟགས་དགོས་གལ་ཆེ་ཡང་སླ་བའི་གནས་སུ་མི་མངོན་ནོ། །ལྷག་པར་དུ་གོང་སློས་ལྟར་ཡིགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་བལ་ཡུལ་དང་། ཨ་རི། ཨིང་ལིན་ཏ། ཉི་འོངས། ཕ་རན་སི་དང་། ཛར་མན་སོགས་སུ་ཡོད་ལ། འདི་གར་དེ་དག་གི་དཀར་ཆག་དང་དཔེ་ཐོ་ཙམ་གྱི་གསལ་ཁ་ལས་གཞུང་དངོས་ཀྱི་འདྲ་དཔེ་མ་ཐོབ་པ་དེ་དག་གི་ནང་བསྙད་པ་འདྲ་མིན་ཇི་ཡོད་དང་། ཚང་མ་ཚང་དང་། བོད་འགྱུར་དུ་ཡོད་སོགས་ཀྱི་ཐད་ཚོད་དཔག་བྱེད་དཀའ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་སློས་ཅི་དགོས།

དེ་ལྟར་གོང་གསལ་བསྙད་པའི་གྲངས་ཚད་ཀྱི་གསལ་ཁ་དངོས་སུ་འཁོད་པའི་ "བསྙད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས" ཨང་རིམ་དང་པོ་ནས་ལྔ་པའི་བར་དེ་དག་ནང་ཕན་ཚུན་ཞིབ་བསྡུར་བྱེད་སྐབས་བསྙད་པ་མང་པོ་ཞིག་དེ་དག་ཚང་མའི་ནང་གཅིག་གྱུར་གྱི་ཚུལ་དུ་འཁོད་ཡོད། ཡང་མང་པོ་ཞིག་སྡེ་ཚན་རེ་ཟུང་ནང་ཡོད་ལ་གཞན་ལ་མི་གསལ་བ་དང་། ཡང་མང་པོ་ཞིག་མཚན་བྱང་གཅིག་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་གང་ཞིག་ལ་མཛད་པ་པོའི་ཞལ་གསལ་མ་འཁོད་པའི་དབང་གིས་དོན་ལ་གཅིག་པ་ཡིན་མིན་ཁ་ཚོན་བཅད་དཀའ་བའི་རིགས་ཀྱང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་མོད།

དེ་ལྟ་ན་ཡང་བསྒྱུར་ཐོས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་འཁོད་པའི་གསལ་ཁ་རྙེད་ཐུབ་རིགས་དང་། བསྟོད་པ་མ་ཡིན་པའི་གྲུས་འདྲེན་ལྟད་བྱུང་བ་དག་ཤུད། དེ་བྲིངས་བསྟོད་པ་དངོས་དང་། དེ་དང་འབྲེལ་བའི་གཞུང་ཇི་ཡོད་ཀྱི་གྲངས་ཚད་ཆེས་རགས་རྩིས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་བཀོད་ན། ‘ཌྷཱིཿ’དུས་དེབ་དང་གཉིས་གཉིས་ཀྱི་ནང་བསྟོད་པ་ ༣༨༣ ཙམ་དང་། ‘ཌྷཱིཿ’དུས་དེབ་ ༡༠,༡༡ གཉིས་ཀྱི་ནང་བསྟོད་པ་ ༣༩༣ ཙམ་ཡོད་ཚོད་འདུག དེ་དག་གི་སྟེང་‘ཌྷཱིཿ’དུས་དེབ་ལྷག་མ་རེ་ཟུང་ནང་ཡོད་བསྟོད་པ་ ༥༡ བཅས་ཁྲོན་བསྡོམ་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ཐོག་ཡོད་བསྟོད་པ་ ༦༡༤ ཙམ་ཡོད་ཚོད་འདུག །

གྲངས་ཚད་དེ་ནི་ཆེ་ལོང་རགས་པའི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཞིག་ལས་ངེས་གཏན་འཁེལ་བའི་གྲངས་ཚད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཆ་འཛིན་བྱེད་འོས་མ་མཆིས་ཏེ། དེ་ལ་རྒྱུ་མཚན་མང་དག་ཅིག་མངོན་ཏེ། བསྟོད་པ་ཆེས་མང་པོ་ཞིག་བསྟོད་ཡུལ་དང་མཚན་བྱང་གཅིག་པ་ཡིན་པ་གང་ཞིག་ལ་རྩོམ་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད་པ་དང་། འདི་གའི་དཔེ་མཛོད་སོགས་སུ་དཔེ་ཐོ་དང་དཀར་ཆག་ཙམ་ལས་གཞུང་དངོས་ཀྱི་ཕྱག་དཔེ་མ་འགྱུར་བ་དང་། ཅི་སྟེ་འགྱུར་བའི་དབང་དུ་བཏང་ན་ཡང་མ་དཔེ་ཆེས་རྙིང་པ། དབུ་ཞབས་མ་ཚང་བ་དང་། ཡིག་ངོ་འཕྱོད་དཀའ་བ་སོགས་ཀྱི་གནས་བབས་ཅན་དང་། དཔེ་ཐོ་ཉུང་ཤས་ལས་ཕལ་ཆེ་བར་ཕྱག་དཔེ་གང་ཡིན་གྱི་དབུ་ཞབས་ཀྱི་ཞལ་གསལ་དག་འཁོད་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

མདོར་ན་དགོས་ངེས་ཅན་གྱི་ཆ་རྐྱེན་དང་། ངེས་གཏན་འཁེལ་བའི་གསལ་ཁ་རྙེད་དཀའ་བ་ལ་བརྟེན་ནས་མཐའ་གསལ་མཐིལ་མཐོང་ཐུབ་ངེས་ཀྱི་

ཞིབ་བསྒྱུར་དང་། ཐག་གཅོད་ངེས་ཅན་བྱེད་སླ་བའི་གནས་སུ་གཏན་མི་མངོན་ནོ། །

གོང་གསལ་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ཁག་ཏུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པ་དེ་དག་ལ་ཞིབ་ཏུ་བརྟགས་པའི་ཚེ། བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་གང་ཟག་དང་འབྲེལ་བ་གཙོ་ཆེ་ཞིང་། མདོ་སྔགས་གཉིས་ལས་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བ་གཙོ་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། བོད་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་མ་བསྒྱུར་གང་མང་བརྟགས་པའི་ཚེ་མ་བསྒྱུར་བའི་གྲས་ཤིན་ཏུ་མང་བའི་ཚོད་དུ་ཡོད། བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ཐོག་བཞུགས་པ་ལས་སྤར་དུ་ཐོན་པ་ཉུང་ཤས་ལས་མེད། དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་མ་དཔེ་མ་ཚང་བ་དང་མ་དག་པ་མང་པོ་ཡོད་གྲས་ཀྱང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད། ལྷག་པར་དུ་མཛད་པ་པོའི་མཚན་མ་གསལ་བ་ཤིན་ཏུ་མང་པོ་ཡོད། དེ་དག་ཏུ་འཁོད་པའི་བསྟོད་པ་ཉུང་ཤས་ཞིག་མཐའ་གཅིག་ཏུ་ནང་པ་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ་ཡིན་པའི་ངེས་པ་ཆེར་མེད་པ་དང་། འདྲིས་ལྷད་ཡོད་པའི་གྲས་ཀྱང་ཡོད་ཚོད་འདུག དེ་བཞིན་དུ་བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་ཆེས་གྲགས་ཅན་དང་། རྩོམ་པ་པོ་ཁྱད་པར་ཅན་དང་། རྩོམ་རྒྱལ་རྨད་དུ་བྱུང་བ་དང་ལྡན་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་པའི་ངེས་པ་ཡང་ཆེར་མེད་དོ། །

བརྟགས་པའི་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ཁག་གི་ནང་འཁོད་པའི་བསྟོད་པ་མང་པོ་ཞིག་བསྟན་བཅོས་མ་ཡིན་པར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་རབ་ནང་བཞུགས་ངན་སོང་སྦྱོང་རྒྱུད་དང་། མདོ་རྒྱ་ཆེར་རོལ་པ་དང་། གསེར་འོད་དམ་པའི་མདོ་སོགས་བཀའ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་ལས་ཟུར་འདོན་བྱས་

ནས་བཀོད་ཡོད། དེ་བཞིན་དུ་སྐྱེས་རབས་དང་། རྟོགས་བརྗོད་དང་། བལ་པོའི་རང་འབྱུང་སྔོན་རབས་སོགས་ནས་ཟུར་འདོན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ་ཡང་ཇེ་སྙེད་ཅིག་ཡོད། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཀོད་པའི་བསྟོད་པའི་མཚན་བྱང་དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་གཞུང་ཇེ་སྙེད་ཅིག་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་སོགས་བསྟོད་པ་དང་འབྲེལ་བའི་གཞུང་ཡིན་པ་ལས་བསྟོད་པ་དངོས་མིན་པ་ཡང་ཡོད། བལ་ཡུལ་སོགས་ནས་ཐོན་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་སོགས་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་གི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་ཤིན་ཏུ་མང་པོ་ཞིག་ལ་མཇུག་པ་པོའི་མཚན་གྱི་གསལ་ཁ་མ་འཁོད་པ་དེ་ནི་ཡ་མཚན་པའི་གནས་སུ་སྣང་ཞིང་། དེ་ལྟར་འབྱུང་དགོས་པའི་རྒྱུ་རྐྱེན་ལ་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ། །

དེ་ལྟར་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ཐོག་ཡོད་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་རགས་ཙམ་གླེང་ནས་ད་ནི་དེང་དུས་ཀྱི་ཡིག་གཟུགས་ཐོག་པར་དུ་ཐོན་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཆ་མཚོན་ན།

(༡) ༡༩༩༨ ལོར་ पं0 जनार्दन पाण्डेय ཞུ་བས་པར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ (बौद्धस्तोत्रसंग्रह:) ཞེས་པའི་དེབ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༡༠༨ བཀོད་ཡོད། དེར་ཡོངས་གྲགས་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ་གལ་གནད་ཅན་མང་པོ་ཕྱོགས་བསྡུ་གནང་ཡོད། བསྟོད་པ་ ༣༡ ཙམ་ལ་མཇད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་ཡོད་ཀྱང་དེ་བྱིངས་ལ་གསལ་མེད། བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་ཆེ་ཞིང་བོད་སྐད་ཐོག་མ་བསྒྱུར་བའི་གྲས་ཀྱང་མང་དག་ཅིག་ཡོད། བསྟོད་པ་དེ་དག་གི་ཁྲོད་སྔོན་པ་ཤཱཀྱ་སེངྒེ་ལ་ཕྱི་རོལ་པའི་ལྷ་ཆེན་

ཚངས་པ་དང་། ཁྱབ་འཇུག་དང་། དབང་པོ་དང་། དབང་ཕྱུག་སོགས་ཀྱིས་བསྟོད་པའི་བསྟོད་པ་ཁག་ལྔ་ཡང་གསལ་ཡོད་པས་དེ་ནི་མཚར་དུ་བརྩི་འོས་པའི་གནས་སུ་མངོན་ནོ། །

(༣) བལ་ཡུལ་ནས་སྤྱར་བསྒྲུན་ཞུས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ (बौद्धस्तोत्रसंग्रह:) ཞེས་པ་ཆོས་སྤྱོད་ཞལ་འདོན་གྱི་ཚུལ་དུ་སྤྱར་བསྒྲུན་ཞུས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་དང་། གཟུངས་དང་། སྨོན་ལམ་སོགས་སྣ་ཚོགས་འཁོད་ཡོད། དེབ་དེའི་དཀར་ཆག་ནང་གསལ་ཆོས་ཚན་༨༨ ཡོད་ཁོངས་ནས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ ༣༨ ཙམ་ལས་མེད། དེ་དག་ལས་བསྟོད་པ་བཞི་ནང་ཆོས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་ཡིན་པའི་ངེས་པ་མི་སྣང་བས་འདིར་བཀོད་མེད།

(༤) འདི་གའི་སློབ་ཁང་གི་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་རིགས་མཁོ་སྒྲུབ་སྡེ་ཚན་གྱིས་ 'ཐྲཱི:' དུས་དེབ་དང་པོ་ནས་སུམ་ཅུ་སོ་གཅིག (༡-༣༣) བར་སྤྱར་བསྒྲུན་ཞུས་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་ནང་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༥༣ བཀོད་ཡོད། དེ་ཡང་དུས་དེབ་རེའི་དབུར་བསྟོད་པ་གཉིས་རེ་བཀོད་ཡོད། དེ་དག་གི་ཁྲོད་རྗེ་བཙུན་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པ་དང་། ལེའུ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་བསྔགས་འོས་བསྔགས་བསྟོད་སོགས་བསྟོད་པ་གྲགས་ཅན་དང་། གལ་གནད་ཅན་མང་པོ་བཀོད་ཡོད། དེར་ཡང་བསྟོད་པ་ ༡༩ ལ་མ་གཏོགས་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད།

དེ་ལྟར་སྔར་དུ་ཐོན་མ་ཐོན་དང་། ཐོན་པ་ནང་ཕན་ཚུན་བཅས་ཀྱི་དཔར་ལ་བསྟོད་པའི་གྲངས་ཚད་ཇི་ཡོད་ཞིབ་བསྡུར་བྱེད་སྐབས་འདྲ་བའི་ཆ་ཡོད་པར་ཚོད་དཔག་ཐུབ་གྲུས་རྣམས་ཕུད། དེ་བྱིངས་སུ་རྗེས་སུ་བཀོད་པ་རྣམས་ཁྲོན་བསྡོམ་ན་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༧༠༧ ཙམ་ཡོད་ཚོད་འདུག གྲངས་ཚད་འདི་ཆེས་རགས་རྩིས་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་པ་ཞིག་ལས་ངེས་གཏན་འཁེལ་བའི་ཚུལ་དུ་ཆ་འཛིན་བྱེད་དཀའ་བའི་རྒྱུ་མཚན་གོང་དུ་ཞིབ་གསལ་སྨྲས་ཟིན་ནོ། །

འདིར་བཀོད་པའི་གྲངས་ཚད་དང་། དེབ་འདིའི་ཁ་སྐོང་ནང་བཀོད་པའི་གྲངས་ཚད་གཉིས་ལ་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་འབྱུང་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་ནི། ཁ་སྐོང་ནང་བཀོད་པ་དེར་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ནང་ཡོད་སྔར་དུ་ཐོན་ཟིན་པ་མང་པོ་ཞིག་ཕྱིར་འཐེན་བྱས་པ་དང་། འདྲ་ཆོས་ཆེ་ལ་ཚོད་དཔག་དཀའ་བའི་གྲུས་དང་། བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱས་པའི་གཞུང་ལ་མ་དཔེ་རྒྱུས་བསྡུས་འདྲ་མིན་མང་པོ་ཡོད་པ་ཚང་མ་དེར་རྩིས་མེད་པ་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས་ཁ་སྐོང་ནང་བཀོད་པའི་གྲངས་ཚད་དེ་འདིར་བཀོད་པ་ལ་ལྟོས་ཏེ་ཉུང་བ་ཡོད། ཁ་སྐོང་ནང་སྔར་དུ་ཐོན་མ་ཐོན་ཆ་ཚང་བསྡོམས་ན་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་དྲུག་བརྒྱ་ལ་ཉེ་བ་ཞིག་ཡོད་སྐོར་བཀོད་ཡོད། དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་ཡང་འདྲ་བའི་ཆ་ཡོད་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད།

(༣) བཀའ་བསྟན་གྱི་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་རྣམས་སུ་
གསལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

གཉིས་པ་བོད་འགྱུར་བཀའ་བསྟན་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཆ་མཚོན་ན། སྤྱིར་བསྟོད་པ་འཚོལ་ཡུལ་ལ་བཀའ་བསྟན་གཉིས་དང་། དེ་རེ་རེ་

ལ་ཡང་མདོ་ཕྱོགས་དང་སྔགས་ཕྱོགས་གཉིས་སུ་ཕྱེ་ཡོད། སྔ་མ་བཀའ་འགྱུར་ལ་མདོ་སྔགས་གཉིས་ཀའི་ནང་ཡོད་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཆོས་ཅན་རང་མཚན་པ་དང་། ཡིའུའི་ནང་གསེས་སུ་ཡོད་པ་སོགས་ཀྱི་སྐོར་དང་། བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ། སྤྱིར་སྤྱར་མ་ཚང་མའི་དབུར་བསྟོད་ཚོགས་སྐོར་གྱི་སྡེ་ཚན་ཞིག་ཟུར་དུ་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེར་མདོ་ཕྱོགས་རྐྱང་པའི་སྐོར་ལས་སྔགས་ཕྱོགས་ཀྱི་སྐོར་རྣམས་དེར་གསལ་མེད། འོན་ཀྱང་ད་ལམ་འདིར་དེ་དག་ཚང་མའི་ནང་ཡོད་བསྟོད་པའི་སྐོར་རྣམས་འཚོལ་ཞིབ་གང་ཐུབ་དང་འབྲེལ་བསྟོད་ཚོགས་རྒྱས་ཙམ་ཞིག་དེབ་འདིའི་ཁ་སྐོང་དུ་བཀོད་ཡོད། དེ་ཡང་ནང་གསེས་བྱེ་བྲག་སོ་སོའི་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པ་ཇི་ཡོད་ཀྱི་གྲངས་དང་། ཕྱོགས་བསྡུ་བྱེད་ཚུལ་སོགས་ཀྱི་སྐོར་རྣམས་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ནང་ཡོད་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་དབུར་བཀོད་ཡོད་པས་དེར་གཟིགས་པར་འཚལ།

མདོར་བསྡུས་ན་བཀའ་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཆོས་ཅན་རང་མཚན་པ་དང་། ཡིའུའི་ནང་གསེས་སོགས་སུ་ཡོད་པ་བཅས་ཁྲིན་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༦༥ དང་། བསྟན་འགྱུར་སྤྱི་བྱིངས་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པ་ ༡༩༨ དང་། ཁ་སྐོང་ནང་ཞུགས་ ༥༦ བཅས་ཁྲིན་བསྟོད་པ་ ༣༥༠ ཡོད་པས། བཀའ་བསྟན་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པ་ཁྲིན་བསྡོམས་ན་གཞུང་རྒྱས་བསྡུས་འདྲ་མིན་ ༣༡༥ ཙམ་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་མཚན་བྱང་དང་། བོད་དང་། ཤོག་གྲངས་སོགས་ཀྱི་གསལ་ཁ་ཞིབ་པ་སྐད་ཡིག་གཉིས་ཐོག་དེབ་འདིའི་ཁ་སྐོང་ནང་བཀོད་ཡོད།

བསྟོད་པ་འདི་དག་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱ་ཡུལ་གྱི་གཞི་འཛིན་སའི་ཕྱར་མ་ནི་བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་སྡེ་དགེ་བཀའ་བསྟན་གཞི་བཟུང་ཐོག་ཁ་སྐོང་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པ་༥༦ ཡོད་པ་དེ་དག་དར་ཐང་བཀའ་བསྟན་གྱི་ཁ་སྐོང་དུ་ཇི་ལྟར་གསལ་བ་ལྟར་པེ་ཀིང་ཕྱར་མ་གཞི་བཟུང་གི་གསལ་ཁ་བཀོད་ཡོད། ཕྱིར་སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་ཕྱར་མ་གཉིས་འདྲ་ཆོས་ཆེ་ཞིང་། དེ་གཉིས་ནང་མ་གསལ་བ་མང་པོ་ཞིག་སྣར་ཐང་དང་། པེ་ཀིང་དང་། གསེར་བྲིས་བསྟན་འགྱུར་བཅས་སུ་གསལ་ཡོད་པས་སྔ་མ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་གསུམ་རྒྱས་པ་ཡོད།

བསྟན་འགྱུར་ཕྱར་མ་རྣམས་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཁག་ཏུ་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཇི་ལྟར་གསལ་ཚུལ་ནི།

(༡) ཞུ་ཆེན་ཚུལ་ཁྲིམས་རིན་ཆེན་གྱིས་མཛད་པའི་སྡེ་དགེ་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ཏུ་བསྟོད་ཚོགས་ཟུར་གསལ་ཡོད་པ་ལྟར་དེར་བསྟོད་པ་ ༧༩ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད།

(༢) འཇམ་དབྱངས་བདེ་བའི་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་གསེར་བྲིས་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ཏུ་བསྟོད་པ་ ༦༩ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད།

(༣) བུ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་མཛད་པའི་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་དབང་གི་རྒྱལ་པོའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ཡང་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་རིན་པོ་ཆེའི་ཟ་མ་ཏོག་ཅེས་བྱ་བ་དེ་གཉིས་ཀར་གསེར་ལས་བཞེངས་པའི་བསྟོད་ཚོགས་པོད་ཆེན་རེ་ཡོད་སྐོར་གསལ་བ་ལྟར་དེ་གཉིས་ཀའི་ནང་བསྟོད་པ་གྲངས་ ༡༠༦ རེ་ཡོད་ཅིང་། དེ་གཉིས་ནང་མདོ་

སྔགས་གཉིས་ཀ་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ་གསལ་ཡོད། འོན་ཀྱང་སྔགས་ཕྱོགས་ཀྱི་སྐོར་ཉུང་ཤས་ལས་མེད། བསྟོད་ཚོགས་དེ་གཉིས་ནི་ཡོན་བདག་དད་ཅན་ཁག་གིས་དང་བ་ལྷག་པར་སྐྱེས་ནས་མཆོད་པར་བརྗོད་པའི་ཚུལ་དུ་གསེར་ལས་བཞེངས་པའི་གླེགས་བམ་ཙུར་པ་ཞིག་ཡིན་པ་ལས། དེ་གཉིས་བསྟན་འགྱུར་སྤྲར་མ་སྤྱི་ཁྱིངས་ཀྱི་དཔུར་ཡོད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་དེ་མ་ཡིན་ནོ། །སྤྲར་མ་སྤྱི་ཁྱིངས་ཀྱི་དཔུར་གསལ་བའི་དཀར་ཆག་སྔ་མ་སྣར་ཐང་སྤྲར་མའི་ནང་བསྟོད་པ་ ५८ དང་། ཕྱི་མའི་ནང་ ६७ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད། བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་ནང་གསལ་བསྟོད་པའི་སྐོར་དང་། འདི་དག་ཏུ་འཁོད་པ་རྣམས་ཀྱི་བར་ཁྱད་པར་ཇི་ཡོད་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་དགོས་པར་མངོན་ནོ། །

(८) པེ་ཀིང་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་ནང་བསྟོད་པ་ ६३ ཡོད་སྐོར་གསལ་ཡོད་པས། མདོར་ན་བསྟོད་པ་ཇི་ཡོད་ཀྱི་གྲངས་བརྩི་ཚུལ་དང་། གང་བགྲངས་རྒྱུའི་བསྟོད་པ་བཅས་ལ་གཅིག་མཐུན་མེད་པའི་ཁྱད་པར་ཅི་ཆེ་ཡོད།

དེས་ན་དཀར་ཆག་འདྲ་མིན་ནང་འཁོད་པ་ནང་ཕན་ཚུན་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་པ་ནང་ཕན་ཚུན་དང་། ལྷག་པར་དུ་བོད་འགྱུར་དང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་པ་བཅས་ཀྱི་དབར་ལ་ནན་ཏན་ཆེན་པོས་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་བྱེད་དགོས་ངེས་ཀྱི་ལས་དོན་མང་པོ་ཡོད། །དེ་བཞིན་དུ་དགོས་གལ་ལ་བརྟགས་ན་བསྟོད་པ་ཡོད་ཚད་ལ་དེའི་ངོ་སྤྲོད་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་མེད་སོགས་ཀྱི་འབྲེལ་བརྗོད་བྱེད་མི་དགོས་པ་ཞིག་གདན་ནས་མེད་པའི་ཚུལ་དུ་སྣང་ཡང་། དུས་འཁོམ་དང་། དགོས་ངེས་ཅན་གྱི་ཆ་རྐྱེན་ཚང་ཆེ་ཚུང་

དང་བསྟུན་ནས་གལ་འགངས་ཅན་ཉུང་ཤས་ཤིག་ལ་དགོས་ངེས་ཅན་གྱི་འགྲེལ་བརྗོད་དག་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་བསྟོད་པ་སོ་སོའི་གཤམ་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་ཡོད།

སྤྱིར་བཀའ་བསྟན་གྱི་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་རྣམས་སུ་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་གཞུང་རང་མཚན་པ་དང་། ལེའུའི་ནང་ཚན་དུ་ཡོད་པ་སོགས་ཀྱི་ཞལ་གསལ་དངོས་སུ་འཁོད་མེད་ན་ཡང་། གཞུང་གི་ཆ་ཤས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པའི་བསྟོད་པ་ཡང་ཇི་སྙེད་ཅིག་སྣང་དེ། དཔེར་ན། གསང་འདུས་ལེའུ་བཅུ་བདུན་པའི་དབུར "མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ་ཡེ་ཤེས་ཆེ།" །ཞེས་སོགས་རྒྱལ་བ་རིགས་ལྔའི་བསྟོད་པ་དང་། ངན་སོང་སྦྱོང་རྒྱུད་ལེའུ་དང་པོའི་ནང་གསལ་བའི་ "ཤཱཀྱ་སེངྒེའི་བསྟོད་པ" ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་སྐད་གཉིས་ཀའི་ཐོག་གསལ་བ་དེ་དང་། ཡང་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་རིམ་ལྔའི་རིམ་པ་གསུམ་པར "ཁོང་སྟོང་ཁྲོད་ཀྱི་སྐུ་ལ་མེད།" །ཅེས་སོགས་སྒྱུ་ལུས་ཀྱི་བསྟོད་པ་དང་། "ཁམས་གསུམ་ལས་ནི་རྣམ་གྲོལ་ཞིང་།" །ཞེས་སོགས་འོད་གསལ་གྱི་བསྟོད་པ་མཛད་པ་སོགས་དེ་རིགས་ཤིན་ཏུ་མང་བས་མ་སྤྲོས་སོ། །

བརྟགས་པའི་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བསྟོད་པ་རྩོམ་ཚུལ་གྱི་ཐད་ལ་བཅད་ལྷུག་སྤེལ་མ་གང་གི་ཐོག་བརྩམས་ཚུལ་དང་། ཚིགས་བཅད་ལ་རྒྱན་ཆགས་སྤེལ་སྦྱོར་གྱི་ཐོག་ཚིག་རྐང་གཅིག་ལ་ཚིགས་བར་ཧ་ཅང་མང་པོ་ཡོད་པ་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ལེགས་པའི་གྲགས་པས་མཛད་པའི་ "དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་བསྟོད་པ་རྒྱན་ཆགས" ཞེས་བྱ་བ་སོགས་དང་། ཡང་ལེའུ་མང་པོ་ཡོད་པ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་དང་། བསྔགས་འོས་བསྔགས་བསྟོད

དང་། སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་དང་ཕྱོགས་གླང་གཉིས་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྤྲིལ་མར་བསྟོད་པ་སོགས་དང་། རྩ་འགྲེལ་གཉིས་ཀའི་ཐོག་ཡོད་པ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ་རང་འགྲེལ་དང་བཅས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཁྱད་པར་འཕགས་བསྟོད་རྩ་འགྲེལ་དང་། ལྷ་ལས་ཕུལ་བྱུང་གི་བསྟོད་པ་རྩ་འགྲེལ་སོགས་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད། དེ་བཞིན་དུ་བསྟོད་པ་རྩོམ་པ་པོའི་མཁས་པ་སུས་བསྟོད་པ་མང་ཤོས་བརྩམས་མིན་དང་། སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་སོགས་སྐྱེས་བུ་དམ་པ་སུའི་སྐོར་ལ་བསྟོད་པ་མང་ཤོས་ཡོད་མེད་སོགས་ཞིབ་རྩད་བྱ་ཡུལ་དང་བརྟག་པའི་གཞི་ཤིན་ཏུ་མང་ངོ་། །

(༣) བོད་གངས་ཅན་གྱི་མཁས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

སྤྱིར་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་འཕགས་ཡུལ་གྱི་མཁས་པས་མཛད་པ་ཙམ་དུ་མ་ཟད་བོད་གངས་ཅན་གྱི་མཁས་པས་མཛད་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཡང་མཐའ་དག་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་མཚན་བྱང་དག་བཀོད་དགོས་གལ་ཆེ་ཡང་མང་བས་འཇིགས་ནས་མ་བྲིས་སོ། །འོན་ཀྱང་འདིར་དེ་དག་གི་སྐོར་མཚོན་པ་ཙམ་བརྗོད་ན། དེ་ཡང་རྗེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་མཛད་པའི་བླ་ན་མེད་པ་རིན་པོ་ཆེ་གསུམ་གྱི་གཏམ་གྱི་སྒྲོར་བར་ "རིགས་ལམ་ཕྲ་མོ་ཕྱེད་པའི་རྣམ་དཔྱོད་དང་། །གཞུང་ལུགས་གདམས་པར་ཤར་བའི་ཉམས་ལེན་དང་། །ཚིག་སྦྱོར་རྩལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ། །ས་སྟེང་འདི་ན་རིན་ཆེན་རྣམ་གསུམ་སྣང་།" (ཡོད། 'ཁ' ༡༣༦) ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་ལྟར་གྱི་རིན་ཆེན་རྣམ་གསུམ་གྱི་ཡ་རྒྱལ་ཚིག་སྦྱོར

ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་གསུང་རྩོམ་ཁྱད་པར་ཅན་ཇེ་སྙེད་ཅིག་སྣང་སྟེ། དེ་ཡང་གཙོ་ཆེ་བའི་དབང་དུ་བྱས་ན་འགྲོ་མགོན་ཆོས་རྒྱལ་འཕགས་པས་ "བླ་མ་སྤྱི་ལ་བསྟོད་པ་མུ་ཏིག་ཕྲེང་བ" དང་། "བསྟོད་དབྱངས་རྒྱ་མཚོ་སྐན་དངགས་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱན་རྣམ་པར་བཀྲ་བ" ཞེས་བྱ་བ་སོགས་བསྟོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་ ༨༦ ཙམ་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་ "རྒྱལ་པོ་ཡབ་སྲས་ཀྱིས་མཆོད་རྟེན་བཞེངས་པ་ལ་བསྔགས་པའི་སྤེལ་སྦྱོར་དཀྲག" ཞེས་པའི་རྒྱན་ཆགས་སྤེལ་སྦྱོར་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་ཆེས་ཁྱད་དུ་འཕགས་པ་ཞིག་མཛད་ཡོད་པ་དེར་ཚིག་བར་ ༡༣༧༨ ཡོད་པས། དེ་འདྲ་ནི་ཕལ་ཆེར་སྔོན་མ་བྱུང་བ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ནོ། །

གངས་ཅན་མཁས་པའི་གཙུག་རྒྱན་རྗེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་སྟོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོའི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་ "རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ" སོགས་བསྟོད་ཆེན་བཞི་དང་། "ཆོས་རྗེ་གྲགས་པ་བྱང་ཆུབ་དཔལ་བཟང་པོའི་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་ལ་བྱ་དཀའི་ཚུལ་གྱིས་བསྟོད་པ" སོགས་ཆེས་རྨད་དུ་བྱུང་བའི་བསྟོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་ ༥༠ ལྷག་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། རྗེ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཉང་ཐུགས་ཀྱི་སྲས་གཅིག་པུ་མཁས་གྲུབ་དགེ་ལེགས་དཔལ་བཟང་གིས "རྗེ་རིན་པོ་ཆེའི་བསྟོད་པ་དད་པའི་རོལ་མཚོ" དང་། "དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལྷ་སུམ་ཅུ་སོ་གཉིས་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་མདོར་བསྡུས་པའི་བསྟོད་པའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ" དང་། "བཅོམ་ལྡན་འདས་འཁོར་ལོ་བདེ་མཆོག་ཡབ་ཡུམ་ལ་

མངོན་པར་བསྟོད་པའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་”སོགས་བསྟོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་ཉི་ཤུ་ལ་ཉེ་བ་ཞིག་མཛད་ཡོད།

རྒྱལ་བ་སྐུ་ཕྲེང་དང་པོ་རྗེ་དགེ་འདུན་གྲུབ་ཀྱིས་འདུལ་བའི་གླེང་འབུམ་དང་། འདུས་ཏེཀ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་བཅས་སུ་ཚིག་བར་དྲུག་བརྒྱ་བརྒྱལ་བའི་རྒྱན་ཆགས་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་བསྟོད་སྨོན་ཁག་གཉིས་དང་། གཅིག་ལས་འཕྲོས་པའི་བསྟོད་པའི་བསྟོད་ཕྱག་ཚིགས་བཅད་དང་། དབྱངས་ངེས་པ་དང་། ཀུན་བཟང་འཁོར་ལོ་སོགས་རྩོམ་རྩལ་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་“སྟོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ལ་བསྟོད་པ་བདུད་དཔུང་ཕྱི་མར་འཐག་པ་”སོགས་བསྟོད་པ་དང་བསྟོད་འགྲེལ་ ༣༥ ལྷག་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། རྒྱལ་བ་སྐུ་ཕྲེང་གཉིས་པ་རྗེ་དགེ་འདུན་རྒྱ་མཚོས་ “སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་ཀྱི་བསྟོད་ཚོགས་” ཞེས་པ་དཔེ་རིང་ཤོག་གྲངས་ ༣༩ ཡོད་པ་ཞིག་དང་། དེ་བཞིན་རྗེའི་གསུང་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ་སོགས་བསྟོད་འགྲེལ་ཡང་ཇི་སྙེད་ཅིག་མཛད་ཡོད།

རྒྱལ་བ་སྐུ་ཕྲེང་ལྔ་པ་ངག་དབང་བློ་བཟང་རྒྱ་མཚོས་ “ཕྱོགས་བཅུ་བདེ་གཤེགས་བྱང་སེམས་སློབ་མི་སློབ་ཀྱི་དགེ་འདུན་དང་བཅས་པའི་བསྟོད་ཚོགས་དངོས་གྲུབ་རྒྱ་མཚོའི་གཏེར་མཛོད་” ཅེས་པར་“རྣམ་འདྲེན་ཐུབ་པའི་དབང་པོའི་བསྟོད་པ་བླ་ན་མེད་པ་བདུད་རྩིའི་སྙིང་པོ་”སོགས་བསྟོད་པ་ ༡༨ བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ “མཁས་ཤིང་གྲུབ་པའི་དབང་ཕྱུག་དམ་པ་རྣམས་གཙོ་བོར་གྱུར་པའི་བླ་མའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་རིམ་པ་” ཞེས་པ་

དེར་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཆོས་ཚན་འདྲ་མིན་ ༣༧༠ ལྷག་ཡོད། དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་ཀུན་བཟང་འཁོར་ལོ་བཅུ་ལྷག་བཀོད་ཡོད། དེ་དག་ལས་གཞན་པ་ "ཧེ་བཙུན་འཇམ་དཔལ་དབྱངས་ཀྱི་བསྟོད་པ་དཔྱུ་རའི་རྒྱུད་མངས་" དང་། ཆོས་སྐྱོང་རྒྱ་མཚོའི་བསྐང་བཤགས་བསྟོད་ཚོགས་སོགས་མཛད་ཡོད། རྒྱལ་མཆོག་སྐུ་ཕྲེང་བདུན་པ་བསྐལ་བཟང་རྒྱ་མཚོས་མཛད་པའི་ "བླ་མ་དང་སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་རྣམས་ལ་བསྟོད་ཅིང་གསོལ་བ་འདེབས་པ་དང་། དེ་དང་འབྲེལ་བའི་བརྟན་བཞུགས་ཀྱི་རིམ་པ་བཅས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བསྒྲིགས་པ་དགེ་ལེགས་ཉིན་མོར་བྱེད་པའི་སྣང་བ་" ཞེས་པ་དེར་ "འཕགས་པ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་ཅིང་གསོལ་བ་འདེབས་པ་ཕན་བདེའི་ཆར་འབེབས་" སོགས་ཆོས་ཚན་འདྲ་མིན་ ༣༧༠ ལ་ཉེ་བ་ཞིག་བཀོད་ཡོད། དེ་བཞིན་དུ་རྗེའི་གསུང་བསྟོད་ཆེན་བཞིའི་ཡ་རྒྱལ་འཇམ་དབྱངས་བསྟོད་ སྤྲིན་རྒྱ་མཚོའི་འགྲེལ་པ་སོགས་མཛད་ཡོད། ལྕང་སྐྱ་རོལ་པའི་རྡོ་རྗེས་རྗེའི་གསུང་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ་ "ལེགས་བཤད་ནོར་བུའི་བང་མཛོད་"སོགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཆོས་ཚན་ ༩ བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད།

ཛ་དཔལ་སྤྲུལ་ཆོས་ཀྱི་དབང་པོས་ "དམ་ཆོས་འདུལ་བའི་བསྟོད་པ་མེ་ཏོག་གི་སྙེད་ཚལ་" དང་། "སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་གི་གསང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་བསྔགས་པ་པདྨ་དཀར་པོའི་རྒྱན་འཕྲེང་" སོགས་མཛད་ཡོད། གཞུང་དེར་ལེའུ་བརྒྱད་ཡོད། སི་ཏུ་པཎ་ཆེན་ཆོས་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཀྱི་ "སྟོན་པ་ལ་མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་སོགས་བསྟོད་པ་སྣ་ཚོགས་"

ཞེས་པ་ཞིག་མཛད་ཡོད། དེར་བསྟོད་པ་ཇི་ཡོད་ཀྱི་སྐོར་ཕྱག་དཔེ་དངོས་སུ་ལག་ཏུ་མ་སོན་པས་བརྗོད་དཀའ།

ཀུན་མཁྱེན་འཇིགས་མེད་དབང་པོས་མཛད་པའི་ "བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་རིམ་པ་དོན་ལྡན་ཚངས་པའི་སྒྲ་དབྱངས་" ཞེས་པ་དེར་ "ཇེ་ཙོང་ཁ་པ་ལ་བསྟོད་པ་ངང་པའི་བུ་མོའི་འཕང་འགྲོའི་སྒྲ་དབྱངས་" ཞེས་སོགས་བསྟོད་པ་ ༣༠ ལྷག་མཛད་ཡོད། ཐུའུ་བཀན་བློ་བཟང་ཆོས་ཀྱི་ཉི་མས་ལྕང་སྐྱ་ཡེ་ཤེས་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མེའི་བསྟོད་པ་སོགས་བསྟོད་པ་ ༧ ལྷག་མཛད་ཡོད།

ཇེ་གུང་ཐང་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མེས་ "འཇམ་མགོན་རྒྱལ་བ་གཉིས་པ་ལ་བསྟན་པའི་སྙིང་པོ་གསལ་བར་མཛད་པའི་ཚུལ་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པའི་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མ་" དང་། དེའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་བཤད་པའི་དེ་ཉིད་སྣང་བ་དང་། ཇེ་བླ་མ་མངོན་པར་འཚང་རྒྱ་བའི་ཚུལ་དང་འབྲེལ་བར་བསྟོད་པ་ "རྣམ་དག་གངས་རི་མའི་འགྲེལ་པ་རྨད་བྱུང་བཀོད་པའི་འཇུག་ངོགས་" དང་། "སྟོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ལ་མ་བརྗོད་པར་བསྟོད་པ་སྒོ་མཐའ་ཡས་སོགས་བསྟོད་ཚོགས་གསོལ་འདེབས་ཀྱི་སྐོར་བྱིན་རླབས་གཏེར་གྱི་སྒོ་འབྱེད་" སོགས་མཛད་ཡོད། གཞུང་ཕྱི་མ་དེར་ཆོས་ཚན་རྒྱས་བསྡུས་ ༤༥ ཡོད། དེའི་ཁྲིད་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་ཟབ་མོའི་ལྟ་བ་སྟོན་ཚུལ་ལ་བརྟེན་པའི་བསྟོད་པ་ "དབུ་མའི་སྣང་བ་" ཞེས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེ་ནི་བརྗོད་བྱ་བཤད་ཚུལ་གྱི་ཆ་ནས་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་གཞུང་བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞིའི་བསྡུས་དོན་ཡིན་ཚུལ་བརྗོད་ཀྱང་མ་འཚམ་པ་མེད་པ་ཞིག་ཏུ་མངོན། དེ་དག་ལས་གཞན་པ་འཕགས་མཆོག་འཇམ་

དཔལ་དཀར་པོ་དང་། རྗེ་རིན་པོ་ཆེ་དང་། རྗེ་བཙུན་དཀོན་མཆོག་འཇིགས་མེད་དབང་པོ་སོགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་དང་བསྟོད་འགྲེལ་གྱི་གཞུང་ཁྱད་པར་ཅན་ ༡༣ ལྷག་མཛད་ཡོད། བསྟན་དར་ལྷ་རམས་པས་ "རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པའི་དཀའ་གནད་ལས་བརྩམས་པའི་དོན་འགྲེལ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ" དང་། མཁས་གྲུབ་རྗེས་མཛད་པའི་ "རྗེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་དད་པའི་རོལ་མཚོའི་"འགྲེལ་པ་སོགས་བསྟོད་པ་དང་བསྟོད་འགྲེལ་གྱི་གཞུང་ ༨ མཛད་ཡོད།

དུས་ཕྱིས་ཀྱི་མཁས་པ་ཙོ་ནེ་བླ་མ་རིན་པོ་ཆེ་བློ་བཟང་རྒྱ་མཚོ་སྤྲིན་གཙུག་ལག་ཆོས་ཀྱི་འདོད་འཇོའམ་བརྡ་སྤྲོད་ཀུན་བཤད་ཀྱི་མཚན་དུ་ "སྨྲ་བའི་སེངྒེ་ཚངས་སྲས་བཞད་པ་རྡོ་རྗེ་གྲགས་སྙན་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྡེ" ཞེས་པའི་མཚན་དོན་དང་མཐུན་པའི་མཁས་པ་དེས། རྗེའི་གསུང་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས་བརྩམས་ཏེ་སྤེལ་མར་བསྟོད་པ "དགོངས་དོན་ཟད་མེད་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་སྒོ་འཕར་རྒྱ་ཆེར་ཕྱེ་བ་རྫོགས་ལྡན་སྤྲིན་གྱི་སྒྲ་དབྱངས" ཞེས་བྱ་བ་སོགས་བསྟོད་པ་ ༡༥ ལྷག་མཛད་ཡོད།

འཇིགས་མེད་དམ་ཆོས་རྒྱ་མཚོས་ "བསྟོད་པ་འཇིགས་བྲལ་ངག་གི་སྙེ་མ" དང་། "ཐུགས་པར་བྱ་བའི་གནས་དམ་པ་ལ་མཆོག་ཏུ་བསྔགས་པ་ངོ་མཚར་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་འཁོར་ལོ་དབྱངས་ལྡན་འཕྲུལ་གྱི་རི་མོ" སོགས་བསྟོད་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་མཛད་ཡོད། རྗེ་བཙུན་ཤེས་རབ་རྒྱ་མཚོ་འཇམ་དཔལ་དགྱེས་པའི་བློ་གྲོས་ཀྱིས་ "རྗེ་རིན་པོ་ཆེའི་བསྟོད་པ་དད་པའི་དྲི་བསུང་འཐུལ་བའི་སྤྲོས་ཀྱི་རྫིང་བུ" སོགས་བསྟོད་པ་ ༡༠ ལྷག་མཛད་ཡོད།

དེ་ལྟར་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་བརྗོད་དོན་གྱི་འགང་དང་། སྙན་ཞིང་འཇེབས་པའི་ཚིག་རྒྱན་གྱི་ཉམས་དང་། རན་ཞིང་འཚམ་པའི་དཔེ་དོན་གྱི་འབྲེལ་གང་ཐད་ནས་ཚིག་སྦྱོར་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་བསྟོད་པ་བརྒྱང་གིས་མི་ལངས་པ་ཞིག་མཆིས་ཀྱང་། འདིར་བཀོད་པ་ནི་མཚོན་པ་ཙམ་ཡིན་ནོ། །

བཤད་པའི་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན་བསྟོད་ཡུལ་དང་བསྟོད་པ་མཛད་པ་པོ་གཉིས་ཀའི་ཆ་ནས་མཐོ་ས་སངས་རྒྱས་ནས་དམའ་ས་ལམ་མ་ཞུགས་ཀྱི་གང་ཟག་གི་བར་ཡོད། དེ་ཡང་རྒྱུད་ཀྱི་སྟོན་པ་རྡོ་རྗེ་འཆང་གིས་དཔལ་རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོར "དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ" ཅེས་བྱ་བ་མཛད་ཡོད། དེ་བཞིན་དུ་གསང་འདུས་རྩ་རྒྱུད་དུ་སྒྲུབ་ལུས་དང་འོད་གསལ་གྱི་བསྟོད་པ་མཛད་པ་སོགས་ཇེ་སྙེད་ཅིག་ཡོད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་མདོའི་སྟོན་པ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པས་གསེར་འོད་དམ་པའི་མདོར "འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱུང་བའི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ" སོགས་བསྟོད་པ་ཇེ་སྙེད་ཅིག་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སྒྲོལ་མ་ཉེར་གཅིག་གི་བསྟོད་པ་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པ་སོགས་མཛད་ཡོད། མདོ་དང་རྒྱུད་ཀྱི་སྟོན་པ་གཉིས་དོན་ལ་ངོ་བོ་གཅིག་ཀྱང་། ལྷག་དང་བཅས་པའི་བྱེད་ལས་དང་དགོས་དབང་ལ་ལྟོས་ནས་སོ་སོ་ནས་བརྗོད་པའི་སྐབས་ཀྱང་ཇེ་སྙེད་ཅིག་ཡོད། དེ་དག་ལ་ཡར་བསྟོད་པ་མཛད་པ་དང་། འཆང་རྒྱ་འགྱུར་གྱི་སྐྱེ་

འཕགས་ནང་ཕན་ཚུན་བསྟོད་པ་མཛད་ཚུལ་སོགས་ནི་མཐའ་ཡས་ཤིང་མང་དུ་སློས་ཟིན་པས་མ་སྤྲོས་སོ། །

སྐབས་འབྲེལ་གྱི་དེབ་འདིའི་ནང་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པའི་གཞུང་འདི་དག་གི་སྐོར་ལ་བསྟོད་པ་བཞི་ཀའི་ལེཊ་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་འདྲ་མིན་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་ནང་ཕན་ཚུན་དང་། བོད་དཔེའི་དབར་བཅས་ལ་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་ཀྱི་ལམ་ནས་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་ཞུས་ནས་བཀོད་ཡོད། "བསྟོད་པ་བཞི་པ" ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་ཇི་ལྟར་བྱུང་ཚུལ་དང་། དེ་གང་དུ་གསལ་ཚུལ་དང་། དེ་ལ་བརྟེན་པའི་དཔྱད་གཞི་ཆེ་བའི་དོགས་གནས་དང་། གཞུང་བཞིའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ཇི་ལྟར་རྙེད་ཚུལ་དང་། དེ་དག་གི་ཐོག་མཁས་པ་གཞན་གྱིས་ཕྱག་ལས་ཇི་གནང་དང་། རྒྱ་བོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་ཡོད་མེད་ཀྱི་གསལ་བཤད་དང་། བོད་འགྱུར་ཐར་མ་གང་ལ་གཞི་བཅོལ་ནས་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་བྱས་མིན་དང་། གཞུང་དེ་དག་གི་བསྡུས་དོན་ཇི་ལྟར་རྩོམ་ཚུལ་ལ་བརྟེན་པའི་གལ་ཆེའི་འགྲེལ་བརྗོད་དང་། བསྡུས་དོན་དངོས་ཀྱི་སྐོར་བཅས་ཞིབ་ཅིང་རྒྱས་པ་དེབ་འདིའི་གླེང་བརྗོད་དུ་བཀོད་ཡོད། །

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཀའ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་དང་། དེ་དག་གི་དགོངས་འགྲེལ་རྣམས་སུ་གསལ་བའི་བསྟོད་ཚོགས་རྒྱས་པ་ཞིག་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཤར་དུ་ཐོན་མ་ཐོན་ཅི་རིགས་ཀྱི་བསྟོད་ཚོགས་གང་རྒྱས་ཤིག་ཀྱང་བཀོད་ཡོད། གཞུང་འདི་དག་གི་མཛད་པ་པོ་དང་འབྲེལ་ཆེ་བའི་དགོས་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་བོད་པའི་མཁས་

པས་མཛད་པའི་སློབ་དཔོན་གྱི་བསྒྲེད་པ་ཁག་གཉིས་བཀོད་ཡོད། དེང་དུས་ཀྱི་རྒྱ་གར་བའི་མཁས་པ་ཞིག་གིས་བསྒྲེད་པ་བཞི་ཉམས་གསོ་བགྱིས་པ་དེའི་ནང་ "དོན་དམ་པར་བསྒྲེད་པའི་" ཚབ་ལ་ "བསྒྲེད་པ་ལས་འདས་པར་བསྒྲེད་པ་" ཞེས་པ་དེ་བཀོད་ཡོད་པས། དེ་བརྗོད་བྱ་བསྟན་ཚུལ་གྱི་ཆ་ནས་བསྒྲེད་པ་གཞན་གསུམ་དང་མཐུན་ཚབ་ཆེ་བའི་དགོས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་ཡོད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཉམས་གསོ་བྱས་པའི་རྒྱ་དཔེ་དེ་བོད་དཔེ་དང་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་ཀྱིས་ལེགས་བཅོས་བྱས་ནས་འདིར་ལྷན་དུ་བཀོད་ཡོད། །

ནང་པའི་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་གྱི་མ་ཕྱི་རྒྱ་དཔེ་ཉམ་བརླགས་སུ་ཕྱིན་པ་རྣམས་ལ་ཉམ་གསོ་ཕབ་བསྒྱུར་དང་། འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་སོགས་ཀྱི་གལ་ཆེའི་ལས་དོན་འདི་དག་གི་ཆེད་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངེས་སྔོན་ཟུར་པ་སྐྱབས་རྗེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གིས་དགོངས་ཡངས་དཀྱིལ་ཆེའི་སྒོ་ནས་ལས་འགུལ་གོ་སྐབས་གསར་འཛུགས་དང་འབྲེལ་ལམ་སྔོན་རྒྱ་ཆེ་བཀྲིན་མཛད་ཡོད་དོན་ལྟར་གྱི་ལམ་སྲོལ་བཟང་པོ་འདི་དག་ཉམ་མེད་གོང་འཕེལ་གྱི་ཚུལ་དུ་ད་ལྟའི་ངེས་སྔོན་ལས་ཐོགས་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་མཆོག་ནས་རྒྱུན་བསྐྱོང་མཛད་མུས་སུ་ཡོད་པ་བཅས་པ་བཀྲིན་རྗེས་དྲན་དང་འབྲེལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་དང་།

ལྷག་པར་དུ་གཞུང་འདི་ཕབ་བསྒྱུར་དང་བསྐྱར་ཞིབ་དག་ཞུས་སོགས་ཀྱི་ལས་དོན་མང་པོའི་ཐོག་མཁས་པའི་དབང་པོ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་པདྨ་ནྜམ་

ཤཱནྟར་རཀྵི་ཏའི་མཆོག་ནས་ཐུགས་ཁུར་ཆེ་བཞེས་ཀྱིས་གཟིགས་རྟོགས་ལམ་སྟོན་རྒྱ་ཆེ་གནང་བར་སྙིང་ཐག་པ་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་རྒྱ་གཞུང་གི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཐུབ་བསྟན་མཆོག་སྒྲུབ་ལགས་ནས་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་ཀྱི་ལས་དོན་ལ་སྨན་པའི་སྐད་དུ་བསྟོད་པ་བཞིའི་ནང་ཚན་ "དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་"དང་། "དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་" གཉིས་ཀྱི་རྒྱ་དཔེ་པར་མ་དབྱིན་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་བ་ཞིག་ནུབ་གླིང་ཨི་ཊ་ལི་ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད་པ་བཞིན་དེའི་མ་དཔེ་མཁོ་འདོན་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

དེ་བཞིན་དུ་ཆེས་དཀོན་པའི་ནང་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་ལས་བྱེད་སྐུ་ཞབས་ཌོཀཊར་ཋཱ་ཀུར་སེནནེགི་ལགས་ནས་གཞུང་འདི་དག་གི་ལེཊ་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་ལག་བྲིས་ཡིག་རྙིང་ཁག་གི་མ་དཔེ་འཚོལ་ཞིབ་མཁོ་འདོན་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་པའི་བསྟོད་པ་ཁག་གི་སྐོར་རྒྱུས་མངའ་ལམ་སྟོན་སོགས་གནང་བར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

མདོར་ན་ལས་དོན་འདི་དག་གི་ཆེད་པར་བསྐྱར་སྡེ་ཚན་གྱི་མཛད་འགན་བཞེས་མི་དང་། པར་རྩ་འཕྲུལ་པར་ནང་འདེབས་འཛུགས་གནང་མཁན་དང་། དག་ཞུས་གནང་མཁན་སོགས་འབྲེལ་ཡོགས་ཚང་མར་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་བ་དང་ ཆབས་ཅིག ལས་དོན་འདི་དག་གི་ཐོག་ལ་རང་གི་ཤེས་འབྱོན་ལ་གཞིགས་པའི་ནོ་ཁུར་ཟབ་ནན་ཅི་ཆེ་བྱེད་ཁུལ་ལགས་ཀྱང་། འགལ་འཛོལ་ནོངས་པའི་ཆོགས་

མཆིས་ཆེ་མཁྱེན་ལྡན་རྣམས་ལ་བཟོད་གསོལ་ཞུ་རྒྱུ་དང་། རྣམ་དཀར་གྱི་བྱ་བ་འདི་དག་ལ་བརྟེན་ནས་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་གང་བསགས་པ་རྣམས་བླ་མེད་རྫོགས་བྱང་གི་རྒྱུར་བསྔོ་བ་དང་བཅས། བོད་རྒྱལ་ལོ་ ༢༡༣༨ རབ་བྱུང་བཅུ་བདུན་པའི་ནང་ཚན་ ‘ཁྲུ་མཆོག་’ཅེས་པ་ལྕགས་མོ་སྦྲུལ་ལོའི་སྨིན་དྲུག་ཟླ་བའི་དམར་ཕྱོགས་རྫོགས་པ་གཉིས་པ་འཇམ་མགོན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཙོང་ཁ་པ་ཆེན་པོ་མཆོག་སྐུ་ཞི་བར་གཤེགས་པ་དང་། བར་དོར་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྒྱུ་མའི་སྐུ་བརྙེས་པ་བཅས་ཀྱི་དུས་ཆེན་ཁྱད་པར་ཅན་ལ་རྫོགས་པར་བྱས་སོ།། །།

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ་- ༢༥༤༥ — རྒྱལ་མཚན་རྣམ་གྲོལ།

བོད་རྒྱལ་ལོ་- ༢༡༣༨ — (ཞྭ་ཚ་མགོ་སློབ།)

༄ ཀླུ་སྒྲུབ་ཀླུ་ཡི་དབང་པོའི་རོལ་གནས་ལས།།
ཟླ་གྲོལ་ཟླ་བའི་ལེགས་བཤད་བདུད་རྩིའི་རྒྱུས།།
གཉིས་མེད་གཉིས་སུ་སྣང་བའི་བདེན་དོན་ཟུང་།།
མ་ནོར་མ་འདྲེས་འབྱེད་པའི་སྤོབས་པ་བརྙེས།།

སྣང་བ་ཙམ་གྱི་ཐ་སྙད་མི་ཡོང་ལ།།
གཞི་ལམ་འབྲས་བུའི་བྱི་དོར་བྱ་བྱེད་ཀུན།།
བསྟོན་མེད་འཆར་བའི་ངོ་མཚར་གཟིགས་མོ་ཡིས།།
བློ་ལྡན་སྨིག་མོའི་དགོས་དོན་ཅི་ཡང་འགྲུབ།།
(རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་འཇམ་མགོན་རྒྱལ་བའི་བསྟོད་པ། པོད། 'ཇ' ༡༠༩)

རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་སྟོང་བཞིན་བརྟེན་ནས་འབྱུང་།།
ཀུན་རྫོབ་འཕྲུལ་སྣང་སྣང་བཞིན་གཞི་རྩས་དབེན།།
སྣང་སྟོང་མི་འགལ་འགལ་མེད་གྲོགས་ཉིད་དུ།།
འཆར་བའི་ངང་ཚུལ་ཚུལ་འདིའི་གླིང་གཞི་ཡིན།།

རྟེན་ཞེས་ཆོས་ཉིད་མི་འདོར་ལ།།
འབྱུང་ཞེས་འཇིག་རྟེན་ཚུལ་ཡང་མཐུན།།
རིགས་ཚུལ་ཀུན་ལས་རྒྱལ་པོ་བཞིན།།
རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་ཚད་མའི་བཀའ།།
(ཚངས་སྲས་བཞད་པ་རྡོ་རྗེའི་གསུང་། དཔེ་རིང་། ३, ८)

प्राक्कथन

कुशलोत्साह और श्रद्धा के साथ पूजा, स्तुति एवं आदर के अत्युत्तम और निरुत्तर क्षेत्र जिन वज्रधर हैं, जो दशबल, चतुर्वैशारद्य आदि परमाद्भुत गुणों से अन्वित हैं। उन जिन वज्रधर से अभिन्न गुरु, इष्टदेव एवं अन्य बुद्ध-बोधिसत्त्व आदि अतिविशिष्ट स्तुति-क्षेत्र हैं। इन सबकी स्तुति एवं सत्कार करने वालों में समस्त सत्त्वों के उन्नायक, प्रामाणिक शास्ता भगवान् बुद्ध भी हैं और उनसे लेकर अन्य बोधिसत्त्व, अर्हत्, आर्यश्रावक, दो महारथी (आचार्य नागार्जुन एवं असंग), आर्यदेश के महापण्डित एवं साधक जो इस आर्यदेश में सुवर्णपर्वतों के समान देदीप्यमान हैं, वे सब स्तुतिकर्ताओं में भी सम्मिलित हैं। साथ ही, हिमवत् भोट देश के गणनातीत महापुरुषों, सिद्धों और पण्डितों के द्वारा भी उपर्युक्त उत्तम शरणक्षेत्रों के अपरिमित गुणों और अचिन्त्य कार्यों के प्रति विपुल अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर प्रामाणिक दृढ़ निश्चय के साथ अद्भुत स्तुतियाँ एवं सत्कार आदि किये गये हैं।

चार प्रतिसंविदों (धर्म, अर्थ, निरुक्ति एवं प्रतिभान) से युक्त उन स्तुतिकर्ताओं की रचना-शैली भी अत्युत्तम गुणों से परिपूर्ण है। उन स्तुतियों में परम गम्भीर एवं उदार अभिधेयों का मार्मिक निरूपण है तथा मधुर एवं मनोरम शब्दालंकारों और चमत्कारिक अर्थालंकारों, सटीक उपमाओं का सन्निवेश है। अर्थ के साथ उनका सम्बन्ध आदि भी हर प्रकार से सुनिश्चित एवं वाक्पाटव आदि गुणों की श्री से समन्वित है। इस विशिष्ट रचना-शैली के माध्यम से शतसहस्र पत्रों में निर्मित स्तोत्रगण की मालाओं का सम्पूर्ण दशदिक् लोक में फैलाव है। अतः इन समस्त स्तोत्रों पर प्रकाश डालना और उन्हें संगृहीत करना साधारण पृथग्जनों की बुद्धि के विषयक्षेत्र से अतीत (परे) है।

फिर भी वर्तमान लोकधातु में बौद्ध और बौद्धेतर विद्वानों द्वारा रचित गणनातीत स्तोत्रों की विशाल राशि के विद्यमान होने में तो कहना ही क्या है। विशेषतः बौद्धों में भी बुद्धवचनों, उनकी आभिप्रायिक टीकाओं एवं सुङ्बुम आदि शास्त्रों में अनगिनत स्तोत्र विद्यमान हैं। इन सबकी संकलित सूची बनाना और उनका विवरण सहित परिचय देना भी सरल कार्य नहीं है। अतः यहाँ सम्बद्ध कार्यक्षेत्र की दृष्टि से भारत में उद्गत और आर्यदेश के बौद्ध विद्वानों द्वारा रचित स्तोत्रों के बारे में स्थूल रूप से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इसमें भाषा की दृष्टि से मूल प्रति का संस्कृत और भोट दोनों भाषाओं में होना, भोट-अनुवाद उपलब्ध होने पर भी संस्कृत मूल का लुप्त हो जाना, संस्कृत में उपलब्ध होने पर भी भोटभाषा में उसका अनुवाद न होना—इस तरह तीन प्रकारों में स्तोत्रों का विभाजन किया जा सकता है। इन्हें आधार बनाकर बाद में हिन्दी, अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं में अनुवाद, सम्पादन आदि अनेकविध कार्य सम्पन्न हुए हैं।

सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में विरचित बौद्ध स्तोत्रों के बारे में वे इस समय मूल संस्कृत में उपलब्ध है या नहीं? ऐसा परीक्षण करते समय या निर्णय लेते समय किसी देशविशेष या कालविशेष में उपलब्ध न होने या दिखाई नहीं पड़ने मात्र को आधार बनाकर निर्णय लेना उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि हजारों वर्ष पूर्व में रचित संस्कृत के अनेक ग्रन्थ हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं, जो निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं। विशेषत: अंग्रेजी राज्य के समय और बाद में भी बाहरी और भारतीय अनेक अनुसन्धान कर्ताओं ने इस तरह की अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की भारत और नेपाल आदि स्थानों से खोज की। तदनन्तर उन्हें भारत, इग्लैंड, फ्रांस, जापान, अमेरिका, जर्मन, रूस, इटली आदि देशों में स्थापित कर न केवल उनका संरक्षण किया, अपितु सम्पादन, अनुवाद आदि उन पर अनेकविध कार्य करके उनका प्रकाशन भी किया। साथ ही, इन हस्तलिखित प्रतिलिपियों की परिचयात्मक सूची (Catalogue) भी प्रकाशित की। कुल मिलाकर आर्यदेश की यह सारगर्भित संस्कृतमयी सांस्कृतिक निधि विश्व में सर्वत्र फैली हुई है। अनेक स्तोत्रों की संकलित संस्कृत पाण्डुलिपियों के विषय में निम्न विवरण ज्ञातव्य है।

(१) नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखागार से प्राप्त 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' अत्यन्त प्राचीन हस्तलिखित प्रतिलिपि के रूप में उपलब्ध है, जिसकी २०० पृष्ठों की प्रतिलिपि से लेकर १६ पृष्ठों की प्रतिलिपि तक कुल विभिन्न प्रकार की २० प्रतिलिपियाँ उपलब्ध होती हैं। इनमें सबसे विस्तृत प्रतिलिपि में लगभग १७६ भिन्न-भिन्न स्तोत्र विद्यमान हैं। इन स्तोत्रों में ६२ को छोड़कर शेष में रचयिता के नाम का उल्लेख ही नहीं किया गया है। इसके अन्तर्गत अधिकांश स्तोत्र पूर्ण हैं—इसका स्पष्ट उल्लेख 'धी:' पत्रिका के प्रथम अङ्क में किया गया है।

(२) 'धी:' पत्रिका के द्वितीय अङ्क में प्रकाशित, पूर्वोक्त राष्ट्रिय अभिलेखागार से प्राप्त 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' में ३८ स्तोत्र संकलित हैं और इनमें से केवल ६ स्तोत्रों पर ही रचयिता के नाम का उल्लेख है।

(३) 'नामसंगीतिस्तोत्रसंग्रह' में ५८ स्तोत्र संकलित हैं तथा उनमें से केवल १४ स्तोत्रों पर ही रचयिता के नाम का उल्लेख है।

(४) 'धारण्यादिसंग्रह' में सामान्यतया ३७१ ग्रन्थों का नामोल्लेख है। इनमें केवल ४८ ही स्तोत्र हैं। इनमें केवल छह स्तोत्रों के रचयिताओं के नाम का उल्लेख है।

(५) 'धी:' पत्रिका के १०वें और ११वें इन दो अङ्कों में तथा अलग से दो भागों में प्रकाशित 'दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों की आधार सामग्री' में दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों की विस्तृत सूची दी गई है। इनके अन्तर्गत संस्कृत में प्राप्त बौद्ध स्तोत्र और तत्सम्बन्धित ४४० ग्रन्थों की सूची दी गई है। इस सूची में प्रत्येक स्तोत्र का नाम, आधार पाण्डुलिपि का स्पष्टीकरण, पृष्ठ संख्या, पूर्ण या अपूर्ण का विवरण, पाण्डुलिपि की स्थिति, लिपि का परिचय और संस्थान के ग्रन्थालय में प्राप्त है या अप्राप्त है—इन सबका विवरण दिया गया है।

इन स्तोत्रों की सूची के अन्तर्गत भी अनेक ग्रन्थ ऐसे हैं, जिनमें अनेक स्तोत्र संगृहीत हैं, यथा—(१) गीत-स्तोत्रादिसंग्रह, पत्र ६५, नेपाल से प्राप्त (RAK)[1] (२) पञ्चशतस्तोत्रसंग्रह, पत्र १००, अमेरिका से प्राप्त (IASWR)[2] और जापान से प्राप्त (SMTUL)[3] (३) पीठस्तव एवं अन्य स्तोत्र, पत्र २०२, जापान से प्राप्त (MCBMDLJ)[4] (४) पूजास्तोत्रसंग्रह, पत्र ७, नेपाल से प्राप्त (RAK)[5] (५) वसुन्धरास्तोत्रादिसंग्रह, पत्र ६ नेपाल से प्राप्त (RAK)[6] (६) बौद्धस्तोत्र संग्रह, पत्र ४१, नेपाल से प्राप्त (RAK)[7] (७) बौद्धस्तोत्रसंग्रह, पत्र ३८४, फ्रांस से प्राप्त (CABATON)[8]।

उक्त पाण्डुलिपियों के अनेक संग्रह माइक्रोफिल्म (Micro-film) के रूप में केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ में भी प्राप्त हो चुके हैं। फिर

1. Rāṣtriya Abhilekhālaya, Kathmandu, Nepal.
2. Buddhist Sanskrit Manuscripts, Microfilm Collection belonging to the Institute For Advance Studies of World Religion, USA.
3. A Catalogue of Sanskrit Manuscrits in the Tokyo University Library, Tokyo, Japan 1965.
4. Microfilm Catalogue of Buddhist Manuscripts in Nepal, Vol. I, 1981 by Hidenobu Takaoka belonging to the Buddhist Library, Japan.
5. Rāṣtriya Abhilekhālaya, Kathmandu, Nepal.
6. Ibid.
7. Ibid.
8. Catalogue Sommaire des Manuscrits Sanscrits et Palis de la Bibliotheque Nationale, Par A. Cabaton, Ier Facicule. Manuscripts Sanscrits, Paris 1907.

भी यहाँ प्राप्त वे अधिकांश पाण्डुलिपियाँ प्राचीन लिपि में हस्तलिखित रूप में हैं, इसलिए तदन्तर्गत स्तोत्रों की संख्या, भोटानुवादों की संख्या और परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना आदि यद्यपि आवश्यक कार्य हैं, किन्तु ऐसा करना पर्याप्त कठिन प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड, जापान, अमेरिका आदि में उपलब्ध और यहाँ सूची मात्र के रूप में उपलब्ध स्तोत्रों के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में तो कहना ही क्या है। अर्थात् कथमपि सम्भव नहीं है।

पूर्वोक्त स्तोत्र-संग्रहों में विद्यमान स्तोत्रों की जो संख्या दी गई है, वह उन सभी स्तोत्रों की परस्पर तुलनात्मक समीक्षा करके एवं स्थूल रूप से पुनः पुनः आवृत्त स्तोत्रों को तथा (स्तोत्रों से) असम्बद्ध कुछ ग्रन्थों को हटाकर निर्धारित की गई है। वह भी यदि मोटे तौर पर गिना जाय तो 'धीः' पत्रिका के द्वितीय अङ्क में लगभग २८२ स्तोत्र हैं तथा उसी पत्रिका के १० और १२ इन दो अङ्कों में २९२ स्तोत्र विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त अन्य अङ्कों में भी ४१ स्तोत्र उपलब्ध हैं। इस तरह कुल मिलाकर आज तक हमें प्राप्त प्राचीन लिपियों में हस्तलिखित स्तोत्रों की संख्या ६१५ के करीब है।

यहाँ उल्लिखित संख्या अतिस्थूल रूप में कही गई है। एकदम निश्चित संख्या निर्धारित करना सम्भव नहीं है, क्योंकि उसके अनेक कारण हैं, यथा—अनेक स्तोत्र ऐसे हैं, जिनके स्तुत्य विषय, स्तोत्र नाम समान होने पर भी रचयिता के नाम का अनुपलब्ध होना, अनेक स्तोत्रों का सूची के अलावा मूलग्रन्थ उपलब्ध न होना, मूल ग्रन्थ उपलब्ध होने पर भी पाण्डुलिपि का अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण, अस्पष्ट एवं अपूर्ण होना आदि। इन सब कारणों की वज़ह से निश्चित संख्या निर्धारित करना अत्यन्त दुरूह कार्य है।

हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपियों का परिचय देने के पश्चात् अब हम प्रकाशित स्तोत्रों के बारे में अपने विचार प्रकट करना चाहते हैं।

(१) पं० श्री जनार्दन शास्त्री पाण्डेय द्वारा संकलित एवं १९९४ में प्रकाशित 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' में विभिन्न प्रकार के १०८ स्तोत्र विद्यमान हैं। इनमें केवल ३१ स्तोत्रों के रचयिताओं का ही नामोल्लेख है। अधिकतर स्तोत्र तन्त्र से सम्बद्ध हैं तथा अधिकांश भोट भाषा में अनूदित भी नहीं हैं। इन स्तोत्रों के अन्तर्गत पाँच स्तोत्र ऐसे भी हैं, जिनमें भगवान् शाक्य सिंह की ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि के द्वारा स्तुति की गई है। यह एक प्रशंसनीय और अनुकरणीय विधान है,

क्योंकि भगवान् बुद्ध को स्तुत्य क्षेत्र (स्तुतियोग्य व्यक्ति) मान कर स्तुति की गई है। पुनश्च, इस 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' में ऐसे ग्रन्थ भी सम्मिलित कर लिये गये हैं, जो वस्तुतः स्तोत्र नहीं हैं, यथा—'आर्यभद्रचरीप्रणिधान' आदि। इसके अतिरिक्त इसमें कुछ स्तोत्र ऐसे भी हैं, जिनमें अंशतः बौद्धेतर देवों की स्तुति भी मिश्रित है—ऐसा हमें प्रतीत होता है।

(२) नेपाल से एक 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' प्रकाशित है, जो मुख्यतः पूजा-पाठ आदि के लिए ही प्रकाशित है। इस ग्रन्थ में स्तोत्र, धारणी, प्रणिधान आदि अनेकविध विषय सम्मिलित हैं। उक्त ग्रन्थ की विषयसूची में जो ४४ प्रतिपाद्य विषय उल्लिखित हैं, उनमें स्तोत्र तो केवल २४ ही उपलब्ध होते हैं। उनमें भी ४ (चार) स्तोत्र तो बौद्धेतर देवों से सम्बन्धित प्रतीत होते हैं।

(३) इस संस्थान के 'दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग' द्वारा प्रकाशित 'धी:' पत्रिका के अङ्क १ से लेकर ३१ अङ्कों तक ५१ बौद्ध स्तोत्रों का प्रकाशन किया गया है। प्रत्येक अङ्क के प्रारम्भ में दो स्तोत्र प्रकाशित किये गये हैं। २० से २६ अङ्क तक महाकवि आचार्य मातृचेट निर्मित 'वर्णार्हवर्णभगवतो बुद्धस्य स्तोत्रम्' इस एक स्तोत्र के १२ परिच्छेदों को क्रमशः प्रकाशित किया गया है। इन 'धी:' पत्रिका के अङ्कों में भी १७ स्तोत्रों को छोड़कर शेष स्तोत्रों के रचयिताओं का उल्लेख नहीं है।

इस प्रकार प्रकाशित और अप्रकाशित तथा प्रकाशितों की भी परस्पर तुलनात्मक समीक्षा करके द्विरावृत्त, त्रिरावृत्त रूप में प्राप्त स्तोत्रों में से एक को संगृहीत कर और शेष को छोड़कर कुल मिलाकर अनुमानित (लगभग) ७०५ स्तोत्र विद्यमान हैं। यह संख्या भी स्थूल रूप में ही समझना चाहिए, न कि यह सुनिश्चित और सुनिर्धारित है।

यहाँ उपरिवर्णित स्तोत्रों की संख्या में और इस ग्रन्थ के परिशिष्टों में प्रदत्त स्तोत्रों की संख्या में जो अन्तर होता है, उसका कारण यह है कि प्रकाशित स्तोत्रों की तालिका अलग से दी गई है, इसलिए परिशिष्ट में उल्लिखित हस्तलिखित स्तोत्रों में से अनेक प्रकाशित स्तोत्रों को हटा दिया गया है। इसी प्रकार जो अनेक 'स्तोत्रसंग्रह' ग्रन्थ हैं, वे सब परिशिष्ट में नहीं दिये गये हैं। इन सब कारणों से संख्या में अन्तर हुआ है। परिशिष्ट में अप्रकाशित हस्तलिखित

स्तोत्र और प्रकाशित स्तोत्र इस प्रकार दो वर्गों में विभाजन करके प्रकाशन किया गया है।

अब भोट भाषा में अनूदित एवं कंग्युर और तनग्युर संग्रहों में प्राप्त स्तोत्रों के बारे में प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। वैसे तो स्तोत्रों के खोजने का आधार क्षेत्र काग्युर (बुद्धवचन) एवं तनग्युर (अर्थात् उन वचनों के अर्थप्रकाशक शास्त्र) ये दो ही हैं। इन दोनों में से प्रत्येक के सूत्रपक्ष और तन्त्रपक्ष ये दो भेद हैं। प्रथम काग्युर के सूत्र और तन्त्र दोनों पक्षों में स्तोत्रविषयक स्वतन्त्र ग्रन्थ भी हैं और परिच्छेदों के अन्तर्गत पठित स्तुति—इस तरह दो प्रकार के स्तोत्र हैं।

तन्युर में परिगणित स्तोत्र के विषय में यह ज्ञातव्य है कि सामान्यतया सभी तनग्युर-संस्करणों के प्रारम्भ में एक स्तोत्रगण अलग से दिया हुआ है, किन्तु उनमें केवल सूत्र से सम्बद्ध स्तोत्र ही दिये गये हैं, न कि तन्त्र से सम्बन्धित। इसलिए वे स्तोत्रगण एकपक्षीय ही रहे हैं। इसलिए यहाँ यथासम्भव इन दोनों में से स्तोत्रों की खोजबीन कर एक विस्तृत स्तोत्रसूची ग्रन्थ के परिशिष्ट में देने का प्रयास किया गया है।

संक्षेप में काग्युर-संग्रह में सूत्र और तन्त्र दोनों पक्षों से सम्बन्धित ६५ स्तोत्र हैं। तनग्युर-संग्रह में १९४ स्तोत्र हैं और तनग्युर-संग्रह के सम्पूरक में ५६ स्तोत्र हैं। अतः कुल मिलाकर लगभग ३१५ स्तोत्र उपलब्ध होते हैं। इन सबका वर्गीकरण, नामसूची, पृष्ठसंख्या आदि का विवरण इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में दो भाषाओं (संस्कृत और भोट) में दिया गया है।

वैसे तो भोट भाषा में प्राप्त तमाम संस्करणों की स्तोत्रसूची में दिये हुए स्तोत्रों की संख्या में, संस्कृत में प्राप्त स्तोत्रगणों में तथा संस्कृत में प्राप्त और भोट भाषा में अनूदित—इन सभी में परस्पर तुलनात्मक समीक्षण आदि कार्य करने की आवश्यकता है। उसी प्रकार समस्त स्तोत्रों में से प्रत्येक स्तोत्र का परिचय, संस्कृत में उपलब्ध होना, न होना आदि विश्लेषण करने का प्रयोजन भी है और आवश्यकता भी है, किन्तु समय के अभाव और आवश्यक सामग्री की अल्पता के कारण पूर्णतया प्रकाश डालना सम्भव नहीं हो सका, फिर भी विशिष्ट स्थलों में अनेक स्तोत्रों पर अपेक्षित विवरण पाद-टिप्पणी में दिये गये हैं।

सामान्यतया काग्युर और तनग्युर संग्रहों में अनेक स्तोत्र ऐसे भी हैं, जो स्वतन्त्र ग्रन्थ और परिच्छेद के अन्तर्गत न होने पर भी ग्रन्थ के भीतर सम्बद्ध

विषय के साथ देखने को मिलते हैं, जैसे गुह्यसमाजतन्त्र के १७वें परिच्छेद के प्रारम्भ में "**अक्षोभ्यवज्र महाज्ञान वज्रधातु महाबुध।**" (पृ० १०३) इत्यादि के द्वारा पञ्च तथागतों की स्तुति की गई है। इसी तरह दुर्गतिपरिशोधनतन्त्र में "**नमस्ते शाक्यसिंहाय धर्मचक्रप्रवर्तक।**" इत्यादि के रूप में शाक्यसिंहस्तोत्र दिया गया है। आचार्य नागार्जुन विरचित पञ्चक्रम के तृतीय स्वाधिष्ठान परिच्छेद के अन्तर्गत "**शौषीर्यं नास्ति ते काये मांसास्थिरुधिरं न च।**" इत्यादि द्वारा मायाकाय की स्तुति उपलब्ध होती है। इस तरह अनेक स्तोत्र उपलब्ध होते हैं, किन्तु विस्तार के भय से उनका निरूपण नहीं किया गया है।

अपि च, इस प्रकार स्तुति रचना के गद्य, पद्य एवं मिश्रक ये तीन प्रकार उपलब्ध होते हैं। पद्य में दण्डक छन्द के रूप में एक ही चरण में सैकड़ों अक्षरों से अन्वित अति लम्बायमान श्लोक रचे गये हैं। कलिङ्ग-राजा के गुरु महाविद्वान् त्रिपिटकाचार्य साधुकीर्ति ने 'श्रीकालचक्रदण्डकस्तुति' नामक स्तोत्र की रचना की है। इसी प्रकार न्यायपरमेश्वर आचार्य धर्मकीर्ति ने "श्रीवज्रडाकस्तोत्रदण्डक" नामक स्तोत्र की रचना की है। आचार्य अश्वघोष द्वारा अनेक परिच्छेदों से युक्त 'शतपञ्चाशतकस्तोत्र' की तथा आचार्य अश्वघोष और आचार्य दिङ्नाग द्वारा 'मिश्रकस्तोत्र' आदि की रचना की गई है। इनमें दस से अधिक परिच्छेद हैं। मूल और वृत्ति के साथ 'त्रिकायस्तोत्र', 'विशेषस्तव', 'देवातिशयस्तुति' आदि अनेक स्तोत्र हैं। फिर भी सबसे अधिक स्तोत्रों की रचना किसने की है और किस देवता की स्तुति अधिक है? इन सबके बारे में प्रकाश डालना विस्तार के भय से छोड़ा जा रहा है।

हिमवान् भोट-देश के विद्वानों ने भी स्तुति विषयक अनेक स्तोत्र ग्रन्थ लिखे हैं। उन सबका यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है। फिर भी अतिसंक्षेप में प्रमुख विद्वानों के कार्यों पर यहाँ प्रकाश डालना अनुचित नहीं होगा। उदाहरणार्थ महापण्डित आचार्य चोंखापा लोसङ् डगपा (सुमतिकीर्ति) ने 'प्रतीत्यसमुत्पाद-स्तुतिसुभाषितहृदय' नामक स्तुतिराज आदि "महास्तोत्रचतुष्टय" सहित ५० अद्भुत स्तोत्रों की रचना की है। आचार्य खे-डुब-गेलेग-पालसङ् ने अपने गुरु महापण्डित चोंखापा जी की स्तुति, गुह्यसमाज मण्डल के ३२ देवताओं की स्तुति आदि लगभग २० स्तोत्र लिखे हैं। साक्या-डोगोन-छोस्-ग्यल-फगपा ने 'गुरुसामान्यस्तुति' तथा पुत्र सहित पिता राजा द्वारा स्तूप का निर्माण करते समय

१३७९ अक्षरों वाले दण्डकस्तोत्र सहित लगभग ४३ से अधिक स्तोत्रों की रचना की है।

प्रथम दलाई लामा जे-गेदुन-डुब ने ६०० सौ से अधिक अक्षर वाले दो दण्डक स्तोत्रों की प्रणिधान के साथ रचना की है। उसी प्रकार एकोत्तरिकास्तव, समन्तभद्रचक्र आदि २५ से अधिक स्तोत्रों को भी उन्होंने रचा है। द्वितीय दलाई लामा जे-गेदुन-ग्या-छो ने 'बुद्धबोधिसत्त्व स्तोत्रगण' नामक ३४ पन्ने के ग्रन्थ को रचा है। इसके अतिरिक्त आचार्य चोङ्खापा विरचित प्रतीत्यसमुत्पादस्तुति की टीका आदि कतिपय स्तोत्र वृत्तियाँ भी लिखी हैं।

पञ्चम दलाई लामा जी ने 'दश दिक्तथागतशैक्षाशैक्षबोधिसत्त्वसंघस्तुति-विषयक सिद्धिसागरनिधिकोश' नामक स्तोत्रगण तथा 'प्राज्ञसिद्धेश्वरप्रमुख-सद्गुरुस्तोत्रगण'—इन दो स्तोत्रग्रन्थों की रचना की है। इनमें से प्रथम ग्रन्थ में १८ तथा दूसरे ग्रन्थ में २६० इस तरह २७८ स्तोत्र संगृहीत हैं। इनके भीतर १० से भी अधिक 'समन्तभद्रचक्र' नामक अद्भुत रचनाएँ भी सम्मिलित हैं।

सातवें दलाई लामा कलसङ्-ग्याछो ने 'शुभभास्कराभास' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें गुरु, बुद्ध, बोधिसत्त्व आदि के स्तोत्र, प्रार्थना आदि को विषय बनाने वाले ३६० से भी अधिक लघुग्रन्थ संकलित हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने आचार्य चोंखापा विरचित 'मञ्जुश्रीमहास्तोत्र' की टीका भी लिखी है। चङ्क्या रोलपई दोर्जे ने 'प्रतीत्यसमुत्पादसुभाषितहृदय' की अद्भुत टीका 'सुभाषितमणिकोश' की रचना की है तथा अन्य अनेक स्तोत्र एवं तत्सम्बन्धित ९ ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

सन् १७६२ के बाद उत्पन्न महाविद्वान् 'गुङ्-थङ्-तनपई डोनमे' ने (बुद्ध) शासनहृदयप्रकाशक मञ्जुनाथ चोंखापा-विषयक 'सार्थकस्तुति' नामक स्तोत्र एवं उसकी विस्तृत स्ववृत्ति की रचना की है। इसके अतिरिक्त 'अधिष्ठाननिधिद्वारोद्घाटन' नामक ग्रन्थ लिखा है, जिसमें भगवान् तथागत की स्तुति आदि अनेक स्तुति एवं प्रार्थना आदि से सम्बन्धित ८५ ग्रन्थ संगृहीत हैं। इसमें आचार्य नागार्जुन द्वारा गम्भीर दर्शन के प्रतिपादन से सम्बन्धित स्तोत्र 'मध्यमकालोक' भी संकलित है। इस ग्रन्थ का प्रतिपाद्य अभिधेय तो प्रायः चतुः-स्तव का संक्षिप्त सारांश ही है—ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। हमें ऐसा

प्रतीत होता है। इनके अतिरिक्त १० से अधिक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्तोत्र और कतिपय स्तोत्रवृत्ति इनके द्वारा रचित हैं।

इन विद्वानों के अतिरिक्त तनदर-ल्हरमपा, द्गेशेस् शेस्-रब्-ग्याछो, चोने लामा लोसङ्-ग्याछो आदि अन्य विद्वान् प्रमुख हैं, जिन्होंने भी अद्भुत रचना-शैली से सम्पन्न अनेक स्तोत्रों एवं टीकाओं की रचना की है।

स्तुतियों के बारे में स्तुत्य (व्यक्ति) एवं स्तुतिकर्ता की दृष्टि से देखा जाए तो अत्युत्तम शास्ता बुद्ध से लेकर पृथग्जन पर्यन्त इसमें अनेक महापुरुष परिगणित हैं। उदाहरणार्थ स्तुतिकर्ताओं में तन्त्र के उपदेष्टा शास्ता वज्रधर ने 'श्रीवज्र-मण्डलालंकार' नामक महातन्त्रराज में 'सर्वतथागतस्तोत्रराज' नामक स्तोत्र कहा है। उसी प्रकार 'गुह्यसमाज' आदि तन्त्रों में भी अनेक स्तोत्र उपलब्ध होते हैं। अपि च, सूत्रों के उपदेष्टा तथागत शाक्यमुनि ने भी 'सुवर्णप्रभाससूत्र' में "अतीत, अनागत, प्रत्युत्पन्न समस्त सम्यक्सम्बुद्धों की स्तुति" आदि तथा अनुशंसा सहित 'नमस्तारैकविंशतिस्तोत्र' आदि अनेक स्तोत्र कहे हैं। पूर्वोक्त सूत्र एवं तन्त्र दोनों के शास्ता वास्तव में एकस्वरूप हैं, फिर भी विशिष्ट प्रयोजन एवं विशिष्ट कर्म के कारण पृथक्-पृथक् रूप से उनका निरूपण भी देखने को मिलता है। उनके द्वारा क्षेत्र (स्तुत्य) विशेष की स्तुति करना अत्यन्त गम्भीर एवं अद्भुत है। उन परम-क्षेत्र के प्रति अन्यों के द्वारा स्तुति एवं सत्कार करना तथा शैक्ष-आर्य एवं पृथग्जनों द्वारा एक-दूसरे के प्रति विरचित स्तुतियाँ तो अनन्त हैं। इस विषय पर भूमिका आदि में अनेक बार कहा जा चुका है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में चार स्तोत्रों से सम्बद्ध अनेक प्रतिलिपियों का परस्पर तथा तिब्बती पाठ के साथ मिलान करके उनकी प्रामाणिक तुलना एवं समीक्षा की गई है तथा जिज्ञासुओं की सुविधा के लिए हिन्दी में अनुवाद भी किया गया है। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में ग्रन्थ के 'चतुःस्तव' इस नामकरण की समीक्षा एवं रचनाकार आदि के बारे में विश्लेषण, स्वरूप परीक्षण, ग्रन्थ के संस्कृत मूल की प्राप्ति के प्रयास, ग्रन्थ पर अन्य विद्वानों के कार्य, आधारभूत भोट-संस्करण का निर्धारण, पाठभेद तथा वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक संस्करण की विशेषता आदि पर प्रकाश डाला गया है।

ग्रन्थ का सारांश लिखते समय महत्त्वपूर्ण तथ्यों एवं उनकी पृष्ठभूमि पर पर्याप्त विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

ग्रन्थ के परिशिष्ट में भगवान् बुद्ध के सूत्र एवं तन्त्र से सम्बद्ध प्रवचन और तत्सम्बद्ध तदभिप्रायिक टीका-ग्रन्थों (जो काग्युर एवं तनग्युर संग्रह) में विद्यमान स्तोत्रों को संकलित कर स्तोत्रगण की विस्तृत सूची दो भाषाओं में दी गई है। उसी प्रकार अप्रकाशित हस्तलिखित संस्कृत पाण्डुलिपियों से और प्रकाशित ग्रन्थों से प्राप्त स्तोत्रों का संकलन कर संस्कृत स्तोत्रों की विस्तृत सूची भी दी गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता आचार्य नागार्जुन हैं, अतः दो तिब्बती विद्वानों द्वारा आचार्य नागार्जुन की जीवनी और उनके गम्भीर दर्शन को विषय बनाकर रचित दो महत्त्वपूर्ण स्तोत्रों को भी दिया गया है। भारत के एक आधुनिक विद्वान् ने चतुःस्तव का तिब्बती से संस्कृत में पुनरुद्धार कार्य करते समय 'परमार्थस्तव' के स्थान पर 'स्तुत्यतीतस्तव' का पुनरुद्धार किया है। वह स्तोत्र अभिधेय की दृष्टि से अन्य तीन स्तोत्रों के अत्यधिक अनुकूल है, इस कारण प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए उसकी भोटपाठ से मिलान कर संशोधन के साथ उसे परिशिष्ट में दे दिया गया है।

बौद्ध वाङ्मय अखिल जगत् के कल्याणार्थ एक प्रेरणाप्रद एवं बहुमूल्य भारतीय सम्पत्ति है। तदन्तर्गत बुद्धवचन एवं तदाधारित शास्त्रों का संस्कृत मूल अधिकांशतया विलुप्त हो चुका है। उसे भोटभाषागत अनुवाद से पुनः संस्कृत में पुनरुद्धार करने के लिए संस्थान के पूर्वनिदेशक परमपूज्य प्रो० समदोङ् रिनपोछे ने एक महत्त्वपूर्ण कार्ययोजना परिचालित की है, जिसमें अब तक दर्जनों महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। उस योजना को व्यवस्थित ढंग से गतिशील रखने के लिए वर्तमान निदेशक प्रो० गेशे ङवङ् समतेन समुचित व्यवस्था एवं सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। अतः मैं इन दोनों महानुभावों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

संस्थान के शोध-आचार्य (डॉ० अम्बेडकर चेअर) प्रो० रामशंकर त्रिपाठी बौद्ध विद्याओं के सुप्रसिद्ध प्रामाणिक विद्वान् हैं। उन्होंने इस ग्रन्थ को सार्थक और बोधगम्य बनाने के लिए पाठ-संशोधन से लेकर हिन्दी-अनुवाद, सम्पादन एवं प्राकशन तक समय देकर न केवल अपना बहुमूल्य योगदान किया है, अपितु मुझे सदा प्रेरित भी करते रहे हैं। अतः मैं उनके प्रति विशेष रूप से अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं प्रो० थुबतन छोगडुब् (आचार्य मूलशास्त्र) का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के संस्कृत पाठ की तुलनात्मक समीक्षा के लिए चतुःस्तव के

अन्तर्गत संगृहीत ''नैरोपम्यस्तव'' एवं ''परमार्थस्तव'' इन दो स्तोत्रों को अंग्रेजी अनुवाद के साथ मुझे सुलभ कराया है।

मैं डॉ० ठाकुरसेन नेगी (शोध-अधिकारी, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध-अनुभाग) का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ से सम्बन्धित कई हस्तलिखित पाण्डुलिपि सुलभ कराई हैं तथा हस्तलिखित स्तोत्रों से सम्बद्ध अनेकविध सामग्री मुझे दी, जिससे मुझे अपने कार्य में अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई है।

इस पुनीत कार्य को सम्पन्न करने के लिए प्रकाशन-अनुभाग के प्रभारी श्री समतेन छोस्फेल, प्रूफ-संशोधक श्री श्यामबिहारी तिवारी तथा श्रीमती छिमेद छ़ोमो, कम्प्यूटरीकरण के लिए श्री तोपग्यल और श्री एस० पी० सिंह आदि सम्बद्ध लोगों ने महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। इसलिए मैं इन सबको हृदय से साधुवाद देता हूँ।

मैंने इस कार्य को अपनी बुद्धिक्षमता के अनुसार यथाशक्ति साङ्गोपाङ्ग एवं प्रामाणिक रूप से सम्पन्न करने का प्रयास किया है, फिर भी अज्ञानवश हुई त्रुटियों एवं असंगतियों को विद्वज्जन मेरी असमर्थता समझकर क्षमा करने का अनुग्रह करेंगे। मैं ऐसी आशा करता हूँ।

अन्त में मेरे इस पुनीत कार्य से उत्पन्न समस्त पुण्य जगत् के कल्याणार्थ प्रतिफलित हों तथा सभी सत्त्व गम्भीर शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुत्तर तत्त्व का साक्षात्कार कर शीघ्रतापूर्वक सर्वज्ञता प्राप्ति की ओर उन्मुख हों, यह कामना करता हूँ।

बुद्धाब्द - २५४५
सन् - २००१

ङलछेन नमडोल
तिब्बती संस्थान, वाराणसी।

तापाच्छेदाच्च निकषात् सुवर्णमिव पण्डितैः।
परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचो न तु गौरवात्॥
तुलनीय- श्रीमहाबलतन्त्रराज (स्दे-दगे संस्करण 'ग' पृ० २१६)

བསྲེགས་བཅད་བདར་བའི་གསེར་བཞིན་དུ།།
ཡོངས་སུ་བརྟགས་ནས་ང་ཡི་བཀའ།།
བླང་བར་བྱ་ཡི་མོས་པའམ།།
གཞན་གྱིས་མཁས་པ་འཇུག་མི་བྱ།།
(དཔལ་སྟོབས་པོ་ཆེའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ། སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ག' ༣༡༨)

ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ལས་དང་ཉོན་མོངས་...
རྒྱུར་བཅས་བྱེད་རྒྱུར་ལྡན་འབྱུང་དང་།།
ལས་དང་ཉོན་མོངས་པ་དག་ལྡོག་རྒྱུ་...
དེ་ཡང་འདྲེན་པས་རབ་ཏུ་གསུངས།།
གང་ན་སྐྱེ་དང་ན་དང་རྒུད་པའི་...
སྡུག་བསྔལ་ངེས་པར་མི་གནས་པ།།
ཐར་པའི་མཆོག་དེ་སླ་བའི་ཁྲུ་མཆོག་...
དེ་ཡིས་རང་གིས་མཁྱེན་ཏེ་གསུངས།།
(འདུས་པ་རིན་པོ་ཆེ་ཏོག་གི་གཟུངས། མདོ། 'ན' ༡༨༨)

གླེང་བརྗོད།

༄༅། །དེ་ཡང་ཇི་སྐད་དུ། ཚད་མར་གྱུར་པའི་སྐྱེས་མཆོག་དག་གི་དཔལ་གྱི་མགུར་ལས།[༡]

གང་ཞིག་ལ་ནི་ཉེས་པ་ཀུན། །གཏན་ནས་ཡོང་ཡེ་མི་མངའ་ཞིང་།།
གང་ལའང་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ། །ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་གནས་གྱུར་པ།།
གལ་ཏེ་སེམས་ཤིག་ཡོད་ན་ནི། །དེ་ཉིད་ལ་ནི་སྐྱབས་འགྲོ་ཞིང་།།
དེ་བསྟོད་དེ་ནི་བཀུར་བ་དང་། །དེ་ཡི་བསྟན་ལ་གནས་པས་རིགས།།

ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ།[༢]

གང་ལ་སྐྱོན་ནི་མི་མངའ་ཞིང་། །ཡོན་ཏན་དཔག་མེད་མངའ་བ་དང་།།
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་དང་ཐུགས་རྗེ་ཅན། །དེ་ལ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་མཆོད་ཅིང་བསྟོད་འོས་ཀྱི་ཞིང་དམ་པ་ཆེ་བའི་ཆེས་མཆོག་རྒྱལ་བ་རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་ངོ་བོ་དབྱེར་མ་མཆིས་པའི་བླ་མ་ཡིད་དམ་དང་། སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་སོགས་དང་། དེ་དག་གི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་མཛད་པ་འཕྲིན་ལས་དང་བཅས་པའི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་གསང་བ་གསུམ་གྱི་ཡོན་ཏན་དག་ནི། ཕལ་དང་ཕལ་གྱི་བསམ་སྤྱོད་ཀྱི་ར་བའི་སྒྲོམ་གཞི་ལས་ཡོངས་སུ་བརྒལ་ཞིང་།

---

[༡] སློབ་དཔོན་རྟ་དབྱངས་ཀྱིས་མཛད་པའི་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ། (སྡེ། བསྟན། བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༡༠)

[༢] སློབ་དཔོན་བདེ་བྱེད་བདག་པོས་མཛད་པའི་ལྷ་ལས་ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བསྟོད་པ། (སྡེ། བསྟན། བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༨༨)

བསྟོད་པའི་ཡུལ་ལས་འགོངས་པ་སོགས་ལ་དགོངས་ནས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་བསྟོད་ཚོགས་རྣམས་སུ་མཚུངས་ཆོས་ཀྱི་དཔེ་རྙེད་དུ་མེད་པ་ལ་དགོངས་ནས་དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་། འཇིག་རྟེན་རང་དགའ་བའི་གནས་བབས་ལས་ཡོངས་སུ་བརྒལ་བས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་དང་། གོང་ན་ཁྱད་དུ་འཕགས་པ་གཞན་མེད་པས་བླ་ན་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་། ཡོན་ཏན་དང་མཛད་པ་འཕྲིན་ལས་བསམ་བརྗོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་དང་། སྒྲ་རྟོག་གི་ལམ་ནས་བསྟོད་པའི་ཡུལ་ལས་འགོངས་པས་བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་དང་། དོན་དམ་པའི་གནས་ལུགས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་སྟོན་པའི་ཚུལ་ལ་བསྟོད་པས་ན་དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་ཅེས་སོགས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཆེས་ཞུལ་དུ་བྱུང་ཞིང་བསམ་བརྗོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པར་དགོངས་ནས་"སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བསྟོད་པ་བསྔགས་པར་འོས་པ་བརྒྱ་པ་ལས་བསྟོད་པར་མི་ནུས་པར་བསྟོད་པ་[༡]"ཅེས་སོགས་ཆེས་ངོ་མཚར་བའི་གསུང་

---

༡ སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་དེ་ལ་བོད་དཔེ་རྣམས་སུ། ལེའུ་ ༡༣ ལྡན་དུ་ཡོད་པ་ཞིག་དང་། ཡང་ལེའུ་གཅིག་ཟུར་དུ་ཡོད་པ་བཅས་ཁྱོན་ལེའུ་བཅུ་གསུམ་ཡོད་པ་ལས། གོང་སྨོས་ཀྱི་མཚན་བྱང་དེ་ལེའུ་དང་པོ་ཁོ་ནའི་མཚན་བྱང་ཡིན་པ་ལས་གཞུང་ཆ་ཚང་གི་མིན་མོད། འོན་ཀྱང་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་དེ་ལྟར་དུ་འཁོད་པ་ནི་མ་དག་རྒྱུན་འབྱམས་ཤིག་ཡིན་པར་ལེའུ་སོ་སོའི་མཚན་བྱང་དང་། ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལ་གཟིགས་ན་ལེགས་པར་ཁྲམས་ནུས་སོ། །ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཡིག་ལེའུ་ ༡༣ ལས་གཞན་པའི་ལེའུ་ཟུར་པ་དེ་གསལ་མེད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

ཚིག་གི་སྒོ་ནས་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པར་མཛད་པ་ལྟར་མདོར་ན་བརྗོད་དོན་ཟབ་ཅིང་རྨད་དུ་བྱུང་བ་དང་།   བརྗོད་ཚུལ་ཚིག་སྦྱོར་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ལྡན་སུམ་ཚོགས་པའི་ལམ་ནས་ཞིང་དམ་པའི་མཛད་པ་འཕྲིན་ལས་དག་ལ་དགའ་དད་སྤྲོ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་ཅིང་བསྔུར་བའི་བསྔགས་པའི་འདབ་རྒྱའི་ཕྲེང་བ་མཚར་དུ་མངར་བ་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་སྤྲོ་བར་འདོད་ཀྱང་།   ཆེས་ཕིན་ཏུ་རྒྱ་ཆེ་ཞིང་གུ་ཡངས་པའི་ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་གི་གཞུང་ལམ་ཆེན་མོ་ལ་བརྟེན་ནས་ཅི་དགར་རོལ་དུ་ཡོད་ཅིང་།   དེ་ལ་འགལ་རྐྱེན་གྱི་འཆིང་ཞགས་སྤྲུ་ཙམ་ཡང་མེད་དོ།   དེ་ཡང་རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུངས་ལས།[༢]

སྔང་བ་ཙམ་གྱི་ཐ་སྙད་མི་ལོང་ལ། |
གཞི་ལམ་འབྲས་བུའི་ཕྱི་རོར་བྱ་བྱེད་ཀུན། |
བསྟན་མེད་འཆར་བའི་ངོ་མཚར་གཟིགས་མོ་ཡིས། |
བློ་ལྡན་སྙིག་མོའི་དགོས་དོན་ཅི་ཡང་འགྲུབ། |

ཅེས་དང་།   དེ་བཞིན་དུ།[༣]

ནྡང་ངེས་རི་ཀླུང་བཀོད་པ་མཐའ་ཡས་ཀྱང་། |
རྟོན་པ་རྣམ་བཞིའི་མཁའ་ལ་ལྡིང་བ་ཡི། |
རྣམ་དཔྱོད་གྲིབ་མ་མཐུན་པར་འཇུག་པ་ནི། |

---

[༢] རྗེ་གུང་ཐང་གིས་མཛད་པའི་འཇམ་མགོན་བླ་མ་ལ་བསྟོད་པའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ཀ་ལ་བིཥྞའི་སྒྲུ་དབྱངས། (བོད་ 'ཛ' 504)

[༣] དེ་ཉིད། (བོད་ 'ཛ' 504)

འགལ་བའི་གཙོང་རོང་བརྒྱ་ཡིས་དགག་ཏུ་མེད། །

ཅེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་དག་དང་ཕྱོགས་འདྲ་བའི་ཚུལ་དུ་གནས་སོ། །

དེ་འདྲ་བའི་བསྟོད་ཡུལ་ཁྱད་པར་ཅན་རྣམས་ལ་བསྟོད་པ་མཛད་པའི་ཚེ། ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་གི་གཞུང་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས་ཅི་དགར་བསྟོད་དུ་ཡོད་ན། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་མཛད་པའི་དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་དང་། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་དོན་དམ་པའི་བསྟོད་པ་བཅས་སུ།[༡]

ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ལ། །སུ་ལ་བསྟོད་ཅིང་སུ་ཡིས་བསྟོད།།

ཅེས་དང་།

སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་གནས་པ་མེད། །འཇིག་རྟེན་པ་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས།།
ངག་གིས་བརྗོད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་མིན། །མགོན་ཁྱོད་ཇི་ལྟར་བསྟོད་པར་བགྱི།།

ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་དོན་ཇི་ལྟར་འགྲེལ་བར་བྱེད་ཅེ་ན། ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་སྟོང་ན་ཡང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་གྱི་ཚུལ་དུ་བླ་ན་མེད་པའི་བསྟོད་ཡུལ་གང་ལ། བློ་ཅན་དད་འདུན་ཅན་དག་གིས་དད་གུས་ཆེན་པོའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པའི་བྱ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་གཞག་མཐའ་དག་གཞན་ངོ་ཙམ་དང་འཁྲུལ་ངོ་ཁོ་ནར་བསྐྱལ་མི་དགོས་པར་རང་ལུགས་ལ་བསྙོན་མེད་དུ་འཛོག་ཏུ་ཡོད་པ་ལ་གོང་སྨོས་ལྟར་འགལ་

---

༡ སྡེ། བསྟན། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༠,༨༠)

རྒྱུན་གྱི་ཆ་ཕྲ་མོ་ཙམ་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ལྟར་ཡང་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གོང་སྨོས་ཀྱི་གཞུང་དེ་དག་ཏུ།[༢]

འོན་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་བདགས་རྟེན་གྱིས། །
བྱེད་ནི་ཅི་འདྲ་དེ་བཞིན་དུ། །
བདག་གིས་གུས་པས་བླ་མ་བསྟོད། །

ཅེས་དང་།

དེ་ལྟ་ན་ཡང་གང་འདྲ་བས། །
དེ་བཞིན་ཉིད་དོན་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི། །
འཇིག་རྟེན་བདགས་པ་ལ་གནས་ནས། །
གུས་པ་ཆེན་པོས་བདག་གིས་བསྟོད། །

ཅེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་ལས་ཀྱང་།[༣]

བླ་མེད་ལམ་ལས་གཤེགས་པ་ཡི། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བསྟོད་འདས་ཀྱང་། །
གུས་ཤིང་སྤྲོ་བའི་སེམས་ཀྱིས་ནི། །
བདག་གིས་བསྟོད་འདས་བསྟོད་པར་བགྱི། །

ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ།།

---

༢ སྟེ། བསྟན། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༨༠,༧༠)

༣ སྟེ། བསྟན། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༩)

ཚུལ་དེ་ལས་ཡོངས་སུ་བཟློག་ཏེ་གང་དག་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པའི་དོན་གཏན་མེད་ཀྱི་དོན་དུ་བཟུང་ནས། ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་ན། གང་གིས་གང་ལ་ཚུལ་ཇི་ལྟར་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པའི་རྣམ་བཞག་ཀུན་ཇི་ལྟར་འཐད་སྙམ་དུ་སེམས་ཤིང་སྨྲ་བ་དག་ནི། རང་ཉིད་དབུ་མ་པར་ཁས་ཆེས་ཀྱང་དོན་དུ་དངོས་སྨྲ་བའི་གཏམ་དག་དང་དུ་ལེན་ཞིང་སློག་པར་འགྱུར་ཏེ། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་རྩ་ཤེར་དངོས་སྨྲ་བའི་འདོད་པ་བཀོད་པའི་ཚེ་གསུངས་པ།[༡]

གལ་ཏེ་འདི་དག་ཀུན་སྟོང་ན། །འབྱུང་བ་མེད་ཅིང་འཇིག་པ་མེད།།
འཕགས་པའི་བདེན་པ་བཞི་པོ་རྣམས། །ཁྱོད་ལ་མེད་པར་ཐལ་བར་འགྱུར།།

ཞེས་དང་།[༢]

དེ་སྐད་སྟོང་པ་ཉིད་སྨྲ་ན། །དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་གནོད་པ་ནི།།
བྱེད་ཅིང་འབྲས་བུ་ཡོད་པ་དང་། །ཆོས་མ་ཡིན་དང་ཆོས་ཡིན་དང་།།
འཇིག་རྟེན་པ་ཡི་ཐ་སྙད་ནི། །ཀུན་ལའང་གནོད་པ་བྱེད་པ་ཡིན།།

ཞེས་དངོས་སྨྲ་བ་དག་གིས་ཇི་ལྟར་སྨྲས་པ་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཇེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མ་ལས་ཀྱང་།[༣]

རང་བཞིན་མེད་ལ་བདེན་བཞི་དང་། །
སྐྱབས་གསུམ་ལས་འབྲས་ལ་སོགས་པ། །

---

[༡] རྩེ། བསྟན། (དབུ་མ་ 'ཙ' ༡༨)
[༢] རྩེ། བསྟན། (དབུ་མ་ 'ཙ' ༡༨)
[༣] པོད། 'ཀ' ༧ (དེབ་གཟུགས།)

མེད་པར་ཐལ་བ་དངོས་སྨྲའི་གཏམ། །

དང་དུ་ལེན་བཞིན་དབུ་མར་སྨྲ། །

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་དཔལ་ལྡན་དབུ་མ་ཐལ་འགྱུར་བའི་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བ་ལས་རིང་དུ་གྱུར་པའི་འདོད་ཚུལ་དག་རང་ཐོག་ཏུ་བབས་པར་འགྱུར་རོ།།

རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པའི་ཕྱོགས་ལ་བརྗོད་བྱ་བརྗོད་བྱེད་སོགས་ཀྱི་རྒྱུ་འབྲས་བྱ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ཀུན་ཇི་ལྟར་འཐད་ཚུལ་ནི། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་རྩ་ཤེར།[1]

གང་ལ་སྟོང་པ་ཉིད་རུང་བ། །དེ་ལ་ཐམས་ཅད་རུང་བར་འགྱུར།།”

ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ།[2]

གང་ཕྱིར་རྟེན་འབྱུང་མ་ཡིན་པའི། །ཆོས་འགའ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

དེ་ཕྱིར་སྟོང་པ་མ་ཡིན་པའི། །ཆོས་འགའ་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།།

ཞེས་བསྟན་ལ་སྟོན་པ་གཉིས་པ་ལྟར་གྲགས་པའི་ཚད་མའི་སྐྱེས་བུ་དེའི་དཔལ་གྱི་མགུར་ལས་ཐོན་པའི་གསུང་མཆོག་མཚུངས་པ་མེད་པ་འདི་དག་ལ་ཆོས་མཐུན་གྱི་གོལ་བ་གང་གིས་ཀྱང་དུས་ནམ་དུ་ཡང་བརྫི་བར་མི་ནུས་པས་ཚུལ་འདི་ལ་ཚད་མས་དྲངས་པའི་ངེས་པ་བརྟན་པོ་སྐྱེད་པར་བྱའོ།།

---

༡ སྡེ། བསྟན། (དབུ་མ། ‘ཙ’ ༡༥)

༢ སྡེ། བསྟན། (དབུ་མ། ‘ཙ’ ༡༥)

སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་གཉིས་གཅིག་གྲོགས་སུ་གཅིག་འགྲོ་བའི་ཚུལ་འདི་ཆེས་ཡ་མཚན་པར་གཟིགས་ཏེ། ཚངས་སྲས་བཞད་པ་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོའི་སྤྲིལ་མར་བསྟོད་པ་ལས།[༡]

རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་སྟོང་བཞིན་བརྟེན་ནས་འབྱུང་། །
ཀུན་རྫོབ་འཁྲུལ་སྣང་སྣང་བཞིན་གཞི་རྩ་དབེན། །
སྣང་སྟོང་མི་འགལ་འགལ་མེད་གྲོགས་ཉིད་དུ། །
འཆར་བའི་ངང་ཚུལ་ཚུལ་འདིའི་སྙིང་གཞི་ཡིན། །
སྐྱེ་མེད་སྐྱེ་བར་སྣང་བའི་རྟེན་འབྱུང་ཆོས། །
རང་གི་རང་བཞིན་འགྱུར་མེད་མཐའ་བྲལ་དང་། །
སྤྲུལ་པས་སྤྲུལ་གཞན་བཀྱེ་བཞིན་ཇི་ལྟའི་ཚུལ། །
བརྗོད་བྲལ་བརྗོད་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཚུལ་འདིར་ལྟོས། །

ཞེས་དང་།[༢]

རྟེན་ཞེས་ཆོས་ཉིད་མི་འདོར་ལ། །
འབྱུང་ཞེས་འཇིག་རྟེན་ཚུལ་ཡང་མཐུན། །
རིགས་ཚུལ་ཀུན་ལས་རྒྱལ་པོ་བཞིན། །
རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་ཚད་མའི་བཀའ། །
གཤིས་དཔྱོད་བློ་ཡིས་རྟེན་མིན་ཐ་སྙད་དུ། །

[༡] དཔེ་རིང་། ༣
[༢] དཔེ་རིང་། ༨

སྣང་བ་འགོག་མེད་བཀྲ་བའི་འཇོ་སློག་གར། །
བསྒྱུར་བའི་ལྷད་མོ་ཉམས་སུ་འཆར་བ་འདི། །
སྟོང་པའི་འཕྲུལ་དུ་སྟོན་མཁས་ཁྱེད་ལས་སུ།[2] །

ཞེས་སོགས་རྒྱན་གྱི་ཉམས། དོན་གྱི་འགངས། །དཔེ་དོན་གྱི་འབྲེལ་གང་ཐད་ནས་ཚིག་སྦྱོར་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པའི་ལམ་ནས་རྨད་དུ་བྱུང་བའི་གནད་དོན་དེ་དག་གསལ་བར་མཛད་དོ། །

མཆོག་ཏུ་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་འོས་ཀྱི་མཆོད་ཡུལ་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་ཤིང་། ཚད་བཟུང་དཔག་པར་དཀའ་བ་དག་ལ་བརྟགས་པའི་ཚེ། དེ་དག་ལ་བསྟོད་ཚར་དུས་དང་། མཐའ་དག་པ་ངག་ཚིག་གི་ལམ་ནས་བརྗོད་ཐུབ་དུས་ཤིག་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་འབྱུང་ཐུབ་རྒྱུ་ལྟ་ཞོག སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཀྱང་ནུས་པར་དཀའ་སྟེ། འདྲེན་པ་འོད་དཔག་མེད་ཀྱི་སྟོད་བཅུད་ཀྱི་ཞིང་གི་བསྔགས་པ་བརྗོད་པའི་ཚེ་བདེ་ཆེན་ཞིང་བཀོད་ཀྱི་མདོ་རྒྱས་པ་ལས།[3]

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བར་གཤེགས་གྱུར་ལ། །
དམ་པའི་དོན་མཁས་ཡེ་ཤེས་རྣམ་དག་སྟེ། །
དེ་དག་བསྐལ་པའམ་འོན་ཏེ་ལྷག་པར་ནི། །
བདེ་བ་ཅན་གྱི་བསྔགས་པ་རབ་བརྗོད་ཀྱང་། །
བསྔགས་པའི་ཕྲེང་བ་རབ་ཏུ་བརྗོད་པ་ན། །

---

[2] དཔེ་རིང་། ༦
[3] སྣ། བཀའ། (དཀོན་བརྩེགས། 'ཀ' ༣༥༨)

བསྐལ་པ་བྱེ་བ་དེ་དག་ཟད་འགྱུར་གྱི། །
བདེ་བ་ཅན་གྱི་བསྔགས་མཐར་མི་ཕྱིན། །

ཞེས་གསུངས། དེ་བཞིན་དུ་ཧེའི་གསུང་བསྟོད་སྤྲིན་རྒྱ་མཚོ་ལས།[༧]

ལ་ལར་བལྟམ་ཞིང་ཞིང་གཞན་དུ་ཡང་…

…བྱང་ཆུབ་ཚུལ་སྟོན་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ཡི་ནི།།

བགོད་པ་མཆོག་འདི་འདི་དང་གཞན་དུ་མ…

…ལུས་འགྲོ་ཀུན་ཀུན་མཁྱེན་གྱུར་ཀྱང་བརྗོད་མི་ནུས།

ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ། །

འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་པས་བསྟོད་པ་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་ལ་དཔྱད་པ།

དེ་ཡང་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་པའི་དབང་པོ་ཚོས་བསྟོད་ཡུལ་ཁྱད་པར་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཆེས་ཞུལ་དུ་བྱུང་བའི་ཡོན་ཏན་དག་ལ་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པ་མཛད་ཚུལ་ཇི་ལྟ་བུ་མཆིས་ཤེ་ན། སྤྱིར་མཐའ་ཡས་ཀྱང་འདིར་མཆོན་པ་ཙམ་བགོད་ན། དེ་ཡང་བསྟོད་ཡུལ་སྤྱི་བྱེ་བྲག་གི་གསལ་བའི་དབྱེ་བ་ཕྱེ་མ་ཕྱེ་དང་། ཡོན་ཏན་ཡོངས་ལ་སྤྱི་ཁྱབ་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བསྟོད་པ་དང་། བྱེ་བྲག་པ་ལ་ངེས་བཟུང་དམིགས་བཀར་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་དང་། ཐུན་མིན་གྱི་སློས་ཆོས་དམིགས་བསལ་བ་དག་གསལ་སྟོན་མཛད་མ་མཛད་དང་། བསྟོད་ཚུལ་ལ་ཚིག་རྒྱན་གྱི་

---

[༧] ཧེ། པོད། 'ཁ' ༥༩ གསུང་ཐོར་བུ། (དཔེ་གཟུགས།)

སྦྱོར་བ་རྒྱ་ཆེན་པོས་རྒྱན་ཅིང་སྤྲུད་མ་སྤྲུད་སོགས་ཀྱི་བསྟོད་ཚུལ་ལ་ཁྱད་པར་ཆེས་ཤིན་ཏུ་མང་ངོ་།།

དེ་ཡང་འཕགས་ཡུལ་གྱི་མཁས་པ་ཆེས་གཙོ་བོར་གནས་ཤིང་། རིགས་པ་ཡང་དག་གི་རྗེས་སུ་བསྙེགས་པའི་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་མགོ་བཙུན་སླྡུབ་བྱེད་དང་། བདེ་བྱེད་བདག་པོས་རིམ་པ་བཞིན་ཁྱད་པར་འཕགས་བསྟོད་དང་། ལྷ་ལས་ཕུལ་བྱུང་གི་བསྟོད་པ་དག་མཛད་ཅིང་། སློབ་དཔོན་ཤེས་རབ་གོ་ཆས་གཞུང་དེ་གཉིས་ཀྱི་འགྲེལ་པ་མཛད་པ་བཅས་སུ་ཕྱི་ནང་གི་སྟོན་པ་དང་བསྟན་པའི་ཁྱར་པར་ལ་དཔྱད་ཞིབ་ལེགས་པར་མཛད་ནས། མཆོག་དམན་གྱི་ཁྱད་པར་རྣམས་ཆེས་མངོན་གསལ་དོད་པོའི་སྒོ་ནས་གསལ་ཁ་གཏོད་དེ། བྱུང་རིམ་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་དཔེ་དང་སྒྲུགས་གནད་དོན་རྣམས་རྒྱུ་མཚན་རིགས་པའི་སྒྲང་ལ་གཞལ་ཏེ། སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་དང་དེའི་བསྟན་པ་ལ་ཤེས་ནས་དད་པ་ཐོབ་པའི་རང་རྟགས་མངོན་གསལ་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ་ཆེས་རྨད་དུ་བྱུང་བ་དག་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། བསྟོད་ཚོགས་ནང་ཡོད་བསྟོད་པ་གཞན་ཕལ་ཆེ་བར་མཆོག་དམན་མཚོན་བྱེད་ཀྱི་གསལ་ཁ་མངོན་གསལ་ཅན་དེ་ལྟ་བུ་གཏོད་པ་མེད་ཀྱང་། གང་ལྟར་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་དང་དེའི་བསྟན་པ་ལ་ཤེས་ནས་དད་པ་ཐོབ་པའམ། ཚད་མས་དྲངས་པའི་ངེས་པ་བརྟན་པོ་སྐྱེད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་གཙོ་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། དེ་ལ་ཡང་སྙན་ངག་གི་རྒྱན་དང་ཉམས་དུ་མས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་ཅིང་སྤྲུད་ལ། ཚིག་སྦྱོར་ཚུལ་ལ་མཁས་པའི་ངག་གི་དཔལ་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་དང་ལྡན་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་མཛད་པའི་བསྔགས་འོས་བསྔགས་བསྟོད་དང་། བསྟོད་པ

བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་དང་། ཡང་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོ་དང་། སློབ་དཔོན་ཕྱོགས་གླང་གཉིས་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྤེལ་མར་བསྟོད་པ་སོགས་དང་། ཇོ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་མཛད་པའི་བྱམས་འཇམ་དབྱངས་ཀྱི་བསྟོད་ཆེན་དང་། ཆོས་རྗེ་གྲགས་པ་བྱང་ཆུབ་དཔལ་བཟང་པོའི་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་ལ་བྱ་དཀའི་ཚུལ་གྱིས་བསྟོད་པ་དང་། ཚངས་སྲས་བཞད་པ་རྡོ་རྗེ་གྲགས་སྣན་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྡེས་མཛད་པའི་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས་བརྩམས་ཏེ་སྤེལ་མར་བསྟོད་པ་དགོངས་དོན་ཟབ་མིད་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་སྒོ་འཕར་རྒྱ་ཆེར་ཕྱེ་བ་རྫོགས་ལྡན་སྲིན་གྱི་སྒྲ་དབྱངས་ཞེས་བྱ་བ་སོགས་ཤིན་ཏུ་མང་བས་འདིར་བཀོད་པ་ནི་མཚོན་པ་ཙམ་མོ།།

དེ་ལྟར་ཚིག་རྒྱན་གྱི་སྦྱོར་པ་རྒྱ་ཆེན་པོས་རབ་ཏུ་བརྒྱན་ཅིང་མ་སྨྲད་ཀྱང་བརྗོད་བྱ་སྐྱེ་བོ་ཕྲག་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྐོར་ལ་རང་བཞིན་བརྗོད་པའི་རྒྱན་གྱི་ངང་ཚུལ་ལས་མ་འདས་པར་བསྟོད་པ་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་སོགས་བསྟོད་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་དང་། ཇོ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་མཛད་པའི་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་དང་། རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མ་སོགས་ཤིན་ཏུ་མང་བས་མ་སྤྲོས་སོ། །

དེ་ལྟར་སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་སོགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་བྱེ་བྲག་པ་ལ་དམིགས་སུ་བཀར་ནས་བསྟོད་པ་ཤིན་ཏུ་མང་པོ་ཡོད་པ་ལས་ཕལ་ཆེ་བ་དངོས་ཤུགས་བརྒྱུད་གསུམ་ནས་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་རབ་དང་ཕུལ་དུ་ཕྱུར་པ་གསུང་གི་མཛད་པ་དང་།

དེའི་བྱེད་ལས་སོགས་ལ་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པ་གཙོ་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་དེ། དཔེར་ན་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་དང་། བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་དང་། རྗེའི་གསུང་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་སོགས་ནི་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཟབ་མོ་སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་ཇི་ལྟར་གསུངས་ཚུལ་ལ་ཐུགས་རབ་ཏུ་འཕྲོག་ནས་བསྟོད་པ་མཛད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་དཔལ་སྤྲུལ་གྱིས་མཛད་པའི་སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་གི་གསང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་བསྔགས་པ་པདྨ་དཀར་པོའི་ཆུན་འཕྱང་སོགས་བསྟོད་པ་ཆེས་མང་ངོ་། །བརྗོད་གཞི་དམིགས་བཀར་ལ་བསྟོད་པ་གཞན་ལ་ཆ་མཚོན་ན། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཆོས་དབྱིངས་བསྟོད་པ་ལྟ་བུ་ཁམས་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོའམ་རང་བཞིན་གནས་རིགས་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་དང་། ཆོས་ལོངས་སྤྲུལ་གསུམ་ལ་དམིགས་སུ་བཀར་ནས་བསྟོད་པ་སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ་རང་འགྲེལ་དང་བཅས་པ་དང་། རྗེ་རིན་པོ་ཆེ་དང་རྗེ་གུང་ཐང་གཉིས་ཀྱིས་མཛད་པའི་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དབྱངས་དམར་སེར་དང་། རྗེ་བཙུན་འཇམ་དབྱངས་དཀར་པོའི་བསྟོད་པ་གཉིས་སུ་ལྷ་མཆོག་དེ་གཉིས་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གསུམ་ལ་དམིགས་སུ་བཀར་ནས་བསྟོད་པར་མཛད་ཡོད། དེ་འདྲ་བ་ཤིན་ཏུ་མང་བས་བརྗོད་ཀྱིས་མི་ལང་ངོ་། །

བསྟོད་པ་མཛད་ཚུལ་ལ་རྣམ་གྲངས་འདྲ་མིན་དེ་ལྟར་མཆིས་ན། སྐབས་འབྲེལ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་བཞི་པོ་འདི་དག་གིས་བསྟན་པའི་བདག་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་བསྟོད་ཚུལ་ནི། གོང་དུ་ཕྱོགས་ཙམ་སྨོས་པ་ལྟར་ཚིག་རྒྱན་གྱི་

སྤྲོས་པ་དག་དོར་ནས། བརྗོད་གཞི་ངེས་ཅན་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་སྟོང་ན་ཡང་། རྒྱུ་འབྲས་རྟེན་འབྱུང་གི་རྣམ་གཞག་མཐའ་དག་བསྙོན་མེད་དུ་བཞག་ཆོག་པར་བསྟན་པའི་སྐད་དུ་བྱུང་བའི་ཚུལ་ལུགས་འདི་ལ་སློབ་དཔོན་ཐུགས་རབ་ཏུ་འཁྲོག་ནས། ཟབ་དོན་གྱི་བརྗོད་བྱའི་རྣམ་པ་ཀུན་དང་ལྡན་ཞིང་། རྗོད་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་སྦྱོར་ཕུན་སུམ་ཚོགས་ཤིང་། བརྗོད་ཚུལ་རིགས་པ་ཡང་དག་གི་སྒྲུབ་བྱེད་དང་སྦྲགས་མཆོག་ཏུ་དད་གུས་ཆེན་པོས་སྟོན་པ་ལ་མངོན་པར་བསྟོད་པ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ནོ། །

སྤྱིར་བསྟོད་པ་མཛད་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་དང་དགོས་པ།

ཞིང་དམ་པ་དེ་དག་ལ་གུས་བཀུར་དང་མཆོད་བསྟོད་དེ་ལྟར་མཛད་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་མཐར་གཏུགས་ན། སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་མཛད་པའི་ལྷ་ལས་ཕུལ་བྱུང་གི་བསྟོད་པ་ལས།[༡]

གང་ལ་སྐྱོན་ནི་མི་མངའ་ཞིང་། །ཡོན་ཏན་དཔག་མེད་མངའ་བ་དང་།།

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་དང་ཐུགས་རྗེ་ཅན། །དེ་ལ་བདག་ནི་སྐྱབས་སུ་མཆི།།

ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་ལྟར་གྱི་ཕུལ་དུ་དབྱུང་དུ་མེད་ཅིང་། ཆེས་སྐད་དུ་བྱུང་བའི་བླ་ན་མེད་པའི་ཡོན་ཏན་ཏེ་དག་དང་ལྡན་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་ཡིན་នོ། །དེ་ལ་མཆོད་བསྟོད་དང་བསྔགས་པ་རྒྱ་ཆེ་མཛད་པའི་དགོས་པ་ནི། "གུས་ནི་ཞི་བའི་ཆེ་བ་ཉིད། ཅེས་གསུངས་པ་ལྟར་གུས་བཀུར་དང་། ཆེ་བསྟོད་ཞུ་བ་པོ་

[༡] སྟོ། བསྟན། (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༨༨)

རང་ཉིད་སྐྱེས་བུ་དམ་པའི་སྤྱོད་པ་དང་མཐུན་པར་མཆོན་ཐུབ་པ་དང་། ཞིང་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་དག་ལ་ཡོན་ཏན་རྨད་དུ་བྱུང་བ་ཇི་ལྟ་བུ་མངའ་བ་རྟོགས་ཐུབ་པ་དང་། ལྟོས་ས་གང་ལ་ལྟོས་ཏེ་ཇི་ལྟར་ཁྱད་པར་འཕགས་ཚུལ་དང་། སྐྱབས་ཡུལ་མཆོག་དང་མཆོག་མ་ཡིན་པའི་ཁྱད་པར་ཤེས་ཐུབ་པ་དང་། ཡོན་ཏན་དེ་དག་ལ་དམིགས་ནས་སྐྱབས་སུ་འགྲོ་བ་དང་། བཟློག་ཏུ་མེད་པའི་དད་གུས་འཕེལ་བ་དང་། ཡོན་ཏན་དེ་དག་རང་བརྒྱུད་ལ་མངོན་དུ་བྱ་འདོད་ཀྱི་འདུན་པ་དང་སྤྲོ་ཤུགས་དྲག་པོ་སྐྱེས་ཐུབ་པ་དང་། གོང་མའི་ཁྱད་པར་དེ་དག་ལ་ཤེས་ནས་དད་པ་ཐོབ་ཐུབ་པ་དང་། དེ་དག་གི་བྱེད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་རིམ་པས་སྟོན་པ་དང་བསྟན་པ་ལ་ཚད་མས་དྲངས་པའི་ངེས་པ་རྣམ་དག་འདྲེན་ཐུབ་པ་དང་སྔགས་དེའི་ལུང་རྟོགས་ཀྱི་བསྟན་པ་རྣམས་རང་རྒྱུད་ལ་དངོས་སུ་བསྒྲུན་ཐུབ་པའི་རྩོལ་བ་ལ་ཞུགས་འདོད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་མཆོད་ཅིང་བསྟོད་པའི་རྣམ་དཀར་གྱི་བྱ་བ་བཟང་པོ་དག་ལ་བརྟེན་ནས་བསོད་ནམས་ཚོགས་ཆེན་གསོག་ཐུབ་པ་དང་། སྐྱབས་ཡུལ་དེ་དག་གིས་ཚེ་རབས་ཐམས་ཅད་དུ་རྗེས་སུ་འཛིན་པ་དང་། ཤེས་རྒྱུད་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་དང་། གོང་མའི་ཁྱད་པར་དག་མྱུར་དུ་རྒྱུད་ལ་སྐྱེ་བའི་གྲོགས་འཕྲིན་ལས་མཛད་པ་སོགས་དགོས་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ངོ་། །

སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཕྱག་རྗེས་གང་བཞག་གི་སྐོར།

སྐབས་འབྲེལ་གྱི་གཞུང་འདི་དག་གི་མཛད་པ་པོ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ནང་། བསྟན་པའི་བདག་པོ་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་དང་དེའི་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་རབ་དང་ཕུལ་གྱུར་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཕྱག་རྗེས་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པའི་དོན་ཇི་ལྟར་གསུངས་ཚུལ་ལ་ཐུགས་རབ་ཏུ་འཕྲོག་སྟེ། ཚུལ་དེ་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པའི་བསྟོད་པ་གཙོ་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། སྤྱིར་བསྟོད་ཚོགས་ནང་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་བཅུ་དགུ་ཙམ་བཞུགས་པ་ལས། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་སོགས་སྐབས་སུ་བབས་པའི་"བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་"ཞེས་པའི་གཞུང་དེ་དག་དང་། བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་དང་། ཤེར་ཕྱིན་གྱི་བསྟོད་པ་དང་།[༡] འཕགས་པ་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དཔལ་གྱི་དོན་དམ་པའི་བསྟོད་པ་དང་། བླ་ན་མེད་པའི་བསྟོད་པ་བཅས་སུ་གཙོ་བོ་སྟོན་པས་ཟབ་མོ་སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་གི་དོན་ཇི་ལྟར་གསུངས་ཚུལ་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པར་མཛད་ཡོད། ཆོས་དབྱིངས་བསྟོད་པ་ནི། སྟོང་གཞི་ཆོས་ཅན་སེམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་མཐར་ཐུག་རང་བཞིན་གནས་རིགས་སམ། ཁམས་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་ཞིག

---

༡ སློབ་དཔོན་གྱི་མཚན་ཐོག་ལ་ཡོད་པའི་"ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་བསྟོད་པ་"འདི་དེང་སང་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་ 'बौद्धस्तोत्र संग्रह' ཞེས་པ་དེའི་ནང་ 'श्रीलक्षाभगवाती' ཞེས་པ་དེའི་མཚན་ཐོག་ལ་བཀོད་ཡོད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

ཡིན། རྗེ་བཙུན་འཇམ་དཔལ་གྱི་སྙིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ་ཅེས་པའི་བསྟན་དོན་ནི་ཚིག་གིས་ཟིན་ཚོད་ལྟར་དང་། སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་ཅེས་པ། བདེ་སྡུག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱེད་པོ་གཙོ་བོ་སེམས་ཡིན་པ་དང་། ཉོན་མོངས་སྤྱོང་བ་པོ་དང་། སངས་རྒྱས་པ་པོ་ཡང་དེ་ཉིད་ཡིན་སྐོར་གྱི་བརྗོད་གཞི་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་ཞིག་ཡིན། བསྟོད་པ་དེའི་བསྟན་དོན་ལ་བརྟགས་པའི་ཚེ་དེ་ལ་སྔགས་ལུགས་ལྟར་གྱི་ཐུན་མིན་གྱི་འགྲེལ་ལུགས་ཤིག་ཀྱང་བྱེད་དུ་མེད་དམ་སྙམ་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ། །

སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པའི་རྩ་བ་དང་དེའི་རང་འགྲེལ་གཉིས་སུ་རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དང་། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུ་དང་། སྤྲུལ་སྐུ་བཅས་ཀྱི་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་ལ་མཆོག་ཏུ་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པར་མཛད་པ་ཞིག་ཡིན། སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱེད་པའི་བསྟོད་པ་དང་། གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བསྟོད་པ་ཁག་གཉིས་དང་། མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་བསྟོད་པ། ཕྱག་འཚལ་བའི་བསྟོད་པ། དཀྱིལ་བ་ལས་འདོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ་དག་ནི། དངོས་སུ་ཚིག་གིས་ཟིན་ཚོད་ལྟར་གྱི་མཚན་བྱང་ཉིད་ལས་བརྗོད་བྱ་གང་སྟོན་ཚོད་དཔག་སླ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་ཀྱང་། དངོས་དོན་ལ་འདི་དག་ཚང་མ་དངོས་ཤུགས་བརྒྱུད་གསུམ་ནས་སངས་རྒྱས་ལ་བསྟོད་པ་ཁོ་ན་ལས་མ་འདས་སོ།། དེ་ཡང་བསྟོད་ཚུལ་ལ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་དང་། དེ་ཉིད་གང་དུ་བྱོན་པའི་གནས་དང་། དེའི་མཆོད་རྟེན་དང་། དེའི་མཛད་འཕྲིན་སོགས་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་ཤ་སྟག་གོ །

གོང་སྨོས་ཀྱི་སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱེད་པའི་བསྟོད་པ་ཞེས་པ་དེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཉན་ཐོས་ཆེན་པོ་བཅུ་དྲུག་ལ་བཀའ་བསྩལ་བའི་མདོ་“བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡེ་སྣོད་པ་རྩྭའི་ཆུ་ཀླུང་”ཞེས་བྱ་བའི་མདོའི་བསྟན་དོན་སློབ་དཔོན་གྱིས་ཚིགས་སུ་བཅད་པའི་སྒོ་ནས་བསྡུས་པ་ཞིག་གོ །བསྟོད་པ་བཞིའི་ནང་ཚན་དོན་པར་བསྟོད་པ་དང་། འཕགས་པ་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དཔལ་གྱི་དོན་དམ་པའི་བསྟོད་པ་ཞེས་པ་གཉིས་འདྲ་ཆོས་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ཞིང་ཚིགས་བཅད་ཕལ་ཆེ་བ་གཅིག་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། །

བསྟན་འགྱུར་རྒྱུད་འགྲེལ་ནང་ཡོད་སློབ་དཔོན་གྱི་མཚན་ཐོག་ལ་བཞུགས་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ། དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་ཀྲང་པ་བརྒྱད་པ་ཅེས་པ་ཁག་གསུམ་དང་། རྡོ་རྗེ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་བརྒྱད་པ་ཞེས་པ་གཅིག་བཅས་བསྟོད་པ་བཞི་གསལ་བ་ལས། དང་པོ་གསུམ་གྱི་ནང་ཚན་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་མཚན་བྱང་ལྟར་བྱས་ན་“དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་བསྡུགས་བརྒྱད་པ་” ཅེས་གསལ་བ་དང་། དེ་དག་ལས་གཉིས་ལ་ཁྱད་པར་དེ་ཙམ་མེད་པ་དང་། བུ་སྟོན་གྱིས་མཛད་པའི་དཀར་ཆག་ཞིག་ཏུ་“དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་ཀྲང་པ་བརྒྱད་པ་” ཞེས་པ་གཅིག་ལས་གསལ་མེད། དེར་མ་ཟད་དཀར་ཆག་ཁག་ནང་སློབ་དཔོན་གྱི་མཚན་ཐོག་ལ་དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་སྒྲུབ་ཐབས་འདྲ་མིན་ལྔ་ཙམ་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། གཞུང་དོ་མར་གཉིས་ལ་མཛད་བྱང་གསལ་མེད་པ་སོགས་ཀྱི་དཔྱད་གཞི་མང་དུ་མཆིས་སོ། །

"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་ཇི་ལྟར་ བྱུང་ཚུལ་ལ་དཔྱད་པ།

སྤྱིར་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པའི་བསྐོར་ལ་གཞུང་ཚན་བཅུ་དགུ་ཙམ་བཞུགས་པ་ལས། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ། དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ། དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་བཅས་གཞུང་བཞི་ཁོ་ན་ཟུར་འདོན་གྱིས་དེ་དག་ལ་"ཙཏུཿསྟཝ་"སྟེ་བསྟོད་པ་བཞི་པ་ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་དེ་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་སུ་བཏགས་པའམ་དེའི་སྐབས་སུ་བྱུང་བ་ཞིག་མ་ཡིན་པར་ཕྱིས་སུ་བྱུང་བ་ཞིག་ཅིས་ཀྱང་ཡིན་ངེས་འདུག །དེ་གང་ལས་ཤེས་ནུས་ན། སློབ་དཔོན་ཟླ་བའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་སོགས་སྔ་དུས་ཀྱི་མཁས་པའི་གཞུང་མང་པོའི་ནང་བསྟོད་པ་དེ་དག་གི་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད་ཀྱང་། དེ་དག་ཏུ་བསྟོད་པ་བྱེ་བྲག་པ་དེ་དང་དེའི་མཚན་བྱུང་དངོས་སམ། ཡང་ན་"ཇི་སྐད་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་"ཞེས་སོགས་བཀོད་པ་ལས། "བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་"ཞེས་པའི་གསལ་ཁ་འཁོད་པ་མེད་ཚོད་དུ་སྣང་ངོ་། །དེས་ན་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་མཚན་དེ་མཁས་པ་གང་ཞིག་གིས་དགོས་པ་ཅིའི་ཕྱིར་གནས་དུས་ཇི་འདྲ་བར་བཏགས་པ་སོགས་ཀྱི་རྒྱབ་ལྗོངས་ཀྱི་བྱུང་རིམ་ལོ་རྒྱུས་ཀྱི་གསལ་ཁ་ངེས་གཏན་འཁེལ་བ་རྙེད་དཀའ་བས་དཔྱད་གཞིའི་གནས་ལས་མ་འདས་སོ། འོན་ཀྱང་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་ཙམ་གང་དུ་དངོས་སུ་གསལ་ས་དང་། གཞུང་གང་དང་གང་དུ་བསྟོད་ཚོགས་དེ་དག་གི་གཞུང་ཚིག་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཚུལ་སོགས་ལ་ཞིབ་ཏུ་བརྟགས་པའི་ཚེ་ཕལ་ཆེ་བར་ཕྱག་དཔེ་བྱེ་བྲག་པ་སོ་སོའི་

མཚན་སྙོམས་བྱས་ནས་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད། འོན་ཀྱང་རྒྱལ་སྲས་ཆེན་པོ་ཞི་བ་ལྷའི་སྤྱོད་འཇུག་གི་འགྲེལ་མཛད་འཕགས་ཡུལ་གྱི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་གཉིས་ཀྱི་གཞུང་དུ་བསྟོད་ཚོགས་དེ་དག་གི་གཞུང་ཚིག་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ། སྐབས་འགར་“བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་”ཞེས་གཞུང་བཞིའི་ཐུན་མོང་སྤྱི་ཁྱབ་ཀྱི་ཐ་སྙད་དངོས་སུ་སྦྱར་བའི་སྒོ་ནས་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད། དེ་ཡང་འདི་ལྟར་སློབ་དཔོན་ཤེས་རབ་འབྱུང་གནས་བློ་གྲོས་ཀྱིས་མཛད་པའི་སྤྱོད་འཇུག་བཀའ་འགྲེལ་དུ་བསྟོད་པ་དང་པོ་གསུམ་གྱི་ལུང་འདྲེན་འདྲ་མིན་ཉི་ཤུ་ཙམ་བཀོད་ཡོད། ཡང་མཁས་པ་གཞན་བཻ་རོ་ཙན་རཀྵི་ཏས་ (རྣམ་སྣང་འཚོས་) མཛད་པའི་སྤྱོད་འཇུག་བཀའ་འགྲེལ་དུ་བསྟོད་པ་དང་པོ་གཉིས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་ཁག་གསུམ་བཀོད་པར་མཛད་པ་ལས་དང་པོ་གཉིས་ཀྱི་སྐབས་“བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་”ཞེས་པའི་གསལ་ཁ་བཀོད་ཡོད། མཁས་པ་དེ་གཉིས་ཀྱི་གཞུང་དུ་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཚུལ་ལ་ཞིབ་ཏུ་བརྟགས་སྐབས་དཔྱད་གཞི་འདི་ལྟར་སྣང་ངོ་། དེ་ཡང་ཡ་མཚན་སྐྱེ་འོས་པ་ཞིག་ལ་མཁས་པ་དེ་གཉིས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ། “དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པའི་”ཚིགས་བཅད་“བདུན་པ་”དང་“དགུ་པ་”གཉིས་ཁུངས་བཀོད་མཛད་པའི་ཚེ་མཁས་པ་གཉིས་ཀས་“བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་”ཞེས་དངོས་སུ་གསལ་ཁ་གཏོད་ནས་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེ་བྱིངས་རྣམས་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ་གསལ་ཁ་དེ་འདྲ་འཁོད་མེད། ལྷག་པར་དུ་ཤེར་འབྱུང་གི་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་གཞུང་དེ་དག་གི་ལུང་འདྲེན་ཧ་ཅང་མང་པོ་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེ་དག་ཕལ་ཆེ་བར་ཁུངས་བཀོད་མཛད་པའི་ཚེ་སྤྱི་ཁྱབ་ཀྱི་མཚན་གྱི་གསལ་ཁ་མེད་པར་མ་ཟད།

གཞུང་བྲེ་སྲག་པ་སོ་སོའི་གསལ་ཁ་ཡང་མེད་པར་“ཡང་ཇི་སྐད་དུ་”ཞེས་པ་དང་། “ཡང་བརྗོད་པ་”ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད།

དེས་ན་ཚིགས་བཅད་གཉིས་ཙམ་ལ་མཁས་པ་དེ་གཉིས་ཀས་གསལ་ཁ་གཅིག་པ་བཀོད་པ་གང་ཞིག་ལ། གཞན་ལ་གསལ་ཁ་མེད་པ་དང་། གང་ལ་གསལ་ཁ་བཀོད་རྒྱུའི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་གཉིས་ཀས་གཅིག་པ་བཀོད་སྟངས་ལ་བརྟགས་ན། མཁས་པ་དེ་གཉིས་གཅིག་གིས་གཅིག་ཤེས་ལ་གཞི་བཅོལ་བའམ་ཤུགས་རྐྱེན་ཐེབས་པ་ལྟ་བུར་སྣང་བས། དེ་གཉིས་ལས་གང་སྔོན་ལ་བྱོན་ཡོད་མེད་དང་། སུས་སུ་ལ་གཞི་བཅོལ་ཡོད་མེད་དང་། ལུང་འདྲེན་གཞན་ལ་གསལ་ཁ་མེད་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་གང་ཡིན་སོགས་དཔྱད་དགོས་པ་ཤིན་ཏུ་མང་ངོ་༎

ད་ཡོད་ཀྱི་ཡིགས་སྒྱུར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ཤེར་འབྱུང་སྦྱོད་འགྲེལ་དུ་“འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པའི་”ཚིགས་བཅད་ཨང་ ༡༣, ༡༩, ༣༠, བཅས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད་[1]པ་དེ་དག་གི་ཐད་དུ་གཞུང་སྤྱི་ལ་ཁྱབ་པའི་མིང་གི་གསལ་ཁ་འཁོད་ཡོད་ཀྱང་། དེ་དག་བོད་འགྱུར་སྒྲར་མ་ཁག་ཏུ་ཚང་མེད་པས། གསལ་ཁ་དེ་རྩ་བའི་མ་དཔེ་ངོ་མར་སྔོན་ནས་འཁོད་པ་ཞིག་གམ་གསར་དུ་དཔེ་དེབ་ཞུགས་བསྒྲིགས་པས་བསྣན་པ་གང་ཡིན་དཔྱད་དགོས་པར་མངོན་ཏེ།

---

[1] ལུང་འདྲེན་དེ་དག་གི་སྔོན་ཙམ་ལ་མདོ་རྒྱ་ཆེར་རོལ་པའི་ལུང་ཆེས་རིང་པོ་ཞིག་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེ་དག་ཀྱང་དེའི་ཐད་ཀྱི་བོད་སྐད་ཐོག་གསལ་མེད།

དེབ་དེའི་ནང་འཁོད་གསལ་ཁ་མང་པོ་ཞིག་ཕྱིས་སུ་བསྣན་ཡོད་པ་མངོན་སུམ་ཚད་གྲུབ་ཡིན་པས་སོ།།

གྲྭོད་འཇུག་གི་འགྲེལ་པ་ཁག་ཏུ་ཕྱག་དཔེ་བཞིའི་སྤྱི་ཁྱབ་ཀྱི་མཚན་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་གསལ་ཁ་གང་དུ་བཀོད་མཚམས་དང་ཇི་ལྟར་འཁོད་ཚུལ་ལ་དཔྱད་པའི་ཚེ། ལུང་འདྲེན་མང་པོའི་དབུ་འཛུགས་མཚམས་སུ་དེ་ལྟར་བཀོད་ནས་དེ་དབྱིངས་ལ་ཚིག་ཚོགས་བསྐྱུང་ནས་གསལ་ཁ་དེ་ལྟར་མ་བཀོད་དོ་སྙམ་ན། དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ཏེ། གསལ་ཁ་གང་དུ་འཁོད་ས་དེ་ལུང་འདྲེན་མང་པོའི་དཀྱིལ་ཙམ་དུ་འཁོད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་"བསྟོད་པ་"ཞེས་པའི་ཚིག་གི་སྐད་དོད་ལ་ཞིབས་སྦྱར་ལྟར་ན་'स्तव'སྟཝ་དང་། 'स्तोत्र'སྟོ་ཏྲ་དང་། 'स्तुति'སྟུ་ཏི་ཞེས་སོགས་བྲིས་སྲོལ་མང་དག་ཅིག་ཡོད་པ་ལས་འདིར་བསྟན་བསྟོད་པ་བཞི་པོའི་ནང་ཡོད་གཞུང་བཞི་ཀའི་མཚན་བྱང་ལ་स्तव 'སྟཝ' ཞེས་པ་གཅིག་མཚུངས་འཁོད་པའི་ཆ་ནས་མཚན་དེ་ལྟར་བཏགས་སོ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་མ་ངེས་ཏེ། ཆོས་དབྱིངས་བསྟོད་པ་སོགས་བསྟོད་ཚོགས་གཞན་འགའ་ཤས་ལ་ཡང་མཚན་དེ་མཚུངས་འཁོད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

ཡང་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་གཞུང་གཅིག་ཉིད་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གཅིག་པ་ཅན་གྱི་ཚིགས་བཅད་གཉིས་ཙམ་ལ་མཁས་པ་གཉིས་ཀས་གཅིག་མཐུན་གྱི་ཚུལ་དུ་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་"ཞེས་གསལ་ཁ་གདོད་ཚུལ་ལ་དཔག་ནས། སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྟོད་པའི་སྐོར་གྱི་གཞུང་བཀའ་རྩོམ་མཛད་པའི་ཚེ། བསྟོད་ཚོགས་བརྩམས་པའི་གོ་རིམ་བཞི་པར་"དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་འཁྱིལ་བའི་

རྒྱ་མཚན་ལ་བརྟེན་ནས་གསལ་ཁ་དེ་ལྟར་གཏོད་དོ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། "བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་འདིའི་གཞི་འཛིན་སའི་ཚིག་ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྐད་ཐོག་ལ་ཡོད་པ་དེ་ཉིད་ཡིན་པས། དེའི་དབང་དུ་བྱས་ན་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་བཞི་འདུས་པའི་ཚོགས་པའི་མིང་ལ་འཇུག་པ་ལས། བརྩམས་པའི་རིམ་པ་ལ་བརྟེན་པའི་ཨང་རིམ་བཞི་པ་རྒྱུད་པའི་དོན་ལ་གཏན་ནས་འཇུག་པ་མིན་ནོ། །གོང་སྨོས་སྒྱུར་འཇུག་གི་འགྲེལ་པ་གཉིས་སུ་གསལ་བ་ལྟར་བོད་འགྱུར་གྱི་ཚིག "བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་"ཞེས་པའི་ཚིག་དེའི་ངོ་གདོང་གང་གི་བསྟན་ཚོད་ལ་བརྟགས་ན། ཨང་རིམ་བཞི་པ་རྒྱུད་པ་སྟོན་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་ལ་ངོས་འཛིན་བྱས་ཀྱང་མི་འཐད་པ་ཆེ་བ་མེད་པ་ལྟར་དུ་མངོན་ཡང་། འདིར་གོང་སྨོས་ལྟར་གྱི་གཞི་འཛིན་སའི་ཚིག་ལེགས་སྦྱར་ཡིན་པས! དེ་ཉིད་དབང་བཙན་པས་བཞི་པ་རྒྱུད་པར་འཇུག་པ་གཏན་མི་འཐད་དོ། །ཅི་སྟེ་ངེས་མེད་ཀྱིས་བོད་ཚིག་ལྟར་བསྟོད་པའི་རྩོམ་རིམ་བཞི་པ་རྒྱུད་པ་ལ་གོ་བའི་དབང་དུ་བཏང་ན་ཡང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་རྩོམ་རིམ་གང་དུ་འཁྱིལ་ས་དེ་ཉིད་དེང་སང་གི་བཀའ་བསྟན་གྱི་དཀར་ཆག་སོགས་སུ་ཡང་དེ་ལྟར་དུ་གནས་པའི་ངེས་པ་གཏན་ནས་མེད་དོ།།

དེ་ལྟར་ཐ་སྙད་བརྟགས་ཚུལ་དང་། ལུང་འདྲེན་མཛད་ཚུལ་སོགས་ལ་ངེས་གཏན་འཁྱིལ་བ་དང་། གདེང་འཇོག་འཕེར་བའི་གཞི་རྩ་དེ་ཙམ་མི་སྣང་ཡང་། སྤྱིར་དེང་གི་དུས་སུ་བཀའ་བསྟན་གྱི་ཕྱག་དཔེ་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་ཏ་ཙང་ཉུང་ཉུང་ཡིན་པ་དང་། སྐབས་འབྲེལ་སློབ་དཔོན་གྱི་གསུང་དག་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཡིན་པས། དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ

"བསྟོད་པ་བཞི་པ"ཞེས་པའི་གཞུང་འདི་དག་དེང་གི་དུས་སུ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་པ་མ་ཟད། རྩ་གཞུང་གི་རྒྱ་དཔེ་ལག་བྲིས་འདྲ་མིན་ཇི་སྙེད་ཅིག་དང་། དེ་དག་གི་བསྡུས་དོན་དང་། དེ་དག་གི་ཚིག་འབྲུའི་འགྲེལ་པ་དག་ཀྱང་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་ལ་བརྟགས་ན། ཐ་སྙད་ཙམ་ཅིག་ལ་བརྟེན་པའི་དོན་རེ་ཟུང་ལ་ངེས་གཏན་ཆེ་བ་མེད་མོད་ཀྱང་། དེ་ལ་གཙིགས་སུ་མ་འཛིན་པར་མདོ་དོན་སྙིང་པོ་སློབ་དཔོན་གྱི་བརྩམས་གཞུང་གལ་ཆེན་བཞི་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་ནི་བསོད་ནམས་ཀྱི་བསྐལ་བ་མཆོག་ཏུ་ཁྱམས་སོ། །དེ་དག་ཇི་ལྟར་རྙེད་ཚུལ་སོགས་ཀྱི་གསལ་ཁ་ནི་འོག་ཏུ་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།།

དེང་གི་ཆར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་དེ་དག་ལས་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་བསྟོད་པ་བཞི་པའི་ནང་ཚན་དེ་དག་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་བསྟོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱེད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་དང་། དམྱལ་བ་ནས་འདྲེན་པ་ཞེས་བྱ་བ་དང་། ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་དང་། ལྷ་མོ་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་བཅས་གཞུང་བརྒྱད་ཙམ་བཞུགས་པ་ལས་ཕྱི་མ་དེ་བོད་འགྱུར་ཐོག་མེད་ཚོད་དུ་མངོན་ནོ།།

བརྟགས་པའི་རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་ན། གང་བསྟོད་པར་བྱ་རྒྱུའི་བརྗོད་དོན་དང་། བསྟོད་པ་མཛད་ཚུལ་མཐུན་ཚབ་ཆེ་བའི་དགོས་དབང་ལ་བལྟོས་ནས་གཞུང་བཞི་མཚན་བྱང་གཅིག་གི་འོག་མཉམ་འཛོག་བྱས་སོ་སྙམ་ན། དེ་ལ་ཡང་དཔྱད་གཞི་འདི་ལྟར་མཆིས་ཏེ། བསྟོད་པ་འདི་དག་གི་བརྗོད་བྱ་ཆོས་རྣམས

རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་སྟོང་ན་ཡང་། རྟེན་འབྱུང་བྱ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་ཐམས་ཅད་ལེགས་པར་འཐད་ཚུལ་གྱི་བརྗོད་གཞི་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པའི་ཆ་ནས་དེ་དག་ལྷན་དུ་འཛོམ་སྙམ་ན། དེ་དག་ལས་གཞན་པ་“བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་”ཞེས་པ་དེ་ཡང་། བརྗོད་བྱ་དང་བསྟོད་པ་མཛད་ཚུལ་གང་ཐད་ནས་དེ་དག་དང་ཤིན་ཏུ་མཐུན་ཆེ་བས། དེ་ཡང་དེ་དག་གི་ལྷན་དུ་ཅིས་ཀྱང་འཛོམ་དགོས་པར་འགྱུར་རོ། །ལར་ནས་བསྟོད་པ་བཞིའི་ནང་ཚན“དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་”ཞེས་པ་དེར་བརྗོད་བྱ་སྟོང་ཉིད་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་ལས་རྟེན་འབྱུང་གསུངས་ཚུལ་གྱི་གསལ་ཁ་དེ་ཙམ་མེད་ཚུལ་ལ་བརྟགས་ན་བསྟོད་པ་བཞིའི་ནང་ཚན་“དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་”པའི་ཆབ་ལ་“བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་”ཞེས་པ་དེ་བསྟོད་པ་གཞན་གསུམ་དང་ཤིན་ཏུ་མཐུན་ཆེ་ཞིང་ཕྱོགས་གཅིག་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པས། དེ་དག་སྡེ་ཚན་གཅིག་ཏུ་འཛོམ་རྒྱུ་བྱུང་ན་ཅི་མ་རུང་སྙམ་པ་ཡོད། གནད་དོན་དེ་འདྲ་ལ་བརྟེན་ནས་དེང་དུས་ཀྱི་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་(Prabhubhai Patel)ཞེས་པ་དེས་བསྟོད་པ་བཞི་ལ་བསྐྱར་ཞིབ་དང་ཉམས་གསོའི་ཕྱག་ལས་གནང་སྐབས་“དོན་དམ་པར་བསྟོད་པའི་”ཆབ་ལ་“བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་”ཞེས་པ་དེ་བཞག་ནས་གྲངས་བཞིར་གཏན་འབེབས་བྱས་ཡོད། དེ་ནི་བརྗོད་བྱ་དང་བརྗོད་ཚུལ་གཉིས་ཀའི་ཆ་ནས་སྡེ་ཚན་ལོགས་སུ་ཕྱེ་རྒྱུར་ཤིན་ཏུ་འོས་ཤིང་འཚམ་པ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ནོ། །

གཞུང་བཞི་ཇི་ལྟར་ངོས་འཛིན་ཚུལ་ལ་དཔྱད་པ།

བསྟོད་པ་བཞི་ཞེས་གྲགས་པའི་ནང་ཚན་གཞུང་བཞི་གང་དག་ཡིན་ངོས་འཛིན་བྱེད་པའི་ཚེ། བོད་སྐད་དང་ལེགས་སྦྱར་གཉིས་ཀའི་སྐད་ཐོག་ལུང་འདྲེན་གྱི་ལམ་ནས་གསལ་ཁ་དངོས་སུ་འཁོད་པ་ནི་གོང་སྨོས་ལྟར་"དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་" ཞེས་པ་དེ་ལས་གཞན་ལ་གསལ་ཁ་དེ་འདྲ་དངོས་སུ་འཁོད་པ་མ་རྙེད། འོན་ཀྱང་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་གཞུང་བཞི་ཕྱོགས་གཅིག་ལ་བཀོད་ནས་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་ཐ་སྙད་དངོས་སུ་སྦྱར་བའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་འདྲ་མིན་ཁག་བཞི་ཙམ་ལག་སོན་བྱུང་བ་དེ་དག་ཕལ་ཆེ་བར་བསྟོད་པ་བཞི་བགྲངས་ཚུལ་གཅིག་མཐུན་ཡོད་ཀྱང་། ཉམས་གསོ་བྱས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེར་གོང་སྨོས་ལྟར་"དོན་དམ་པར་བསྟོད་པའི་"ཚབ་ལ་"བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་བགྲངས་ཡོད། ཡང་ནུབ་གླིང་གི་མཁས་པ་ Prof. Louis de la Vallee Poussin ཞུ་བ་དེས་བསྟོད་པ་བཞི་(French)སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་དང་སྦྲགས་བོད་དཔེ་རྣམས་ཪོ་མན་ཡིག་ཐོག་ཏུ་མཉམ་བཀོད་བྱས་པ་ཞིག་བྱུང་ཡོད། དེར་"བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པའི་"ཚབ་ལ་"སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་བཀོད་ཡོད་ཚུལ་གསལ་ཡོད།

ཡང་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཨམྲྀཏཱཀར་ཞེས་པས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བཞིའི་བསྡུས་དོན་ (चतु:स्तवसमासार्थ) ཞེས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེར་དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་དང་། དོན་དམ་པར་

བསྟོད་པ་བཅས་བསྟོད་པ་གསུམ་གྱི་བསྡུས་དོན་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། གཅིག་ཚང་མེད་པ་དེ་གང་ལ་ངོས་འཛིན་གྱི་ཡོད་མེད་དང་། མཁས་པ་གཞན་རྣམས་དང་ངོས་འཛིན་ཚུལ་གཅིག་མཐུན་ཡིན་མིན་དཔྱད་དགོས་པར་མངོན། སྡེ་དགེ་སྤར་མ་སོགས་ཀྱི་བོད་འགྱུར་བསྟོད་ཚོགས་རྣམས་སུ་བསྟོད་པ་བཞི་ཟུར་འདོན་བྱས་པའི་"བསྟོད་པ་བཞི་པ་"ཞེས་པའི་སྡེ་ཚན་ཟུར་པ་ཞིག་གདན་ནས་མེད་ཀྱང་། ནང་གསེས་ཀྱི་བསྟོད་པ་རྣམས་སྔ་རྗེས་ཅི་རིགས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཚང་བར་བཀོད་ཡོད།

འདི་གའི་ལས་བྱེད་ डॉ0 ठाकुरसेन नेगी ཞུ་བ་དེས་སྒེར་གྱི་འཚོལ་བསྡུ་བགྱིས་པའི་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེའི་ཁྲོད་དུ་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཤི་རོ་མ་ཎི་ཞུ་བ་དེས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བཞིའི་རྩ་འགྲེལ་དང་། ཡང་རྩ་བ་ཀྲུང་པ་བྱས་པ་གཅིག་བཅས་ཁག་གཉིས་ལག་སོན་བྱུང་བ་དག་ཏུ་གཞུང་བཞིའི་གྲངས་བརྩི་ཚུལ་ལ་བྱིངས་དང་མ་མཐུན་པ་མེད། དེ་དག་གི་ངོ་སྤྲོད་རྒྱས་པ་གཤམ་གསལ་ལྟར་ཡིན་ནོ། །

བསྟོད་པ་བཞིའི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེའི་སྐོར།

གཞུང་འདི་དག་གི་སྐོར་ལ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་འདྲ་མིན་བདུན་ཙམ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་དེ་དག་གི་ངོ་སྤྲོད་དམ་གསལ་བཤད་མདོར་བསྡུས་ཙམ་བཀོད་པ་གཤམ་གསལ་ལྟར་ཡིན།

(༡) བལ་པོའི་མཁས་པ་ཤྲཱིདིབྱབཛྲབཛྲཱཙཱརྱ (श्री दिव्यवज्र वज्राचार्य) ཞེས་པ་དེས་གཞུང་དེ་དག་བལ་ཡུལ་རྒྱལ་ཡོངས་ནང་པའི་ཐེག་ཆེན་སྤྱི་ཚོགས་ (अखिल नेपाल महायान बौद्ध समाज) ཞེས་པའི་མཚན་ཐོག་ལ་སྤར་བསྐྲུན་

ཤུས་ཡོད། དེར་གཞུང་དེ་དག་གི་ལེགས་སྦྱར་རྩ་བ་ལ་ཉམས་ཞིབ་དང་། བལ་པོའི་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་དང་འབྲེལ་དེ་དག་སོ་སོའི་བསྡུས་དོན་དང་གླིང་བརྗོད་བཅས་བཀོད་ནས་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

(༣) འདི་གའི་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་རིགས་སྔེ་ཚན་གྱི་འགན་འཛིན་གཞོན་པ། དེང་དུས་ཀྱི་རྒྱ་གར་མཁས་པ་པཎྜིཏ྄ ཛནརྡན ཤཱསྟྲི པཎྜེཡ (पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय) ཞེས་པས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཕྱོགས་བསྡུས་ (बौद्धस्तोत्रसंग्रह) ཞེས་པའི་ནང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༡༠༨ ཙམ་ཕྱོགས་བསྡུ་གནང་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་ཁྲོད་དུ་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་གཞུང་བཞི་པོ་འདི་དག་ཀུང་ཆ་ཚང་བཀོད་ཡོད། དེར་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་ལྷ་མོ་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་ཞེས་པ་ཞིག་དང་། དཔལ་རྡོ་རྗེ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་དང་། སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱེད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཞེས་པ་དང་། དམྱལ་བ་ནས་འདོན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་བསྟོད་པ་བཅས་གཞུང་ལྔ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་གསལ་ཡོད། དེ་དག་ལས་སྔ་མ་གཉིས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་ཡང་བསྟན་འགྱུར་བསྟོད་ཚོགས་ནང་གསལ་མེད།

(༤) ནུབ་གླིང་གི་མཁས་པ་ CHR. Lindtner ཞེས་པ་དེས་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟན་བཅོས་མང་པོའི་ཐོག་ཉམས་ཞིབ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་དང་། དབྱིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་སོར་བཀྱིས་པའི་དེབ་'Nagarjuniana' ཞེས་པ་དེའི་ནང་བསྟོད་པ་བཞིའི་སྐོར་ཉམས་ཞིབ་འབྲེལ་བརྗོད་དང་སྦྲགས་

"འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་" དང་། "བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་"གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་དང་ལྷན་དུ་བོད་བསྒྱུར་ཡང་བཀོད་ཡོད། དེ་དག་ལ་ཐུགས་ཞིབ་ཆག་པོས་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་དང་འགྲེལ་རོ་མན་ཡིག་གཟུགས་ཐོག་བཀོད་ཡོད། དེར་མ་ཟད་བསྟོད་པ་དེ་གཉིས་དབྱིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་ཡང་ཞུས་ཡོད། ཕྱིར་བསྟོད་པ་བཞི་ཀའི་སྐོར་གླེང་སློང་འགྲེལ་བརྗོད་གནང་ཡོད་ཀྱང་བསྟོད་པ་གཞན་གཉིས་འདིར་བཀོད་མེད། མཁས་པ་དེས་གོང་སློས་ཀྱི་བསྟོད་པ་གཉིས་ལ་དམིགས་སུ་བཀར་ནས་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་དང་ཕབ་བསྒྱུར་བྱས་ནས་བཀོད་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་ནི། བསྟོད་པ་དེ་གཉིས་སློབ་དཔོན་གྱི་གཞུང་ཙ་ཤེ་སོགས་རིགས་ཚོགས་རྣམས་དང་ཏ་ཙང་མཐུན་ཤས་ཆེ་བའི་དགོས་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་དེབ་དེའི་ནང་བཀོད་དགོས་གལ་གྱི་འགྲེལ་བརྗོད་རྒྱུ་མཚན་དང་སྦྲགས་ནས་བཀོད་ཡོད། མཁས་པ་དེས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་བགྱིས་པའི་དེབ་དེའི་མཐར་བསྟོད་པ་བཞིའི་ལེགས་སྦྱར་ཙ་བ་དང་། རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཤི་རོམ་ནི་ (शिरोमणि) ཞེས་པས་མཛད་པའི་གཞུང་དེ་དག་གི་ཚིག་འགྲེལ་སྔོན་གྱི་ཡིག་རྙིང་ལག་བྲིས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་འདྲ་པར་ཡང་ཁ་སྐོང་གི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པར་མཛད་ཡོད།

(༤) ནུབ་གླིང་ཨི་ཏ་ལིའི་མཁས་པ་ Prof. G. tucci ཞུ་བ་དེ་བོད་ལ་ཕེབས་སྐབས་ངོར་དགོན་པར་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་གཞུང་འདི་དག་གི་ནང་ཆན་དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་། དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་གཉིས་ཀྱི་ལེགས་

སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད་པ་ལྟར་ཁོང་གིས་དེ་དག་དང་བོད་འགྱུར་སྤར་མའི་དཔར་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་དབྱིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་བཅས་གནང་ནས་སྐད་ཡིག་གསུམ་གྱི་ཐོག Journal of Royal Asiatic Society (JRAS) ཞེས་པའི་ཆེད་རྩོམ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་བགྱིས་པའི་དུས་དེབ་ནང་ ༡༩༣༣ ལོར་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ངོར་དགོན་པ་ནས་རྙེད་པའི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེའི་ཁྲོད་དུ་སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཉི་ཤུ་པ་ཞེས་པའི་གཞུང་དེའི་རྒྱ་དཔེ་དང་འདབ་སྦྱར་གྱི་ཚུལ་དུ་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཨམྲྀཏཀཱར་ (अमृतकार) ཞེས་པས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བཞིའི་བསྡུས་དོན་ (चतुःस्तवसमासार्थ) ཞེས་པའི་རྒྱ་དཔེ་དེ་ཡང་རྙེད་སོན་བྱུང་འདུག དེའི་ནང་དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་དང་། དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་བཅས་ཀྱི་བསྡུས་དོན་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པའི་བསྡུས་དོན་གསལ་མེད་པ་ནི་རྒྱ་དཔེ་མ་ཚང་བའི་རྐྱེན་གྱིས་ཡིན་ཚོད་འདུག བསྡུས་དོན་དེ་དག་ཏུ་ས་བཅུ་པའི་མདོ་དང་། རྒྱུད་བླ་མ་སོགས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་མང་པོ་ཞིག་བཀོད་ཡོད། ཕྱག་དཔེའི་དབུ་ཞབས་ལ་བརྟགས་སྐབས་ཕལ་ཆེར་ཚང་ཡོད་པ་ལྟ་བུ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ཡང་། དངོས་དོན་གཞི་བཞག་སའི་རྒྱ་དཔེ་ཤིང་ལོ་སོགས་ཀྱི་ཐོག་བྲིས་པ། ཆེས་བགྲེས་སོང་ལ་བརྟེན་ནས་ཡི་གེ་མ་གསལ་བ་དང་། ཆད་སྐྱོན་དང་། མ་ཚང་བ་མང་བའི་རྐྱེན་གྱིས་བལྟ་མི་བཟོད་པ་ལྟ་བུའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པས། ད་ལམ་དེབ་འདིའི་ནང་གཞུང་དངོས་

དང་དེའི་ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་གང་དུ་ཡང་བཀོད་ཐབས་བདེ་པོ་མ་བྱུང་། རྒྱུ་མཚན་གཙོ་བོ་ཞིག་ནི། གཞུང་དེ་དེ་སྔ་བོད་སྐད་ཐོག་མ་བསྒྱུར་བའི་གྲས་ཡིན་པས་ཉམས་གསོ་སོགས་བྱེད་ཐུབ་ཐབས་མེད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ཡིན། གོང་སློས་མཁས་པ་དེས་ལུང་འདྲེན་སོགས་ལ་བསྐྱར་ཞིབ་དང་འགྲེལ་གླེང་བརྗོད་མདོར་བསྡུས་ཤིག་བཀོད་ནས་ Minor Buddhist Texts ཞེས་པའི་དེབ་དེའི་ནང་རོ་མན་ཡི་གེའི་ཐོག་བཀོད་ཡོད། དེབ་དེའི་ནང་མཁས་པ་དེས་སློབ་དཔོན་ཀམལཤཱིལས་མཛད་པའི་སྒོམ་རིམ་དང་པོ་དང་། འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ཀྱིས་མཛད་པའི་རྡོ་རྗེ་བཅོད་པའི་བཤད་སྦྱར་གྱི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ་སོགས་གཞུང་མང་པོའི་ཐོག་ཉམས་ཞིབ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་དང་ཕབ་བསྒྱུར་སོགས་ཀྱི་ཕྱག་ལས་མང་པོ་གནང་བ་ཁག་གསལ་ཡོད།

(༥) འདི་གའི་སློབ་ཁང་གི་དཔེ་རྒྱུན་དཀོན་རིགས་ཉམས་ཞིབ་སྡེ་ཚན་གྱི་ལས་བྱེད་ डॉ0 ठाकुरसेन नेगी སྐུ་སྒེར་གྱིས་འཚོལ་བསྡུ་གནང་བའི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེའི་ཁྲོད་ལ་རྒྱ་གར་གྱི་སློབ་དཔོན་ཤིརོམཎི་ (शिरोमणि) ཞུ་བས་མཛད་པའི་ཨཀཱརིཊཱིཀཱ་[1] (अकारिटीका) ཞེས་པའི་འགྲེལ་པ་དེར་བསྙོད་པ་བཞིའི་གཞུང་རྩ་བ་དང་། གཞུང་ཚིག་གལ་ཆེ་ཁག་གི་འབྲུ་འགྲེལ་གསལ་ཡོད། གཞུང་དེ་ད་ལྟའི་ཆར་སྔོན་གྱི་ནེ་ཝཱ་རཱི་ཡིག་རྙིང་ཐོག་གསལ་ཡོད། མ་དཔེ་དེ་ (Tokyo University Library) ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད། དེར་

[1] ལག་བྲིས་མ་དཔེ་ཨང་༣༤༠། ནེ་ཝཱ་རཱིའི་ཡིག་རྙིང་ཐོག་ཡོད་པ། མ་དཔེའི་ཤོག་གྲངས། ༡-༣༦ (हस्तलेख सं० ३४०, लिपि नेवारी, पत्र संख्या 1-36)

བསྟོད་པ་བཞི་ཀའི་ཚིག་འགྲེལ་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། ད་ལྟ་ཁོང་གི་ཕྱག་ཏུ་སོན་པའི་མ་དཔེ་དེ་བགྲེས་སྐྱོན་ཆེ་བའི་དབང་གིས་མ་ཚང་བ་མང་ཙམ་སྣང་བས། དེ་ལས་ཀྱང་ཚང་ཆེ་བ་ཞིག་ཁོང་ལ་བལ་ཡུལ་ནས་རྙེད་རྒྱུའི་རེ་བ་གནང་བཞིན་འདུག་པས། ད་ལམ་འདིར་གཞུང་རྩ་བ་དང་ལྷན་དུ་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་བྱས་པ་ལས་འགྲེལ་པ་ཕབ་བཤུས་དང་སྤྱར་འདེབས་བྱས་མེད། གཞུང་དེ་ལ་ཡང་ཆད་སྐྱོན་མང་ཞིང་དེ་ལེགས་སྦྱར་ནས་བོད་སྐད་ཐོག་མ་བསྒྱུར་བའི་གྲས་ཤིག་ཡིན།

ཡང་གོང་སློས་ཀྱི་ཁུ་ནུའི་མཁས་པ་དེས་འཚོལ་བསྡུ་བགྱིས་པའི་ཕྱག་དཔེའི་ཁྲོད་དུ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བསྟོད་པ་བཞིའི་རྩ་བ་རྐྱང་པ་བྱས་པ།[1] ཕྲན་བུ་མ་ཚང་བ་ཞིག་ཀྱང་ལག་སོན་བྱུང་། མ་དཔེ་དེ་ཁོང་ལ་ Institute for Advance Studies of World Religions America ཞེས་པ་ནས་ཕྱག་སོན་བྱུང་ཡོད་འདུག དེ་དང་ཡང་གཞུང་འདི་དཔར་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་ཁྱད་པར་ཆེ་གྲས་རྣམས་གཞུང་རྩ་བའི་གཤམ་མཆན་དུ་བཀོད་ཡོད།

(༦) Indian Historical Quarterly (IHQ) ཞེས་པའི་ཆེད་རྩོམ་འདྲ་མིན་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་བགྱིས་པའི་དུས་དེབ་ (Vol. VIII) ནང་དེང་དུས་ཀྱི་རྒྱ་གར་མཁས་པ་ Prabhubhai Patel ཞེས་པ་དེས་བསྟོད་པ་བཞིའི་བོད་

---

༡ ལག་བྲིས་མ་དཔེ་ཨང་༡–༩༣ ནེ་ཝཱ་རིའི་ཡིག་རྐྱང་ཐོག་ཡོད་པ། མ་དཔེ་ཤོག་གྲངས། ༡–༡༤ (हस्तलेख सं० एम० बी० बी० 1-93, लिपि नेवारी, पत्र संख्या 1-14)

འགྱུར་སྒྱུར་མ་ལ་གཞི་མཛད་ནས་གཞུང་རྩ་བ་ལེགས་སྦྱར་རང་སྐད་ཐོག་ཉམས་གསོ་དང་སྦྲགས་བོད་དཔེ་རྣམས་སྒྱུར་མ་ཕན་ཚུན་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་། ལུང་འདྲེན་འཚོལ་ཞིབ་དང་མཆན་བཀོད་སོགས་གནང་ནས་དེ་དག་དང་ལྷན་དུ་རོ་མན་ཡིག་གཟུགས་ཐོག་བཀོད་ཡོད། མཁས་པ་དེས་གཞུང་དེའི་ཐོག་ཞུགས་ལས་གནང་སྐབས། ལེགས་སྦྱར་གྱི་མ་དཔེ་ངོ་མ་ཉམས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཞུགས་ཡོད་པ་རྙས་མངའ་མ་བྱུང་བའམ། མ་དཔེ་ཞུག་སོན་མ་བྱུང་བའི་དབང་གིས་བོད་དཔེ་ལ་གཞི་བྱས་ནས་བསྒྱུར་གསོའི་ཞུགས་ལས་གནང་དགོས་པ་ཡང་བྱུང་ཡོད། ཁོང་གིས་བསྟོད་པ་བཞིའི་གཞུང་ངོས་འཛིན་ཚུལ་ལ་མཁས་པ་གཞན་དང་ཁྱད་པར་ཆེ་སྟེ། གཞན་གྱིས་བགྲངས་པའི་"དོན་དམ་པར་བསྟོད་པའི་"ཚབ་ལ་"བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་ཉམས་གསོ་བྱས་ནས་བཀོད་ཡོད། གོང་སྨོས་བཞིན་བསྟོད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་བརྗོད་བྱ་དང་བསྟོད་ཚུལ་གཉི་ཀའི་ཆ་ནས་གཞུང་གཞན་གསུམ་དང་མཐུན་ཤས་ཆེ་བའི་དགེ་མཚན་ཆེན་པོ་ཡོད།

དེ་ལྟར་གོང་སྨོས་ཀྱི་མཁས་པ་ཁག་གི་རྩོམ་དེབ་དང་། ཆེད་རྩོམ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་ཀྱི་སྔོན་བརྗོད་སོགས་སུ་གསལ་བ་ལྟར་ན། ནུབ་གླིང་ཕ་རན་སིའི་ (France) མཁས་པ་ Prof. Louis. de La Vallee Poussin ཞེས་པ་དེས་བསྟོད་པ་བཞིའི་ཐོག་ཞུགས་ལས་གནང་ཡོད་སྐོར་གྱི་གསལ་ཁ་འཕོད་པ་ལྟར། ཁོང་གིས་བསྟོད་པ་བཞིའི་ངོས་འཛིན་གནང་སྐབས་ "བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པའི་"ཚབ་ལ་"སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་

བསྒྲངས་ཡོད། བསྒྲངས་ཚུལ་དེ་ནི་བསྟན་འགྱུར་ནང་ཇི་ལྟར་བཀོད་པའི་རིམ་པ་ཉིད་ལ་གཞི་བྱས་ནས་བཀོད་པ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ཏེ། དེར་"དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་"དང་། "འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་"གཉིས་ཀྱི་རྗེས་སུ་"སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ་"ཞེས་པ་དེ་གསལ་ཡོད། དེའི་རྗེས་ཉིད་ལ་དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་གསལ་ཡོད་པས་བཀོད་པའི་རིམ་པ་དེ་དང་མཐུན་པར་དེ་བཞི་ལ་ངོས་འཛིན་གནང་བ་ཞིག་ཏུ་མངོན་ནོ། "།བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་"ནི་དེ་བཞིའི་རྗེས་སུ་"སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ་"རྩ་འགྲེལ་སོགས་གཞུང་ཚན་གཞན་ལྔའི་རྗེས་ལ་བཀོད་ཡོད་པས་སོ། །གོང་སྨོས་ཀྱི་མཁས་པ་དེ་ལ་ཡང་གཞུང་འདི་དག་གི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་ཕྱག་ཏུ་སོན་མེད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་བོད་དཔེ་ལ་གཞི་བྱས་ནས་ཕ་རན་སིའི་སྐད་ཡིག་ཕབ་བསྒྱུར་དང་འགྲེལ་ ༡༩༡༨ ལ་དེ་གཉིས་ལྷན་དུ་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད་འདུག འོན་ཀྱང་ནུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་ཁབ་ཁག་ནང་དམག་ཆེན་འབྱུང་སྐབས་དཔེ་དེབ་དེ་རིགས་མང་པོ་ཞིག་ཉམས་བརླག་ཕྱིན་ཡོད་སྐོར་ཡང་གསལ་ཡོད།

(༤) འདི་གའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་མཁས་དབང་ཐུབ་བསྟན་མཆོག་སྒྲུབ་གང་ཉིད་ལེགས་སྦྱར་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་དུ་ནང་པའི་ལྟ་གྲུབ་སློ་ཚན་གྱི་མཛད་གཙོའི་ཕྱག་ལས་གནང་སྐབས། སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བཞི་པའི་ནང་ཚན་"དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་"དང་། "དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་"གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་དང་དེའི་དབྱིན་བསྒྱུར་སོགས་ནུབ་གླིང་ཨི་ཊ་ལི་ནས་རྙེད་སོན་བྱུང་ཡོད་དོན་བཞིན་བོད་དཔེ་དང་ལྷན་དུ

འདྲ་བསྒྱུར་དག་ཞུས་དང་འབྲེལ། གཞུང་དེ་དག་གི་སྐོར་གླེང་བརྗོད་དང་བསྡུས་དོན་འགྲེལ་བརྗོད་ཅེན་སྐད་ཐོག་བཀོད་ནས་སློབ་ཁང་དེའི་ संकाय पत्रिका, श्रमणविद्या ཞེས་པའི་དུས་དེབ་ཨང་གསུམ་པའི་ནང་། ཕྱི་ལོ་३००० ལོ་ལ་འདོན་སྤེལ་གནང་ཡོད། ཁོང་གིས་ཕྱག་ལས་གནང་རྒྱུའི་གཞུང་དེ་གཉིས་གོང་སྨོས་ཀྱི་ནུབ་གླིང་གི་མཁས་པ་ Prof. G. Tucci ཞུ་བ་དེས་འཚོལ་ཞིབ་འདྲ་བསྒྱུར་སོགས་གནང་བའི་མ་དཔེ་དེ་ཉིད་ཀྱི་གྲུས་ཤིག་ཡིན་པར་མངོན་ཏེ། དེའི་སྐོར་གྱི་འགྲེལ་བརྗོད་རྒྱས་པ་གོང་དུ་སྨོས་ཟིན་ཏོ། །

ཕབ་བསྒྱུར་དང་འདྲ་བསྒྱུར་བསྐྱར་ཞིབ་ཇི་ལྟར་བྱས་ཚུལ།

སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་ནང་ཚན་ཐ་སྙད་ཕྱིས་སུ་བྱུང་བའི་"བསྟོད་པ་བཞི་པ"ཞེས་པའི་གཞུང་འདི་དག་གི་སྐོར་ལ། ད་ལམ་འདིར་གཞུང་དེ་དག་སྡེ་དགེ་སྣར་མ་གཞི་རྩར་བཟུང་བའི་ཐོག སྣར་ཐང་དང་། པེ་ཀིང་། གསེར་བྲིས་སྣར་བཤུས་སོགས་དང་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་ཚིག་སྣ་མ་མཐུན་པ་དང་། གཞུང་དོན་གྱི་གོ་བ་ལ་ཕན་གནོད་འབྲེལ་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་རྣམས་འོག་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་ཅིང་། གཞུང་དེ་དག་གི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་དང་། བོད་འགྱུར་དབར་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་བྱེད་སྐབས་ཚིག་དོན་གྱི་ཆ་ལ་མ་མཐུན་པ་དང་། མ་ཚང་བ་དང་དག་མ་དག་སོགས་ཀྱི་

ཁྱད་པར་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་སློས་མེད་ཐོག ཚིགས་བཅད་རེ་ཟུང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ལ་ཡོད་ཀྱང་བོད་དཔེར་མེད་པ་དང་། ཚིགས་བཅད་ཕྱེད་ཡོད་ལ་ཕྱེད་མེད་པ་སོགས་མདོར་ན་གསར་དུ་བསྒྱུར་དགོས་པ་དང་། བསྒྱུར་གསོ་དང་ཁ་བསྐང་གྲངས་ཚང་བཟོ་དགོས་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་བྱུང་ཡོད་པ་དེ་དག་གི་སྐོར་གཞུང་དངོས་ཀྱི་འགྲེལ་ཡོད་ཚིགས་བཅད་དེ་དག་གི་ཐད་དུ་འགྲེལ་བརྗོད་དགོས་ངེས་དང་སྤྲགས་མཆན་བཀོད་བྱས་ཡོད།

འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་འདི་དག་བྱས་རྗེས་སུ་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ལ་གཞི་བྱས་ནས་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་དག་བྱས་ཡོད། ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་ལ་དམིགས་བསལ་འགྲེལ་བརྗོད་བྱེད་དགོས་པ་ཞིག་ལ། དང་ཐོག་ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་འགྱུར་གྱི་མ་དཔེ་གཉིས་ཀ་ལ་གཞི་བཙལ་ནས་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་བྱས་རུང་། མཐའ་མའི་ཞུ་དག་སྐབས་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་ལ་ཞུ་ཆེན་གྱི་རོགས་མགོན་དང་གཟིགས་རྟོགས་གནང་མཁན་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་རཱམཤཾཀར་ཏྲིཔཱཋི་མཆོག་ནས་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ཉིད་ལ་གཙོ་བཟུང་གནང་ནས་ཕབ་བསྒྱུར་གྱི་ལས་དོན་རྣམས་གཏན་འབེབས་གནང་ཡོད་པས། ད་ལམ་འདིར་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་བགྱིས་པ་དེ་དག་གི་གཞུང་དོན་བསྟན་ཚུལ་གྱི་གོ་རིམ་དང་། ཚིག་དོན་གྱི་ཆ་མང་པོ་ཞིག་བོད་དཔེ་ལས་ལེགས་སྦྱར་དང་མཐུན་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། འོན་ཀྱང་དགོས་གལ་ལ་གཞིགས་ཏེ་བོད་དཔེར་ལྟཔ་བསྟུན་དང་འགྲེལ་ཁུངས་གཏུགས་མང་པོ་གནང་ཡོད་པ་ནི་སྔྲིར་བཞག་ཏུ་མེད་པའི་གནས་སྐངས་ཞིག་ཡིན།

སྤྱིར་བཏང་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་གཞུང་ཆུང་བ་ཆེས་འགངས་ཅན་མང་པོ་ཞིག་ཇོ་བོའི་ཆོས་ཆུང་བརྒྱ་རྩའི་ནང་འགྱུར་དང་ཚིག་སྦྱོར་མི་འདྲ་བའི་ཁྱད་ནུས་ལྷག་དང་བཅས་པའི་ཚུལ་དུ་འཁོད་པ་ཆེས་མང་པོ་ཡོད་ཀྱང་། སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ནང་བཞུགས་ཀྱི་གཞུང་རྣམས་ལས་“བླ་ན་མེད་པའི་བསྟོད་པ་”ཞེས་པ་དེ་ལས་གཞན་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་གཞུང་འདི་དག་དེར་འཁོད་མེད། བསྟོད་པ་བཞིའི་ནང་ཚན་གྱི་གཞུང་འདི་དག་ལ་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་པས་མཛད་པའི་བོད་འགྱུར་གྱི་རྒྱ་འགྲེལ་མ་རྙེད་པར་མ་ཟད་བོད་འགྲེལ་ཡང་གཞུང་གཅིག་ལ་མ་གཏོགས་རྙེད་སོན་མ་བྱུང་། དེ་ནི་རོང་སྟོན་ཤཱཀྱ་རྒྱལ་མཚན་གྱིས་མཛད་པའི་“དོན་དམ་པར་བསྟོད་པའི་”འགྲེལ་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེ་ཡིན། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་གོང་སྨོས་བཞིན་བསྟོད་པ་བཞིའི་བསྡུས་དོན་ཞེས་པ་ཞིག་དང་། བསྟོད་པ་བཞིའི་ཚིག་འགྲེལ་གསལ་བ་ཞིག་བཅས་རྒྱ་དཔེ་གཉིས་ལག་སོན་བྱུང་ཡང་། དེ་གཉིས་ཀ་བོད་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་མེད་པར་མ་ཟད། ཐོག་མའི་མ་དཔེ་དེ་དག་བགྲིས་སྐྱོན་ཆེ་བའི་རྐྱེན་གྱིས་ཆ་ཤས་མ་ཚང་བ་མང་བ་དང་། ལྷག་པར་དུ་གཞུང་ཟུ་མ་དེ་བལྟ་མི་བཟོད་པ་ལྟ་བུའི་གནས་སྟངས་ཅན་དུ་ཡོད་པས། དེ་དག་གི་མ་དཔེ་ཚང་ཆེ་བ་ཞིག་མ་སོན་བར་དུ་འདིའི་ཐོག་ལས་དོན་བྱེད་དཀའ་བས། ད་ལམ་འདིར་འདྲ་བསྡུར་བསྐྱར་ཞིབ་བྱེད་རྒྱུ་ཙམ་ལས། གཞུང་དངོས་དང་། ཁ་སྐོང་གང་གི་ཁོངས་སུ་ཡང་སྤར་ཐེངས་འདིའི་སྐབས་བཀོད་བདེ་བྱུང་མ་སོང་བས་ཕྱིས་སུ་སྤར་ཐེངས་གཉིས་པའི་དགོས་གལ་ནམ་བྱུང་སྐབས་འབད་རྩོལ་བསྐར་མ་ཞིག་བྱེད་དགོས་པ་བཟློག་མེད་ལ་བརྟེན། སྐབས་

དེའི་ཚེ་ཆ་རྐྱེན་འཛོམས་ཆེ་ཆུང་ལ་གཞིགས་ཏེ་གདན་འབེབས་བྱ་འདུན་ལགས་སོ།།

བསྟོད་པ་གང་ཞིག་བསྟོད་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར་ངེས་པའི་རྒྱུ་མཚན་བཤད་པ།

སྤྱིར་སྐྱབས་ཡུལ་གྱི་ཞིང་དམ་པ་རྣམས་ལ་གང་བསྟོད་པར་བྱ་རྒྱུའི་ཡོན་ཏན་གྱི་རྣམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་ཤིང་། ཇི་ལྟར་བསྟོད་ཚུལ་གྱི་ཐབས་སམ་བསྟོད་པའི་སྒོ་ཆེས་མང་དག་ཅིག་མཆིས་ཀྱང་། དེ་དག་ཀུན་གྱི་ནང་ནས་གང་ལ་བསྟོད་རྒྱུའི་ཡོན་ཏན་ནམ་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་དང་། ཇི་ལྟར་བསྟོད་ཚུལ་གྱི་སྒོ་ཆེས་ངོ་མཚར་ཅན་དེ་གང་ལ་བྱ་སྙམ་ན། དེ་ཡང་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་སྲས་ཉན་ཐོས་དང་བཅས་པའི་ཡོན་ཏན་ནམ་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་ནང་ནས་རབ་དང་ཕུལ་དུ་བྱུང་བ་གསུང་གི་མཛད་པ་ཉིད་ཡིན་པས། སྤྱིར་རྨད་དུ་བྱུང་བའི་མཛད་པའམ་ཡོན་ཏན་དེའི་སྒོ་ནས་དང་། ཁྱད་པར་དུ་རྟེན་འབྱུང་ཟབ་མོ་གསུངས་ཚུལ་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་དང་། ཚུལ་དེ་རིགས་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར་བའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་ཀྱང་བསྟོད་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར་ཐུབ་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པའི་འཕགས་ཆོས་བླ་ན་མེད་པ་དང་ལྡན་པ་ཡིན་ཏེ། དེ་ལ་དང་པོ་གསུང་གི་མཛད་པ་ཉིད་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་རབ་དང་ཕུལ་ཡིན་ཚུལ་ནི། དེ་ཡང་ཇོ་བདག་ཉིད་ཆེན་

པོས་མཛད་པའི་སྟོན་པ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ལས།[1]

མཛད་པ་ཀུན་ལས་གསུང་གི་ནི། །
མཛད་པ་མཆོག་ཡིན་དེ་ཡང་ནི། །
འདི་ཉིད་ཡིན་ཕྱིར་མཁས་པ་ཡིས། །
འདི་ལས་སངས་རྒྱས་རྗེས་དྲན་བྱོས། ། ཞེས་གསུངས།

དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་ཀུང་ཐང་གི་གསུང་འཕགས་མཆོག་འཇམ་དཔལ་དཀར་པོའི་བསྟོད་པ་ལས།[2]

ཟབ་མོའི་དེ་ཉིད་ཉིད་ཀྱིས་བཟིགས་པ···

···ཇི་བཞིན་ལེགས་གསུངས་གསུང་གི་འོད་ཟེར་གྱིས།།

རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་རབ་འབྱམས་དགོངས་དོན་ཇི···

···བཞིན་གསལ་མཛད་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག།

གདུལ་བྱའི་ལས་དབང་དབང་པོའི་རིམ་པ···

···ཇི་བཞིན་ཆོས་སྟོན་སྟོན་པ་ལྷ་ན་མེད། །ཅེས་དང་།

ཇོ་དཔལ་སྤྲུལ་གྱི་གསུང་སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་གི་གསང་བ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་ལ་བསྔགས་པ་པདྨ་དཀར་པོའི་ཆུན་འཕྲུང་ལས།[3]

---

༡ ཧེ། 'ཁ' ༣༨ (དེབ་གཟུགས)
༢ ཧེ་ཀུང་ཐང་། 'ཛ' ༨༤༧ (དེབ་གཟུགས)
༣ པོད། 'ཀ' ༡༣༠ (དེབ་གཟུགས།)

སྨྲ་སྟོན་རིན་ཆེན་ཐུབ་པའི་ལེགས་གསུང་བཀའ། །
བཀའ་ཡི་རྗེས་འབྲེལ་ཕུན་ཚོགས་བསྟན་བཅོས་གཞུང་། །
ཐར་ལམ་བྱེད་པོ་གཞན་ན་ཡོད་མིན་ཏེ། །
རྒྱལ་བ་དངོས་ཞིས་ཐུབ་པ་མཆོག་གིས་གསུངས། །

ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལྟར་གསུང་གི་མཛད་པ་ཉིད་མཛད་པ་ཀུན་གྱི་མཆོག་ཡིན་པའི་རྒྱུ་མཚན་དེ་ལ་བརྟེན་ནས། རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་བཟང་དང་དཔེ་བྱད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་ནས་འགྲུབ་དཀའ་ཤོས་གསུང་ཚངས་པའི་དབྱངས་ཡིན་པ་དང་། དད་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནང་ནས་གསུང་གི་རྟེན་ཉིད་ལྷག་དང་བཅས་པའི་དགོས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཉིས་འགྱུར་ཕྱག་བྱར་འོས་པའི་རྟེན་རྩ་ཆེ་ཤོས་སུ་བརྩི་བར་བྱེད་པ་དག་ཀྱང་གནད་དེ་ཉིད་ལ་ཐུག་པ་ཡིན་ནོ། །

གཉིས་པ་རྟེན་འབྱུང་ཟབ་མོ་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ་ཉིད་བསྟོད་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་པོ་དང་། བསྟོད་པའི་སྒོ་ཆེས་ངོ་མཚར་ཅན་དུ་འགྱུར་ཚུལ་ནི། གོང་སློས་ཀྱི་རྗེའི་གསུང་དེ་ཉིད་ལས།༡

དེ་ལྟ་ལགས་ན་མགོན་ཁྱོད་ལ། །
བསྟོད་པའི་སྒོར་ནི་སུ་ཞིག་གིས། །
བརྟེན་ནས་འབྱུང་བ་གསུངས་པ་ལས། །
ངོ་མཚར་གྱུར་པ་ཅི་ཞིག་རྙེད། ། ཅེས་དང་།
གང་གང་རྐྱེན་ལ་རག་ལས་པ། །

༡ ཧེ། 'ཁ' ༣༠ (དཔ་གཟུགས།)

དེ་དེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་ཞེས། །
གསུང་བ་འདི་ལས་ཡ་མཚན་པའི། །
ལེགས་འདོམས་ཚུལ་ནི་ཅི་ཞིག་ཡོད།[༡] ། ཅེས་དང་།
འདི་ལས་ངོ་མཚར་གྱུར་པ་དང་། །
འདི་ལས་རྨད་དུ་བྱུང་བ་གང་། །
ཚུལ་འདིས་ཁྱོད་ལ་བསྟོད་ན་ནི། །
བསྟོད་པར་འགྱུར་གྱི་གཞན་དུ་མིན།[༢] །

ཞེས་གསུངས། དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་ཀུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མ་ལས།[༣]

སྟོན་པ་མཆོག་དེར་བསྟོད་པའི་སྒོ། །
ཀུན་གྱི་བླ་མར་གྱུར་པ་ཡང་། །
རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་གསུངས་པ་སྟེ། །
ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་དང་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟིགས། །

ཞེས་གསུངས། མདོར་བསྡུས་ན་རྗེའི་གསུང་དྲང་ངེས་ལེགས་བཤད་སྙིང་པོ་ལས།[༤] "རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་རྟེན་འབྱུང་གི་དོན་དུ་གསུངས་པ་འདི་ཉིད

---

༡ རྗེ། 'ཁ' ༣༠ (དེབ་གཟུགས།)
༢ རྗེ། 'ཁ' ༣༡ (དེབ་གཟུགས།)
༣ རྗེ་ཀུང་ཐང་། 'ཀ' ༨ (དེབ་གཟུགས།)
༤ རྗེ། 'པ' ༥༧༠ (དེབ་གཟུགས།)

རང་གི་སྟོན་པ་བླ་བ་གཞན་ལས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པའི་འཕགས་ཆོས་བླ་ན་མེད་པར་གཟིགས་ནས། སློབ་དཔོན་གྱི་གཞུང་མང་པོར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་རྟེན་འབྱུང་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་དེ" ཞིས་སོགས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་བཞིན་སྐབས་འབྲེལ་གྱི་སློབ་དཔོན་གྱི་གཞུང་འདི་དག་ཏུ་ཡང་དོན་དེ་ཉིད་ལས་བརྩམས་ཏེ་བསྟོད་པ་ཉིད་གཙོ་ཆེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད།

གསུམ་པ་རིགས་པ་ཀུན་གྱི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཡིན་ཚུལ་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོར་འགྱུར་ཚུལ་ནི། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་གྱི་རིགས་ཚུལ་འདིས་ནི། མཐོང་བ་མངོན་འགྱུར་གྱི་ཆོས་རྣམས་ལ་གཙང་བདེ་རྟག་བདག་ཏུ་སྒྲོ་འདོགས་པ་དང་། མ་མཐོང་བ་ལྐོག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཆོས་ཐར་པ་དང་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་སོགས་མེད་དོ་ཞེས་སྐུར་བ་འདེབས་པའི་རྟག་ཆད་ཀྱི་མཐའ་གཉིས་གཅིག་ཅར་དུ་སེལ་ནུས་པའི་ཕྱིར་ན་རིགས་པ་ཀུན་གྱི་རབ་དང་ཞུལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ། །

ཚུལ་འདི་ལ་དགོངས་ནས་དཔལ་ལྡན་ཟླ་བས་དབུ་མ་འཇུག་པར།[༡]

དེ་ཕྱིར་རྟེན་འབྱུང་རིགས་པ་འདི་ཡིས་ནི། །

ལྟ་ངན་དྲ་བ་མཐའ་དག་གཅོད་པར་བྱེད། །

ཅེས་གསུངས། དེ་བཞིན་དུ་རྗེའི་གསུང་རྣམ་བཤད་རིགས་པའི་རྒྱ་མཚོ་ལས།[༢] "རྒྱུ་རྐྱེན་ལ་བརྟེན་ནས་སྐྱེ་བའི་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཉིད་ཀྱིས་མཐའ་བརྒྱད་

---

༡ སྡེ། བསྟན། (དབུ་མ། 'འ' ༣༠༩)

༢ རྗེ། 'བ' ༥༦༣ (དབ་གཟུགས།)

དང་། ལྟ་བ་ངན་པ་ཐམས་ཅད་འགོག་པར་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དབུ་ཞབས་གཉིས་ཀར་བསྟན་ལ། བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ལུས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་ཉིད་འཆད་པ་ཡིན་པས། རིགས་པ་རྣམས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྱུང་གི་རིགས་པ་ཉིད་ལ་འབད་ནས་ཟབ་མོ་དབུ་མའི་ཚུལ་ངེས་པ་དོན་གྱི་སྙིང་པོའི་ལྟ་བ་རང་དང་གཞན་གྱི་རྒྱུད་ལ་རྒྱས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས། ལྕང་སྐྱ་རོལ་པའི་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་གྲུབ་མཐའ་ཐུབ་བསྟན་ལྷུན་པོའི་མཛེས་རྒྱན་ལས།[2] “བདག་མེད་པ་སྒྲུབ་བྱེད་ཀྱི་འགྲེལ་ཟླ་མ་དམིགས་པའི་གཏན་ཚིགས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནད་རྟེན་འབྱུང་གི་གཏན་ཚིགས་ཉིད་ལ་ཐུག་སྟེ། གཏན་ཚིགས་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྱི་གཙོ་བོ་ནི་མཐའ་གཉིས་ཅིག་ཅར་བསལ་ནས་དབུ་མའི་ལྟ་བ་རྒྱུད་ལ་བསྐྱེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཞིང་། དོན་དེ་ནི་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་དངོས་སུ་སྒྲུབ་པའི་ཕྱིར་དང་། རིགས་པ་དེ་དག་མཐར་གཏུགས་ན་ཚུལ་དེ་ཉིད་ལ་ཐུག་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་བདག་མེད་སྒྲུབ་པའི་རིགས་པའི་རྣམ་གྲངས་མཐའ་དག་མཐར་གཏུགས་ན་རྟེན་ནས་འབྱུང་བའི་གཏན་ཚིགས་ཉིད་ལ་ཐུག་པས་དེ་ཉིད་རིགས་པ་རྣམས་ཀྱི་གཙོ་བོ་དང་། རིགས་པ་རྣམས་ཀྱི་དོན་པོར་བཟུང་དགོས་སོ།།

མདོར་བསྡུས་ན། རྗེའི་གསུང་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པ་ལས།[3]

ཕན་མཛད་ཁྱོད་ཀྱིས་འགྲོ་བ་ལ། །སྨན་པའི་སླད་དུ་བཀའ་སྩལ་པ།།
བསྟན་པའི་སྙིང་པོ་སྟོང་པ་ཉིད། །ངེས་པའི་རྒྱུ་མཚན་ཟླ་མེད་པ།།

[2] གྲུབ་མཐའ། ༨༥༣ (ནང་གསེས། ‘ང’ དེབ།)
[3] རྗེ། ‘ཁ’ ༣༠ (དེབ་གཟུགས།)

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཚུལ།།

ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ངེས་དོན་བསྟན་པའི་སྙིང་པོ་གནས་ལུགས་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ཉིད་མཐའ་གཉིས་དང་བྲལ་ཞིང་། སྟོང་པ་རྟེན་འབྱུང་དང་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པའི་དོན་དུ་ངེས་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུ་མཚན་བླ་མེད་པ་ནི་རིགས་པའི་རྒྱལ་པོ་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་གཏན་ཚིགས་ཉིད་ཡིན་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་ལྟར་རྟེན་འབྱུང་ཟབ་མོའི་ཆོས་ཚུལ་དེ་ལ་དེ་ལྟ་བུའི་གུས་བརྗི་དང་། གལ་གནད་ཆེན་པོ་རྩིས་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་མཚོན་པ་ཙམ་བཀོད་ན། དེ་ཡང་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་གསུང་ལས།[༡]

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་འདི་རྒྱལ་བ་ཡི། །
གསུང་གི་མཛོད་ཀྱི་གཅེས་པ་ཟབ་མོ་སྟེ། །

ཞེས་དང་། རྗེའི་གསུང་གོང་སློས་དེ་ཉིད་ལས།[༢]

ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་སྙེད་བཀའ་བསྩལ་པ། །
རྟེན་འབྲེལ་ཉིད་ལས་བརྩམས་ཏེ་འཇུག །
དེ་ཡང་མྱ་ངན་འདའ་ཕྱིར་ཏེ། །
ཞི་འགྱུར་མིན་མཛད་ཁྱོད་ལ་མེད། །

ཅེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མ་ལས།[༣]

---

༡ སྡེ། བསྟན། (སྤྲིངས་ཡིག་ 'ངེ' ༨༥)
༢ རྗེ། 'ཁ' (དཔེ་གཟུགས།)
༣ རྗེ་གུང་ཐང་། པོད། 'ཀ' ༦ (དཔེ་གཟུགས།)

བརྒྱད་ཁྲི་བཞི་སྟོང་ཆོས་ཀྱི་སྒོ།། |

ཇི་སྙེད་རྒྱལ་བས་གསུངས་པ་ཀུན། |

གང་དུ་གཞོལ་ཞིང་འབབ་པའི་གནས། |

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་འདི་ཡོ་ན། |

ཅི་ཕྱིར་ཞི་ན་འགྲོ་ཀུན་གྱི། |

རྒུད་པའི་སྐྱོན་མང་དྭངས་འབྱིན་པའི། |

སྨན་དང་རིགས་སྔགས་རྒྱལ་པོ་ཡང་། |

ཆོས་ཚུལ་འདི་ལས་གཞན་ན་གང་། |

ཞེས་སོགས་གསུངས་པས་སོ། །

མདོར་བསྡུས་ན། དཔལ་ལྡན་ཟླ་བས་མཛད་པའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་མཛད་བྱང་ལས་།[༡]

གང་ཕྱིར་རྟེན་འབྱུང་གཏི་མུག་དེ་ཟད་…

…བྱེད་པར་མཐོང་སྟེ་དེ་ནི་དེ་ཉིད་ཡིན།

དེ་ཉིད་བདེ་བར་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབུ…

…མའི་ལམ་དུ་ཡང་དག་བསྒྲགས་པར་འགྱུར།

དེ་ནི་ཐུབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རང་བཞིན་སྐུར…

…འདོད་དེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད།

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐུགས་ཡིན་དེ་ནི…

---

༡ སྤྱི། བསྟན། (དབུ་མ། 'འ' ༡༩༩)

…རིགས་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཀྱང་བསྔགས།།

ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཚངས་སྲས་བཞད་པ་སྒྲ་དབྱངས་ཀྱིས་ཀྱང་།[1] །

རྟེན་ཞེས་ཆོས་ཉིད་མི་འདོར་ལ། །
འབྱུང་ཞེས་འཇིག་རྟེན་ཚུལ་ཡང་མཐུན། །
རིགས་ཚུལ་ཀུན་ལས་རྒྱལ་པོ་བཞིན། །
རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་འབྱུང་ཚད་མའི་བཀའ། །

ཞེས་སོགས་ཕུལ་དུ་དབྱུང་དུ་མེད་ཅིང་ཆེས་ངོ་མཚར་ཅན་གྱི་སྒྲུབ་བྱེད་དང་བསྔགས་པ་མཐའ་ཡས་པས་བརྗོད་ཀྱིས་མི་ལང་ངོ་།། །།

གཞུང་གི་བསྡུས་དོན་རྣམ་ཚུལ་ལ་ བརྟེན་པའི་གལ་ཆེའི་དཔྱད་པ།

ཟབ་ཅིང་བརླིང་བའི་བསྟོད་པའི་གཞུང་འདི་དག་གི་བསྡུས་དོན་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་བྱེད་པའི་ཚེ། ཇི་ལྟར་མཁས་པ་རྣམས་ལ་ལྷུང་ལྟར་གྲགས་པ་བཞིན་རྒྱ་གཞུང་ལུགས་བརྒྱ་བསྟན་ནམ་ལུགས་བརྒྱ་འགྲེལ་ཞེས་བརྗོད་པ་ལྟར་རང་གི་གོ་རྟོགས་ཀྱི་ནུས་ཚད་དང་བསྟུན་ནས་གཞུང་དོན་ལ་བརྟགས་པའི་ཚེ། སློབ་དཔོན་གྱི་མཐར་ཐུག་པའི་དགོངས་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ལོན་རྒྱུ་ཤིན་ཏུ་དཀའ་ནའང་། རང་གི་ཤེས་འཇུག་ལ་གཞིགས་པའི་གཞུང་དོན་བཀྲལ་བའི་སྒོ་ནས་བསྡུས་དོན་བྱེད་པའི་ཚེ། དེ་ལ་གོ་བ་ལེན་ཕྱོགས་དང་གཞུང་དོན་བཀྲལ་ཚུལ་འདྲ་མིན་ད

[1] དཔེ་རིང་། ༨

ཙང་མང་པོ་ཡོད་ཚོག་པ་ནི་སློས་མེད་རེད་འདུག ཕྱིར་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ཀྱི་དགོངས་པ་འགྲེལ་བའི་ཚེ་སྔགས་བླ་མེད་ལ་མཐའ་དྲུག་དང་ཚུལ་བཞིས་རྒྱས་བཏབ་མིན་དང་། མདོ་ཕྱོགས་ལ་དྲང་ངེས་དང་། དགོངས་ལྡེམ་དགོངས་དང་། གྲུབ་མཐའ་གོང་འོག་གང་གི་བཞེད་པ་སོགས་ལ་སྦྱོར་དགོས་མིན་གྱི་འཆད་ཚུལ་ལམ་དགོངས་པ་འགྲེལ་ཚུལ་ཤིན་ཏུ་མང་ན་ཡང་། འདིར་སྐབས་སུ་བབས་པའི་གཞུང་འདི་དག་བསྟན་བཅོས་ཡིན་པས། རྒྱལ་བའི་བཀའ་ལ་དགོངས་པ་འགྲེལ་བ་ལྟར་གྱི་དྲང་ངེས་སོགས་འབྱེད་མི་དགོས་མོད། འོན་ཀྱང་གཞུང་འདི་དག་གིས་དབུ་མ་ཐལ་འགྱུར་བའི་བཞེད་པ་ལྟར་གྱི་ལྟ་བ་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པ་སྟོན་པར་འདུག་པས། དེའི་ལུགས་ལ་བློ་གྲོས་མི་ཟད་པའི་མདོ་ཁུངས་སུ་མཛད་ནས་མདོ་སྡེ་གང་དག་དོན་དམ་པ་སྒྲུབ་པ་བསྟན་པ་ངེས་དོན་དང་། ཀུན་རྫོབ་སྒྲུབ་པ་བསྟན་པ་དྲང་དོན་དུ་གསུངས་པ་དང་ཕྱོགས་འདྲ་བར་འདིར་ཡང་དོན་དམ་བདེན་པ་བརྗོད་བྱའི་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་བསྟན་ཡོད་པས། གཞུང་གི་བསྟན་དོན་གྱི་གཙོ་བོའི་བརྗོད་བྱའི་ཆ་ནས་ངེས་དོན་བསྟན་པའི་གཞུང་དུ་འཇོག་རིགས་ནའང་།

སྐབས་མང་པོར་ཐ་སྙད་དུ་ཡོད་པའི་ཆོས་དགག་པའི་རྣམ་ཅན་དུ་བསྟན་པ་སྒྲས་ཟིན་ལྟར་ཁས་བླང་དུ་མི་རུང་བ་ཇི་སྙེད་ཅིག་གསུངས་པ་དེ་དག་ལ་ངེས་པར་དུ་དགག་བྱ་ལ་དོན་དམ་གྱི་ཁྱད་པར་སྦྱར་བའི་སྒོ་ནས་དགོངས་པ་བཀྲལ་དགོས་པར་སྣང་ངོ། དཔེར་ན་རྩ་ཤེའི་མཆོད་བརྗོད་ཀྱི་སྐབས་རྟེན་འབྲེལ་འགག་སོགས་བརྒྱད་དང་བྲལ་བའི་དོན་བཀྲལ་བའི་ཚེ། དབུ་མ་ཚིག་གསལ་དང་། དེའི་དགོངས་པ་རྗེའི་རྩ་ཤེ་ཊཱིཀ་ཆེན་དུ་ཇི་ལྟར་བཀྲལ་བར་མཛད་པ་ལྟར་ཐ་སྙད་དུ་

ཡོད་པའི་ཆོས་ལ་ཁྱད་པར་གྱི་ཚིག་མ་སྦྱར་བར་དགག་ཏུ་མེད་པར་གསུངས་པ་འདིར་ཡང་འདྲ་བས། སྒྲས་ཟིན་གྱི་དོན་གཞན་དུ་དྲངས་དགོས་པ་ཡང་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་དོ། །

གཞུང་འདི་དག་གི་སྤྱི་ཁོག་གི་དགོངས་པའི་གནད་བབས་ས་ནི་གོང་སྨོས་ལྟར་ཆོས་རྣམས་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པའི་ཚུལ་ལུགས་བསྟན་པ་ལས་མ་འདས་པས། དེ་ཉིད་གཞི་རྩར་བཟུང་བའི་ཐོག བྱེ་བྲག་ཚིགས་བཅད་རེ་རེ་བཞིན་གྱི་བསྟན་དོན་ལ་སློབ་དཔོན་གྱི་དགོངས་ཚོད་ཇི་བཞིན་ལོན་ཐུབ་མིན་ལ་མ་ལྟོས་པར་གཞུང་དོན་གྱི་གོ་བ་ཡིན་ཕྱོགས་དང་བསྡུས་དོན་བྱེད་ཚུལ་དག་ནི། རྒྱ་གཞུང་ལུགས་བརྒྱ་བསྟན་ཞེས་གོང་དུ་བརྗོད་པ་ལྟར་གྱི་ལམ་སྲོལ་དེ་ཉིད་ལག་བསྟར་མ་བྱེད་མཐུས་མེད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་མངོན་ཏེ། སྔར་ཐོག་མའི་གཞི་འཛིན་སའི་རྩ་བའི་མ་ཕྱི་ལྟེ་བ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལ་ཡང་སྐྱོན་ཆག་དང་། ལག་བྲིས་ཀྱི་ཡིག་རྙིང་ནང་ཕན་ཚུན་ལ་མི་མཐུན་པའི་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཁ་ཚོན་བཅད་དཀའ་བ་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་ལ། བོད་འགྱུར་སོགས་ལ་ཆ་མཚོན་ན་ཡང་ལོ་པཎ་ཆོས་གོ་བ་ཡིན་ཕྱོགས་འདྲ་མིན་ལ་བརྟེན་པའི་དཀྱུས་གཞུང་གི་འགྱུར་དང་། ལུང་འདྲེན་མཛད་པ་ཁག་གི་འགྱུར་བཅས་ཀྱི་དབར་ལ་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད་པ་སྨོས་མེད་ཐོག ལྷག་པར་དུ་འགྲེལ་པ་མང་པོ་ཡོད་པའི་རྩ་གཞུང་རྣམས་ཀྱི་གཞུང་དོན་གྱི་དགོངས་པ་བཀྲལ་ཚུལ་ལམ་གོ་བ་ཡིན་ཕྱོགས་ལ་མཁས་པ་སོ་སོའི་བློ་རྩལ་ལ་གཞིགས་པའི་འགྲེལ་ཚུལ་སྣ་ཚོགས་ཤིག་ཡོད་པ་ནི་ཉི་ཤར་སྣར་མོས་ཁེབ་ཏུ་མེད་པའི་ངང་ཚུལ་དུ་མཆིས་པས་སོ། །

དེས་ན་སྐབས་དོན་གྱི་གཞུང་འདི་དག་ཕལ་ཆེ་བར་རྒྱ་བོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་མཛད་པ་མི་སྣང་ཞིང་། གཞུང་གི་བསྟན་དོན་རྣམས་བསྟན་བཅོས་འདི་དག་གི་བརྗོད་བྱའི་སྤྱི་ཁོག་གི་སྒྲོམ་གཞིའི་གནད་ལས་མ་བརྒལ་བའི་སྒོ་ནས་རང་གི་བློར་ཆུད་ཚོད་དང་། དཔོག་ཚོད་ལྟར་གྱི་བསྡུས་དོན་ཙམ་བྲིས་བྱེད་རྒྱུ་ལས། ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ་རྣམས་ཀྱིས་བཀའི་དགོངས་པ་རང་དབང་དུ་བཀྲལ་བ་ལྟར་གྱི་འགྲེལ་ཚུལ་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་འདྲ་འབྱུང་ཐུབ་ཐབས་མེད་པར་མ་ཟད། གཞུང་འདི་དག་གི་ཁྲིད་རྒྱུན་ཞུ་རྒྱུ་དང་། འགྲེལ་པ་འཚོལ་སྒྲུབ་བྱེད་རྒྱུས་མཚོན་ཆ་རྐྱེན་གཞན་གྱི་ཆེད་དུ་ཡུན་རིང་ངང་སྒུག་བྱེད་རྒྱུའི་དུས་འཁོམ་ཡང་དཀའ་བས་ད་ལམ་འདིར་དེ་ཙམ་གྱིས་མཐུས་པར་བྱས་སོ། །ཕྱིས་སུ་སྤྱར་ཐེངས་གཉིས་པ་བསྐྱར་བསྐྲུན་བྱ་རྒྱུའི་དུས་སྐབས་བྱུང་ཚེ། དགོས་དབང་ལ་གཞིགས་པའི་ལེགས་སྒྲིལ་ཉིས་འགོག་དང་དག་བཅོས་གང་འོས་བྱ་འདུན་ལགས་སོ།། །།

(༧) འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པའི་བསྡུས་དོན།

སྤྲོས་པའི་མཚན་མས་རྣམ་པར་དབེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཆོས་སྐུ་ཡང་དག་པར་རིག་ཅིང་། འཇིག་རྟེན་པའི་བྱ་བཞག་དང་བསམ་སྤྱོད་ལས་ཡོངས་སུ་འདས་ཤིང་། གོང་མའི་ཁྱད་པར་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པ་ལ་གུས་ཕྱག་ཐོན་དུ་འགྲོ་བའི་སྒོ་ནས་སློབ་དཔོན་གྱིས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་ནི། སྟོན་པ་ཐུགས་རྗེ་ཅན་གང་ཉིད་གྲངས་དང་ཚད་འཛིན་དུ་མེད་པའི་འགྲོ་བ་རྣམས་ལ། ཐོག་མ་དང་མཐའ་མའི་

ཚོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་དུས་རིང་ནས་གཅིག་ཏུ་ཐུགས་བརྩེ་ཆེན་པོས་དགོངས་ཤིང་། འགྲོ་བའི་དོན་རྒྱུན་མི་ཆད་དུ་མཛད་པའི་དབང་གིས་ཐུན་མོང་གདུལ་བྱའི་སྣང་ངོར་སྐུ་ཐང་ཆད་པའམ་སྐུ་མཉེལ་བའི་རྣམ་པ་བཞེས་དགོས་པ་ལྟ་བུའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་ཀྱང་། ངེས་པའི་དོན་དུ་སིམ་པ་མ་ཡིན་པའི་ཚོར་བ་སྐྱེ་བའི་གོ་སྐབས་ཐམས་ཅད་གདན་ནས་བཅོམ་ཟིན་པའི་ཕྱིར་ན་དེ་ལྟར་འབྱུང་བ་མེད་དོ།།

སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱི་ལུགས་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ཆོས་ཤིག་གདན་ནས་མེད་མོད། འོན་ཀྱང་སེམས་ཅན་ལ་མཚོན་ན་ཕུང་པོ་ཙམ་ལ་ཡང་གདན་ལྟོས་མ་དགོས་པའི་སེམས་ཅན་དེ་འདྲ་གདན་ནས་མེད་ཀྱང་། རྟེན་འབྱུང་ལྟོས་གྲུབ་ཙན་གྱི་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ལ་མཆོག་ཏུ་གཞོལ་ཞིང་ལྷུན་འགྲུབ་རྒྱུན་མི་ཆད་པའི་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་སྒོ་ནས་འགྲོ་བའི་དོན་དུ་འཁོར་བ་མ་སྟོང་བའི་བར་མངོན་པར་བཞུགས་པ་ལས་ཉན་ཐོས་འགོག་པ་བ་ལྟར་གཞར་ཡང་མི་མཛད་དོ།། དེ་འདྲའི་ལྟོས་པ་ཙན་གྱི་ཕུང་པོ་དེ་ཡང་སྒྱུ་མ་དང་། སྨིག་རྒྱུ་དང་། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་དང་། རྨི་ལམ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་གྱི་ཚུལ་དུ་གདུལ་བྱ་བློ་གྲོས་དང་ལྡན་པ་རྣམས་ལ་བསྟན་པར་མཛད་ཅིང་། གང་རྒྱུ་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་ནས་འབྱུང་བ་རྣམས་དེ་དག་ཕན་འདོགས་བྱེད་དུ་མེད་པར་འབྱུང་བའི་གནས་མེད་པས། དེ་དག་གི་ཡོད་ཚུལ་ཡང་རྟོག་པས་བཏགས་ཙམ་དུ་གཟུགས་བརྙན་དང་བྲག་ཅ་ལྟ་བུའི་ཚུལ་དུ་གསལ་བར་ཅིའི་ཕྱིར་འདོད་མི་རིགས་ཏེ་རིགས་པར་གསུངས་སོ། །

གཟུགས་སོགས་ཀྱི་རྫས་གཞིའི་འབྱུང་རྡུལ་ཕྲ་མོ་རྣམས་མིག་གི་གཟུང་ཡུལ་དུ་མི་བྱེད་ན། དེ་དག་མིག་གི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར་རམ་ཏེ་མི་འགྱུར་བ་དང་། གཟུགས་རགས་པ་རྣམས་གཟུང་བར་རབ་ཏུ་བཀག་པའི་རྣམ་བཞག་སྟོན་ཚུལ་དག་ནི་གཟུགས་སོགས་བདེན་གྲུབ་ཏུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་འཛིན་པ་ལྡོག་དོན་དུ་གསུངས་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཆོར་བྱའི་ཡུལ་སྒྲ་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་མེད་པས། དེ་ཆོར་བ་པོ་དང་། སྣན་མི་སྣན་གྱི་རྣ་ཤེས་ངོ་བོས་གྲུབ་པ་འབྱུང་དུ་མེད་ཅིང་། ཚ་ཞིང་སྲེག་པའི་མིང་མེ་ཞེས་པ་དང་། དེའི་དོན་དངོས་ཚ་ཞིང་སྲེག་པ་གཉིས་ལྡོག་པ་ཙམ་ཡང་ཐ་མི་དད་པའི་གཅིག་ཡིན་ན། མེའི་མིང་བརྗོད་པའི་ཚེ་ཁ་འཚིག་པར་ཐལ་བ་དང་། གལ་ཏེ་དེ་གཉིས་འབྲེལ་མེད་ཐ་དད་ཡིན་ན་མེའི་མིང་བརྗོད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དོན་ཚ་ཞིང་སྲེག་པ་རྟོགས་སུ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་མེའི་ཐ་སྙད་བཏགས་རྗེས་སུ་དེ་གཉིས་ངོ་བོ་གཅིག་ལ་ལྡོག་པ་ཐ་དད་པའི་རྟེན་འབྱུང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུའི་ཚུལ་དུ་བདེན་པ་སླ་བ་སྟོན་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད།

ཡུལ་གཟུགས་སོགས་ཀྱི་ངང་ཚུལ་དེ་ལྟར་ཡིན་ན་དེ་དག་ལ་ལོངས་སུ་སྤྱོད་པ་པོ་དང་ཤེས་པ་པོའི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ཚུལ་ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་རང་སྟོབས་རང་དབང་གི་སྒོ་ནས་བྱེད་པ་པོ་དང་དེའི་བྱ་བའི་རྣམ་བཞག་རྣམས་ཕན་ཚུན་ལྟོས་པ་ཅན་ཡིན་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་ཐ་སྙད་ཙམ་དུ་ཡོད་ཅིང་། རྒྱུ་དགེ་སྡིག་གི་ལས་བྱེད་པ་པོ་དང་། བདེ་སྡུག་གི་འབྲས་བུ་སྤྱོང་བ་པོ་དག་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་གཏན་ནས་མེད་ཀྱང་། དེ་དག་གི་རྒྱུ་བསོད་ནམས་ཏེ་དགེ་བ

དང་། དེ་མིན་པ་སྡིག་པ་བཅས་རྒྱུ་དགེ་སྡིག་གི་རྟེན་འབྲེལ་ལ་བརྟེན་ནས། འབྲས་བུ་བདེ་སྡུག་དག་མ་འཆོལ་མ་འཁྲུགས་པར་འབྱུང་ཡང་། རང་བཞིན་གྱིས་གདན་ནས་མ་སྐྱེས་སོ་ཞེས་སོ་རིག་བཞི་ལ་དབང་འགྱུར་བའི་ཚིག་གི་བདག་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ལེགས་པར་གསུངས་ཡོད། གང་དུ་གསུངས་ན། ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་མ་དྲོས་པས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས། "གང་ཞིག་རྐྱེན་ལས་སྐྱེས་པ་དེ་མ་སྐྱེས། །དེ་ལ་སྐྱེ་བའི་རང་བཞིན་ཡོད་མ་ཡིན།" །ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཡུལ་གཟུགས་སོགས་འཛིན་བྱེད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་གྱི་ཤེས་པ་མེད་པར། དེ་གང་ལ་ལྟོས་ནས་འཛིན་པའི་གཞལ་བྱའི་ཡུལ་འཛིན་པ་མི་འཐད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་གཞལ་བྱའི་ཡུལ་མེད་པར་དེ་རྟོགས་པའི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་བཞག་ཏུ་མེད་དོ། །དེས་ན་ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་དག་ཕན་ཚུན་ལྟོས་ནས་གྲུབ་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་རང་ངོས་ནས་མེད་ལ། གལ་ཏེ་མཚན་མཚོན་སོགས་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་གཞན་ཡིན་ན་མཚོན་བྱ་ལ་མཚན་ཉིད་མེད་པར་འགྱུར་བ་དང་། དེ་དག་ལོག་པ་ཙམ་དུ་ཡང་ཐ་དད་དུ་བཞག་ཏུ་མེད་ན། དེ་དག་ལ་ནང་ཕན་ཚུན་ལྟོས་འཛག་གི་རྣམ་བཞག་བྱེད་དུ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དེས་ན་ཆོས་གང་ལ་ཡང་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་མཚན་མཚོན་དང་། བརྗོད་བྱ་རྗོད་བྱེད་མེད་ཀྱང་རྟེན་འབྱུང་སྒྱུ་མ་ཙམ་དུ་ཇི་ལྟར་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱན་གྱིས་གཟིགས་པ་ལྟར་འདོམས་པའི་སྒོ་ནས་གྲངས་ལས་འདས་པའི་འགྲོ་བའི་ཤེས་རྒྱུད་ཀྱི་སྒྲིབ་གཉིས་བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཚ་གདུང་ཀུན་ཞི་བར་མཛད་པ་ལ་མངོན་པར་བསྟོད་དོ། །

དངོས་པོ་རྣམས་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་ཚུལ་དུ་ནམ་ཡང་མི་སྐྱེ་ཞིང་། རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས་མ་བཅོས་ཤིང་དེ་ལ་ལྟོས་པ་མེད་པར་ཡང་མི་སྐྱེ་བས། ཚུགས་ཐུབ་བདེན་གྲུབ་ཏུ་ཡོད་པ་དང་། གཏན་ནས་མེད་པ་གང་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུའི་བདག་ཉིད་ལ་མངོན་པར་མི་གསལ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པའི་བདག་སྐྱེ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་རྒྱུ་གཞན་ལས་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་འབྲས་བུ་གཞན་སྐྱེ་བ་ཡང་མེད། དེ་དག་རེ་རེ་ནས་མེད་པར་གཉིས་ཀ་ལས་སྐྱེ་བ་ཡོང་དོན་མེད་པས། དངོས་པོ་བདེན་གྲུབ་ཏུ་སྨྲ་བ་དག་གིས་འདོད་པའི་སྐྱེ་བའི་རྣམ་བཞག་དེ་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ཡིན་ཞེས་མཐའ་ལ་བཀར་ནས་དགག་པར་མཛད་ཡོད། བཏགས་པ་མཐའ་བཟུང་གིས་རང་ངོས་ནས་ཡོད་པའི་ཆོས་ཤིག་སྲིད་ན་དེ་ལ་གནས་པ་འཐད་པར་འགྱུར་ཀྱང་། དེ་ལ་རྐྱེན་གཞན་གྱིས་ཕན་གནོད་འབྲེལ་བའམ་འཇིག་པ་སོགས་འཐད་པ་མིན་ལ། དེ་བཞིན་དུ་གཏན་ནས་མེད་པ་མི་གནས་པར་རིགས་མོད་ཀྱང་། དེ་ལ་ཆད་པ་དང་འཇིག་པ་སོགས་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་ཀུན་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་བྱུར་མེད་དོ། །

དེས་ན་དངོས་པོ་དང་དེའི་འཇིག་པ་དག་འབྲེལ་མེད་ཐ་དད་དང་། ཐ་དད་གཏན་མེད་ཀྱི་གཅིག་ཏུ་བཞེད་པར་མི་མཛད་དོ། །གཞན་དུ་ན་དེ་དག་རིམ་པ་བཞིན་ཡང་ན་རྟག་པ་དང་། ཡང་ན་གཏན་མེད་དུ་ཐལ་བར་འགྱུར་བ་ལ་དེ་གཉིས་ལྡོག་ཆ་ནས་ཐ་དད་ཀྱང་ངོ་བོ་གཅིག་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པས་སྐྱེ་བཞིན་པ་དང་འཇིག་བཞིན་པའི་རང་བཞིན་འཐད་ལ། གལ་ཏེ་དེ་གཉིས་འབྲེལ་བ་གཏན་ནས་མེད་པའི་ཐ་དད་ཡིན་ན། དེ་དག་འཇིག་པའི་རང་བཞིན་ཅན་དུ་འཇོག་མི་

རིགས་པར་འགྱུར་རོ། །རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་ཞིག་པའི་རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་མི་རིགས་པ་དེ་བཞིན་དུ། མ་ཞིག་པ་ལས་ཀྱང་མི་འཐད་ལ། དེས་ན་ཞིག་མ་ཞིག་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བའི་རིམ་པ་མཐའ་དག་རྟེན་འབྱུང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་འབྱུང་བ་ཡིན་པས་འདུས་བྱས་ཀྱི་ཆོས་ཀུན་གྱི་ངང་ཚུལ་དེ་བཞིན་དུ་གསུངས་སོ།། རྒྱུ་མཚན་དེ་དག་གིས་ཕྱིར་ན་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་འགྲོ་བ་འདི་དག་ཐ་སྙད་དུ་རྟོག་པས་བཏགས་ཙམ་དུ་འབྱུང་བ་དང་། དོན་དམ་དུ་སྐྱེ་བ་དང་འགག་པ་གཏན་ནས་མེད་པ་དང་། འགྱུར་མེད་རྟག་པའི་ཆོས་ལ་འཁོར་འདས་བྱ་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་འཛོག་ཏུ་མེད་པར་མ་ཟད། མི་བརྟན་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་གྱི་མི་རྟག་པ་ལ་ཡང་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་འཁོར་བ་སོགས་མེད་པས། གང་སྣང་ཞིང་སྲིད་པའི་འཁོར་འདས་ཀྱི་ཡོད་ཚུལ་མཐའ་དག་རྨི་ལམ་དང་འདྲ་བའི་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་གྱི་ཡོད་ཚུལ་ལས་མ་འདས་པར་གསུངས་སོ། །

འབྲས་བུ་སྡུག་བསྔལ་སྐྱེར་ངེས་པའི་རྒྱུ་ཀུན་འབྱུང་རང་གི་བྱས་པ་དང་། གཞན་དང་གཉིས་ཀས་བྱས་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་དང་། དེ་དག་གི་རྣམ་པར་སྨིན་པ་མྱོང་དགོས་པ་སོགས་ནི་ལས་གསོག་པ་པོ་དེ་དག་གི་བྱས་ཉེས་ལ་བརྟེན་ནས་བྱུང་བ་ལས་མ་འདས་ཀྱང་། ཆོས་འདི་ལས་ཕྱི་རོལ་དུ་གྱུར་པའི་མུ་སྟེགས་རྟོག་གེ་བ་ཁ་ཅིག་གིས་དེ་དག་རྒྱུ་མེད་དུ་བྱུང་བའམ་འཇིག་རྟེན་བྱེད་པོས་སྣང་བ་གང་དྲན་བྱས་པ་ལས་བྱུང་བར་འདོད་མོད་ཀྱང་། སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་ཀུན་རྒྱུ་འབྲས་ངེས་པ་ཅན་གྱི་རྟེན་འབྱུང་དུ་གསུངས་ཤིང་། གང་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་དེ་ནི་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་སྟོང་པ་ཡིན་པས། ཆོས་

གང་ལ་ཡང་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་རྡུལ་ཙམ་ཡང་མེད་ཅེས་སྟོན་པ་མཉམ་མེད་དེ་ཡི་འཇིག་པ་མེད་པའི་སེངྒེའི་ང་རོས་ཕྱོགས་བཅུར་སྒྲོགས་པར་མཛད་ཡོད།

བདེན་པར་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཀུན་རྟོག་གི་སྤྲོས་པ་མཐའ་དག་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་གཉེན་པོར་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་བདུད་རྩིའི་ཟབ་ཆོས་རྒྱ་ཆེ་སྤེལ་བར་མཛད་པ་དག་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པར་བྱེད་ན་ནི། སྨན་དུག་ཏུ་འགྱུར་བ་དང་། ཆུ་ལ་མེ་འབར་བ་ལྟར་གསོ་མི་རུང་བའི་ལྟ་བ་ཅེས་ཤིན་ཏུ་སྨད་པར་བྱ་བ་དང་། དོར་བར་བྱ་བའི་གནས་སུ་གསུངས་སོ། །ཚུལ་འདི་ནི་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་རྩ་བ་ཤེས་རབ་ལས།[༡]

རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་སྟོང་པ་ཉིད། །
ལྟ་ཀུན་ངེས་པར་འབྱིན་པར་གསུངས། །
གང་དག་སྟོང་པ་ཉིད་ལྟ་བ། །
དེ་དག་བསྒྲུབ་ཏུ་མེད་པར་གསུངས། །

ཞེས་གསུངས་པ་དང་གནད་གཅིག་གོ །དེས་ན་ཕྱིའི་ཆོས་དངོས་པོ་ཐལ་པ་སེམས་མེད་བེམ་པོ་དང་། ནང་གི་ཆོས་ལས་ཉོན་གྱི་གཞན་དབང་ཅན་གྱི་སེམས་ཅན་རྣམས་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པས་སྟོང་ཡང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་པས། མདོར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་མེད་པར་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་གནས་ལུགས་དང་དེ་སྟོན་ཚུལ་དག་སྟོན་པས་སྔར་མེད་ཞིག་གསར་བསྐྲུན་མཛད་པ་ལྟ་བུ་ཡང་མ་ཡིན་ལ།

---

༡ རྩ་ཤེ་རབ་བྱེད། ༡༣ (འདུ་བྱེད་བརྟགས་པ།)

གཤིས་སུ་གྲུབ་པའི་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་དེ་ལ་འགའ་ཡང་བཀག་པ་མེད་ལ། སྟོན་གྱི་རྒྱལ་བ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་ཉིད་ཐུགས་ཉམས་སུ་བཞེས་ཤིང་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་ཇི་ལྟར་སྟོན་པར་མཛད་པ་ལྟར་སྟོན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཐུགས་སུ་ཆུད་ཅིང་གཞན་ལ་འདོམས་པར་མཛད་ཡོད་ཚུལ་འདི་ནི། ས་བཅུ་པའི་མདོ་ལས།[༡] "རིགས་ཀྱི་བུ་འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་བྱུང་ཡང་རུང་། མ་བྱུང་ཡང་རུང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་འདི་ནི་གནས་པ་ཉིད་དེ། འདི་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་དང་། ཆོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སུ་མེད་པའོ།" །ཞེས་གསུངས་པ་དང་གནད་གཅིག་གོ། །

སོ་སོ་སྐྱེ་བོའི་ས་ལས་གོང་དུ་འཕགས་པའི་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ལམ་བསྒོམ་པའི་རྩོལ་བ་ལ་གཏན་མ་ལྟོས་པར་གནས་ལུགས་མཚན་མ་མེད་པའི་དོན་དེ་དག་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་སྒོམ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་མི་འགྱུར་ན། སོ་སྐྱེ་ཐ་མལ་པ་རྣམས་ལྟ་ཅི་སྨོས། དེས་ན་ལུགས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་འདིར། བདེན་འཛིན་གྱི་སྤྲོས་པས་དབེན་པའི་སྟོང་པ་ཉིད་དང་། མཚན་མ་མེད་པའི་ལམ་ལ་མ་བཞུགས་པར་ཐར་པ་དམ་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་ཏུ་མེད་དོ། །དེས་ན་སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་པའི་ཡང་རྩེ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལམ་འདིར་ཟབ་པ་དང་རྒྱ་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་ལུས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ཤིང་། ཆ་ཚང་བར་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་

---

༡ ཕལ་ཆེན་ལེའུ་སོ་གཅིག་པ། ས་བཅུའི་ལེའུ། (པོད་ 'ཁ་' ༣༧) ཚུལ་དེ་འདྲ་བ་ས་ལུ་ལྗང་པའི་མདོར་ཡང་གསལ་ཡོད། (པེ། མདོ། 'ཚུ' ༣༣)

གདུལ་བྱའི་རེ་བ་ཡིད་བཞིན་དུ་བསྐོང་བར་མཛད་ཡོད། ཚུལ་འདི་འདྲ་བ་དབུ་མ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་སོགས་སུ་ཡང་གསལ་ཡོད། དེ་ལྟར་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་མདོ་སྔགས་ཀྱི་ལམ་གྱི་ལུས་རྫོགས་པར་སྟོན་པ་པོ། བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པར་འོས་པའི་སྟོད་དམ་པ་སྟོན་པ་མཆོག་དེར་སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་གསུངས་ཚུལ་གྱི་སྒོ་ནས་དང་བ་ཆེན་པོས་མངོན་པར་བསྟོད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཐོབ་པའི་བསོད་ནམས་དེས་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་བདེན་འཛིན་གྱི་མཚན་མའི་འཆིང་བ་ལས་མྱུར་དུ་གྲོལ་བར་ཤོག་ཅེས་སློབ་དཔོན་གྱིས་བསྔོ་བ་དང་ཐུགས་སྨོན་མཛད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་མཇུག་བསྡུ་བར་མཛད་དོ། །

(༣) དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པའི་བསྡུས་དོན།

ཇི་ལྟ་ཇི་སྙེད་ཀྱི་ཆོས་ཀུན་གྱི་གནས་ལུགས་ལ་བལྟ་བའི་ཡང་དག་པའི་ལྟ་བས་ཕོངས་ཤིང་། མ་རིག་པའི་རབ་རིབ་ཀྱི་ཞིང་ཏོག་གིས་བློ་གྲོས་ཀྱི་མིག་ལྡོང་བའི་འཇིག་རྟེན་པ་དག་ལ་གཅིག་ཏུ་ཕན་པར་བརྩོན་ཞིང་། བདེན་གྲུབ་ཀྱི་དངོས་པོ་གདོད་ནས་མེད་པའི་དོན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྟོགས་པའི་སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ། འགྲན་པའི་ཟླ་དང་མཚུངས་ཆོས་ཀྱི་དཔེ་རྣེད་དུ་མེད་པ་དེ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་སྒོ་གསུམ་གུས་པ་ཆེན་པོས་བསྟོད་ཅིང་ཕྱག་མཛད་ནས་དོན་གང་ཞིག་སྟོན་པར་བཞེད་ཅེ་ན། དེ་ཡང་ཇི་སྐད་དུ་མདོ་ལས། 'མ་མཐོང་བ་ནི་མཐོང་བ་དམ་པའོ།།' ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་སྟོན་པ་གང་གིས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ཆོས་ཙུང་ཟད་ཀྱང་མ་གཟིགས་པ་དེ་ཁྱོད་ཀྱི་གཟིགས་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཡིན་ཏེ། གཟིགས་ཚུལ་དེ་

ཆོས་རྣམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་མཐར་ཐུག་པ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རིག་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ལྟོས་པ་དང་བྲལ་བའི་དོན་དམ་ཚུགས་ཐུབ་ཅན་གྱི་རྟོགས་བྱ་དང་རྟོགས་བྱེད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་མི་འཐད་ལ། ལྟོས་བཅས་དང་བཙོས་མའི་རྟོགས་བྱ་མཐའ་ཡས་པ་ཀུན་ལས་ཆེས་མཆོག་ཏུ་རྟོགས་དཀའ་བའི་གནས་ངོ་མཚར་ཅན་ཆོས་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ཉིད་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པ་ཡིན་པས་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱི་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་ཆོས་ཙུང་ཟད་ཅིག་ཀྱང་བསྐྱེད་པ་དང་བཀག་པ་མེད་ལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་གྲུབ་པ་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་རྟོགས་པའི་ལྟ་བ་དེ་ཉིད་ཐུགས་ཉམས་སུ་བཞེས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཐོབ་བྱ་བླ་ན་མེད་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་འཕང་དམ་པ་དེ་བརྙེས་པ་ཡིན་ནོ། །

སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་སྔོན་སློབ་པ་ལམ་གྱི་གནས་སྐབས་ཚུན་དུ་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་མནར་བའི་འཁོར་བ་པ་དག་ཇི་སྲིད་བར་དུ་ཉོན་མོངས་པ་རང་ཉིད་གཅིག་པུ་གྲོལ་དུ་རེ་བའི་དམན་པའི་རྒྱུད་འདས་ཐོབ་འདོད་པའི་སྐབས་དེ་འདྲ་གཞན་ཡང་བྱུང་སྲིད་མེད་ལ། འཁོར་བའི་གནས་ལུས་ལོངས་སྤྱོད་དང་བྱ་བྱེད་ཀུན་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་མཚན་འཛིན་གྱི་དམིགས་གཏད་ཐམས་ཅད་གཏན་ནས་ཞིག་པའི་ཞི་བ་དེ་མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྟོགས་པ་ཡིན་པས། ཀུན་ཉོན་དང་རྣམ་བྱང་གི་ཆོས་ཀུན་ཆོས་ཉིད་དོན་དམ་གྱི་དབྱིངས་སུ་རོ་གཅིག་ཅིང་དབྱེར་མེད་པའི་མཐར་ཐུག་པའི་གདོད་ལུགས་དེའི་རྟོགས་ཆ་ནས་གང་གི་མཁྱེན་པ་དེ་རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་ཅིང་སྦྲས་པའི་མཚན་མ་དང་བྲལ་བ་ལྟ་ཅི་སྨོས།

གཙོ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་གནས་དུས་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ཏུ་ཡང་བདེན་དངོས་ཀྱི་ཆོས་ངེས་པའི་དོན་དུ་ལྟ་ཞོག ཐ་སྙད་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ཚུལ་ཙམ་དུ་ཡང་ཡིག་འབྲུ་གཅིག་གི་ཚོད་ཙམ་ཡང་གསུངས་པ་མེད། འོན་ཀྱང་སྐབས་སུ་གང་བབས་ཀྱི་གདུལ་བྱའི་འགྲོ་བ་རྣམས་སྨིན་གྲོལ་གྱི་ལམ་ལ་འགོད་པའི་སླད་དུ་དྲང་བ་དང་ངེས་པའི་དོན་གྱི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆར་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་མཆིམས་པར་མཛད་ཡོད། །

སྟོན་པ་གང་ཞིག་ལ་མཁྱེན་པ་ནམ་མཁའ་དང་མཉམ་པའི་རྒྱ་ཆེ་བའི་ཐུགས་མངའ་ཞིང་ཕུང་ཁམས་སྐྱེ་མཆེད་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་ཆོས་གང་ལ་ཡང་ཞེན་ཆགས་མི་མངའ་བ་ཡིན་པས་དམན་པ་ཟག་བཅས་ཀྱི་ཆོས་གང་ལ་ཡང་རེ་ལྟོས་བཅའ་དགོས་པ་མེད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཆགས་ཐོགས་དམན་པའི་སྒྲིབ་པ་མ་སྤངས་པའི་སེམས་ཅན་གྱི་འདུ་ཤེས་ཅན་གྱི་འཇུག་པ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་མི་མངའ་ཡང་། སྡུག་བསྔལ་གསུམ་གྱིས་ཙི་རིགས་པར་མནར་བའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་གཅིག་ཏུ་ཐུགས་བརྩེ་ཆེ་བའི་སྙིང་རྗེའི་གོང་བུ་འམ་དེའི་བདག་ཉིད་དུ་གྱུར་པའི་སྒོ་ནས་སྐབས་སུ་གང་བབས་ཀྱི་འགྲོ་བའི་དོན་མཛད་པའི་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་འཇུག་པ་དུས་ལས་ནམ་ཡང་ཡོལ་བ་མེད་དོ། །

འཇིག་རྟེན་འཁོར་བས་བསྡུས་པའི་ཆོས་ཚོར་བ་བདེ་སྡུག་དང་། བདག་ཡོད་མེད་དང་། རྟག་མི་རྟག་སོགས་ལ་བརྟེན་པའི་རྣམ་རྟོག་སྣ་ཚོགས་ཀྱི་སྐྱོན་གྱིས་ནམ་ཡང་མ་བསྒོས་ཤིང་། ཆོས་རྣམས་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་འགྲོ་འོང་དང་། སྐྱེངས་པ་དང་བཀྲམ་པ་སོགས་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་སྤྲོས་པ་དང་ཇི་ལྟར་བྲལ་ཚུལ་རྣམས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་གཤིས་ལུགས་ཀྱི་ངེས་དོན་དོན་དམ་བདེན་པ་རིག་པས་

ལེགས་པར་གསུངས་ཤིང་། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་དང་མོས་པ་ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་རྗེ་ལྟར་འཚམ་པར་ཞུགས་ཤིང་དེ་དག་དང་མཐུན་པའི་དོན་མཛད་ཀྱང་། བདེན་གྲུབ་ལྟོས་མེད་ཚུགས་ཐུབ་ཀྱི་འབྱུང་འཇིག་སོགས་མེད་ལ། སྐུ་བལྟམ་པ་དང་། ཆོས་སྐུ་མངོན་དུ་མཛད་པ་སོགས་རྐྱེན་ཉིད་འདི་པ་ཙམ་དུ་སྟོན་པར་མཛད་པ་དག་ནི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་གནས་ཤིག་ཡིན། བྲག་ཅ་ལྟ་བུའི་འགྲོ་བ་རྣམས་བདེན་གྲུབ་ཀྱི་གཅིག་དང་དུ་མ་དང་། སྐྱེ་འཇིག་དང་། སྟོད་སྨད་སོགས་ཀྱི་གཞིར་མི་རུང་ཞིང་། དེ་བཞིན་དུ་རྟག་ཆད་དང་མཚན་མཚོན་སོགས་དང་བྲལ་ཞིང་། རྨི་ལམ་སྒྲ་སོགས་ཀྱི་ངང་ཚུལ་དུ་འཁོར་བ་དང་། དེའི་བྱ་བཞག་རྣམས་རྟོགས་པར་མཛད་པ་དང་། ཉོན་མོངས་ཉེས་སྐྱོན་གྱི་རྩ་བ་མཐར་ཐུག་པ་མ་རིག་པ་དང་། དེས་བཞག་པའི་བག་ཆགས་རྣམས་རྩད་ནས་འབྱིན་པར་མཛད་པ་དང་། ལྷག་པར་དུ་ཟབ་མོ་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པའི་ཐབས་མཁས་ལ་བརྟེན་ནས་ཉོན་མོངས་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ལས་ཀྱང་ཡུལ་ཅན་ཁྱད་པར་ཅན་ལྷན་སྐྱེས་བདེ་ཆེན་གྱི་ཡེ་ཤེའི་བདུད་རྩི་ཉེ་བར་བསྒྲུབ་པར་མཛད་པ་[2]དང་། འདུས་པ་རྩ་བར།[3] 'ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ལུས་ཀྱི་རྣམ་པ་དང་། ལུས་སེམས་ཀྱི་རྣམ་པ་དང་།' ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་ལྟར་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ལྟ་བས་ཆོག་མི་ཤེས་ཤིང་། མཚན་དཔེའི་དཔལ་འབར་བའི་གཟུགས་སྐུ་དེ་ཉིད་སྦྲས་པའི་མཚན་མ་རྣམས་དང་བྲལ་

---

[2] དོན་གྱི་གནད་འདི་ལ་དགོངས་ནས་འདིའི་ཐད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་དེ་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོས་'དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒྲུབ་པར་' ཁུངས་འདྲེན་མཛད་ཡོད། (རྒྱུད་ 'ཙུ' ༣༧)

[3] རྩ་རྒྱུད་ལེའུ་གཉིས་པ་ 'བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ལེའུ།' (རྒྱུད། ཅ ༨༨)

ཞིང་གཟུགས་མེད་བཞིན་དུ་ཡེ་ཤེས་རང་སྣང་ལས་གྲུབ་པའི་དག་པའི་འཇག་ལུས་སྒྱུ་མའི་སྐུ་འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱན་གྱི་གཟིགས་ངོར་ཡོད་ལུས་ཀྱི་རྣམ་པ་ཅན་གྱི་ཚུལ་མངལ་དུ་ཡོད་ཅིང་། ཐ་མལ་པའི་སྣང་ངོར་གཟུགས་ཅན་གྱི་རྣམ་པར་མངལ་བ་དེ་ཙམ་གྱིས་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱི་དག་པའི་སྒྱུ་མའི་སྐུ་དངོས་མངལ་བ་མིན་ལ། འོན་ཀྱང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་སྣང་ངོར་མཐོང་ངོ་མངལ་ལོ་ཞེས་ཀྱང་མངོན་པར་བརྗོད་པར་བྱེད་དོ། །སྟོན་པས་བསྟན་པའི་རྣམ་ཀུན་མཆོག་ལྡན་གྱི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་རྟོགས་ཚུལ་རྫོགས་པའི་སྒོ་ནས་མཐོང་ཞིང་རྟོགས་ན་སྟོན་པ་དང་བསྟན་པའི་ངང་ཚུལ་མཐའ་དག་རྫོགས་པར་མཐོང་བ་སྟེ་རྟོགས་པར་འཇོག་གོ། འོན་ཀྱང་ཆོས་ཉིད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་གནས་ལུགས་དེ་གཉིས་སྣང་ཅན་གྱི་བློས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །ཚུལ་དེ་འདྲ་བ་འཕགས་པ་ས་ལུ་ལྗང་པའི་མདོ་ལས།[༡] "དགེ་སློང་དག་སུས་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་མཐོང་བ་དེས་ཆོས་མཐོང་ངོ་། །སུས་ཆོས་མཐོང་བ་དེས་སངས་རྒྱས་མཐོང་ངོ་།" །ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ། །

སློབ་དཔོན་གྱིས་མཛད་པའི་གསང་འདུས་རིམ་ལྔའི་རིམ་པ་གསུམ་པར་སྒྱུ་ལུས་ཀྱི་བསྟོད་པ་མཛད་པའི་ཚེ་ཇི་ལྟར་གསུངས་པ་བཞིན་འདིར་ཡང་གསུངས་ཏེ། སྐུ་དག་པ་འཇའ་ལུས་སྒྱུ་མའི་སྐུ་ལ་མངའ་བརྙེས་པའི་སྟོན་པ་རྡོ་རྗེ་འཆང་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ལ་གསོག་གསོབ་འདྲ་བའི་ཁོང་སྟོང་མེད་ཅིང་། རྣམ་པར་སྨིན་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤ་རུས་དང་ཁྲག་ཀྱང་མེད་དོ། །ཁྱོད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྐུ་ནི་ཐོག་པའི་རེག

[༡] པེ། བཀའ། (མདོ་ 'ཙུ' ༣༣)

པ་དང་བྲལ་ཞིང་གཟུགས་སུ་གྲུབ་པ་མེད་ཀྱང་ནམ་མཁའ་ལ་ནི་འཇའ་མཚོན་ལྟར་མཚན་དཔེས་བརྒྱན་པའི་རྣམ་པར་སྟོན་པར་མཛད་དོ། །སྐུ་ལ་ནད་བཞི་བརྒྱ་རྩ་བཞི་གང་གིས་ཡང་བསྐྱུན་དུ་མེད་ཅིང་། བུ་ག་དགུ་ནས་མི་གཙང་བ་འཛག་པ་མེད་ལ། བཀྲེས་དང་སྐོམ་པའི་ཚོར་བ་སྡུག་བསྔལ་འབྱུང་བ་མེད་དོ།། དེ་དག་མེད་ཀྱང་སྟོན་པ་ཁྱོད་ནི་འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་རང་ཉིད་གང་དུ་གཤེགས་པའི་ལམ་ཡང་དག་པའི་རྗེས་སུ་འཇུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་གྱི་བྱ་བ་དང་མཐུན་པར་བསོད་སྙོམས་ལ་གཤེགས་པ། ན་བཟའ་གསོལ་བ། སྨན་སྟེན་པའི་ཚུལ་སོགས་སྟོན་པར་མཛད་[༡]དོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ལས་ཉོན་གྱི་སྒྲིབ་པ་དང་དེས་བཞག་པའི་བག་ཆགས་སོགས་ཀྱི་སྐྱོན་རྣམས་ སྲིག་པ་དང་བྲལ་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སྤངས་ཀྱང་། ཉམ་ཐག་པའི་སེམས་ཅན་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་ཕྱིར་ལོ་དྲུག་དཀའ་བ་སྤྱད་པ་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་སྤངས་རྒྱུའི་ལས་ཡོད་པ་ལྟ་བུ་དང་། དེ་སྤངས་པའི་ཐབས་སུ་ལམ་སྒོམ་དགོས་པའི་ཚུལ་ལམ་རྣམ་པ་དེ་འདྲ་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད། །

ངེས་པའི་དོན་དུ་ཆོས་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་ཐ་དད་པའི་དབྱེ་བ་གཏན་ནས་མེད་པས། དེའི་ཆ་ནས་ཐེག་པ་གསུམ་དུ་དབྱེར་མེད་ཀྱང་། དྲང་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཏུ་རབ་འབྱིང་ཐ་མའི་བློ་ཅན་གྱི་གདུལ་བྱ་རྣམས་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་ལ་

---

༡ ཁོང་སྟོང་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ལ་མེད། །ཅེས་སོགས་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་འདི་གཉིས་རིམ་ལྔའི་རིམ་པ་གསུམ་པ་བདག་བྱིན་རླབས་ཀྱི་རིམ་པའི་སྐབས་སུ་ཡང་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གསུངས་ཡོད། (རྒྱུད་'ཨི·' ༥༣)

རིམ་གྱིས་གཞུག་པའི་ཆེད་དུ་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་རྣམ་བཞག་དག་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད། ངེས་པའི་དོན་དུ་རྟག་ཅིང་བརྟན་ལ་གཞོམ་གཞིག་དང་བྲལ་བའི་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱི་འཇའ་ལུས་རྡོ་རྗེའི་རང་ཁམས་ཅན་གྱི་ཆོས་སྐུ་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་འཕོ་འགྱུར་གཏན་ནས་མེད་ཀྱང་། སྣང་དོན་གདུལ་བྱའི་བསམ་ངོ་དང་བསྟུན་ནས་ཐབས་མཁས་པའི་སྒོ་ནས་རྒྱལ་བས་གདུལ་བྱ་རྟག་འཛིན་ཅན་རྣམས་རྗེས་སུ་བཟུང་བའི་ཕྱིར་དུ་རེ་ཞིག་ཞིང་འདིར་གཟུགས་སྐུའི་བཀོད་པ་བསྡུས་ནས་སྐུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ཚུལ་སོགས་བསྟན་པར་མཛད་དོ། །

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་འདིའི་སྐུ་དངོས་ཀྱི་གདུལ་བྱ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ནས་སྐུ་ཞི་བར་གཤེགས་ཀྱང་། གྲངས་དང་ཚད་མེད་པའི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་གཞན་དང་གཞན་དུ་སྐུ་བལྟམ་པ་དང་། མངོན་པར་རྫོགས་པར་བྱང་ཆུབ་དང་། སྐུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་སོགས་མཆོག་གི་སྤྲུལ་སྐུའི་མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་སོགས་གང་བསྟན་པ་རྣམས་འཁོར་བ་དང་ངན་སོང་ལས་ཐར་བར་མོས་ཤིང་། སྟོན་པ་དང་དེའི་བསྟན་པ་ལ་དད་ཅིང་གུས་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཇལ་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་གྱུར་ཐུབ་པ་སོགས་གང་ལ་དེ་འཚམ་གྱི་མཛད་པ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དག་སྟོན་པར་མཛད་པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་འགྲོ་བའི་མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་གྲངས་དང་ཚད་གཞལ་དུ་མེད་པའི་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་གྱི་ཕྱིར་དུ་སྐུ་གསུང་ཐུགས་གསུམ་གྱི་མཛད་པ་གང་མཛད་ཀྱང་། དེ་ལ་འབད་རྩོལ་དང་རྣམ་རྟོག་གི་གཡོ་བ་གཏན་ནས་མེད་ཅིང་། ཆོས་ཉིད་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་མཉམ་པར་བཞག་བཞིན་དུ་རྒྱལ་བའི་མཛད་

པ་རྣམས་འགྲོ་བའི་དོན་གྱི་ཕྱིར་ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་ཅིང་རྒྱུན་མི་ཆད་པའི་འཕྲིན་ལས་ཉེར་བདུན་གྱི་སྒོ་ནས་འཇུག་པར་མཛད་པ་ཡིན་ནོ། །

འདི་ལྟར་སྟོན་པ་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚད་གཞལ་དུ་མེད་ལ། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་ཅིང་བརྗོད་དུ་མེད་པ་དག་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་དང་བ་ཆེན་པོས་མངོན་པར་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པའི་མེ་ཏོག་རབ་ཏུ་འཐོར་བ་ལ་བརྟེན་ནས་བྱུང་བའི་དགེ་བའི་རྩ་བ་འདིས། སེམས་ཅན་མཐའ་དག་མཆོག་ཏུ་ཟབ་ཅིང་རྟོགས་དཀའ་བ་ཐུབ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གསུངས་པའི་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པའི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྣོད་དམ་པར་འགྱུར་བར་ཤོག་ཅིག་ཅེས་བསྔོ་བ་དང་ཐུགས་སྨོན་གྱིས་མཐའ་བརྒྱན་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་མཇུག་བསྡུ་བར་མཛད་དོ། །

(༣) བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པའི་བསྡུས་དོན།

སྟོན་པ་ཚད་མ་གང་ཞིག་གིས་དངོས་པོ་རྣམས་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་མེད་པའི་ཚུལ་ཇི་ལྟར་དོན་ལ་གནས་པ་ལྟར་མཁྱེན་ཅིང་གཟིགས་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་འདྲ་བ་སྟོན་པར་གྲགས་པ་གཞན་ལ་མེད་པས་ཡེ་ཤེས་མཉམ་པ་མེད་པ་དང་། ཕལ་དང་ཕལ་གྱི་བསམ་ཡུལ་ལས་འདས་པས་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་། མཚུངས་ཆོས་ཀྱི་དཔེ་རྟེན་དུ་མེད་པས་དཔེ་མེད་པ་སོགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་རྨད་དུ་བྱུང་བ་མངའ་བའི་སྟོན་པ་དེ་ལ་སློབ་དཔོན་གྱིས་གུས་ཕྱག་མཛད་ནས། སྐབས་དོན་གྱི་བསྟོད་པའི་གཞུང་དངོས་ཀྱི་བསྟན་དོན་ནི། ཇི་ལྟར་སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་པའི་ཡང་རྩེ

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་གཞུང་ལམ་ལ་བརྟེན་ནས་སྐུ་ཉིད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཆོས་རྣམས་ལ་བདག་མེད་པའི་ཚུལ་མཁྱེན་ཅིང་གཟིགས་པ་ལྟར། བློ་དང་ལྡན་པའི་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་ཐུགས་བརྩེ་བ་ཆེན་པོས་འདོམས་པར་མཛད་ཡོད། ཚུལ་འདི་དག་ནི་རྗེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པར།

གང་ཞིག་གཟིགས་ཤིང་གསུང་བ་ཡི། །
མཁྱེན་དང་སྟོན་པ་བླ་ན་མེད། །

ཅེས་གསུངས་པ་དང་གནད་ཅིག་གོ། །

རྒྱུ་རྐྱེན་དང་གདགས་གཞི་འདོགས་བྱེད་སོགས་ལ་བརྟེན་ཅིང་ལྟོས་ནས་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་རང་ངོས་ནས་མ་སྐྱེས་པ་དང་། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ཚུལ་དུ་མ་སྐྱེས་པའི་རྒྱུ་མཚན་གྱིས་རང་ངོས་ནས་བཀག་པས་སྟོང་པར་རབ་ཏུ་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད། ཚུལ་འདི་ཡང་རྗེའི་གསུང་དེ་ཉིད་ལས།

གང་གང་རྐྱེན་ལ་རག་ལས་པ། །
དེ་དེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་ཞེས། །
གསུངས་པ་འདི་ལས་ཡ་མཚན་པའི། །
ལེགས་འདོམས་ཚུལ་ནི་ཅི་ཞིག་ཡོད། །

ཅེས་གསུངས་པ་དང་གནད་གཅིག་གོ།

ཇི་ལྟར་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཅན་གྱི་སྨྲ་ལས་བྲག་ཅའི་དབྱངས་དག་འགག་པ་མེད་པར་ཐོས་སུ་ཡོད་པ་ལྟར་སྒྱུ་མ་དང་སྨིག་རྒྱུའི་ཚུལ་དུ་སྲིད་པ་འཁོར་བ་དག་རྒྱུན་མར་འབྱུང་ཡང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ཚུལ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་

ནོ། །གལ་ཏེ་དཔེའི་ཚུལ་དུ་འཇོག་རྒྱུའི་སྒྲིག་རྒྱུ་དང་། དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་དང་། གཟུགས་བརྙན་དང་། རྨི་ལམ་ལ་སོགས་པ་དག་ཐ་སྙད་དུ་ཡང་གདན་ནས་མ་སྐྱེས་ན་མཐོང་ཐོས་ཀྱི་ཡུལ་དུ་གྱུར་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་རང་ངོས་ནས་མེད་པར་གྲུབ་པའི་དཔེ་འཇོག་ཏུ་མེད་པར་འགྱུར་བས། དེ་དག་ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་ཙམ་དུ་ཡོད་པ་དང་། གང་རྒྱུ་རྐྱེན་ལ་ལྟོས་ནས་བྱུང་བ་དེ་ཀུན་དེ་དག་ཚོགས་ཤིང་འདུས་བྱས་པ་ཅན་དུ་བཞེད་པས་རྟེན་འབྲེལ་ལྟོས་བཅས་ཀྱི་དངོས་པོ་རྣམས་ཐ་སྙད་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་ངང་ཚུལ་ལས་མ་འདས་པར་གསུངས་སོ། །གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་མ་རྟོགས་པའི་བྱིས་པ་སོ་སྐྱེ་དག་གིས་འཁྲུལ་པའི་དབང་གིས་གང་བརྗོད་པ་དང་། གང་བསྒྲིས་པ་མཐའ་དག་དོན་གྱིས་སྟོང་པའི་ལག་སྟོང་འདྲ་ཞིང་། གནད་ལ་མ་འཁེལ་བ་དང་། གཤིས་ལུགས་དང་མི་མཐུན་པར་འགྱུར་རོ། །གང་གི་ཚེ་རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས་འདུས་བྱས་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་བ་གདན་ནས་མེད་ན། དེ་དག་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་ད་ལྟ་བ་དང་། རྒྱུ་གང་ཞིག་ཟད་པས་འདས་པ་དང་། གང་མ་ཚང་བའི་དབང་གིས་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་མ་འོངས་པ་སོགས་ཀྱི་ལྟོས་པ་ཅན་གྱི་རྣམ་བཞག་དག་ཇི་ལྟར་འཇོག་པར་བྱེད་རིགས་ཏེ་མི་རིགས་སོ། །

རྒྱུ་རྐྱེན་དུ་མ་འདུས་བྱས་ཤིང་ཚོགས་པ་ལས་བྱུང་བའི་དངོས་པོ་རྣམས་རང་གི་རྒྱུའི་བདག་ཉིད་ལས་བདག་སྐྱེའི་ཚུལ་དུ་སྐྱེ་བ་མེད་ལ། དེ་བཞིན་དུ་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་རྒྱུ་གཞན་ལས་འབྲས་བུ་གཞན་སྐྱེ་བའི་གཞན་སྐྱེ་མེད་ལ། དེ་དག་རེ་རེ་ནས་མེད་པས་གཉིས་ཀ་ལས་སྐྱེ་བ་འབྱུང་ཐབས་མེད། དེས་ན

དངོས་པོ་རྣམས་རང་ངོས་ནས་ཡོད་པ་ལས་ཀྱང་མིན་ལ། ཐ་སྙད་ཙམ་དུ་མེད་པ་ལས་ཀྱང་མིན་ལ། དེ་གཉིས་ཀའི་གཞི་མཐུན་ལས་ཀྱང་མིན་པ་དེའི་ཚེ་མཐའ་བཞི་གང་ལས་འབྱུང་རིགས་ཏེ་མི་རིགས་སོ། །དེས་ན་ཚུལ་དེ་དག་ལས་ཡོངས་སུ་ལྡོག་ཏེ། རྟེན་འབྱུང་སྒྱུ་མ་ཙམ་གྱི་འབྱུང་ཚུལ་དག་ཤིན་ཏུ་འཐད་པ་ཡིན་ནོ། །མཐའ་བཞི་དང་བྲལ་བའི་ཆོས་ལ་ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་གི་སྐྱེ་བ་འཐད་ཀྱང་རང་བཞིན་གྱིས་སྐྱེ་བ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་བཞག་ཏུ་མེད་ལ། དེ་མེད་པས་ལྟོས་ས་དེ་ལ་ལྟོས་པའི་གཞན་དངོས་ལས་བྱུང་བ་ཡང་མི་འཐད་དོ། །ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་གི་ཚུལ་དུ་རང་ཉིད་ཡོད་ན། དེ་ལ་ལྟོས་པའི་གཞན་དང་། དེ་ལས་བཟློག་པ་ཡང་འཇོག་ཏུ་ཡོད་པ་ནི་དེ་དག་ཕ་རོལ་ཚུ་རོལ་བཞིན་དུ་ལྟོས་པ་ཅན་དུ་གྲུབ་པའི་གནད་ཀྱིས་ཡིན་ནོ།།

གལ་ཏེ་ལྟོས་མེད་བཙོས་མིན་ཡིན་ན་རྒྱུ་རྐྱེན་དང་གདགས་གཞི་འདོགས་བྱེད་སོགས་གང་ལ་བརྟེན་ནས་ཅི་ཞིག་འབྱུང་བའི་རྣམ་བཞག་དག་འཇོག་མི་རིགས་ཏེ། །དཔེར་ན་གང་ལ་ལྟོས་སའི་གཞི་རིང་བ་དང་རགས་པ་སོགས་མེད་ན། དེ་ལ་ལྟོས་པའི་ཐུང་ངུ་དང་ཕྲ་བ་སོགས་འཇོག་ཏུ་མེད་པ་བཞིན་ནོ། །དཔེ་དེ་བཞིན་དུ་ཡོད་མེད་དང་། གཅིག་ཐ་དད་དང་། འདས་མ་འོངས་དང་། ཀུན་ཉོན་རྣམ་བྱང་དང་། ཡང་དག་ལོག་པ་དང་། རང་དང་གཞན་ལ་སོགས་པའི་གཉིས་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་བཞག་མཐའ་དག་ཕན་ཚུན་ལྟོས་པ་ཅན་དུ་ཡོད་པ་དང་། རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པ་གཏན་ནས་མེད་པར་གསུངས་སོ། །མདོར་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་གདོད་མ་ནས་བདེན་པར་གྲུབ་པའི་སྤྲོས་པའི་མཚན་མ་ཡོངས་སུ་ཞི་

བ་དང་། རང་བཞིན་གྱིས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་ཤིང་། ཡང་དག་པར་སྟེ། དོན་དམ་པར་རང་བཞིན་གྱིས་མ་སྐྱེས་པ་ཡིན་པས། ཆོས་རྣམས་རྟེན་འབྱུང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་འགྲུབ་པར་གསུངས་སོ། །

ཀློ་གྲོས་ཀྱི་མཐུ་ཤུལ་དུ་དབྱུང་དུ་མེད་པའི་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟུགས་སོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་དབུ་བ་དང་། ཆུ་བུར་དང་། སྒྱུ་མ་དང་འདྲ་བར་དཔེ་དུ་མའི་སྒོ་ནས་རང་བཞིན་མེད་པར་གྲུབ་པར་མཛད་ཡོད། གལ་ཏེ་ཐ་མལ་པའི་དབང་པོའི་ཡུལ་དུ་གང་དམིགས་པ་དེ་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་གནས་ལུགས་ཡིན་ན། བྱིས་པ་སོ་སོ་སྐྱེ་བོས་ཀྱང་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་རྟོགས་པར་ཐལ་བ་དང་། འཕགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་རིག་ཤེས་དགོས་མེད་དུ་འགྱུར་བའི་སྐྱོན་ཡོད་དོ། །སོ་སྐྱེའི་དབང་པོས་དོན་དེ་མི་རིག་པའི་རྒྱུ་མཚན་ནི། མིག་སོགས་དབང་པོ་དེ་རྣམས་བེམ་པོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ན་ཚད་མ་མིན་ལ། དེ་བཞིན་དུ་དེ་དག་ལུང་དུ་མ་བསྟན་པ་དང་། ལོག་པར་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་པར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་ཐ་མལ་པའི་དབང་པོས་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་མཐར་ཐུག་པ་ཅི་ཞིག་ཀྱང་རྟོགས་ཐུབ་པར་དཀའ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་མི་ཤེས་པའི་སྒྲིབ་པས་ཤེས་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་བསྒྲིབས་ནས་ཡོད་པ་དེ་ཡང་དག་ཇི་བཞིན་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའི་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཀའ་བསྩལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །

སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པ་ཁྱོད་ཀྱི་ལུགས་ལ་བདེན་དངོས་ཀྱི་ཆོས་ཡོད་པར་སྨྲ་བ་རྟག་པར་བལྟ་བ་དང་། ཐ་སྙད་ཙམ་དུ་མེད་པའི་གཏན་མེད་སྨྲ་བ་ཆད་པར་ལྟ་བ་ཡིན་པས། དེ་གཉིས་དང་བྲལ་བའི་ཡང་དག་པའི་ཆོས་དབུ་མའི་ལམ་

བསྟན་པར་མཛད་ཅིང་། ཆོས་རྣམས་བདག་གཞན་སོགས་ལས་སྐྱེ་བའི་མུ་བཞི་དང་བྲལ་བ་ཡིན་པས། དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ནི་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལས་གཞན་པའི་ཐ་མལ་པའི་རྣམ་ཤེས་ཀྱིས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཤེས་པར་བྱ་བ་མིན་པས། ཉོན་མོངས་པའི་འཆིང་བ་ལས་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །མདོར་ན་བརྟན་གཡོའི་སྣོད་བཅུད་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་འགྲོ་བ་འདི་དག་རྨི་ལམ་མིག་འཕྲུལ་དང་ཟླ་གཉིས་སྣང་བ་བཞིན་དུ་འབྱུང་བ་ལས། རང་ངོས་ནས་སམ་ལྟོས་མེད་ཚུགས་ཐུབ་ཀྱིས་མི་འབྱུང་བའི་ཚུལ་མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་གཟིགས་ནས་བསྟན་པར་མཛད་དོ། །

དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་འཇིག་གནས་པ་དག་རྨི་ལམ་གྱི་བུ་དང་མཚུངས་པ་ཙམ་ལས་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་འཇིག་སོགས་མེད་ཀྱང་། འཇིག་རྟེན་བསམ་ངོ་ལ་ལྟོས་ནས་སྐབས་འགར་དྲང་དོན་དགོངས་པ་ཅན་གྱི་ཚུལ་དུ་གསུངས་ཡོད། ཤེས་རྒྱུད་ཀྱིས་མ་བསྡུས་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་ལ་རྨི་ལམ་དང་མཚུངས་པའི་འབྱུང་འཇིག་ཡོད་པ་དེ་བཞིན་དུ་རྒྱུད་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་སྡུག་བསྔལ་དང་། འཁོར་བ་དང་། དེ་དག་གི་རྒྱུ་ཀུན་འབྱུང་ལས་ཉོན་དང་། གཉེན་པོ་རྣམ་བྱང་གི་ཚོགས་གཉིས་རྫོགས་པ་དང་། ཐར་པ་ཐོབ་པ་དག་ཀྱང་རྨི་ལམ་དང་འདྲ་བར་གསུངས་ཤིང་། སྐྱེས་མ་སྐྱེས་དང་། འགྲོ་འོང་དང་བཅིང་གྲོལ་སོགས་ལ་དམིགས་པའི་གཉིས་སྣང་ཅན་གྱི་བློ་ལ་བདེན་ཞེན་ཡོད་ཀྱང་། ཡང་དག་པའི་དོན་རིག་པའི་འཕགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་དེ་དག་ཡོད་པར་འདོད་པ་རིག་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཡུལ་དུས་གང་དུ་ཡང་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་འཆི་མེད་ཅིང་། ཆོས་

ཀུན་སྒྲུ་མའི་གླང་པོ་འདྲ་ཞིང་ངེས་པའི་དོན་དུ་གཟོད་མ་ནས་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པས་ཞི་བ་ཡིན་པས་དངོས་པོ་རྣམས་སྒྲུ་མའི་གླང་པོ་ལྟར་ཐ་སྙད་ཀུན་རྫོབ་ཙམ་དུ་སྐྱེ་བ་དང་། ཡང་དག་པར་ན་མ་སྐྱེས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །

རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་འཇིག་རྟེན་གྱི་མགོན་པོ་དཔག་ཏུ་མེད་པ་བྱོན་པ་རྣམས་ཀྱིས་གླངས་དང་ཚད་འཛིན་དུ་མེད་པའི་ལས་བསྐལ་ཅན་གྱི་གདུལ་བྱ་མང་པོ་ཐོབ་བྱ་མཐར་ཐུག་མི་གནས་པའི་མྱང་འདས་ཀྱི་ས་ལ་འགོད་པར་མཛད་ཡོད་པས། ཆེད་དུ་བྱ་བའི་གདུལ་བྱར་འགྱུར་ངེས་པའི་འགྲོ་བ་ཅི་འདྲ་བ་ཞིག་ལ་ཡང་རྒྱལ་བ་གང་དག་གིས་མ་བརྟགས་བཏང་སྙོམས་མཛད་ནས་རང་དགར་མ་བསྒྲལ་བར་བཞག་པ་གང་ཞིག་ཡོད་དེ་དེ་འདྲ་བ་གཏན་ནས་མེད་དོ། །སེམས་ཅན་རྣམས་ལ་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་བ་གཏན་ནས་མེད་པའི་རྒྱུ་མཚན་དེ་ཉིད་ལ་བརྟེན་ནས་ཐ་སྙད་རྟེན་འབྱུང་དུ་ཐུབ་ཆེན་རྣམས་ཀྱིས་ལས་བསྐལ་ཅན་དག་དུས་ལས་ཡོལ་བ་མེད་པར་གོང་མའི་ཁྱད་པར་དག་ལ་གང་གིས་གང་ཞིག་འགོད་པར་མ་མཛད་པའི་སྐབས་དེ་ནི་སྲིད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལས་གཞན་དུ་ངོ་བོས་གྲུབ་པ་འགའ་མཆིས་ཆེ་རྒྱ་རྒྱན་གྱིས་བཙོས་སུ་མེད་པས་ཐུགས་རྗེའི་ཕྱག་གིས་གཏོང་བ་དང་དུས་ལས་ཡོལ་བ་དག་ཀྱང་སྲིད་པར་འགྱུར་རོ། །

ཕྱིར་དངོས་པོ་རྣམས་སྒྲུ་མ་མཁན་གྱིས་བྱས་པ་ལྟར་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཡིན་པས། བྱེ་བྲག་བྱེད་པ་པོ་དང་། དེའི་བྱ་བ་དང་། དེ་དག་གི་རྒྱུ་རྣམས་ཀྱང་ངོ་བོས་གྲུབ་པའི་དབེན་ཞིང་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཚུལ་དུ་འབྱུང་

བ་ཡིན་པས། དེ་ལས་གཞན་དུ་ན་མཐའ་མེད་དང་ཐུག་མེད་སོགས་སུ་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ། །

ཆོས་རྣམས་རང་ངོས་ནས་མ་གྲུབ་ཅིང་མིང་ཙམ་དུ་གྲུབ་པོ་ཞེས་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུང་གསང་མཐོན་པོས་གསང་གཏོད་དེ་གསུངས་པར་མཛད་ཡོད་པས། རྗོད་བྱེད་ལས་གཞན་དུ་བརྗོད་པར་བྱ་བ་རང་བཞིན་གྱིས་མེད་ཅིང་། བློ་གང་གིས་ཆོས་རྣམས་སྟོང་པར་རྟོགས་པར་བྱེད་པའི་བློ་དེ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་མེད་དེ། དེ་དག་མིང་ཙམ་དང་རྟོག་པས་བཏགས་ཙམ་དུ་གསུངས་པ་དང་། དངོས་པོ་དང་དངོས་མེད་དང་། དེ་གཉིས་ལས་འདས་མ་འདས་དང་། ཤེས་པ་དང་ཤེས་བྱ་དག་གཏན་ནས་མེད་པ་ཡང་མིན་ལ། རང་ངོས་ནས་ཡོད་པ་ཡང་མིན་ལ། ཆོས་གང་ལ་ཡང་བདེན་གྲུབ་ཀྱི་ཚུལ་དུ་གཅིག་ཐ་དད། གཞི་མེད་དང་། མི་གསལ་བ་དང་། བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དང་། དཔེ་མེད་པ་དང་། སྐྱེ་འགག་རྟག་ཆད་སོགས་ཀྱི་རྣམ་བཞག་རྣམས་བྱར་མེད་ལ། ཡི་གེ་དང་ཡེ་ཤེས་སོགས་ཀྱི་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་ཡང་བྱར་མེད་དོ། །དེས་ན་དེ་དག་ནམ་མཁའ་དང་འདྲ་བར་རང་བཞིན་གྱིས་དབེན་ཞིང་། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཚུལ་ལས་མ་འདས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་དམ་པའི་ཆོས་དང་དེ་གསུངས་པ་པོའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དག་ཀྱང་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པའི་རང་བཞིན་ཡིན་པས། ཚུལ་འདི་ནི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དོན་དང་། དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་ཇོས་སམ་དེའི་ངོ་བོར་ཡོད་པས་དོན་དེ་ལ་ནམ་ཡང་བསླུ་བ་མེད་ཅིང་། གང་གིས་རྟོགས་བྱ་མཐར་ཐུག་པ་དེ་ཡང་དག་པར་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་སྒོམ་པ་རབ་ཀྱིས་

མཐར་ཕྱིན་པའི་སྒོ་ནས་རྫོགས་པར་རྟོགས་པས་ན་སངས་རྒྱས་ཞེས་ཀྱང་བརྗོད་པར་མཛད་དོ།།

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་སྐུ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་རྒྱུད་ཀྱི་ཁམས་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་སྙིང་པོ་སྟེ་སེམས་སྙིང་གི་ཆོས་ཉིད་གཉིས་ལ་ངེས་པའི་དོན་དུ་ཐ་དད་པ་མེད་པའི་གནད་དེ་ལ་དགོངས་ནས་བདག་ཉིད་དང་གཞན་གཉིས་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་བཞེད་པར་མཛད་པ་དང་། དངོས་པོ་རྣམས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པའི་རང་བཞིན་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་ལས་གཞན་དུ་མེད་པས་གནས་ལུགས་དེ་དང་བྲལ་བའི་དངོས་པོ་གཏན་ནས་མེད་པས། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་དངོས་པོ་རྣམས་རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པར་གསུངས་ཤིང་། དེ་དག་རྒྱུ་རྐྱེན་གཞན་གྱིས་བཅོས་པའི་གཞན་དབང་ཀུན་རྫོབ་ཡིན་ལ། གནས་ལུགས་དམ་པའི་དོན་ནི་རྟེན་འབྲེལ་ལྟོས་གྲུབ་ཡིན་ཡང་རྒྱུ་རྐྱེན་གྱིས་བཅོས་པའི་གཞན་དབང་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །ཡོངས་གྲུབ་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་། མཐར་ཐུག་པའི་རང་བཞིན་དང་། ཡང་དག་པའི་དངོས་པོ་རྣམས་ཡོད་ལ། རྟོག་པས་སྒྲོ་བཏགས་པའི་ཀུན་བརྟག་རྣམས་དོན་ལ་མེད་ཀྱང་རྒྱུ་རྐྱེན་གཞན་ལ་རྟེན་ཅིང་ལྟོས་དགོས་པའི་གཞན་དབང་ནི་ཡོད་པ་ཁོ་ནའོ། །རྣམ་རྟོག་ལོག་པས་སྒྲོ་བཏགས་པའི་དོན་ཡོད་པར་འདོད་པ་སྒྲོ་འདོགས་དང་། རྒྱུ་དགེ་སྡིག་བྱས་ཤིང་བསགས་པ་ལས་འབྲས་བུ་བདེ་སྡུག་འབྱུང་དུ་མེད་པར་འདོད་པ་ཆད་ལྟ་ཡིན་ལ། ཡང་དག་པའི་དོན་ལེགས་པར་རྟོགས་ན་བསྐུར་འདེབས་ཀྱི་ཆད་ལྟ་དང་སྒྲོ་འདོགས་ཀྱི་རྟག་ལྟ་དག་མེད་པར་འགྱུར་ཞིང་། བརྟན་གཡོའི་སྣོད་བཅུད་ཀྱི་འགྲོ་

པ་མཐའ་དག་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་རྟག་པ་དང་། གཏན་ནས་མེད་པའི་ཆད་པ་ཡང་མིན། ཆོས་གང་ལ་ལྟོས་པ་ཅན་གྱི་སྐྱེ་བ་ཡོད་ཕྱིན་ཆད་དེ་ལ་ཆད་སོགས་ཀྱི་འཇིག་པ་ཡང་འབྱུང་ངེས་པ་ཡིན། དེ་ཇི་ལྟར་འབྱུང་ཚུལ་ཡང་འཁོར་བའི་འཇིག་རྟེན་ལ་སྔོན་མཐའ་མེད་ཀྱང་ཕྱི་མཐའ་ངེས་པར་འཇོག་རིག་ཅིང་འཁོར་བ་མཐའ་ཅན་དུ་འགྱུར་བ་ཡོད་པས་སོ། །དེས་ན་དེ་དག་ཕན་ཚུན་ལྟོས་པ་ཅན་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན། ཤེས་བྱེད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ལ་ལྟོས་ནས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་ཡུལ་འཇོག་ཏུ་ཡོད་པ་དང་། དེ་ལས་བཟློག་པའི་རྣམ་བཞག་དག་ཀྱང་འཐད་པ་ཡིན་པས། དུས་གང་གི་ཚེ་དེ་རྣམས་རང་བཞིན་གྱིས་མ་སྐྱེས་པར་རྟོགས་པའི་ཚེ། དེ་དག་གི་གཟིགས་ངོ་ལ་ལྟོས་ཏེ་རང་བཞིན་གྱིས་སྐྱེ་བ་ཅི་ཞིག་འཇོག་ཏུ་ཡོད་དེ་མེད་དོ། །

དེ་ལྟར་གོང་དུ་འགྲོ་བའི་ཤེས་རྒྱུད་ཀྱི་ཉོན་མོངས་པའི་ནད་རབ་ཏུ་སེལ་བར་བྱེད་པའི་སྨན་པའི་མཆོག་སྟོན་པ་ཤཱཀྱའི་རྒྱལ་པོས་སྒྱུ་མ་དང་སྨིག་རྒྱུ་ལ་སོགས་པའི་དཔེ་དུ་མའི་སྒོ་ནས་ལྟ་བ་ངན་པའི་ནད་ཐམས་ཅད་འགོག་པར་བྱེད་པའི་དམ་པའི་ལྷ་ཆོས། ཆོས་རྣམས་ལས་མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་བདག་མེད་པའི་ཚུལ་རྒྱས་པར་བསྟན་པ་དེ་ནི་ཡང་དག་པའི་དོན་གྱི་དམ་པ་དང་མཆོག་ཡིན་པས། དངོས་འཛིན་གདོན་གྱིས་ཐེབས་པའི་འགྲོ་བའི་ཤེས་རྒྱུད་ཀྱི་ཉོན་མོངས་པའི་ནད་རྣམས་གསོ་བར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་ན་དེ་ནི་བླ་ན་མེད་པའི་མཛད་པ་ཡིན་ལ། དེ་འདྲ་བའི་མཛད་པ་དེ་ནི་སྦྱིན་པ་རྣམ་པ་གསུམ་ལས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་སྐྱོན་བྲལ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྦྱིན་པ་ཡིན་པས། དུས་རྟག་ཏུ་རྒྱུན་ཆད་པ་མེད་ཅིང་

ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པའི་འཕྲིན་ལས་རྣམ་པ་གཉིས་ཀྱི་སྒོ་ནས་འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱིས་བསྡུས་པའི་སྐྱེ་འགྲོ་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་རྒྱུད་ཀྱི་ཉེས་སྐྱོན་རྣམས་ཙད་ནས་སྲེག་ཅིང་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་སྦྱིན་སྲེག་མཛད་པ་དང་ཆབས་ཅིག དངོས་འཛིན་གདོན་གྱིས་སྐྱོས་པའི་འཇིག་པ་དག་ཙད་ནས་གཅོད་པར་བྱེད་པའི་བདག་མེད་པའི་སེངྒེའི་ང་རོ་ཕྱོགས་བརྒྱར་སྒྲོགས་པར་མཛད་པའི་སྒོ་ནས་སྨྲ་བ་ངན་པའི་མུ་སྟེགས་ཀྱི་ཚོགས་རི་དྭགས་དང་འདྲ་བ་རྣམས་རབ་ཏུ་འཇིགས་ཤིང་སྤུ་བསྒྲོང་བར་མཛད་དོ། །

འགྲོ་བའི་ནད་གདུང་ཞི་བར་བྱེད་པའི་ཐབས་སྨད་དུ་བྱུང་བ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་བདུད་རྩི་དང་འདྲ་བའི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་གནང་སྦྱིན་དག་ཕངས་པ་མེད་པར་བསྩལ་བ་ལས་ཆོས་རྣམས་ཀུན་གྱི་གནས་ལུགས་མཐར་ཐུག་ཟབ་མོ་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་དེ་ཉིད་སྒྲས་ཟིན་སྒྲ་ཇི་བཞིན་དུ་ཁས་བླང་དུ་ཚོག་པའི་ངེས་པའི་དོན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་བསྐལ་བ་དང་ལྡན་པ་དག་དབུགས་དབྱུང་བར་མཛད་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཕྱི་ནང་སྡོད་བཅུད་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་སྐྱེ་འགག་དང་། སེམས་ཅན་དང་སྲོག་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྫོབ་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྣམ་བཞག་གང་བསྟན་པ་མཐའ་དག་གདུལ་བྱ་རྣམས་འཁོར་བ་ལས་བཀྲི་བའི་དོན་དུ་དྲང་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཙམ་དུ་བསྟན་པར་མཛད་ཡོད། དེ་འདྲ་བའི་དྲང་ངེས་ཀྱི་ཆོས་སྟོན་པ་པོའི་སངས་རྒྱས་དེ་ནི། ཆེས་ཤིན་ཏུ་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བའི་བདེན་གཉིས་སམ་ཐབས་ཤེས་གཉིས་སམ་ཚོགས་གཉིས་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་ཟབ་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་རྒྱ་མཚོ་ཆེན་པོའི་མཐར་སོན་པ་མ་ཟད། རྒྱ་ཆེ་བ་

ཐབས་ཀྱི་ཆ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེས་ཕྱུག་པ་སྟེ་ཐུགས་རྒྱུད་ཡོངས་སུ་གཏམས་པས་ན། མགོན་པོ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཁྱོད་ནི་ཚོགས་གཉིས་ཀྱིས་བསྡུས་པའི་ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཡོངས་སུ་སོན་པ་བླ་མེད་པའི་སྐྱབས་གནས་གཅིག་པུ་ཡིན་ནོ། །

དེས་ན་མཚུངས་ཚོས་ཀྱི་དཔེ་རྙེད་དུ་མེད་པས་དཔེ་མེད་པ་དང་། ཡོན་ཏན་གྱི་ཚོགས་ཕལ་དང་ཕལ་གྱི་བློར་ཆུད་དུ་མེད་པའི་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པའི་དཔལ་དང་ལྡན་པའི་བསྟོད་ཡུལ་མཆོག་འགྲོ་བའི་མགོན་པོ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་བདག་ གིས་དང་བ་ཆེན་པོས་བསྟོད་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ཐོབ་པའི་བསོད་ནམས་དེའི་མཐུ་ལ་བརྟེན་ནས། འགྲོ་བ་ཀུན་ཀྱང་སྟོན་པ་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གང་ཉིད་དང་མཚུངས་པར་ཤོག་ཅིག་ཅེས་ཐུགས་སྨོན་མཛད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་མཇུག་བསྡུ་བར་མཛད་དོ། །

(༤) དོན་དམ་པར་བསྟོད་པའི་བསྡུས་དོན།

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་མ་འདས་ཀྱི་ཚོས་གང་ལ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་འཇིག་མེད་ལ། འཇིག་རྟེན་གྱི་དཔེར་བྱ་བ་ཀུན་ལས་འདས་པ་དང་། སྒྲ་རྟོག་དང་ངག་རིག་གི་སྤྱོད་ཡུལ་ལས་ཡོངས་སུ་འདས་པའི་དོན་དམ་གཤིས་ལུགས་ཀྱི་ངང་ཚུལ་གང་ལ་ཇི་ལྟར་བསྟོད་པར་བྱ་སྟེ་བསྟོད་པར་བྱར་མེད་མོད། དེ་ལྟ་ན་ཡང་གཤིས་ལུགས་དེ་དང་འདྲ་བའི་དོན་ནམ་གནས་ལུགས་དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དོན་སྤྱོད་ཡུལ་དུ་བྱེད་པའི་འཕགས་པ་ཀླུའི་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས། འཇིག་རྟེན་

ན་ཇི་ལྟར་གྲགས་ཤིང་གྲུབ་པའི་རྟེན་འབྱུང་ཚད་མས་ཐ་སྙད་ཇི་ལྟར་བཏགས་ཤིང་བརྗོད་པའི་ཚུལ་ལ་གནས་ནས། ཀླུ་སྒྲུབ་བདག་གིས་སྒོ་གསུམ་གུས་པ་ཆེན་པོས་དོན་དམ་གཤིས་ལུགས་ཀྱི་ངང་ཅན་དེ་ལ་བསྟོད་པར་བྱའོ་ཞེས་གླེང་བསླང་ནས། རྟེན་འབྱུང་གང་ལ་སྐྱེ་འགག་དང་། རྟག་ཆད་དང་། རྟག་མི་རྟག་དང་། ཁ་དོག་འདྲ་མིན་དང་། ཆེ་ཆུང་རིང་ཐུང་གི་ཚད་སོགས་གང་དུ་མཆིས་པའི་རྟེན་འབྱུང་དེ་ཁྱད་གཞིར་བཟུང་ནས། སྟོན་པ་བླ་ན་མེད་པའི་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་མཉམ་བཞག་ཟག་མེད་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མཐར་ཐུག་པའི་ཡུལ་གྱི་རང་བཞིན་ལ་ལྟོས་ནས་སྐྱེ་འགག་སོགས་མེད་པ་དེའི་ཁྱད་པར་གྱི་ཆོས་སུ་སྦྱར་བའི་སྒོ་ནས་ཡེ་ཤེས་དེའི་ཡུལ་གྱི་རང་བཞིན་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱོན་པ་དང་གཤེགས་པ་མི་མངའ་ཞིང་། དེ་བཞིན་དུ་དངོས་པོ་དངོས་མེད་དང་། རྟག་ཆད་དང་། རྟག་མི་རྟག་སོགས་ཀྱི་གཉིས་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་དག་མི་མངའ་བ་དང་། དམར་དང་ལྗང་སོགས་རྩ་བ་དང་ཡན་ལག་གི་ཁ་དོག་གི་སྦྲོས་པའི་མཚན་མའི་རྣམ་པར་མེད་པ་དང་། ཆེ་ཆུང་དང་རིང་ཐུང་སོགས་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་རྣམ་པ་མི་མངའ་བ་དང་། གནམ་ས་དང་། འདུས་བྱས་མ་བྱས་ཀྱི་ཆོས་དང་། འཁོར་འདས་སོགས་སུ་གནས་པ་རྣམས་མི་མངའ་བ་ཡིན་ནོ། ། ཕྱིར་འདི་དག་ཐ་སྙད་དུ་ཡོད་པས་ཁྱད་པར་གྱི་ཚིག་མ་སྦྱར་བར་དགག་མི་ནུས་པ་དང་། གང་སྦྱར་རྒྱུའི་ཁྱད་པར་གྱི་ཚིག་ནི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་དགོངས་པ་རྗེའི་རྩ་ཤེ་ཊཱིཀ་ཆེན་དུ་གསལ་བར་མཛད་པ་དང་མཐུན་པར་བྱས་སོ། །

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་གཤིས་ལུགས་དངོས་ལས་མ་གཡོས་ཤིང་། ཆེས་མཆོག་ཏུ་ཟབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་མངའ་བརྙེས་པའི་མགོན་པོ་ཁྱོད་ལ་སྒོ་གསུམ་གུས་པས་ཕྱག་འཚལ་ཞིང་འདུད་པ་དང་སྦྲགས། ཟག་མེད་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་རང་བཞིན་ཟབ་མོ་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་དེ་འདྲ་བའི་བསྟོད་པས་ཁྱོད་ལ་བསྟོད་པར་བགྱི་བའམ་ཡང་ན་སྙེ། དེ་ལས་གཞན་དུ་གཉིས་སྣང་ཅན་གྱི་བློས་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པའི་ཚུལ་དུ་ཅི་ཞིག་བསྟོད་པར་བྱར་ཡོད་དེ་མེད་དོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་ངོས་ནས་གྲུབ་པས་ཡོངས་སུ་སྟོང་པ་ཡིན་པས། ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པའི་སྒོ་ནས་བླ་ན་མེད་པའི་བསྟོད་ཡུལ་གང་ལ་དད་འདུན་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ་པོ་གང་ཞིག་གིས་ཚུལ་ཇི་ལྟར་བསྟོད་པར་བྱར་ཡོད་དེ་མེད་དོ། དེ་ཇི་ལྟར་མེད་ཚུལ་ནི། ངོ་བོ་གྲུབ་པའི་སྐྱེ་འཇིག་རྣམ་པར་སྤངས་ཤིང་། མཐའ་དབུས་དང་། གཟུང་འཛིན་དང་། བྱོན་བཞུད་སོགས་བྲལ་བས་སོ། །ཡང་ན་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་དགོངས་པ་ལྟར་མཉམ་བཞག་ཟག་མེད་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་གྱི་རང་བཞིན་ལ་ལྟོས་ནས་དེ་དག་མེད་པས་མ་རིག་པའི་རབ་རིབ་ཀྱིས་བློ་གྲོས་ཀྱི་མིག་ཉམས་པ་དག་གིས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་བསྟོད་པར་ནུས་ཏེ་མི་ནུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །

གནས་ལུགས་ཟབ་མོའི་དོན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་མཁྱེན་ཅིང་གཟིགས་པའི་གཟིགས་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་སྤྱན་དང་ལྡན་པའི་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་དོན་དམ་གཤིས་ལུགས་ལས་བརྩམས་ཏེ་བདེ་བར་གཤེགས་པ་ལ་བསྟོད་པའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ལ་བརྟེན་ནས། མ་རིག་པའི་རབ་རིབ་ཀྱིས་བློ་གྲོས་ཀྱི་མིག་ཉམས་པའི་འགྲོ་བ་རྣམས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཚུལ་རྟོགས་ནས་བདེ་བར་གཤེགས་པའི་

གནས་སུ་འགྲོ་བར་ཤོག་ཅེས་ཐུགས་སྨོན་མཛད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་མཇུག་བསྡུ་བར་མཛད་དོ།། །།

སརྦམངྒལམ།

पुण्याविपाकु सुख सर्वदुःखापनेती
अभिप्रायु सिध्यति च पुण्यवतो नरस्य।
क्षिप्रं च बोधि स्पृसते विनिहत्य मारं
शान्तामथो गच्छति च विर्वृति शीतिभावं।।

(ललितविस्तर–परि० २२, पृ० ६६९)

བསོད་ནམས་རྣམ་སྨིན་བདེ་སྐྱེར་སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་སེལ།།
བསོད་ནམས་ལྡན་པའི་མི་ཡི་བསམ་པ་རྣམས་ཀུང་འགྲུབ།།
བདུད་བཅོམ་ནས་ནི་བྱང་ཆུབ་མྱུར་དུ་རེག་པར་འགྱུར།།
མྱ་ངན་འདས་པ་ཞི་བ་བསིལ་བའི་དངོས་པོ་ཐོབ།།

(མདོ་རྒྱ་ཆེར་རོལ་པ། མདོ། 'ཁ' ༡༧༡)

भूमिका

ओं नमः श्रीसर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः।

जैसा कहा गया है—

सर्वदा सर्वथा सर्वे यस्य दोषा न सन्ति ह ।
सर्वे सर्वाभिसारेण यत्र चावस्थिता गुणाः ।।

तमेव शरणं गन्तुं तं स्तोतुं तमुपासितुम् ।
तस्यैव शासने स्थातुं न्याय्यं यद्यस्ति चेतना[1] ।।

[अर्थात् जिस (शास्ता) में सभी दोष सदा सर्वथा नहीं रहते और जिसमें सभी गुण सदा और सर्वथा विद्यमान होते हैं, अतः जिस (व्यक्ति) में (प्रज्ञारूपी) चेतना विद्यमान है, उसके लिए उसी (शास्ता) की शरण में जाना, उसी की स्तुति एवं उपासना करना तथा उसी के शासन (धर्म) में स्थित रहना युक्तियुक्त है।]

उसी प्रकार देवातिशयस्तुति में कहा गया है—

यस्य दोषा न विद्यन्ते विद्यन्ते चामिता गुणाः ।
सर्वज्ञश्च कृपालुश्च तमहं शरणं गतः[2] ।।

[अर्थात् जिसमें किसी प्रकार के दोष नहीं हैं और सभी प्रकार के अपरिमित गुण विद्यमान हैं, जो सर्वज्ञ और महाकृपालु हैं, उनकी शरण में जाता हूँ।]

इन अमृतरूपी वचनों के अनुसार पूज्य एवं स्तुत्य जनों में परम विशिष्ट एवं सर्वोत्कृष्ट जिन-वज्रधर से अभिन्न गुरु, इष्टदेव, बुद्ध-बोधिसत्त्व, अर्हत् आदि तथा उन सबके काय, वाक्, चित्त एवं कर्म सहित अचिन्त्य त्रिगुह्य रूपी जो गुण हैं, वे साधारण जनों के चिन्तन (मनस्) एवं वाक् (स्तुति) के अगोचर हैं। आचार्य नागार्जुन ने इस तात्त्विक वस्तुस्थिति को यथावत् जानकर अपने स्तोत्रगण में तुल्य (उपमायोग्य) निदर्शन उपलब्ध न होने के कारण 'निरौपम्यस्तव' की

---

१. आर्यमातृचेट विरचित 'अध्यर्धशतक' स्तोत्र, १-२ कारिका। द्र०-बौद्धस्तोत्रसंग्रह, मोतीलाल-बनारसीदास, १९९४ ।

२. आचार्य शंकरस्वामि विरचित 'देवातिशयस्तुति' श्लो० २०, पण्डित सेरिस-१, पृ० २० ।

रचना की। उसी प्रकार सर्वसामान्य लौकिक स्थिति से अतीत होने के कारण 'लोकातीतस्तव', जिससे उत्तर (विशिष्ट) किसी अन्य के न होने के कारण 'निरुत्तरस्तव', जिन (बुद्ध) के गुणों और कर्मों के अचिन्त्य और अनभिलाप्य होने के कारण 'अचिन्त्यस्तव', शब्द और कल्पना के विषय से अतिक्रान्त होने के कारण 'स्तुत्यतीतस्तव' तथा यथावत् वस्तुस्थिति में विद्यमान होने के कारण 'परमार्थस्तव' आदि अनेक अद्भुत स्तुतियों की रचना की है।

उक्त पूजास्थानीय उत्तम गुणों को देखकर आचार्य अश्वघोष ने भी 'वर्णार्हवर्ण बुद्धस्तोत्र' के अन्तर्गत अशक्यस्तव, मूर्धाभिषेकस्तव आदि द्वादश स्तवों की रचना की है। इसी तरह अध्यर्धशतक के अन्तर्गत हेतुस्तव आदि त्रयोदश स्तव तथा इसी को आधार बनाकर आचार्य दिङ्नाग ने मिश्रकस्तोत्र की रचना की है। इस प्रकार भारतीय विद्वानों ने अनेक स्तोत्रों की रचना की है, जो अलंकार आदि उत्तम काव्यगुणों से गुम्फित हैं। इस तरह की स्तुतियों के जो गम्भीर अभिधेय हैं, उन्हें उत्तम शब्दालंकार और अर्थालंकारों से सुसम्पन्न काव्यशैली में आबद्ध कर वाक्य-रचना के माध्यम द्वारा पूजास्थानीय महापुरुषों के प्रति श्रद्धा, प्रसाद एवं उत्साह के साथ स्तुति एवं सत्कार रूपी शतसहस्रपत्रनिर्मित माला के रूप में दश दिशाओं में यथेष्ट फैलाया जा सकता है। वह भी, व्यावहारिक प्रतीत्यसमुत्पाद के अतिविशाल मार्ग पर आश्रित होकर यथेच्छ स्तुति की जा सकती है—इसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं है।

यदि ऐसा है तो आचार्य नागार्जुन ने अपने परमार्थस्तव और आर्यमञ्जुश्री-परमार्थस्तव में जो यह कहा गया है—

शून्येषु सर्वधर्मेषु कः स्तुतः केन वा स्तुतः[१] ।

[अर्थात् सभी धर्मों के शून्य होने के कारण कौन स्तुत होता है और किसके द्वारा स्तुति की गई है।] इसी तरह पुनः वहीं कहा गया है—

कथं स्तोष्यामि तं नाथमनुत्पन्नमनालयम् ।
लोकोपमामतिक्रान्तं वाक्पथातीतगोचरम्[२] ।।

१. द्र०-परमार्थस्तवः, का०-९ ।
२. द्र०-वही, का०-१ ।

[अर्थात् जो अनुत्पन्न, अनालय (आसक्तिरहित) और समस्त लौकिक उपमाओं से अतिक्रान्त (ऊपर) याने अनुपम है तथा जो वाक्पथ (अभिधान) का अगोचर (अविषय) है, उस नाथ (भगवान् बुद्ध) की मैं कैसे स्तुति (गुणाख्यान) करूँगा?]

इन उपर्युक्त कथनों की वज़ह से स्तुतिमाला को कैसे यथेष्ट फैलाया जा सकता है?

समाधान—समस्त धर्मों के परमार्थतः पूर्णतया शून्य होने पर भी वे अत्यन्त अभावभूत न होकर प्रतीत्यसमुत्पन्न के रूप में विद्यमान हैं, अतः स्तुतियोग्य क्षेत्रों अर्थात् पूजायोग्य महापुरुषों की श्रद्धावान् विद्वानों द्वारा सत्कारपूर्वक स्तुति की जा सकती है। यह सारी व्यवस्था भ्रान्तिमूलक परमत के आधार पर नहीं, अपितु स्वमत के अनुसार समुचित ढंग से स्थापित करने में कोई बाधा या रुकावट नहीं है। जैसा कि स्वयं आचार्य द्वारा विरचित उक्त ग्रन्थों में कहा गया है—

तथापि यादृशो वाऽसि तथतार्थेषु गोचरः ।
लोकप्रज्ञप्तिमागम्य स्तोष्येऽहं भक्तितो गुरुम्[१] ।।

[अर्थात् आप जैसे भी हों, यद्यपि तथता के अर्थ (परमार्थ) में ही गोचर हैं, फिर भी लोक-व्यवहार का आश्रय करके भक्ति (श्रद्धा)पूर्वक मैं गुरु (भगवान् बुद्ध) की स्तुति करूँगा।]

उसी प्रकार स्तुत्यतीतस्तव में भी कहा गया है—

अनुत्तरमार्गगतं स्तुत्यतीतं तथागतम् ।
भक्त्योत्सुकेन चित्तेन स्तुत्यतीतं स्तवीम्यहम्[२] ।।

[अर्थात् अनुत्तरमार्ग में प्रविष्ट (आरूढ़) तथागत (आप) यद्यपि स्तुत्यतीत (वाग्-अगोचर) हैं, तथापि भक्ति (श्रद्धा) और कुशलोत्साह से सम्पन्न चित्त के द्वारा मैं स्तुत्यतीत आपकी स्तुति करता हूँ।]

---

१. द्र०-परमार्थस्तवः का०-२ ।
२. द्र०-स्तुत्यतीतस्तव, का०-१, पृ० ७०१, इण्डियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली, वाल्यूम-८ ।

उपर्युक्त वचनों के आधार पर समस्त धर्मों के स्वभावत: शून्य होने पर भी व्यवहार में स्तुति, सत्कार आदि की सारी व्यवस्था समुचित ढंग से स्थापित की जा सकती है।

कुछ लोग इसे न मानकर स्वभावत: शून्यता का अर्थ अत्यन्ताभाव के रूप में ग्रहण कर उस (शून्यता पक्ष) में संक्लेश और व्यवदान की सारी व्यवस्था अयुक्त मानते हैं। ऐसे माननेवालों में कुछ लोग तो स्वयं को माध्यमिक कहते हैं, फिर भी वास्तव में वे वस्तुवादियों के मत में पतित होते हुए प्रतीत होते हैं। ऐसे लोगों के मत को दिखलाते हुए मूलमाध्यमिककारिका में कहा गया है—

यदि शून्यमिदं सर्वमुदयो नास्ति न व्ययः ।
चतुर्णामार्यसत्यानामभावस्ते प्रसज्यते[१] ।।

[अर्थात् यदि सभी धर्म शून्य हैं तो न उदय (उत्पाद) होगा और न व्यय (विनाश)। इस तरह आपके मत में चार आर्य सत्यों के भी अभाव का प्रसङ्ग होगा।]

इस तरह वे लोग माध्यमिकों की सम्यग्दृष्टि से दूर हो जाएँगे और अन्तर्विरोध के सागर में निमग्न हो जाएँगे। संक्षेप में नि:स्वभावता के पक्ष में स्तुत और स्तुतिकर्ता आदि की सारी व्यवस्था का युक्तियुक्त ढंग से सुव्यस्थित होना आचार्य ने स्वयं मूलमाध्यमिककारिका में कहा है—

सर्वं च युज्यते तस्य शून्यता यस्य युज्यते[२] ।

[अर्थात् जिसके मत में शून्यता युक्ति-युक्त (सिद्ध) होती है, उसके मत में सभी (व्यवस्थाएँ) युक्तियुक्त सिद्ध होती हैं ।]

अपि च—

अप्रतीत्यसमुत्पन्नो धर्मः कश्चिन्न विद्यते ।
यस्मात्तस्मादशून्यो हि धर्मः कश्चिन्न विद्यते[३] ।।

---

१. द्र०-मूलमाध्यमिककारिका, नागार्जुनकृता, २४:१ कारिका।

२. वही, २४:१४ कारिका।

३. वही, २४:१९ कारिका।

[अर्थात् यतः कोई भी धर्म अप्रतीत्यसमुत्पन्न नहीं होता, अतः कोई भी धर्म अशून्य नहीं होता। (अर्थात् प्रतीत्यसमुत्पन्न होने से सभी धर्म शून्य होते हैं)।]

इस प्रकार बुद्धशासन में द्वितीय शास्ता के रूप में विख्यात उस प्रामाणिक पुरुष (नागार्जुन) के मुखमण्डल से समुद्गत ये वचन किसी भी वादी द्वारा धर्मानुकूल अकाट्य हैं। अतः इस तथ्य पर प्रामाणिक रूप से निश्चय प्राप्त कर लेना चाहिए।

आर्य एवं भोट देश के विद्वानों द्वारा स्तुतिरचना-प्रक्रिया की समीक्षा

आर्यदेश और भोट देश के विद्वानों द्वारा पूजनीय क्षेत्रों (पुद्गलों) के अद्भुत गुणों के आधार पर की गई स्तुतियों के अनेक प्रकार हैं। उदाहरणार्थ सामान्य और विशेष का भेद किये बिना सभी गुणों का आख्यान करते हुए सामान्यतया स्तुति करना, विशिष्ट क्षेत्र या गुण के आधार पर विशेषतया स्तुति करना, प्रत्येक स्तुति का अलङ्कार से अलङ्कृत होते हुए काव्यबद्ध होना या न होना आदि अनेक प्रकार विद्यमान हैं।

आर्य देश के अत्यन्त संवेदनशील, ईमानदार और तर्कनिपुण विद्वान् आचार्य उद्भटसिद्ध एवं आचार्य शङ्करस्वामी ने क्रमशः विशेषस्तव एवं देवातिशयस्तोत्र की रचना की है। आचार्य प्रज्ञाकर वर्मा ने इन दोनों पर टीका लिखी है। इस प्रकार श्री हर्षदेव ने सुप्रभातस्तोत्र की रचना की है। इन ग्रन्थों में भगवान् तथागत की स्तुति करते समय अपने शास्ता और शासन की बौद्धेतर शास्ताओं और शासन के साथ तुलना करते हुए उत्तम और हीन का मौलिक अन्तर (भेद) करके स्तुति की गई है। वह भी पुराकालिक पुराणेतिहास के वृत्तान्तों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हुए सम्यग् युक्तियों के आधार पर प्रामाणिक शास्ता के प्रति अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर अद्भुत स्तुति की गई है। यह निश्चत रूप से स्तुतियों में अत्युत्तम है।

तनग्युर-संग्रह में उपलब्ध अधिकतर स्तुतियों में इस प्रकार उत्तम और हीन का विभाजन नहीं किया गया है, फिर भी अपने शास्ता भगवान् बुद्ध और उनके शासन के प्रति अवेत्यप्रसाद और प्रमाण द्वारा आनीत दृढ़ निश्चय से प्रेरित होकर स्तुति करना प्रमुख है। इनमें से अनेक स्तुतियाँ निःसन्देह अलङ्कार एवं रस से समन्वित, काव्यबद्ध, प्राञ्जल वाक्यरचना से युक्त तथा अद्वितीय एवं अद्भुत

वाक्-श्री से अन्वित हैं, जैसे—महाकवि अश्वघोष रचित वर्णार्हवर्णस्तोत्र एवं शतपञ्चाशत्कस्तोत्र तथा इसी को आधार बनाकर आचार्य दिङ्नाग विरचित मिश्रकस्तोत्र आदि प्रमुख हैं। भोट देश के महापण्डित आचार्य चोंखापा द्वारा विरचित आर्यमैत्रेयनाथस्तुति एवं आर्यमञ्जुश्रीस्तुति—ये दो महास्तोत्र, धर्मराज डक्पा-जङ्-छुप्-पदल्-सङ्पो (कीर्तिबोधिश्रीभद्र) के विशिष्ट गुणों को आधार बनाकर दुरूह महाकाव्य के रूप में विरचित 'अद्भुतस्तोत्र', छङ्से-येद्-पई-दोर्जे (ब्रह्मपुत्रस्मितवज्र) द्वारा (चोंखापा जी के) 'प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिसुभाषितहृदय' को आधार बनाकर विरचित 'अक्षयाभिधेय-आकाशकोश-विस्तृतद्वार-उद्घाटन-सत्ययुगमेघघोष' नामक मिश्रकस्तोत्र आदि अनेक काव्यबद्ध उत्कृष्ट कृतियाँ निर्मित की गई हैं। यहाँ जिनका उल्लेख किया गया है, वे तो निदर्शनमात्र हैं।

अनेक स्तोत्र ऐसे भी हैं, जो शब्दालंकार आदि से चमत्कृत भले ही न हों, फिर भी उत्तम काव्यगुणों से समृद्ध हैं, जैसे—स्वयं आचार्य (नागार्जुन) द्वारा विरचित चतुःस्तव आदि स्तोत्र। इसी तरह आचार्य चोंखापा द्वारा विरचित तथागत के विशेष गुण का आख्यान करनेवाला 'प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिसुभाषितहृदय' नामक स्तुतिराज आदि अनेक स्तोत्र हैं, फिर भी यहाँ विस्तार के भय से उनका उल्लेख नहीं किया जा रहा है।

बुद्ध एवं बोधिसत्त्व आदि पूजनीय क्षेत्रों के प्रति लिखित जितनी भी स्तुतियाँ हैं, उनमें से अधिकतर स्तुतियाँ साक्षात् या परम्परया उन महापुरुषों के अनेकविध कर्मों में से परम विशिष्ट वाक्कर्म ही हैं, उसी (वाक्कर्म) को प्रमुखता देकर स्तुतियाँ रची गई हैं। उदाहरणार्थ आचार्य नागार्जुन का चतुःस्तव आदि तथा आचार्य चोंखापा जी की प्रतीत्यसमुत्पादस्तुति आदि। इन सब (स्तुतियों) में भगवान् तथागत के अनेक गुणों में से शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद के उपदेश रूपी गुण को प्रमुख मानकर और उससे आकृष्ट एवं प्रभावित होकर अनुपम स्तुतियों की रचना की गई है।

अनेक स्थानों पर प्रतिपाद्य विशेष गुण अथवा विशेष अभिधेय को स्तुत्य बनाकर स्तुति की रचना की गई है, यथा—नागार्जुन का 'धर्मधातुस्तोत्र' है, जिसमें समस्त प्राणियों में विद्यमान प्रकृतिस्थ गोत्र को आलम्बन बनाकर स्तुति की गई है। इसी तरह आचार्य चोंखापा और भट्टारक 'गुङ्थङ्-तेनपई-डोनमे' ने क्रमशः रक्त-पीत मञ्जुश्री तथा श्वेत मञ्जुश्री के काय-वाक्-चित्त में प्रत्येक के गुणों को विषय बनाकर स्तुति की है।

यदि स्तुति करने की प्रक्रिया के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं तो प्रस्तुत 'चतुः-स्तव' नामक स्तुतिसंग्रह में किस प्रकार को अपनाकर भगवान् बुद्ध की स्तुति की गई है? यह किस प्रकार के अनुकूल है?

पूर्वोक्त की भाँति इसमें रस और अलंकार आदि के प्रपञ्चों को छोड़कर प्रमुख रूप से भगवान् बुद्ध ने जो सर्वधर्मनिःस्वभावता और प्रतीत्यसमुत्पाद की देशना की है, भगवान् के इस विशेष वाक् गुण से अत्यन्त आकृष्ट एवं प्रभावित होकर आचार्य ने भगवान् के प्रति अवेत्यप्रसाद से आप्लुत होकर उनकी स्तुति की है।

स्तुति ग्रन्थों पर आचार्य नागार्जुन का प्रभाव

भोट भाषा में उपलब्ध तनग्युर-संग्रह के अन्तर्गत 'स्तोत्रगण' में संगृहीत ७१ स्तोत्रों में प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता आचार्य नागार्जुन के १९ स्तोत्र संगृहीत हैं। इनमें से अधिकांश स्तुतियाँ भगवान् बुद्ध तथा उनके अनेक कर्मगुणों में से परम विशिष्ट वाक्कर्म को प्रमुख बनाकर स्तुति की गई है। जैसे—लोकातीतस्तव आदि चतुःस्तव, स्तुत्यतीतस्तव, प्रज्ञापारमितास्तव, आर्यमञ्जुश्रीपरमार्थस्तुति, निरुत्तरस्तव आदि स्तोत्रों में जिस प्रकार भगवान् तथागत ने शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद की देशना की है, उससे आश्चर्यचकित होकर उनकी स्तुति की गई है। धर्मधातुस्तव में समस्त सत्त्वों में आदितः विद्यमान प्रकृति गोत्र को आधार बनाकर उसकी स्तुति की गई है। चित्तवज्रस्तोत्र में सभी सास्रव सुखों और दुःखों का कर्ता, कर्म और क्लेशों का प्रहायक तथा बुद्धत्वप्रापक जो चित्त है, उसके महत्त्व का आख्यान करते हुए उसकी स्तुति की गई है। इस (चित्तवज्रस्तोत्र) के अभिधेय का तन्त्रयान के पक्ष में भी ग्रहण किया जा सकता है—ऐसा भी प्रतीत होता है।

आर्यमञ्जुश्रीकरुणास्तोत्र, कायत्रयस्तोत्र स्ववृत्ति सहित, सत्त्वाराधनस्तोत्र, अष्टमहास्थानचैत्यस्तोत्र, द्वादशाकारनयस्तोत्र, वन्दनास्तोत्र एवं नरकोद्धारस्तोत्र आदि इन सबके अभिधेय ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट हैं, किन्तु इन सबमें यह एक तथ्य अवश्य ज्ञातव्य है कि उक्त सभी स्तोत्रों का सम्बन्ध साक्षात् या परम्परया भगवान् बुद्ध से है। अतः ये सभी भगवान् बुद्ध के स्तोत्र ही हैं। इन सबमें बुद्ध के द्वादश चरित्र (लीलाएँ), जहाँ उपदेश किया, वे स्थान, बुद्धस्तूप और उनके कर्मगुण आदि को विषय बनाकर स्तुति की गई है।

पूर्वोक्त सत्त्वाराधन-स्तव में आचार्य नागार्जुन ने भगवान् बुद्ध द्वारा षोडश महाश्रावकों को उपदिष्ट 'बोधिसत्त्वपिटक-ऊषर नदी' नामक सूत्र के भावार्थ को पद्यबद्ध करके स्तुति के रूप में प्रस्तुत किया है। चतु:स्तव के अन्तर्गत संगृहीत 'परमार्थस्तव' और उन्हीं के द्वारा रचित 'आर्यमञ्जुश्रीपरमार्थस्तव' इन दोनों में अत्यधिक साम्य है। कई श्लोक तो अभिधेय और वाक्यरचनाशैली की दृष्टि से नितान्त एक-जैसे दृष्टिगोचर होते हैं। तनग्युर-संग्रह के तन्त्रवर्ग में आचार्य (नागार्जुन) के नाम से 'श्रीमहाकालस्तोत्र अष्टपद' नामक तीन स्तोत्रों का उल्लेख ग्रन्थसूची में निर्दिष्ट है। इनमें से दो का नाम संस्कृत भाषा में 'श्रीमहाकालस्तुति अष्टमन्त्र' दिया गया है। इसके अतिरिक्त 'वज्रमहाकाल-अष्टस्तोत्र' नामक स्तोत्र भी है। इनमें से दो स्तोत्रों में अधिक अन्तर नहीं है। बुस्तोन रिनपोछे की एक तनग्युर-सूची में 'श्रीमहाकालस्तोत्र-अष्टपद' नामक एक स्तोत्र ही उल्लिखित है। इसी प्रकार तनग्युर-संग्रह की सूची में आचार्य नागार्जुन के नाम पर विभिन्न पाँच 'महाकालसाधन' नामक ग्रन्थ उल्लिखित है, किन्तु मूल ग्रन्थ में दो के ऊपर रचयिता का नाम उल्लिखित नहीं है। अत: इस विषय पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। हाल ही में प्रकाशित 'बौद्ध स्तोत्रसंग्रह' में आचार्य के नाम से चतु:स्तव के अतिरिक्त संस्कृत भाषा में वज्रदेवीस्तोत्र, वज्रमहाकालस्तोत्र, नरकोद्धारस्तोत्र और सत्त्वाराधनगाथा—ये चार स्तोत्र ही संगृहीत हैं। इनमें से प्रथम (वज्रदेवीस्तोत्र) का अनुवाद सम्भवत: भोट भाषा में नहीं है और तृतीय (नरकोद्धारस्तोत्र) पर रचयिता का उल्लेख नहीं दिया गया है। इनके अतिरिक्त आचार्य द्वारा विरचित 'प्रज्ञापारमितास्तोत्र' भी संस्कृत में बौद्धस्तोत्रसंग्रह में उपलब्ध है तथा अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता टीका-आलोक के प्रारम्भ में भी आचार्य नागार्जुन की कृति के रूप में संस्कृत में उपलब्ध है। किन्तु बौद्धस्तोत्रसंग्रह में उक्त (प्रज्ञापारमिता-)स्तोत्र को श्रीलक्षाभगवती की कृति बताया गया है, जो विचारणीय है।

'चतु:स्तव' नामकरण की समीक्षा

सामान्यत: आचार्य नागार्जुन के नाम पर कुल २४ स्तुतियाँ उपलब्ध होती हैं। इनमें से लोकातीतस्तव, अचिन्त्यस्तव, निरौपम्यस्तव एवं परमार्थस्तव—ये चार स्तव 'चतु:स्तव' के नाम से लोक में विख्यात हैं। यह नाम आचार्य ने स्वयं रखा है या उस काल के अन्य आचार्यों ने रखा है—ऐसा निश्चय नहीं हो पा रहा है। यह नामकरण बाद में किया गया होगा—ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि आचार्य

चन्द्रकीर्ति आदि प्रारम्भिक आचार्यों के ग्रन्थों में इन चार स्तोत्रों के अनेक उद्धरण उपलब्ध होते हैं, किन्तु किसी ने भी 'चतु:स्तव' इस नाम का उल्लेख नहीं किया है। अत: इन चार स्तोत्रों के सम्मिलित नाम 'चतु:स्तव' का सर्वप्रथम उल्लेख किस विद्वान् ने किस प्रयोजन से और क्यों किया है? इन प्रश्नों के समाधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वर्तमान में उपलब्ध होना सम्भव नहीं है। सूक्ष्मतया निरीक्षण करने पर अधिकतर ग्रन्थों में इन चार स्तोत्रों से उद्धरण देते समय या तो पृथक् स्तोत्र का उल्लेख किया गया है या 'तथा चोक्तम्', 'उक्तं च' इत्यादि का उल्लेख किया गया है, न कि इनके सामूहिक नाम 'चतु:स्तव' का उल्लेख किया गया है। फिर भी एक, दो ग्रन्थ ऐसे अवश्य हैं, जिनमें उद्धरण देते समय 'चतु:स्तव' नाम का उल्लेख उपलब्ध होता है, किन्तु वह भी सब जगह नहीं है। उदाहरणार्थ आचार्य शान्तिदेव के बोधिचर्यावतार की प्रज्ञाकरमति रचित पञ्जिका तथा वैरोचनरक्षित द्वारा विरचित बोधिचर्यावतारपञ्जिका में 'निरौपम्यस्तव' से उद्धरण देते समय स्पष्ट शब्दों में 'चतु:स्तव' का उल्लेख किया गया है।

उक्त दोनों विद्वानों के ग्रन्थों में प्रदत्त उद्धरणों का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर एक विशेष स्थिति दृष्टिगोचर होती है। वह यह कि उक्त दोनों विद्वानों ने अपने ग्रन्थ में उद्धरण देते समय निरौपम्यस्तव के ७वें और ९वें श्लोकों का उद्धरण दिया है और वहाँ पर 'चतु:स्तव' इस नाम का उल्लेख भी किया है। किन्तु अन्य श्लोकों का उद्धरण देते समय 'चतु:स्तव' नाम का उल्लेख दृष्टिगोचर नहीं होता। जबकि प्रज्ञाकरमति ने अपनी बोधिचर्यावतारपञ्जिका में उन स्तोत्रों के लगभग १८ से अधिक श्लोकों के उद्धरण दिये हैं। उन (उद्धरणों) में चारों स्तोत्रों के सामूहिक नाम 'चतु:स्तव' का उल्लेख नहीं किया है और न प्रत्येक स्तोत्र के पृथक्-पृथक् नाम का भी उल्लेख किया है, अपितु 'उक्तं च', 'तदुक्तम्', 'यदाह' इतने मात्र का उल्लेख किया है।

इस तरह दोनों विद्वानों ने एक 'निरौपम्यस्तव' के ही दो श्लोकों का उद्धरण देते समय 'चतु:स्तव' का उल्लेख किया है। शेष उद्धरणों में अनुल्लेख का कारण परस्पर एक-दूसरे का अनुकरण या परस्पर एक-दूसरे पर प्रभाव प्रतीत होता है। इस स्थिति में उन दोनों टीकाकारों में कौन पूर्ववर्ती है, किसने किसको प्रभावित किया, किसने किसको आधार बनाया, अन्य उद्धरणों में न सामूहिक नाम, न प्रति स्तोत्र का पृथक् नाम—इनके पीछे क्या कारण रहा—

इत्यादि विषयों पर विचार करना आवश्यक है। हो सकता है कि ये विषय या ये प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, इसलिए इन पर विद्वानों का ध्यान नहीं गया हो।

आजकल संस्कृत में उपलब्ध प्रज्ञाकरमतिकृत बोधिचर्यावतारपञ्जिका में लोकातीतस्तव के १२, १९ एवं २०वें श्लोकों के उद्धरण-स्थलों में 'चतुःस्तव' यह सामूहिक नाम दृष्टिगोचर होता है, किन्तु भोटानुवाद में वह अंश उपलब्ध नहीं है। अतः उस तरह का यह उल्लेख क्या बाद में जोड़ दिया गया है, इस पर भी विचार करना स्वाभाविक होता है, क्योंकि उपलब्ध संस्कृत ग्रन्थ में जो अनेक उद्धरणों के सम्मुख 'चतुःस्तव' नाम का उल्लेख दिखाई देता है, वह बाद में सम्पादक महोदय ने खोजकर जोड़ दिया है—ऐसा प्रतीत होता है। इसी तरह की स्थिति 'लोकातीतस्तव' के उक्त तीन श्लोकों के उद्धरण की भी है—ऐसी सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

आजकल मूल संस्कृत में सुरक्षित बुद्धवचनों एवं उनके टीकाग्रन्थों की संख्या जैसे बहुत कम है, ठीक उसी तरह आचार्य नागार्जुन के नाम पर उपलब्ध ग्रन्थों की संख्या भी अल्प ही है। उक्त चारों स्तोत्रों के सामूहिक नाम 'चतुःस्तव' के बारे में यद्यपि अस्पष्टता और अनिश्चय की स्थिति भले ही दिखलाई देती हो तथा उसके उद्धरण देने की प्रक्रिया में भी भले ही विभिन्नता दिखलाई देती हो, फिर भी आचार्य नागार्जुन विरचित 'चतुःस्तव' अपने मूलरूप संस्कृत में अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में सुरक्षित उपलब्ध होता है, यह बड़े सौभाग्य की बात है। इतना ही नहीं, इन स्तोत्रों पर विद्वानों द्वारा लिखित 'चतुःस्तव-समासार्थ' और 'दुरूह शब्दों की टीका' भी संस्कृत में यथाकथञ्चित् प्राप्त है। फलतः उक्त नामकरण की अस्पष्टता एवं अनिश्चितता तथा उद्धरण-प्रक्रिया की विभिन्नता आदि कम महत्त्वपूर्ण बातें यद्यपि अवश्य दिखलाई देती हैं, किन्तु अत्यधिक महत्त्वपूर्ण तो यह है कि चार स्तोत्रों के संग्रह 'चतुःस्तव' का मूल संस्कृत में उपलब्ध होना। यह एक बड़ी उपलब्धि है।

इस ग्रन्थ के विषय में एक महत्त्वपूर्ण विचारणीय तथ्य यह भी है कि किस दृष्टि से या किस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर इन चार स्तोत्रों को एक साथ 'चतुःस्तव' के नाम से ग्रथित किया गया है?

यह कहा जा सकता है कि अभिधेय की दृष्टि से इन चारों स्तोत्रों को एक-साथ ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि सर्वधर्मनिःस्वभावता और

प्रतीत्यसमुत्पाद की जो भगवान् बुद्ध की अद्भुत देशना है, उस (देशना) के अभिधेय को इन चारों स्तोत्रों में प्रतिपादित किया गया है, इसलिए इन चारों को इस ग्रन्थ में एक साथ रखा गया है। किन्तु यह कथन पूर्णरूप से समीचीन नहीं है, क्योंकि 'स्तुत्यतीतस्तव' का भी यही अभिधेय है, अत: उसे भी इसमें सम्मिलित करना चाहिए था, किन्तु ऐसा नहीं किया गया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखर श्री प्रभुभाई पटेल ने अपने तिब्बती से संस्कृत में पुनरुद्धरित 'चतु:स्तव' में 'परमार्थस्तव' के स्थान पर 'स्तुत्यतीतस्तव' को रखा है। उनकी यह योजना समीचीन प्रतीत होती है, क्योंकि अभिधेय की दृष्टि से ये चारों स्तोत्र अधिक अनुकूल प्रतीत होते हैं, जबकि 'परमार्थस्तव' का अभिधेय शेष तीन स्तुतियों के अभिधेय से कुछ भिन्न प्रतीत होता है। क्योंकि उसमें शून्यता के अलावा प्रतीत्यसमुत्पाद के विषय में स्पष्ट प्रतिपादन नहीं है। अत: परमार्थस्तव के स्थान पर 'स्तुत्यतीतस्तव' को रखा होता तो 'चतु:स्तव' नामक यह संग्रह अभिधेय की दृष्टि से अधिक सार्थक होता, क्योंकि इन चारों स्तोत्रों का अभिधेय समान होने के कारण उन्हें एक वर्ग में रखा जाना अत्यन्त समीचीन हो सकता है। इन चारों के अतिरिक्त तुल्य अभिधेयवाला कोई अन्य स्तोत्रसंग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता है। बहरहाल इन चार स्तोत्रों के संग्रह के 'चतु:स्तव' इस नामकरण का कोई ठोस कारण उपलब्ध नहीं होता। अत: यह विद्वानों द्वारा एक विचारणीय विषय है।

चार स्तोत्रों के बारे में मत-मतान्तर

'चतु:स्तव' नाम से प्रसिद्ध संग्रह के अन्तर्गत आनेवाले ग्रन्थों का निश्चय करते समय उद्धरणों के सम्मुख 'चतु:स्तव' इस नाम के उल्लेख की दृष्टि से देखा जाए तो पूर्वोक्त की भाँति 'निरौपम्यस्तव' के अतिरिक्त अन्य स्तोत्रों के सम्मुख इस नाम का उल्लेख दुर्लभ (अर्थात् मिलना कठिन) हो रहा है। फिर भी संस्कृत में इन चारों को एक साथ संकलित कर यह नाम दिया हुआ उपलब्ध होता है। इस प्रकार हस्तलिखित पाण्डुलिपि और प्रकाशित कुल मिलाकर चार से अधिक प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। किन्तु भोट भाषा में अनूदित 'तनग्युर-संग्रह' में 'चतु:-स्तव' के नाम से कोई पृथक् स्वतन्त्र स्तोत्रगण या स्तोत्रसंग्रह उपलब्ध नहीं है। फिर भी वहाँ उसके अन्तर्गत आनेवाले स्तोत्रगण में ये चार स्तोत्र ७१ स्तोत्रों के बीच-बीच में आगे-पीछे उपलब्ध होते हैं। संस्कृत में एक ग्रन्थ (चतु:स्तव) ऐसा भी उपलब्ध होता है, जो संस्कृत मूल न मिलने के कारण भोट भाषा से संस्कृत में पुनरुद्धार करके प्रकाशित है। इसके पुनरुद्धारकर्ता एवं सम्पादक श्री प्रभुभाई पटेल

हैं। उन्होंने चार स्तोत्रों में परमार्थस्तव की जगह 'स्तुत्यतीतस्तव' को सम्मिलित किया है। पश्चिमी विद्वान् Prof. Louis de la Vallee Poussin ने भोट पाठ को फ्रेंच अनुवाद के साथ रोमन लिपि में प्रकाशित किया है। उसमें 'अचिन्त्यस्तव' के स्थान पर 'चित्तवज्रस्तव' को रखकर चार स्तोत्रों का संग्रह किया है। भारत के विद्वान् अमृतकार द्वारा विरचित 'चतु:स्तवसमासार्थ' नाम की एक रचना जीर्ण-शीर्ण हालत में संस्कृत में उपलब्ध हुई है। उसमें निरौपम्यस्तव, अचिन्त्यस्तव और परमार्थस्तव इन तीन का ही समासार्थ उपलब्ध है, उसमें एक प्रथम स्तोत्र का समासार्थ अनुपलब्ध है। वह एक स्तव कौन होगा? क्या अन्य विद्वानों की भाँति वह 'लोकातीतस्तव' का ग्रहण करते होंगे या नहीं? यह विचारणीय है। अन्य अनेक प्रतिलिपियाँ उपलब्ध हैं, उन सभी में चार की संख्या में कोई भेद नहीं है।

चतु:स्तव की संस्कृत प्रतिलिपियों की समीक्षा

इस ग्रन्थ की संस्कृत में छः प्रकार की प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुई हैं, यथा—

(क) नेपाल के प्रसिद्ध विद्वान् पं० दिव्यवज्र वज्राचार्य ने 'अखिल नेपाल महायान बौद्ध समाज' के माध्यम से इसे प्रकाशित किया है। उसमें संस्कृत मूलपाठ के साथ नेपाली भाषा में अनुवाद तथा प्रत्येक स्तोत्र का सारांश भी संलग्न है।

(ख) इस संस्थान के 'दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग' के उपनिदेशक पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय द्वारा संकलित एवं प्रकाशित 'बौद्ध स्तोत्र संग्रह' नामक ग्रन्थ में कुल १०८ विभिन्न स्तोत्र सम्मिलित हैं। उन बौद्ध स्तोत्रों के संग्रह में ये चारों स्तोत्र भी सम्मिलित हैं। परन्तु इसमें न तो चतु:स्तव नाम का उल्लेख है और न ही ये चारों स्तोत्र एक-साथ दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त इस ग्रन्थ में नागार्जुन के नाम पर अन्य अनेक स्तोत्र भी संगृहीत हैं, यथा—वज्रदेवी स्तोत्र, वज्रमहाकाल स्तोत्र, सत्त्वाराधनगाथा, नरकोद्धारस्तोत्र तथा प्रज्ञापारमितास्तोत्र। प्रथम दो स्तोत्र तनग्युर-संग्रह के स्तोत्रगण में उपलब्ध नहीं है। द्वितीय (वज्रमहाकालस्तोत्र) तन्त्रवर्ग में अवश्य उपलब्ध है। प्रथम (वज्रदेवीस्तोत्र) सम्भवत: भोटानुवाद में उपलब्ध नहीं है। चतुर्थ नरकोद्धारस्तोत्र के रचयिता का नाम उस ग्रन्थ में नहीं दिया गया है। पञ्चम प्रज्ञापारमितास्तोत्र के कर्ता के रूप में आचार्य नागार्जुन का नाम न देकर 'लक्षा भगवती' का नाम दिया गया है।

(ग) पश्चिमी विद्वान् (CHR. Lendtner) ने आचार्य नागार्जुन के शून्यतासप्तति, बोधिचित्तविवरण आदि अनेक ग्रन्थों पर समीक्षात्मक शोध, अनुवाद एवं सम्पादन आदि कार्य करके Nagarjuniana इस नाम का एक ग्रन्थ १९८७ में प्रकाशित किया है। उसमें चतु:स्तव पर सूक्ष्मता से समीक्षात्मक विश्लेषण भी किया गया है। लोकातीतस्तव और अचिन्त्यस्तव इन दो स्तोत्रों के संस्कृत मूलपाठ और भोटपाठ का सम्पादन किया है तथा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है और मूलपाठ तथा भोटपाठ को रोमनलिपि में प्रकाशित किया है। चतु:स्तव के चार स्तोत्रों में से यहाँ केवल दो स्तोत्रों को ही ग्रहण करने के पीछे निम्नलिखित कारण प्रदर्शित किया गया है, यथा—ये दो स्तोत्र आचार्य नागार्जुन प्रणीत मूलमाध्यमिककारिका आदि छह ग्रन्थों (षड् युक्तिगण) के अभिधेय से अत्यन्त अनुकूल हैं। उनकी इसी विशेषता को देखकर इन दो पर ही कार्य करके प्रकाशन किया गया है। उस ग्रन्थ के अन्त में चतु:स्तव का संस्कृत मूल तथा आचार्य शिरोमणि द्वारा विरचित शाब्दिक टीका की प्राचीन पाण्डुलिपि का फोटो-प्रिन्ट भी दिया गया है।

(घ) इटली के प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् Prof. G. Tucci को तिब्बत की यात्रा करते समय डोर नामक विहार में चतु:स्तव के अन्तर्गत समाविष्ट निरौपम्यस्तव और परमार्थस्तव की मूल संस्कृत में पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुईं। उन्होंने इन दोनों को तिब्बती पाठ के साथ तुलनात्मक समीक्षा करके तथा उनका अंग्रेजी में अनुवाद करके जर्नल ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी (Journal of the Royal Asiatic Society 'JRAS') की पत्रिका में १९३२ ई० में प्रकाशित कराया। उसी विहार में उन्होंने महायानविंशक ग्रन्थ भी प्राप्त किया, जिसके साथ आचार्य अमृतकार द्वारा विरचित चतु:स्तवसमासार्थ नामक ग्रन्थ भी संलग्न रूप में प्राप्त हुआ। इसमें निरौपम्यस्तव, अचिन्त्यस्तव एवं परमार्थस्तव इन तीन का समासार्थ उपलब्ध था। परन्तु प्रथम लोकातीतस्तव का समासार्थ उसमें अनुपलब्ध था। इतना ही नहीं, द्वितीय निरौपम्यस्तव के समासार्थ का प्रारम्भिक अंश भी खण्डित था। यह ग्रन्थ अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था, इसलिए इसका सम्पादन भी अत्यन्त कठिन था। जीर्ण-शीर्णता और अपूर्णता मात्र कारण नहीं थे, अपितु भोट भाषा में उसका अनुवाद भी अनुपलब्ध था। इस ग्रन्थ को प्रो० टुच्ची ने समीक्षात्मक विवेचन और भूमिका के साथ रोमन लिपि में (Minor Buddhist Texts) में छापा है। इस वाल्यूम में आचार्य कमलशील का प्रथम

भावनाक्रम, आचार्य असंग की वज्रच्छेदिका निबन्धनकारिका आदि अनेक ग्रन्थों पर प्रो० टुच्ची ने सम्पादन, समीक्षा, अंग्रेजी-अनुवाद आदि कार्य सम्पन्न किये हैं।

(ङ) इस संस्थान के दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग में कार्यरत शोध-अधिकारी डॉ० ठाकुरसेन नेगी के व्यक्तिगत संग्रह में इस ग्रन्थ की संस्कृत पाण्डुलिपि उपलब्ध है। उसमें चतु:स्तव की एक टीका भी उपलब्ध है, जो आचार्य शिरोमणि द्वारा विरचित 'अकारिटीका' है, जिसमें चतु:स्तव के स्तोत्रों की कारिकाओं की अन्वय के साथ व्याख्या की गई है। यह टीकाग्रन्थ नेवारी लिपि में प्राप्त है। यह ग्रन्थ Nagarjuniana नामक ग्रन्थ में भी फोटो-प्रिन्ट के रूप में दिया गया है। दोनों एक समान हैं। यह पाण्डुलिपि डॉ० नेगी को टोक्यो यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (Tokyo University Library) से प्राप्त हुई है। यह पाण्डुलिपि काफी पुरानी हालत में है और अनेक स्थानों पर त्रुटित है और अस्पष्ट है। डॉ० नेगी को नेपाल से पूर्ण एवं स्पष्ट पाण्डुलिपि मिलने की सम्भावना है।

हमने प्रस्तुत ग्रन्थ के मूल संस्कृत अंश के पाठ-संशोधन में उसका उपयोग किया है तथा पाठान्तर टिप्पणी में दे दिये हैं। किन्तु अभी तक इस ग्रन्थ का देवनागरी में लिप्यन्तरण नहीं हुआ है। इस टीका ग्रन्थ की दूसरी पूर्ण और स्पष्ट प्रतिलिपि प्राप्त हुए बिना इस पर सम्पादन आदि कार्य करना कठिन प्रतीत हो रहा है, क्योंकि इस ग्रन्थ का भोटानुवाद भी तनग्युर-संग्रह में उपलब्ध नहीं है। डॉ० नेगी के व्यक्तिगत संग्रह से चतु:स्तव की एक और पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है, जिसमें केवल मूल संस्कृत ही है, किन्तु वह भी अपूर्ण है। इसका भी हमने प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठ-संशोधन में उपयोग किया है। यह प्रतिलिपि डॉ० नेगी को इन्स्टीट्यूट फॉर एडवांस स्टडीज ऑफ वर्ल्ड रिलिजन्स, अमेरिका (Institute for Advance Studies of World Religions America) से प्राप्त हुई है।

(च) इण्डियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली (Indian Historical Quarterly 'IHQ') के भाग ८ (Vol. VIII) में श्री प्रभुभाई पटेल नामक विद्वान् ने चतु:स्तव के भोट-पाठ से संस्कृत में पुनरुद्धार कर उसका सम्पादन किया है। उन्होंने उस पर कार्य करते समय इन स्तोत्रों के संस्कृत में भी उपलब्ध होने की जानकारी न रहने के कारण भोट-पाठ को आधार बनाकर उसका पुनरुद्धार किया। साथ ही, भोट-पाठ का भी समीक्षात्मक सम्पादन कर रोमन

लिपि में उसका प्रकाशन किया है। उनके चतु:स्तव की एक यह विशेषता अवश्य है कि उन्होंने चतु:स्तव के चार स्तोत्रों में परमार्थस्तव के स्थान पर स्तुत्यतीतस्तव को संगृहीत किया है, जो अन्य तीन स्तोत्रों के अभिधेय की दृष्टि से परमार्थस्तव की अपेक्षा अधिक अनुकूल है। उनका यह कार्य चतु:स्तव के चार स्तोत्रों के पृथक् वर्गीकरण का एक ठोस आधार प्रस्तुत करता है, क्योंकि स्तुत्यतीतस्तव अभिधेय की दृष्टि से शेष तीन स्तोत्रों के समतुल्य है। अत: उनका प्रयास विद्वानों की दृष्टि में सफलता प्राप्त कर सकता है।

पूर्वोक्त विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकों एवं निबन्ध संग्रहों की भूमिका आदि में जो उल्लेख मिलते हैं, उसके अनुसार पाश्चात्त्य फ्रेंच (Frence) विद्वान् प्रो० लोविस्-दि-ला-वेली-पूसें (Prof. Louis de la Vallee Poussin) ने भी चतु:-स्तव पर कार्य किया है। किन्तु उन्हें भी उसका संस्कृत मूल उपलब्ध नहीं हुआ। फलत: उसके भोट-पाठ को ही आधार बनाकर फ्रेंच भाषीय अनुवाद को भोट-पाठ के साथ सन् १९१४ में प्रकाशित किया। फिर भी यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो जाने के कारण उसका उनके कार्य पर विपरीत असर पड़ा, इसका उन्होंने स्वयं उल्लेख किया है। उनके ग्रन्थ में चार स्तोत्रों में अचिन्त्यस्तव का परिगणन नहीं किया गया, अपितु उसके स्थान पर चित्तवज्रस्तव को स्थान दिया गया है। इसके पीछे क्या कारण हो सकता है? इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। जैसे एक तो मूल संस्कृत पाठ का अनुपलब्ध रहना हो सकता है। दूसरा कारण तनग्युर-संग्रह में वर्णित स्तोत्रों के क्रम को आधार बनाना हो सकता है। तनग्युर-संग्रह में निरौपम्यस्तव और लोकातीतस्तव के बाद चित्तवज्रस्तव संगृहीत है। ठीक उसके बाद परमार्थस्तव रखा हुआ है। उनके चतु:स्तव में भी ठीक यही क्रम दिया गया है। तनग्युर-संग्रह में अचिन्त्यस्तव तो उपर्युक्त चार स्तोत्रों के अनन्तर विवरण सहित कायत्रय स्तोत्र मूल आदि अन्य पाँच स्तोत्रों के अनन्तर दिया हुआ है। चतु:स्तव के चार स्तोत्रों की परिगणना में भ्रम का कारण उसके संस्कृत मूल का न मिलना है, न कि उनके प्रतिपाद्य विषय (अभिधेय) आदि की भिन्नता है।

(छ) इस संस्थान के मूलशास्त्र विभाग के प्रो० थुपतन छोगडुप ने जब वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में कार्यरत थे, तब उन्होंने वहाँ के श्रमणविद्या संकाय द्वारा प्रकाशित 'संकायपत्रिका' में आचार्य नागार्जुन द्वारा प्रणीत चतु:स्तव के निरौपम्यस्तव एवं परमार्थस्तव इन दो स्तोत्रों को उनके

सारांश के साथ सम्पादित कर प्रकाशित किया है। उनको इन स्तोत्रों की प्रतिलिपि अंग्रेजी अनुवाद के साथ मूल संस्कृत में इटली से प्राप्त हुई थी। निश्चित रूप से यह प्रतिलिपि इटली के प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् प्रो० टुच्ची (Prof. Giuseppe Tucci) द्वारा प्रकाशित प्रतिलिपि ही होगी। प्रो० टुच्ची ने तिब्बती भाषा में अनूदित इन स्तोत्रों को तिब्बत से लाकर अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादन करके छापा था। इसकी चर्चा मैंने ऊपर की है। प्रो० थुपतन छोगडुप ने इन दो स्तोत्रों को संस्कृत मूल पाठ का तिब्बती अनुवाद से मिलान कर तुलनात्मक संशोधन और हिन्दी में उनका सारांश लिखकर संक्षिप्त भूमिका के साथ सन् २००० में श्रमण-विद्या-संकाय पत्रिका में प्रकाशित किया है।

अनुवाद, भोट-पाठ सम्पादन आदि का विवरण

आचार्य नागार्जुन द्वारा विरचित स्तुतिगण में से जिन स्तोत्रों का सम्मिलित नाम 'चतु:स्तव' रखा गया है, वह नाम तिब्बती विद्वानों में अत्यन्त अप्रसिद्ध और अपरिचित है। यह नाम बाद में रखा गया है—ऐसा प्रतीत होता है। इस ग्रन्थ के भोट-पाठ का सम्पादन करते समय मैंने स्दे-गे संस्करण को आधार बनाया है। स्नरथङ्-संस्करण, पेकिङ्ग-संस्करण और सेर-डिस-संस्करण से उसकी तुलना करते समय जिन पाठभेदों से अर्थ में अन्तर पड़ता है, उन पाठभेदों को पाद-टिप्पणी में दे दिया गया है। इस ग्रन्थ के मूल संस्कृत पाठ और भोट-पाठ के बीच तुलनात्मक समीक्षण करने पर कई स्थलों पर शब्द और अर्थ में भिन्नता दिखती है। इसी तरह अपूर्णता, अशुद्धता आदि अनेक अन्तर भी दिखलाई देते हैं। कुछ श्लोक संस्कृत-पाठ में तो उपलब्ध हैं, किन्तु भोट-पाठ में अनुपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में उन श्लोकों का नये सिरे से भोटानुवाद कर पूर्णता की गई है। इन सबका स्पष्टीकरण सम्बद्ध श्लोक की टिप्पणी में विवरण के साथ किया गया है।

इस तुलनात्मक समीक्षा के बाद संस्कृत मूल और भोट-पाठ को आधार बनाकर हिन्दी भाषा में अनुवाद किया गया है। अनुवाद की इस प्रक्रिया पर विशेष रूप से स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। प्रारम्भ में संस्कृत और भोट दोनों पाठों को आधार बनाकर अनुवाद किया गया था, किन्तु अनुवाद का संशोधन करते समय प्रो० रामशंकर त्रिपाठी जी ने प्रमुखतया संस्कृत को आधार बनाने पर विशेष बल दिया है। इसलिए हिन्दी-अनुवाद के स्वरूप और ग्रन्थार्थ-प्रतिपादन के स्वरूप की दृष्टि से देखा जाए तो अभिधेय के प्रतिपादन का क्रम, शब्द और

वाक्य विन्यास की शैली भोटपाठ की अपेक्षा संस्कृत पाठ के अधिक अनुकूल है, फिर भी आवश्यकतानुसार अनेक स्थलों पर भोट-पाठ का भी आश्रय लिया गया है।

सामान्य तौर पर तनग्युर-संग्रह के अन्तर्गत लघु-आकार के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ विद्यमान हैं। इन ग्रन्थों में से अनेक ग्रन्थ 'जो-वोई-छोस्-छुङ्-ग्यचा' नामक संग्रह में विशिष्ट सम्पादन, अनुवाद एवं पाठान्तर के साथ उपलब्ध होते हैं। लेकिन उसमें आचार्य नागार्जुन प्रणीत स्तोत्रगण में से केवल 'निरुत्तरस्तव' ही प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त चतु:स्तव के अन्तर्गत पठित चारों स्तोत्र अविकल रूप से उसमें नहीं हैं। अन्यथा (यदि होते तो) भोटपाठ के सम्पादन में विशिष्टता आ जाती।

चतु:स्तव के अन्तर्गत संगृहीत चारों स्तोत्रों पर भारतीय आचार्यों द्वारा निर्मित टीका-ग्रन्थों के भोटानुवाद प्राप्त नहीं हुए हैं। तिब्बती विद्वान् द्वारा रचित भोट भाषा में केवल एकमात्र टीका प्राप्त हो सकी है। वह (टीका) तिब्बत के विद्वान् 'रोङ्-स्तोन-शाक्य-ग्यल्-छन्' द्वारा लिखित 'परमार्थस्तव' की टीका है। संस्कृत भाषा में तो जैसा पहले कहा गया है आचार्य अमृतकर-रचित 'चतु:-स्तवसमासार्थ' एवं आचार्य शिरोमणि-प्रणीत कठिन शब्दों की टीका 'अकारिका वृत्ति'—ये दो ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं। किन्तु ये दोनों ग्रन्थ अपूर्ण हैं और उनका भोटानुवाद भी उपलब्ध नहीं है। इन दोनों में से प्रथम ग्रन्थ की स्थिति तो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण है। फलत: जब तक कोई स्पष्ट एवं पूर्ण पाण्डुलिपि प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक उसका सम्पादन, पुनरुद्धार आदि कार्य करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। हमने इस ग्रन्थ के सम्पादन में पाठभेद आदि के लिए उसका उपयोग अवश्य किया है, किन्तु उसे प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट के रूप में देना सम्भव नहीं हो पाया है। भविष्य में इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण के अवसर पर इन सब पर यथाशक्ति शोधात्मक कार्य करने की प्रबल इच्छा है।

।। शुभमस्तु सर्वजगताम् ।।



ग्रन्थ-सारांश

(पृष्ठभूमि)

गम्भीर और उदार अभिधेयों से समृद्ध इन स्तोत्रों के सारांश का प्रतिपादन करते समय विद्वानों में व्यापक रूप से प्रसिद्ध इस कथन का स्मरण आ जाता है कि ''भारतीय आचार्यों के मूलशास्त्र महार्थ होते हैं।'' अर्थात् उनमें शत-शत-मत प्रतिपादन करने का सामर्थ्य होता है अथवा उनका शत-शत (सैकड़ों) प्रकार से व्याख्यान किया जा सकता है। इस स्थिति में उन स्तोत्रों का सारांश लिखते समय जहाँ तक अपनी बुद्धि का सामर्थ्य है, उसी के अनुसार यथासम्भव स्तोत्रों के गम्भीर अभिधेयों पर विचार प्रस्तुत किया जा रहा है, क्योंकि आचार्य (नागार्जुन) के वास्तविक अभिप्राय को यथावत् समझ पाना अत्यन्त दुरूह है, फिर भी अपने बुद्धिबल के अनुरूप ग्रन्थ के सारांश का निरूपण किया जा रहा है। जब ग्रन्थगत शब्दों या वाक्यों के अभिप्राय को प्रकाशित करने का प्रयास किया जाता है, तब प्रत्येक शब्द या वाक्य से अनेक अर्थ निकलने की गुंजाइश प्रतीत होने लगती है।

सामान्यत: तथागत के प्रवचनों के अभिप्राय को प्रकट करते समय अनुत्तर गुह्यमन्त्र की स्थिति में वह षड् (छह) अन्त और चार नयों से मुद्रित है कि नहीं? यह देखना होता है तथा सूत्रपक्ष (पारमितानय) की स्थिति में नेयार्थ एवं नीतार्थ, चार अभिप्राय और चार अभिसन्धि तथा वर (उत्तम) एवं अवर (निम्न) सिद्धान्तमान्यता आदि को दृष्टि में रखकर अभिप्रायनिर्मोचन अर्थात् अर्थव्याख्यान करने की अनेक पद्धतियों का अवलम्बन करना होता है। लेकिन ये स्तोत्र तो बुद्धवचन न होकर शास्त्रवचन हैं, अत: इनके व्याख्यान के अवसर पर भले ही बुद्धवचनों की भाँति नेयार्थ-नीतार्थ आदि का विचार न करना पड़े, फिर भी ये सभी शास्त्र (स्तोत्र) प्रासङ्गिक माध्यमिक मान्यता के अनुसार निर्मित हैं, जो समस्त धर्म प्रतीत्यसमुत्पन्न और शून्य हैं—इस अद्भुत दृष्टि का प्रतिपादन करते हैं। उस श्रेष्ठ सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में आर्य अक्षयमतिनिर्देशसूत्र के अनुसार जो सूत्र परमार्थ तत्त्व का निर्देश करते हैं, उन्हें नीतार्थ तथा जो सूत्र संवृति का प्रतिपादन करते हैं, वे नेयार्थ कहे जाते हैं। उसी की भाँति यहाँ भी परमार्थ तत्त्व का ग्रन्थ के मुख्य अभिधेय के रूप में प्रतिपादन किया गया है, इस दृष्टि से इस ग्रन्थ को नीतार्थ का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थों के पक्ष में रखा जा सकता है। फिर भी अनेक

स्थलों पर सांवृतिक धर्म, जो निषेध्याकार अर्थात् शब्दश: अस्वीकार्य हैं, उन्हें भी कहा गया है, अत: उनका अभिप्राय प्रकट करते समय निषेध्य के साथ 'परमार्थत:' या 'स्वभावत:' आदि शब्द का योग करना आवश्यक हो जाता है। जैसे मूलमाध्यमिककारिका के मङ्गलाचरण में निरोध, उत्पाद आदि आठ विशेषणों से रहित प्रतीत्यसमुत्पाद का निर्देश किया गया है, उसकी वृत्ति करते समय आचार्य चन्द्रकीर्ति विरचित प्रसन्नपदा और आचार्य चोंखापा विरचित महाटीका दोनों में व्यावहारिक धर्मों का निषेध करते समय 'परमार्थत:' या 'स्वभावत:' शब्द जोड़े बिना निषेध करना युक्त नहीं है—ऐसा कहा गया है। ऐसी ही स्थिति यहाँ भी एक समान है। अत: यहाँ भी अनेक जगहों पर शब्दश: अर्थ ग्रहण न करके विशेषण योग के माध्यम से अन्य अर्थ की ओर ले जाने (आनीत) की आवश्यकता होती है।

चतु:स्तव के अभिधेय का सामान्यत: मर्मस्थल तो समस्त धर्मों की शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पन्नता से भिन्न (अतीत) नहीं है। अत: उसे ही आधार मानकर आगे चलना है। अर्थात् सारांश संकलन आदि कार्य करना है। किन्तु प्रत्येक श्लोक का सारांश लिखते समय जैसे पहले कहा गया है कि "संस्कृत मूलशास्त्र महार्थता से युक्त होता है। अर्थात् उसमें अनेक अर्थों के प्रतिपादन की क्षमता होती है और उसके अनेकविध व्याख्यान किये जा सकते हैं।" इसका अपलाप करना सम्भव नहीं है। किन्तु वर्तमान में स्थिति यह है कि सर्वप्रथम तो संस्कृत मूल पाठ भी अनेक स्थानों पर भ्रष्ट है या अस्पष्ट है तथा पाण्डुलिपियों में अत्यधिक भिन्नता है। इतना ही नहीं, प्राचीनकाल में भोट भाषा में अनुवाद करते समय भी लोचावा और पण्डितों ने अपनी बुद्धि के अनुसार मूल का और उद्धृत वचनों का अनुवाद किया है। अत: उनमें भी अत्यधिक भिन्नता देखने को मिलती है। विशेषत: जिन मूल ग्रन्थों की अनेक टीकाएं है, उनकी टीकाकारों द्वारा व्याख्या करते समय मूल की व्याख्या करने में या उनके अर्थ प्रदर्शित करने की प्रक्रिया में अपनी-अपनी स्वतन्त्र बुद्धि का उपयोग किया गया है। इस कारण उनके द्वारा मूल रचयिता आचार्य के अभिप्राय को शत-प्रतिशत ठीक-ठीक प्रकट कर पाना प्राय: असम्भव ही होता है। फलत: सारांश लिखते समय हमारे द्वारा भी इन मुश्किल परिस्थितियों से निर्लिप्त रह पाना सम्भव नहीं है।

प्रस्तुत ग्रन्थ (चतु:स्तव) के चार स्तोत्रों में एक को छोड़कर बाकी के तीन स्तोत्रों की भोट-भाषा में अनूदित भारतीय टीका या भोटदेशीय पण्डित की

कोई टीका प्राप्त नहीं हो सकी। अतः ग्रन्थ का अभिधेय जिस विद्वान् या जिस यान और जिस सिद्धान्त से सम्बद्ध है तथा ग्रन्थ के अभिधेय का जो सामान्य मर्मस्थल है, इन सबका उल्लंघन न करते हुए अपने बुद्धि, विवेक की शक्ति के अनुसार यथासम्भव सारांश का निष्पादन किया गया है। इसलिए पूर्व महारथियों द्वारा जो बुद्धवचनों के अभिप्राय प्रकट किये गये हैं या टीका आदि लिखे गये हैं, उनके समकक्ष हमारे सारांश का होना सम्भव ही नहीं है। उन चार ग्रन्थों के विषय में किसी प्रामाणिक विद्वान् से आगम-परम्परा लेना तथा उनके (विद्वानों के) पास बैठकर ठीक-ठीक अध्ययन करना भी सम्भव नहीं हो पाया है। फलतः सारांश लेखन में अपने ज्ञान के प्रयोग से ही सन्तुष्ट होना पड़ा है। बाद में दूसरे संस्करण के अवसर पर यदि सम्भव हुआ तो आवश्यकता के अनुरूप यथासम्भव संशोधन और परिवर्धन किया जाएगा।

१. लोकातीतस्तव का सारांश

हे सम्यक्संबुद्ध, आपने सभी प्रपञ्चों से रहित ज्ञानधर्मकाय सम्यक् रूप से प्राप्त किया है तथा आप समस्त लौकिक व्यवहारों एवं लौकिक ज्ञान के व्यापारों से पूर्णतया अतिक्रान्त हैं। सभी लोकोत्तर विशेषणों से सुसम्पन्न भगवान् तथागत की वन्दना करके लोकातीत आपके प्रति अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर आचार्य (नागार्जुन) ने इस प्रकार स्तुति की है—

महाकृपालु भगवान् तथागत आपने असंख्येय और अपरिमेय समस्त संसार के प्रति आद्यन्तरहित एकान्त महाकरुणा से दीर्घकालपर्यन्त चिन्तन किया है। अतः यद्यपि सामान्य लोगों की दृष्टि में आप खेद से युक्त प्रतीत हो सकते हैं, किन्तु आपने अनाह्लादकारी वेदनाओं के उत्पाद का अवसर सर्वथा सर्वदा के लिए ध्वस्त कर दिया है।

अनुत्तर शास्ता आपके मतानुसार स्वभावतः सिद्ध धर्म (पदार्थ) बिलकुल नहीं हैं, अतः सत्त्वों की स्थिति (परमार्थतः) स्कन्धों पर आश्रित भी नहीं है, फिर भी व्यवहारतः प्रतीत्यसमुत्पन्न स्कन्ध सापेक्ष सत्त्वों के हितार्थ निरन्तर चेष्टावान् आप अनाभोग और अविच्छिन्न कर्म करते हुए यावत्संसार विद्यमान रहेंगे। निर्वाणसंज्ञी श्रावक की भाँति निरोधसमापत्ति में आप कभी भी स्थित नहीं रहते।

उक्त अपेक्षित स्कन्ध भी माया, मरीचि, गन्धर्वनगर एवं स्वप्न की भाँति हैं—ऐसा आपने प्रत्ययतामात्र नय के माध्यम से प्रेक्षावान् विनेयजनों को बोधित किया है।

जो धर्म हेतु-प्रत्ययों की अपेक्षा से उत्पन्न होते हैं और हेतु-प्रत्ययों के विना जिनका उत्पाद सम्भव नहीं है, उनकी विद्यमानता प्रतिबिम्ब, प्रतिश्रुत्क आदि की भाँति कल्पना द्वारा प्रज्ञप्तिमात्र क्यों नहीं है? अर्थात् उनकी प्रज्ञप्तिमात्र सत्ता ही है।

रूप आदि बाह्य धर्मों के आरम्भिक आधार परमाणु हैं। यदि वे (परमाणु) चक्षु द्वारा ग्राह्य नहीं हैं तो उनसे निर्मित (आरब्ध) रूप आदि कैसे चक्षुर्ग्राह्य हो सकते हैं। अर्थात् नहीं हो सकते। यहाँ रूप आदि के अग्राह्य होने का जो प्रतिपादन किया गया है, वह रूप आदि की स्वभावसत्ता को देखने वालों के अभिनिवेश की निवृत्ति के लिए किया गया है। उसी प्रकार वेदनीय विषय शब्द आदि स्वभावतः सत् नहीं हैं, ऐसी स्थिति में उन (शब्द आदि) के ग्राहक और उनको इष्ट या अनिष्ट रूप में जानने वाले विषयी विज्ञान की भी स्वभावतः सत्ता नहीं है। यदि संज्ञा (नाम) और उसका अर्थ ये दोनों अभिन्न हैं, उदाहरणार्थ 'अग्नि' यह नाम और ऊष्मा उसका अर्थ ये दोनों अभिन्न हैं, अर्थात् उनमें व्यावृत्तितः भी भिन्नता नहीं है तो अग्नि इस नाम के उच्चारण मात्र से मुखदाह का प्रसङ्ग होगा। यदि ये नाम और अर्थ दोनों असम्बद्ध रहते हुए सर्वथा भिन्न हैं तो अग्नि नाम (संज्ञा) का उच्चारण करने पर भी उसके अर्थ ऊष्मा का बोध न होने का प्रसङ्ग होगा। अतः उन दोनों का स्वरूप एक होना और व्यावृत्तितः भिन्न होना तथा प्रतीत्यसमुत्पन्न होने के कारण माया की भाँति होना, हे सत्यवादिन् तथागत आपने प्रदर्शित किया है।

यदि विषय रूपादि का स्वरूप इस प्रकार का है तो इन (रूप आदि) के उपभोक्ता और ज्ञाता का स्वरूप क्या है?

हे शास्ता, आपने कर्ता और कर्म दोनों की स्थिति (विद्यमानता) परस्परापेक्षित होने के कारण उन (दोनों) की व्यवहारमात्र में विद्यमानता कही है। हेतुस्वरूप पाप (अकुशल) और पुण्य (कुशल) कर्मों के कर्ता तथा उनके फल सुख, दुःख आदि के भोक्ता यद्यपि स्वभावतः सदा और सर्वथा नहीं हैं, फिर भी हेतुभूत पाप और पुण्य से प्रतीत्यसमुत्पाद नियम के अनुसार सुख, दुःख आदि

फल उत्पन्न होते हैं। इन (हेतुफल) के नियत और भ्रान्तिरहित होने पर भी इन सब (पाप, पुण्य, सुख, दु:ख, कर्ता, भोक्ता आदि) का स्वभावत: उत्पाद सर्वथा नहीं है, क्योंकि जो हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न (प्रतीत्यसमुत्पन्न) होता है, वह वस्तुत: उत्पन्न नहीं होता—ऐसा चार प्रतिसंविदों के वशी अर्थात् प्रतिसंविदों को वश में रखने वाले वाक्पति आपने सुभाषित किया है।

कहाँ किया है? ऐसा प्रश्न होने पर 'अनवतप्तह्रदापसंक्रमण सूत्र में कहा है। तथाहि—

यः प्रत्ययैर्जायति स ह्यजातो
न तस्य उत्पादु समावतोऽस्ति।

(प्रसन्नपदा में उद्धृत, पृ० १०५)

[अर्थात् जो हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न होता है, उसका स्वभावत: उत्पाद नहीं होता—इत्यादि]।

विषय रूप आदि को जाननेवाले विषयी ज्ञान की विना अपेक्षा किये उसके प्रमेय (रूप आदि) की स्थापना शक्य नहीं है, उसी तरह प्रमेय (विषय) की विना अपेक्षा किये उसको जाननेवाले विषयी विज्ञान की भी स्थापना शक्य नहीं है। इसलिए ज्ञान और ज्ञेय दोनों के सिद्धि परस्परापेक्षिकी है। अत: वे दोनों स्वभावत: सिद्ध नहीं हैं। हे भगवन्, ऐसा आपने कहा है।

यदि स्वभावत: सिद्ध लक्ष्य और लक्षण स्वरूपत: भिन्न हैं तो लक्ष्य निश्चय ही लक्षण से रहित हो जाएगा और इसी तरह वे दोनों यदि व्यावृत्तित: भी भिन्न नहीं हैं तो दोनों की परस्परापेक्षित व्यवस्था करना असम्भव हो जाएगा। अत: कोई भी धर्म स्वभावत: सिद्ध लक्ष्य, लक्षण, अभिधान, अभिधेय आदि नहीं होता, फिर भी प्रतीत्यसमुत्पाद के नियमानुसार माया की भाँति इन सबकी विद्यमानता आपने ज्ञानचक्षु के द्वारा देखी है, उसी प्रकार उपदेश देकर असंख्य प्राणियों की सन्तान में विद्यमान सबीज आवरणद्वय से उत्पन्न क्लेश और सन्ताप को आपने शान्त किया है। अत: ऐसे शास्ता की मैं स्तुति करता हूँ।

स्वभावत: सिद्ध वस्तुओं का उत्पाद कदापि नहीं होता। हेतु-प्रत्ययों से अनिर्मित अथवा हेतु-प्रत्यय से निरपेक्ष उत्पाद सम्भव नहीं है। अत: सभी वस्तुओं की न तो स्वत: सिद्ध सत्ता है और न उनका अत्यन्ताभाव ही है। उसी प्रकार हेतु

की अवस्था में जिस हेतु में अनभिव्यक्त रूप से कार्य विद्यमान होता है, उस हेतु से न तो स्वतः उत्पाद सम्भव है और न ही स्वभावतः सिद्ध पर अर्थात् अन्य हेतु से स्वभावतः सिद्ध अन्य फल उत्पन्न होता है। स्वतः और परतः पृथक्-पृथक् उत्पाद न होने पर उभयतः अर्थात् स्व और पर दोनों से उत्पाद होना भी सम्भव नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रश्न है कि स्वभावसत्ता मानने वालों के पक्ष में उत्पाद की व्यवस्था किस प्रकार की है? अर्थात् उत्पादव्यवस्था असम्भव है।

यदि कोई धर्म स्वभावतः सत् (विद्यमान) या स्थितिमान् है तो उसमें स्थिति होना भले ही युक्त हो, किन्तु हेतु-प्रत्ययों के द्वारा उसकी हानि (विनाश) या उसका लाभ होना किसी तरह युक्त न होगा। उसी प्रकार जिसका अत्यन्ताभाव (शशशृङ्गवत्) है, उसमें 'अस्थिति' (स्थित होना) भले ही युक्त हो, किन्तु उसका उच्छेद या विनाश होना कथमपि युक्त नहीं होगा। अर्थात् उनमें (सत् और असत् दोनों में) उत्पाद-विनाश की व्यावहारिक व्यवस्था किसी भी तरह सम्भव नहीं है।

भाव (वस्तु) और उसका विनाश दोनों असम्बद्ध होकर भिन्न अथवा अत्यन्त अभिन्न (एक) नहीं माने जाते। अन्यथा (यदि असम्बद्ध होकर भिन्न होंगे तो) भाव (वस्तु) नित्य हो जाएगा तथा दोनों अभिन्न (एक) होंगे तो भाव (वस्तु) का अत्यन्ताभाव हो जाएगा। वस्तुतः ये दोनों (भाव और उसका विनाश) व्यावृत्तितः भिन्न होने पर भी स्वभावतः अभिन्न या एक हैं। अतः वस्तुओं के उत्पाद और विनाश होते रहने की व्यवस्था युक्तियुक्त होती है। यदि इन दोनों में असम्बद्ध रहते हुए भिन्नता होगी, तो भाव का परिवर्तनशील या विनाशशील होना असम्भव हो जाएगा तथा यदि दोनों अभिन्न या एक होंगे तो भाव का विनाश उपपन्न होगा।

स्वभावतः विनष्ट हेतु से फल का उत्पाद युक्त नहीं है, उसी प्रकार स्वभावतः अविनष्ट हेतु से भी फल का उत्पाद सम्भव नहीं है। इसलिए अविनष्ट या विनष्ट हेतु से जो फलोत्पाद की प्रक्रिया चली आ रही है, वह सब हे भगवन्, आपके मतानुसार माया या स्वप्न की भाँति प्रतीत्यसमुत्पाद नियम के अनुसार होती है। फलतः सभी संस्कृत धर्मों का स्वरूप इसी प्रकार का है। इन सब तथ्यों को यथावत् देख कर अद्भुत शास्ता आपने सम्पूर्ण जगत् का उत्पाद व्यवहार में कल्पना द्वारा प्रज्ञप्तिमात्र कहा है। अपरिवर्तनशील नित्य धर्मों में ही केवल संसार,

निर्वाण आदि की समस्त व्यवस्था असम्भव है, अपितु परिवर्तनशील अनित्य धर्मों में भी स्वभावतः सिद्ध संसार आदि की व्यवस्था सर्वथा युक्त नहीं है। अतः सम्पूर्ण जगत् में जो भी आभासित या समुत्पन्न धर्म हैं। अर्थात् संसार और निर्वाण की जो भी स्थितियाँ हैं, उन सबका माया की भाँति प्रज्ञप्तिमात्र के रूप में होना आपने कहा है। इस तथ्य से वे अतीत नहीं हैं। दुःखद फल देने वाले हेतु (समुदय) अर्थात् कर्म और उनके फल का उपभोग आदि अविसंवादात्मक रूप से होते हैं। अर्थात् उन कर्मों को संचित करनेवाले जो कर्ता हैं, उन दुष्कर्मों के परिणाम से वे अतीत नहीं हैं। फिर भी इस नियम (धर्मता) से विमुख कुछ तैर्थिक (बौद्धेतर) तार्किक लोग उनका निर्हेतुक उत्पाद या सृष्टिकर्ता (ईश्वर) द्वारा उत्पाद मानते हैं। अतिविशिष्ट शास्ता आपने तो उनका परस्पर की अपेक्षा अर्थात् प्रतीत्यसमुत्पाद नियम से उत्पन्न होना कहा है। जो प्रतीत्यसमुत्पन्न हैं, वे सब पूर्णतया स्वभावतः सिद्धि से शून्य हैं। फलतः किसी भी धर्म में स्वभावतः सिद्ध धर्मता अणुमात्र भी नहीं है—ऐसा हे अद्वितीय शास्ता आपने दशों दिशाओं में निर्भय होकर अतुलनीय सिंहनाद (उद्घोष) किया है।

सत्यतः सिद्ध के रूप में अभिनिवेश करनेवाले संकल्पों (वितर्क, विचार आदि) के समस्त प्रपञ्चों का परित्याग (प्रहाण) करने के लिए उनके प्रतिपक्ष के रूप में आपने अमृतरूपी गम्भीर शून्यता का विस्तार के साथ उपदेश दिया है। यदि उस प्रतिपक्ष शून्यता के प्रति भी स्वतः सिद्ध के रूप में अभिनिवेश किया जाता है तो औषधि के विष हो जाने जैसा अथवा जल में उष्णता हो जाने जैसा होगा और ऐसी शून्यतादृष्टि अचिकित्स्य अर्थात् जिसका निवारण करना कठिन है—ऐसी दृष्टि हो जाएगी। ऐसी दृष्टि सर्वथा गर्हणीय एवं परित्याज्य कही गई है। आचार्य (नागार्जुन) ने भी अन्यत्र कहा है—

शून्यता सर्वदृष्टीनां प्रोक्ता निःसरणं जिनैः ।
येषां तु शून्यतादृष्टिस्तानसाध्यान् बभाषिरे ।।[१]

[अर्थात् जिन तथागतों ने सभी दृष्टियों के परित्याग करने के लिए शून्यता का उपदेश किया है। जिनमें उस शून्यता के प्रति भी स्वभावतः सिद्ध दृष्टि है, वे लोग सर्वथा असाध्य (जिनका उद्धार करना कठिन है—ऐसे) हैं।]

१. द्र०-मूलमाध्यमिककारिका, १३:८ ।

गौण (निरीह) एवं निर्जीव बाह्य वस्तुएं तथा आभ्यन्तर क्लेश और कर्मों के वशीभूत सत्त्व—ये सभी स्वभावतः शून्य होने पर भी माया की भाँति प्रतीत्यसमुत्पन्न होते हैं। इसलिए संक्षेप में आपने बाह्य और आन्तरिक समस्त धर्मों को स्वभावतः असिद्ध प्रदर्शित किया है। तत्त्व की स्थिति का नये सिरे से निर्माण कर भगवान् ने प्रतिपादन नहीं किया है। जो तथता या वस्तु की यथार्थ स्थिति है, उसका उत्पाद करना या उसका अपलाप करना किसी के द्वारा भी सम्भव नहीं है। पूर्व तथागतों ने भी उसी का यथावत् अनुष्ठान किया, उसी को यथावत् जाना और उसी का विनेय जनों को अविपरीत उपदेश किया। ठीक उसी प्रकार भगवान् शाक्यमुनि ने भी उसी को यथावत् जानकर दूसरों को उपदेश दिया है। जैसे कि भगवान् ने कहा है—

"अपितु खलु पुनः कुलपुत्र, एषा धर्माणां धर्मता; उत्पादाद् वा तथागतानाम् अनुत्पादाद् वा स्थितैवेषा धर्मता धर्मधातुस्थितिः, यदिदं सर्वधर्मशून्यता सर्वधर्मानुपलब्धिः"।[1]

[अर्थात् कुलपुत्र, यह धर्मों की धर्मता है। तथागत का उत्पाद हो अथवा न हो धर्मों की यह धर्मता तो स्थित ही है, जो कि धर्मधातुस्थिति है। यही सभी धर्मों की शून्यता और सभी धर्मों की अनुपलब्धि है।]

पृथग्जनभूमि से उत्कृष्ट आर्यभूमि में स्थित लोगों को भी भावनामार्ग के अभ्यास की अपेक्षा किये विना निर्निमित्त (शून्यता) अर्थ का ज्ञान भले ही हो जाए, किन्तु उसका परिपूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता है, तब साधारण पृथग्जनों के बारे में तो कहना ही क्या है?। अतः इस विशिष्ट नय (महायान) में सत्यग्राह के प्रपञ्चों से रहित शून्यता और निर्निमित्त के मार्ग की भावना का अभ्यास किये विना मोक्ष पद की प्राप्ति सम्भव नहीं है। अतः अनुत्तर शास्ता आपके द्वारा इस अग्रयान (महायान) में गम्भीर और उदार मार्ग की सम्पूर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया गया है और इसके द्वारा विनेय जनों की अभिलाषा की पूर्ति की गई है। इसी प्रकार आचार्य विरचित रत्नावलि आदि ग्रन्थों में भी कहा गया है।

सम्पूर्ण मार्गव्यवस्था के उपदेशक, स्तुति एवं सत्कार के उत्तम भाजन परम शास्ता भगवान् तथागत की शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद के उपदेष्टा के रूप

---

१. द्र०-दशभूमकसूत्र, अष्टमी भूमि, पृ० ४३ (मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा, १९६७)।

में आचार्य ने महाश्रद्धा से युक्त होकर स्तुति-रचना की है। इस शुभ कार्य से जो पुण्यसम्भार और ज्ञानसम्भार अर्जित हुआ है, उससे सम्पूर्ण जगत् सत्यग्राह रूपी बन्धन से मुक्त हो—ऐसी अन्त में परिणामना और प्रणिधान करते हुए स्तुति का समापन किया है।

२. निरौपम्यस्तव का सारांश

यावत् एवं यथावत् के समस्त धर्मों की वास्तविक स्थिति को यथावत् जाननेवाली सम्यग्दृष्टि से जो विपन्न है तथा अविद्या रूपी तिमिर पटल से जिनकी नेत्ररूपी बुद्धि आच्छन्न है, ऐसे जगत् के हित के लिए सर्वदा समुद्यत अनुत्तर शास्ता, जो सत्यतः सिद्ध वस्तु के सर्वथा अभाव अर्थात् निःस्वभावता तत्त्व को यथावत् जाननेवाले हैं और जो उपमा (तुलना) एवं प्रतिपुद्गल से रहित है, उनकी ग्रन्थारम्भ में आचार्य (नागार्जुन) अवेत्यप्रसाद से युक्त होकर स्तुति एवं वन्दना करते हैं। तत्पश्चात् आचार्य ने किस तत्त्व का प्रतिपादन किया है, इस प्रश्न के बारे में आगे कहा जा रहा है।

जैसे कि सूत्रों में अनेकधा कहा गया है कि 'अदृष्टं तु परमं दृष्टम्' अर्थात् (स्वभावतः) न देखना ही श्रेष्ठ देखना है, तदनुसार जिस शास्ता ने स्वभावतः सिद्ध किसी वस्तु को नहीं देखा है, उस शास्ता (आप) की दृष्टि ही सर्वश्रेष्ठ दृष्टि है, क्योंकि यही समस्त धर्मों की वास्तविक स्थिति को यथावत् जानती है। निरपेक्ष एवं परमार्थतः नित्य और कूटस्थ कोई बोद्धव्य नहीं है तथा बोद्धा भी नहीं है। अतः इनकी व्यवस्था बिलकुल युक्त नहीं है। सापेक्ष एवं कृत्रिम बोद्धव्य धर्म तो अनन्त हैं। इन सबमें से परम दुर्बोध स्थल शून्यता के अर्थ को आश्चर्यजनक ढंग से बुद्धों ने साक्षात् रूप से जाना है।

हे शास्ता, आपने न किसी स्वभावसत् धर्म का उत्पाद किया है और न उसका निरोध किया है। सभी धर्म निःस्वभाव होने में समान हैं। उस निः-स्वभावतामूलक समता का आपने यथावत् अधिगम किया है। फलतः आपने अनुत्तर प्राप्तव्य बुद्धत्व नामक परम पद को प्राप्त किया है।

हे शास्ता, आपने पहले मार्गाभ्यास की अवस्था में भी दुःखों से पीड़ित सांसारिक जीवों की उपेक्षा कर केवल स्वयं की मुक्ति की अभिलाषा नहीं की। इस तरह आपमें हीन निर्वाण की इच्छा कभी उत्पन्न नहीं हुई। सांसारिक स्थान,

काय, उपभोग्य वस्तु आदि के प्रति अभिनिवेश के हेतु सभी निमित्त-आलम्बनों को दूर हटाकर आपने शान्त अप्रतिष्ठित निर्वाण का यथावत् अवबोध किया है। अतः संक्लेश और व्यवदान से सम्बद्ध सभी धर्म परमार्थतः धर्मता के गर्भ में एकरस हैं। धर्मधातु से अभिन्न उस प्रकृष्ट स्थिति को जिस ज्ञान ने जान लिया है, उस ज्ञान के अतिविशुद्ध और प्रपञ्चरहित होने में सन्देह ही क्या है।

हे प्रभो, आपने किसी देश और किसी काल में सत्यतः सिद्धस्वभाव धर्म को नीतार्थतः तो क्या व्यवहारतः (संवृतितः) भी एक अक्षर के परिमाणमात्र से भी नहीं कहा है, फिर भी आवश्यकता और प्रयोजन के अनुरूप विनेयजनों को मुक्तिमार्ग पर आरूढ करने के लिए नेयार्थतः और नीतार्थतः सद्धर्मों की महती वर्षा से पूर्णतया तृप्त किया है।

आकाश के समान विशाल चित्तवाले जिस शास्ता में स्कन्ध, आयतन और धातु में संगृहीत किसी भी धर्म के प्रति लेशमात्र भी आसक्ति नहीं है, उनमें हीन सास्रव धर्मों के प्रति अपेक्षा या उन पर निर्भरता बिलकुल भी नहीं है। उसी प्रकार जैसी सत्त्व संज्ञा (निमित्तग्रहण) राग, प्रतिघ एवं अविद्या आवरणों से युक्त प्राणियों में होती है, वैसी सत्त्वसंज्ञा की प्रवृत्ति आपमें सदा के लिए सर्वथा नहीं है, फिर भी त्रिविध दुःखों से दुःखित सत्त्वों के प्रति एकान्त महाकरुणा से युक्त होकर आप जगत्कल्याण के कार्य में अनाभोग और अविच्छिन्न कर्म करने से कभी विमुख नहीं होते।

हे प्रभो, लौकिक सुख-दुःख, आत्मा की सत्ता-असत्ता, नित्य-अनित्य आदि कल्पनाजन्य दोषों से आपकी बुद्धि सर्वथा निर्लिप्त है। धर्मों के परमार्थ स्वरूप को सम्यग्-रूप से जाननेवाले आपने सभी धर्मों को यथार्थतः गमन, आगमन, संचय आदि सभी सांवृतिक प्रपञ्चों से रहित जाना है और स्पष्टतया कहा है। आप सर्वत्र (सभी धर्मों में) अनुगत हैं, फिर भी सत्त्वों की धातु, आशय, अधिमुक्ति आदि के अनुरूप प्राणियों की अर्थसिद्धि (हित) के लिए लोक में जन्म आदि ग्रहण करते हैं, फिर भी सत्यतः सिद्ध, निरपेक्ष, कूटस्थ के रूप में वह उत्पाद नहीं होता है। वस्तुतः (परमार्थतः) उत्पाद नहीं ही होता। अनेक लोकों में जन्म लेना, धर्मकाय प्राप्त करना आदि आपकी प्रतीत्यसमुपन्न लीलाएं वस्तुतः अचिन्त्य हैं। प्रतिश्रुत्का के समान यह जगत् स्वभावतः सिद्ध के रूप में एक, अनेक, उत्पाद, भङ्ग, स्तुति, निन्दा आदि का आधार नहीं बन सकता है। उसी

प्रकार शाश्वत, उच्छेद, लक्ष्य, लक्षण आदि से भी यह (जगत्) रहित है। आपने संसार और उसके क्रियाकलापों को स्वप्न, माया आदि के रूप में जाना है।

क्लेश और दोषों की मूल अविद्या और उसके द्वारा स्थापित बीजों का आपने समूल प्रहाण किया है। विशेषतः गम्भीर वज्रयान के उपायकौशल्य पर आश्रित होकर आपने क्लेशप्रकृति (स्वरूप) से भी विशिष्ट विषयी सहजज्ञान रूपी अमृत को अर्जित किया है। हे शास्ता, जिसके दर्शन से कभी तृप्ति नहीं होती, ऐसा लक्षणों और अनुव्यञ्जनों से विभूषित आपका काय भी सभी प्रपञ्च निमित्तों से रहित है तथा वस्तुतः वह (काय) अरूप के समान मनोमय (ज्ञानरूपी) काय के रूप में विशुद्ध मायाकाय है, जो मात्र आर्यों के ज्ञानचक्षु का ही गोचर होता है। यद्यपि साधारण जनों के आभास में वह (काय) रूपवान् की भाँति दृष्टिगोचर होता है, इतने मात्र से उन्हें शास्ता के विशुद्ध मायाकाय का साक्षात् दर्शन तो नहीं ही होता है, फिर भी लोकव्यवहार में 'दर्शन हुआ है'—ऐसा कहा जाता है। वस्तुतः आपके द्वारा प्रतिपादित सर्वाकारवरोपेत सद्धर्म के गम्भीर तत्त्व (प्रतीत्यसमुत्पाद या धर्मकाय) को अविपरीत देखने से ही तथागत आप देखे जाते हैं। फिर भी धर्मता या शून्यता की वास्तविक स्थिति द्वयाभासी बुद्धि द्वारा यथावत् ज्ञात नहीं होती। जैसे आर्यशालिस्तम्बसूत्र में कहा गया है—**''यो भिक्षवः, प्रतीत्यसमुत्पादं पश्यति, स धर्मं पश्यति, यो धर्मं पश्यति, स बुद्धं पश्यति''**[१]।

[अर्थात् हे भिक्षुओं, जो प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है, वह धर्म को देखता है। जो धर्म को देखता है, वह बुद्ध को देखता है]।

आचार्य नागार्जुन द्वारा विरचित अपने पञ्चक्रम ग्रन्थ में विशुद्ध मायाकाय की स्तुति जिस प्रकार की गई है, ठीक उसी प्रकार इस (प्रस्तुत) स्तोत्र में भी की गई है। जैसे—हे वज्रधर, आपके काय में सुषिरता बिलकुल नहीं है और कर्मविपाक जनित मांस, अस्थि एवं रुधिर (रक्त) भी नहीं है। यद्यपि आपका मनोमय काय (ज्ञानकाय) अरूपी (रूपरहित) और सर्वत्र अप्रतिहत है, फिर भी आकाश में इन्द्रधनुष की भाँति आपने उसे (काय को) लक्षणों और अनुव्यञ्जनों से विभूषित के रूप में उसे प्रदर्शित किया है।

---

१. द्र०-शालिस्तम्बसूत्र, पृ० १०१, महायानसूत्रसंग्रह प्रथम भाग (दरभंगा-संस्करण, १९६१)।

आपके काय में त्रिदोषजनित ४०४ रोगों में से कोई भी रोग नहीं है। काय के नव (९) द्वारों से प्रवाहित होनेवाली कोई भी गन्दगी (अशुचि) आपके शरीर में नहीं है तथा उसमें भूख और प्यास से उत्पन्न अनाह्लादकरी वेदना भी नहीं है। इन सबके नहीं होने पर भी हे शास्ता, आपने स्वयं द्वारा दृष्ट सम्यग् मार्ग पर समस्त लोक को आरूढ करने के लिए लोकव्यवहार के अनुकूल पिण्डपात के लिए जाना, औषधि-सेवन करना आदि लौकिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया है।

हे पापरहित, आपने यद्यपि कर्म और क्लेशों के आवरणों का और उनकी वासनाओं का सर्वथा प्रहाण कर दिया है, फिर भी असमर्थ और पीड़ित प्राणियों पर अनुग्रह करने के लिए आपने छह वर्ष पर्यन्त कठोर तप करना, मानों हेय क्लेशों का शेष होना तथा उसके प्रतिपक्ष के रूप में मार्ग की भावना करना आदि अनेक लीलाएँ प्रदर्शित की हैं।

धर्मधातु जो नीतार्थ है, उसमें सर्वथा भेद नहीं है, अतः इस दृष्टि से तीनों यानों का भेद भी नहीं है, फिर भी संवृति जो नेयार्थ है, उसकी दृष्टि से उत्तम, मध्यम और अधम विनेय जनों को सद्धर्म (बुद्धशासन) में क्रमशः आरूढ करने के लिए हे तथागत, आपने तीन यानों की व्यवस्था का प्रतिपादन किया है।

हे तथागत नीतार्थ की दृष्टि से आपका धर्मकाय नित्य (अक्षय), स्थिर, अप्रतिहत एवं शिव (प्रपञ्चरहित) है, जिसमें विसदृश परिवर्तन और उच्छेद सदा सर्वथा नहीं होते, फिर भी नेयार्थ की दृष्टि से विनेय जनों के आशय की अपेक्षा से उपायकौशल्य के रूप में नित्यग्राह से ग्रस्त विनेय जनों पर अनुग्रह करने के लिए आपने सम्प्रति परिगृहीत कायमण्डलव्यूह का विघटन कर महापरिनिर्वाण प्रदर्शित किया है।

हे भगवन्, असंख्य और अपरिमित अन्य-अन्य लोकधातुओं में जन्मग्रहण, अभिसम्बोधि, धर्मचक्रप्रवर्तन, परिनिर्वाण आदि निर्माणकाय की द्वादश लीलाएं आपके द्वारा विनेय जनों के सम्मुख प्रदर्शित की जाती हैं। संसार और दुर्गति से त्राण पाने के अभिलाषी जनों तथा शास्ता और शासन के प्रति श्रद्धा और आदर रखने वाले विनेय जनों की दृष्टि का विषय बनाने के लिए ही इन लीलाओं का प्रदर्शन किया जाता है तथा जिस (विनेय जन) के लिए जो, जब और जिस प्रकार हितावह हो, उसे आप परिपूर्ण करने के लिए अचिन्त्य कर्म का प्रदर्शन करते हैं।

हे जगन्नाथ, आप संख्या और परिमाण से रहित अप्रमेय सत्त्वों के हित के लिए काय, वाक् और चित्त के द्वारा जो भी कर्म करते हैं, उसके पीछे आपके भीतर कोई विकल्प और प्रयत्न सर्वथा लेशमात्र भी नहीं होते। धर्मता (तत्त्व) में समाहित रहते हुए आप से जगत् के हित के लिए २७ बुद्ध कृत्य अनाभोग और अविच्छिन्न रूप से सर्वदा (अपने-आप) प्रवृत्त होते रहते हैं।

इस प्रकार शास्ता, भगवान् तथागत के अचिन्त्य, अप्रमेय, अनभिलाप्य गुणों के द्वारा परम श्रद्धा के साथ उनकी स्तुति और सत्कार रूपी पुष्प विकीर्ण किये गये हैं, उससे जो पुण्य कर्म निष्पन्न हुआ है, उस कुशलमूल से समस्त प्राणी भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट परम गम्भीर एवं दुर्बोध शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद के पात्र (भाजन) बन जाएँ। इस प्रकार प्रणिधान और परिणामना करते हुए आचार्य ने स्तुति का समापन किया।

३. अचिन्त्यस्तव का सारांश

जिस शास्ता ने प्रतीत्यसमुत्पन्न होने के कारण सभी धर्मों की जैसी स्वभावत: असिद्ध स्थिति है, वैसा सम्यक् रूप से जाना है, उस शास्ता का ज्ञान निश्चित रूप से अनुत्तर एवं असम है। अर्थात् वैसा ज्ञान अन्य शास्ताओं में नहीं है। उनका ज्ञान साधारण जनों का भी अगोचर है। इस प्रकार के अचिन्त्य एवं असम (अनुपम) गुणों से युक्त शास्ता की आचार्य नागार्जुन ने श्रद्धा से युक्त होकर वन्दना की है। तत्पश्चात् उन्होंने अचिन्त्यस्त्व के अभिधेय का भी इस प्रकार निर्देश किया है, जैसे—हे शास्ता, अपने सभी यानों में श्रेष्ठ महायान मार्ग पर आश्रित होकर जिस प्रकार सभी धर्मों की निरात्मक स्थिति को यथावत् जाना है, ठीक उसी प्रकार करुणा के वशीभूत होकर प्रेक्षावान् विनेय जनों को प्रकाशित भी किया है। इस कारण आपका अधिगम और देशना अद्वितीय हैं। आचार्य चोंखापा ने भी अपने 'प्रतीत्यसमुत्पादस्तुति सुभाषितहृदय' में इसी आशय को प्रकट करते हुए कहा है—

यं ज्ञात्वा भाषमाणस्य ह्ययपूर्वे ज्ञानदेशने[१]।

---

१ द्र०-प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिसुभाषितहृदयम्, प्रथम कारिका, पृ० १ (तिब्बतीसंस्थान, सारनाथ-प्रकाशन, १९९४)।

अर्थात् धर्मों की यथवत् स्थिति को देखकर उपदेश करनेवाले (आप) के अधिगम और देशना दोनों ही अपूर्व हैं। अर्थात् आपसे पूर्व न किसी अन्य को ऐसा अधिगम हुआ है और न किसी ने ऐसी देशना की है। हे शास्ता, आपने हेतु-प्रत्यय तथा प्रज्ञाप्य-प्रज्ञापक आदि पर आश्रित होकर जो उत्पाद होता है, वह स्वभावतः अनुत्पाद है—ऐसा कहा है। इस तरह सभी धर्म स्वभावतः अनुत्पन्न होने के कारण प्रकृतितः शून्य हैं—ऐसा आपने प्रकाशित किया है। इसी तथ्य को आचार्य चोंखापा ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

यद् यद्धि प्रत्ययायत्तं तत्तच्छून्यं स्वभावतः ।
इत्यस्माद् वचनाच्चित्रः को वा सद्देशनाविधिः[१] ।।

[अर्थात् जो जो प्रत्यय पर आश्रित होता है, वह सब स्वभावतः शून्य है। आप (भगवान् तथागत) के इस वचन से अधिक आश्चर्यजनक सदुपदेश की विधि अन्य क्या हो सकती है।]

जिस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पन्न शब्द से प्रतिध्वनि उत्पन्न होती है और स्पष्ट सुनाई पड़ती है, उसी प्रकार माया और मरीचि की भाँति संसार निरन्तर प्रवृत्त होते रहता है, स्वभावतः सिद्ध के रूप में कथमपि नहीं प्रवृत्त होता।

यदि स्वप्न एवं माया, मरीचि, गन्धर्वनगर, प्रतिबिम्ब आदि अत्यन्त अजात (अनुत्पन्न) है। अर्थात् यदि उनका अत्यन्ताभाव है तो चक्षु, श्रोत्र आदि एवं रूप शब्द आदि सभी वस्तुओं की स्वभावरहितता के निदर्शन के लिए दृष्टान्त का ही अभाव हो जाएगा। अतः वे माया, मरीचि, स्वप्न आदि व्यवहार में प्रतीत्यसमुत्पन्न होकर विद्यमान हैं—ऐसा मानना चाहिए।

हे नाथ, जिस प्रकार आपने हेतु-प्रत्ययों की अपेक्षा से उत्पन्न धर्मों को कृतक (हेतु-प्रत्यय-कृत या संस्कृत) माना है, उसी प्रकार प्रत्ययसापेक्ष (प्रतीत्यसमुत्पन्न) इस सारे विश्व को आपने व्यावहारिक या सांवृतिक (अज्ञानजनित) स्वरूप से अनतीत कहा है। अतः जो भी अज्ञानजनित (सांवृतिक) हैं तथा वस्तुओं की यथार्थस्थिति को न जाननेवाले पृथग्जन भ्रान्तिवश जो कुछ कहते या करते हैं, वह सब कुछ खाली मुट्ठी के समान रिक्त,

---

१ द्र०-प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिसुभाषितहृदयम्, कारिका-५, पृ० ५ (केन्द्रीय उच्च तिब्बती संस्थान, सारनाथ-प्रकाशन, १९९४)।

तुच्छ एवं निरर्थक (तथ्य से परे) है और वस्तुस्थिति से विपरीत है—ऐसा आपने प्रकाशित किया है।

जब हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न वस्तुएं (परमार्थतः) कभी उत्पन्न ही नहीं होतीं, तब इनका वर्तमान काल में स्वभावसत् होना, किसके क्षय (नाश) से अतीत होना और (कारणसामग्री) अपूर्ण होने की वज़ह से भविष्य में होनेवाली वस्तुओं का किसी कारण सामग्री की अपेक्षा करना आदि सारी व्यवस्थाएं कैसे स्थापित की जा सकती हैं। अर्थात् युक्त नहीं है।

हेतु-प्रत्ययसामग्री से उत्पन्न या संभूयसमुत्पन्न सभी वस्तुएं अपने (स्व) को हेतु बनाकर उत्पन्न नहीं होतीं। उसी प्रकार स्वभावतः सत् 'पर' (अन्य) हेतु से भी स्वभावतः सिद्ध फल के रूप में उत्पन्न नहीं होतीं। स्व एवं पर से पृथक्-पृथक् उत्पाद नहीं होने से उभय (दोनों) से भी उनका उत्पाद सम्भव नहीं है। अतः वस्तुओं का न तो स्वभावसत् हेतु से उत्पाद होता है और न व्यवहारतः असत् (अलीक) हेतु से उत्पाद होता है। अतः उभयात्मक (स्वभावतः सत् और अलीक) हेतु से भी उत्पाद नहीं होता। अहेतुतः भी उत्पाद सम्भव नहीं है। अतः वस्तु न सत् है, न असत् है और न सदसत्। इस तरह वह चतुष्कोटिविनिर्मुक्त है। ऐसी स्थिति में किसका उत्पाद होता है। अर्थात् किसी का भी उत्पाद युक्त नहीं है। इस (चतुष्कोटिक उत्पाद) से विपरीत प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात् मायावद्-उत्पाद की व्यवस्था अत्युत्तम एवं युक्तिसंगत है। चार अन्तों (कोटियों) से रहित धर्मों में व्यावहारिक (सांवृतिक) उत्पाद अर्थात् प्रतीत्यसमुत्पाद युक्त होने पर भी स्वभावतः उत्पाद सदा सर्वथा युक्त नहीं है। व्यावहारिक (प्रतीत्यसमुत्पन्न) 'स्व' होने पर उसकी अपेक्षा से 'पर' (अन्य) और इन (स्व-पर) से अतिरिक्त तथा इनके विपरीत की भी व्यवस्था की जा सकती है, क्योंकि वे सभी परस्पर सापेक्ष प्रतीत्यसमुत्पन्न मात्र ही है।

यदि धर्म (वस्तुएं) निरपेक्ष अथवा अकृत्रिम होंगे तो किसी पर आश्रित होकर किसी का उत्पाद अर्थात् हेतु-फल व्यवस्था या प्रज्ञाप्य-प्रज्ञापक आदि सारी व्यवस्था असम्भव हो जाएगी। उदाहरणार्थ अपेक्षा के आधार दीर्घ, स्थूल आदि ही यदि अलीक होंगे तो उनकी अपेक्षा से लघु, सूक्ष्म आदि की स्थापना नहीं की जा सकेगी। ठीक इसी प्रकार सद्-असद्, एक-अनेक, अतीत-अनतीत, संक्लेश-व्यवदान, सम्यक्-मिथ्या, स्व-पर आदि सभी व्यवस्थाओं का

परस्परापेक्षिक के रूप में विद्यमान होना तथा स्वभावतः सिद्ध के रूप में सदा सर्वथा नहीं होना हे नाथ, आपने कहा है। संक्षेप में सभी धर्म प्रारम्भ से सत्यतः सिद्धि आदि सारे प्रपञ्चों से रहित होने के कारण आदिशान्त, प्रकृतिपरिनिर्वृत्त, परमार्थतः (स्वभावतः) अनुत्पन्न हैं। इस कारण समस्त धर्म माया की भाँति प्रतीत्यसमुत्पन्न मात्र के रूप में विद्यमान हैं—ऐसा कहा गया है।

अनुत्तर और अद्‌भुत बल-बुद्धि से सम्पन्न शास्ता, आपने रूप आदि सभी धर्मों को फेन (झाग), बुद्‌बुद् (बुलबुले), माया, मरीचि, गन्धर्वनगर एवं कदलीस्तम्भ आदि की अनेक उपमाओं के माध्यम से निःसार, तुच्छ एवं निः-स्वभाव प्रकाशित किया है। यदि साधारण बाल-पृथग्जनों को इन्द्रियों के द्वारा जिस प्रकार धर्म अवभासित होते हैं, यदि वही धर्मों की वस्तुस्थिति (तथता) है तो बाल-पृथग्जनों के तत्त्ववित् हो जाने का प्रसङ्ग होगा और आर्यों के सम्यक् प्रत्यवेक्षण ज्ञान के निरर्थक होने का दोष होगा।

पृथग्जनों द्वारा तत्त्व (अर्थ) को न जानने का कारण यह है कि उनकी इन्द्रियाँ जिस प्रकार जड, अप्रमाण हैं उसी प्रकार वे अव्याकृत और विपरीत ज्ञान पैदा करनेवाली हैं। फलतः पृथग्जन इन्द्रियों के द्वारा धर्मों की यथार्थ स्थिति (तथता) को कैसे जान सकेंगे? अर्थात् नहीं जान सकेंगे। इसलिए यथाभूत को सम्यक् रूप से जाननेवाले शास्ता आपने लोक को अज्ञान आवरण से आवृत सन्तानवाला कहा है।

अनुत्तर शास्ता आपने धर्मों को सत्यतः सिद्ध समझने को शाश्वत दृष्टि तथा व्यवहार में धर्मों को खपुष्पवत् अलीक समझने को उच्छेददृष्टि कहा है। इसलिए आपने दोनों (शाश्वत और उच्छेद) अन्तों से रहित सद्धर्म अर्थात् मध्यम मार्ग की देशना की है। इसलिए तथागत, आपने सभी धर्मों को सत्, असत्, सदसत् आदि चारों कोटियों से विनिर्मुक्त कहा है। फलतः उस तात्त्विक अर्थ (तथता) को आर्यज्ञान के अतिरिक्त अन्य साधारण ज्ञान द्वारा यथावत् जान पाना असम्भव है। इसलिए उसे (तथता) को क्लेश बन्धनों से विमुक्त आर्य जनों का गोचर (विषय) कहा गया है। निष्कर्षतः सत्त्व और भाजन अर्थात् स्थिर और चल समस्त जगत् को आपने स्वप्न, इन्द्रजाल और द्विचन्द्रदर्शन के समान उत्पन्न हैं—ऐसा कहा है। उनका स्वभावतः निरपेक्ष और वास्तविक उत्पाद नहीं है—ऐसा आपने यथावत् देखकर ही कहा है।

वस्तुओं का उत्पाद, भङ्ग स्थिति तो स्वप्न में पुत्र के उत्पाद, स्थिति और नष्ट होने की भाँति है। अर्थात् उनका स्वभावतः उत्पाद, स्थिति और भङ्ग नहीं होते। फिर भी भगवन्, आपने लौकिक आशय के अनुरूप नेयार्थ की अभिसन्धि से व्यवहार में उनका विद्यमान होना कहा है। चेतन-सन्तति से अगृहीत बाह्य वस्तुओं में स्वप्न की भाँति उत्पाद, स्थिति, भङ्ग विद्यमान हैं, उसी प्रकार चेतना द्वारा गृहीत सन्तति में दुःख, संसार आदि संक्लेश पक्ष, उनके हेतु (समुदय) कर्म एवं क्लेश एवं इनके प्रतिपक्ष व्यवदान अर्थात् ज्ञान और पुण्य सम्भारद्वय तथा मोक्ष आदि सभी स्वप्न के समान कहे गये हैं।

उत्पाद और अनुत्पाद, गमन और आगमन, बद्ध और मुक्त आदि के प्रति द्वयाभासी बुद्धि द्वारा अभिनिवेश हो सकता है, किन्तु सम्यग् अर्थ के ज्ञाता आर्य के ज्ञान में द्वैताभास होना सम्भव नहीं है। किसी भी विषय का स्वभावतः सिद्ध उत्पाद एवं निरोध नहीं है। सभी धर्म मायागज की भाँति हैं। नीतार्थतः वे सभी आदिशान्त हैं। अतः सभी वस्तुएं संवृति (व्यवहार) में मायागज की भाँति उत्पन्न होती हैं। वस्तुतः उनका अनुत्पाद ही है।

अपरिमित लोकनाथों द्वारा असंख्येय और अप्रमेय पुण्यवान् विनेय जनों को अन्तिम प्राप्तव्य अप्रतिष्ठितनिर्वाण में प्रतिष्ठित किया गया है। अतः उन्होंने किसी भी योग्य विनेय जन को बिना विचारे उपेक्षा की वजह से मुक्त (निर्वृत्त) नहीं किया हो—ऐसा सर्वथा नहीं है। हे महामुनि, जो निर्वाण प्राप्त करते हैं, वे सत्त्व सदा और सर्वथा जब स्वभावतः उत्पन्न ही नहीं है, तब किसी के द्वारा कोई सत्त्व परमार्थतः मुक्त ही नहीं किया गया है—ऐसा आपने कहा है। यदि ऐसा नहीं है और सत्त्व स्वभावतः सिद्ध है तो उसके निश्चय ही हेतु-प्रत्यय-निरपेक्ष और अकृत्रिम होने तथा तथागत की कृपा से अतिक्रान्त होने का प्रसङ्ग (सम्भावना) होगा।

जैसे मायाकार द्वारा निर्मित वस्तु (स्वभावतः) शून्य होती हैं, उसी तरह अन्य कृतक (निर्मित) वस्तुएं या वस्तुतः सम्पूर्ण जगत् स्वभावतः शून्य है। इसी तरह विशिष्ट कर्ता (कारक) और उसके कार्य तथा उनके अन्य हेतु सभी स्वभावतः शून्य हैं। उन (वस्तुओं) का व्यवहार में प्रतीत्यसमुत्पन्न के रूप में उत्पाद होता है। अन्यथा उनकी अनन्तता और अनवस्था होने का प्रसङ्ग होगा। सभी धर्म स्वभावतः असिद्ध और नाममात्रतः सिद्ध हैं—ऐसी हे शास्ता, आपने

उच्च स्वर से घोषणा की है। वस्तुत: अभिधान भी स्वभावत: अभिधेय (उसके विषय) से पृथग्भूत नहीं है। सभी धर्म कल्पनामात्र हैं। जिस बुद्धि द्वारा समस्त धर्म शून्य के रूप में अवबोधित होते हैं, वह बुद्धि (कल्पना) भी स्वभावत: सत् नहीं है। सभी धर्म (अर्थात् नाम और कल्पना तथा उनके विषय) कल्पना द्वारा प्रज्ञप्तमात्र कहे गये हैं। भाव, अभाव, उभय (भावाभाव) और उनसे अतीत अर्थात् अनुभय एवं उनसे अनतीत तथा ज्ञान और ज्ञेय कहीं कुछ भी स्वभावत: सिद्ध नहीं है तथा व्यवहारत: उनका अत्यन्ताभाव भी नहीं है।

कोई भी धर्म (सत्यत: सिद्ध) एक नहीं है और न अनेक है तथा उभय और अनुभय भी नहीं है। सभी धर्म अनाश्रय, अव्यक्त (अस्फुट), अचिन्त्य और अनिदर्शन हैं। अत: ये सभी (धर्म) आकाश की भाँति स्वभाव से विविक्त (रहित) और प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम से अतीत नहीं हैं। उसी की भाँति सद्धर्म और उसके उपदेष्टा तथागत भी प्रतीत्यसमुत्पन्न अथ च शून्य हैं। यह स्थिति तो धर्मों की वास्तविक स्थिति और परमार्थ है। यही स्थिति तथता एवं वास्तविक द्रव्य के रूप में विद्यमान है। इस अर्थ में सदा और सर्वथा विसंवाद बिलकुल नहीं है। जिस व्यक्ति ने उस प्रकृष्ट बोद्धव्य का यथावत् बोध कर लिया है, उसे ही बुद्ध कहा जाता है।

बुद्धों की सन्तान में विद्यमान स्वभावकाय और सत्त्वों (प्राणियों) की सन्तान में विद्यमान प्रकृतिगोत्र अर्थात् चित्तधर्मता इन दोनों में नीतार्थतया (वस्तुत:) कुछ भी भेद (अन्तर) नहीं है। इसीलिए अर्थात् इसी तथ्य के मद्देनज़र आपके द्वारा स्व और पर में समता मानी गई है। वस्तुओं की प्रकृष्टतम प्रकृति तो शून्यता के अलावा अन्य कुछ नहीं है। शून्यता के बिना वस्तु कथमपि नहीं है। इसलिए आपने प्रतीत्यसमुत्पन्न समस्त भावों (वस्तुओं) को स्वभावत: शून्य कहा है। संवृति तो हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न और परतन्त्र है। अत: सभी (हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न) धर्म परतन्त्रस्वभाव हैं। यथावस्थित परमार्थ यद्यपि प्रतीत्यसमुत्पन्न (सापेक्ष) है, किन्तु हेतु-प्रत्यय निर्मित नहीं है।

वह परमार्थ (परिनिष्पन्न-)स्वभाव, (सभी धर्मों की) प्रकृति, तत्त्व (तथता) द्रव्य, वस्तु और सत् (विद्यमान) है। कल्पना द्वारा आरोपित परिकल्पित-स्वभाव धर्म बिलकुल ही (सर्वथा) नहीं हैं तथा हेतु-प्रत्यय से समुत्पन्न परतन्त्र-स्वभाव धर्मों की (व्यावहारिक) सत्ता अवश्य होती है। विकल्प

(विपरीत बुद्धि) द्वारा समारोपित अर्थ (वस्तु) की सत्ता मानना शाश्वत-दृष्टि है तथा हेतुभूत कृतपुण्य और कृतपापों के संचय से क्रमशः सुख और दुःख रूपी फल का उत्पाद न मानना उच्छेद-दृष्टि है। तत्त्वज्ञान अर्थात् सम्यग् अर्थबोध हो जाने पर अपवादिका अछेद-दृष्टि और समारोपिका शाश्वत-दृष्टि का प्रहाण हो जाता है। स्थिर और चल अथवा सत्त्व और भाजन समस्त धर्म या सम्पूर्ण जगत् स्वभावतः सत्स्वरूप शाश्वत नहीं है और अत्यन्ताभावस्वरूप उच्छेदस्वभाव भी नहीं है। अर्थात् सम्पूर्ण जगत् वस्तुशून्य और मृगमरीचिकासदृश है।

जिसके मत में किसी धर्म का प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात् सापेक्ष उत्पाद होता है तो उसका उच्छेद (विनाश) भी अवश्य होता है। लोक का यद्यपि पूर्वान्त नहीं है, किन्तु अपरान्त होता है, अतः संसार सान्त होता है। अतः सब कुछ परस्पर सापेक्ष है। ज्ञान (ज्ञापक या विषयी) के होने पर ज्ञेय (ज्ञाप्य या विषय) होता है, उसी प्रकार ज्ञेय होने पर ज्ञान होता है। अतः जब ज्ञान और ज्ञेय दोनों के (स्वभावतः) अनुत्पाद का बोध हो जाता है, तब (उस समय) तात्त्विक दृष्टि की अपेक्षा से ज्ञान, ज्ञेय आदि किसी का भी स्वभावतः अस्तित्व सम्भव नहीं है।

इस प्रकार सम्पूर्ण प्राणियों की चित्तसन्तति में विद्यमान क्लेश (राग, द्वेष) रूपी रोगों का निवारण करने के लिए परम भिषग्राज शाक्यसिंह ने सभी धर्मों को माया, मरीचि आदि दृष्टान्त द्वारा निःस्वभाव कह कर जिस सद्धर्म की देशना की है, वह (सद्धर्म) सभी कुदृष्टियों (रोगों) के निवारण हेतु परम औषधि है। भगवान् ने जिस निःस्वभावता की विस्तारपूर्वक देशना की है, वह परम तत्त्व है। अतः भवग्राह (भावाभिनिवेश अर्थात् वस्तुओं की सत्ता के प्रति आग्रह) से ग्रस्त लोगों की सन्तति में विद्यमान क्लेशरूपी रोगों की शान्ति की वह उत्तम चिकित्सा है।

इस प्रकार उस तत्त्व (निःस्वभावता) का उपदेश देना त्रिविध दानों में परम विशिष्ट दोषरहित, निर्मल धर्मदान ही है। इसीलिए सर्वदा अविच्छिन्न रूप से आपने तीनों लोकों में संगृहीत समस्त जगत् के दोषों और क्लेशों को जलाकर समूल उच्छेद करनेवाले धर्मयज्ञ का अनुष्ठान किया है। अतः आप धर्मयाज्ञिक हैं। इसी तरह भवग्राह अर्थात् वस्तुग्राह से भयभीत, व्याकुल लोगों को भय से निर्मुक्त करने वाले और कुतैर्थिक (बौद्ध मत को न मानने वाले) लोगों को भयभीत करनेवाले नैरात्म्य रूपी अद्‌भुत सिंहनाद का आपने दशों दिशाओं में गर्जन किया

है। जागतिक रोग और दु:ख को शान्त करने की उपायभूत बुद्धशासनामृत रूपी सद्धर्मसम्पत्ति का बिना भेदभाव आपने वितरण क़िया है। वह (सद्धर्मसम्पत्ति) तो सभी धर्मों की यथार्थ-स्थिति अर्थात् शून्यता ही है तथा वही नीतार्थ है अर्थात् उसे यथाशब्द (शब्दश:) स्वीकार किया जा सकता है—ऐसा भगवान् ने विनेय जनों को आश्वस्त किया है।

इसी प्रकार बाह्य-आभ्यन्तर सभी धर्मों के उत्पाद, निरोध आदि तथा सत्त्व, जीव आदि की जो देशना है, वह संवृति या व्यवहार के वश से की गई है अर्थात् वह नेयार्थ देशना है। तात्पर्य यह है कि उसका विनेय जनों को संसार से विमुख कर धर्माभिमुख करने के लिए संवृत्या (नेयार्थ के रूप में) प्रतिपादन किया गया है।

नेयार्थ और नीतार्थ धर्मों के उपदेष्टा भगवान् बुद्ध न केवल अतिगम्भीर और उदार इन दो सत्यों में या उपाय और प्रज्ञा में अथवा दो सम्भारों में संगृहीत गम्भीर प्रज्ञापारमिता रूपी महासागर से ही पारंगत हैं, अपितु उदार, उपाय या पुण्यसम्भाररूपी गुणरत्नों से भी सुसमृद्ध हैं। अत: नाथ (भगवान् तथागत) आप दो सम्भारों में संगृहीत समस्त गुणों से पूर्णतया सुसम्पन्न, पारंगत और अद्वितीय (एकमात्र) शरण हैं।

अत: जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती, ऐसे अनिदर्शन, जिनके गुणों की इयत्ता साधारण जनों की गोचर नहीं है, इस प्रकार अचिन्त्य और स्तुतियोग्य जगन्नाथ भगवान् तथागत आपकी मेरे (आचार्य नागार्जुन) द्वारा जो श्रद्धा और उत्साह के साथ स्तुति की गई है, उससे जो पुण्य प्राप्त हुआ है, उस (पुण्य) से समस्त जगत् (प्राणिमात्र) सम्यक्सम्बुद्ध के समान हो जाए—ऐसा प्रणिधान और परिणामना की गई है और इसी के साथ ग्रन्थ समाप्त होता है।

४. परमार्थस्तव का सारांश

लोकातीत और लोकान्तर्गत किसी भी धर्म का स्वभावत: सिद्ध न उत्पाद है और न भङ्ग है, अत: हे नाथ, आप भी स्वभावत: अनुत्पन्न और अनिरुद्ध हैं तथा सभी लौकिक उपमाओं से अतीत और शब्द तथा कल्पनाओं की गोचरता से भी सर्वथा (अत्यन्त) अतीत हैं। अत: ऐसी स्थिति में आपकी कैसे स्तुति की जा सकती है? अर्थात् स्तुति करना अत्यन्त कठिन है।

तथागत का यथार्थ स्वरूप जैसा भी हो, उस यथार्थ स्थिति (तथता) के साक्षात् द्रष्टा आचार्य नागार्जुन के अधिगमज्ञान के द्वारा लोक में जैसे प्रज्ञप्ति या व्यवहार किया जाता है, उस अवस्था में स्थित रहते हुए उस तथतास्वरूप तथागत की परम श्रद्धा के साथ स्तुति की जाएगी—ऐसा उपोद्घात किया गया है।

जिस प्रतीत्यसमुत्पाद में सांवृतिक दृष्टि से उत्पाद, भङ्ग, शाश्वतता (निरन्तरता), उच्छेद, नित्यता, अनित्यता, विभिन्नवर्ण, ह्रस्व, दीर्घ आदि परिमाण आदि का यद्यपि ग्रहण किया जाता है, फिर भी निरुत्तर शास्ता भगवान् बुद्ध के अनास्त्रव समाहित ज्ञान के सम्मुख या उसके विषय की दृष्टि से उत्पाद आदि नहीं होते हैं, अतः अनुत्पाद आदि को उस (प्रतीत्यसमुत्पाद) के विशेषण के रूप में जोड़ा गया है। उस अनास्त्रव समाहित ज्ञान के विषय को अधिकृत करके हे मुनीन्द्र, आपने गमन, आगमन आदि नहीं हैं—ऐसा कहा है। उसी प्रकार भाव, अभाव, नित्य, अनित्य आदि द्वैत प्रपञ्च भी उस ज्ञान के विषय के रूप में नहीं है। उसी प्रकार रक्त, हरित, आदि वर्ण-प्रपञ्च, महान्, ह्रस्व आदि परिमाण (आकार), आकाश, पाताल, संस्कृत, असंस्कृत, संसार, निर्वाण आदि भी परमार्थतः स्थित नहीं हैं।

उपर्युक्त उत्पाद, निरोध आदि ये सब व्यवहार में विद्यमान हैं, अतः 'आर्यज्ञान की दृष्टि से' इस विशेषण को जोड़े विना निषेध करना युक्त नहीं है। 'आर्यज्ञान की अपेक्षा से' जो यह विशेषण जोड़ा गया है, वह मूलमाध्यमिक-कारिका की आचार्य चन्द्रकीर्ति कृत टीका (प्रसन्नपदा) के अभिधेय को जो आचार्य चोंखापा ने अपनी महाटीका में सुस्पष्ट निरूपित किया है, उसी के आधार पर यहाँ उसका उल्लेख किया गया है और उसका अनुसरण किया गया है।

धर्मधातु (शून्यता) से अविचलित, अतिगम्भीर धर्मकाय को प्राप्त हे नाथ, आपको काय, वाक्, चित्त (तीन द्वारों) से आदरपूर्वक नमन करते हुए अनास्त्रव समाहित ज्ञान के विषय अर्थात् परम गम्भीर परमार्थ के रूप में आपकी स्तुति की जाए अथवा चाहे द्वैताभासी बुद्धि के विषय अर्थात् स्वभावतः सिद्ध के रूप में आपकी स्तुति की जाय। किन्तु द्वैताभासी बुद्धि के स्वतः सिद्ध विषय के रूप में आप विद्यमान नहीं हैं। सभी धर्म शून्य हैं, फलतः कौन स्तुत होता है और किसके द्वारा स्तुति की जाती है? अतः स्वतः सिद्ध के रूप में आपकी श्रद्धावान् किसी स्तुतिकर्ता के द्वारा स्तुति करना सम्भव नहीं है। क्योंकि स्वभावतः सिद्ध के

रूप में उत्पाद, भङ्ग, आदि, मध्य, अन्त, ग्राह्य, ग्राहक, गमन, आगमन आदि द्वैतों से आप रहित हैं।

अथवा प्रसन्नपदा के अभिधेय के अनुसार अनास्रव, समाहित ज्ञान के विषय के रूप में, जो उपर्युक्त सभी द्वैतों से रहित है, उस स्वरूप में स्तुति की जाए, किन्तु अविद्या तिमिर के द्वारा जिनका बुद्धिरूपी चक्षु ग्रस्त है, उन लोगों के द्वारा समुचित रूप से यथावत् स्तुति कर पाना सम्भव नहीं है।

परम गम्भीर तथता के अर्थ को यथावत् जाननेवाले निर्मलज्ञानचक्षुष्क आचार्य नागार्जुन द्वारा परमार्थ अर्थात् यथास्थिति के अनुरूप भगवान् तथागत की जो स्तुति की गई है, उससे प्राप्त पुण्य के द्वारा जगत् का अविद्यातिमिर से ग्रस्त बुद्धि रूपी चक्षु विनष्ट हो जाए और वह तत्त्व का यथावत् बोध कर तथागत लोक में पहुँच जाए—ऐसा प्रणिधान करते हुए परमार्थस्तुति समाप्त होती है।

।। भवतु सर्वमङ्गलम् ।।



ग्रन्थस्थ-संकेत विवरण བསྡུས་ཡིག་བརྡ་སྟོན།
(Abbreviations)

क० - श्री दिव्यवज्रवज्राचार्य द्वारा सम्पादित, काठमाण्डू।

ख० - पं० जनार्दन पाण्डेय द्वारा सम्पादित, वाराणसी।

ग० - टोक्यो यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, जापान। (SMTUL)

घ० - Buddhist Sanskrit Manuscripts, Microfilm Collection belonging to the Institute for Advance Studies of World Religions, USA (IASWR) पत्र सं० १४

སྡེ། - སྡེ་དགེ་པར་མ།

ཅོ། - ཅོ་ནེ་པར་མ།

སྣར། - སྣར་ཐང་པར་མ།

པེ། - པེ་ཅིང་པར་མ།

གསེར་བྲིས། - དགའ་ལྡན་གསེར་བྲིས་པར་བཤུས།

RAK	-	Rāṣtriya Abhilekhālaya, Kathmandu, Nepal.
IASWR	-	Buddhist Sanskrit Manuscripts, Microfilm Collection belonging to the Institute for Advance Studies of World Religion, USA.
SMTUL	-	A Catalogue of Sanskrit Manuscrits in the Tokyo University Library, Tokyo, Japan 1965.
MCBMDLJ	-	Microfilm Catalogue of Buddhist Manuscripts in Nepal, Vol. I, 1981 by Hidenobu Takaoka belonging to the Buddhist Library, Japan.
CABATON	-	Catalogue Sommaire des Manuscrits Sanscrits et Palis de la Bibliotheque Nationale, Par A. Cabaton, Ier Facicule. Manuscripts Sanscrits, Paris 1907.

मूलग्रन्थः གཞུང་དངོས་གཞི།

आचार्य नागार्जुन-प्रणीतः

चतुःस्तवः

(संस्कृत मूल, भोटपाठ एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

༄༅། །སྟོན་པ་ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ལ་ཟབ་མོ་སྟོང་དང་རྟེན་འབྱུང་གསུངས་
པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

མཛད་པ་པོ།— བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ།

(ལེགས་སྦྱར་རྩ་གཞུང་དང་སྔར་བོད་སྐད་དང་ཧིན་བསྒྱུར་ཤན་སྦྱར།)

अहो बुद्धनयं दिव्यमहो बोधिनयोत्तमम्।
अहो धर्मनयं शान्तमहो मन्त्रनयं दृढ़म्॥
(गुह्यसमाजतन्त्रम्, पटल-१३,पृ० ४८)

ཨེ་མའོ་སངས་རྒྱས་ཚུལ་རེ་བཟང་། །
ཨེ་མའོ་བྱང་ཆུབ་ཚུལ་གྱི་མཆོག། །
ཨེ་མའོ་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་རེ་ཞི། །
ཨེ་མའོ་སྔགས་ཀྱི་ཚུལ་རེ་བརྟན། །

གསང་འདུས་རྩ་རྒྱུད། (རྒྱུད། 'ཅ' ༡༡༣)

शास्तारं प्रणिपत्य गौतममहं तद्धर्मतावस्थितान्
सम्बुद्धान् सकलं जिनात्मजगणं धर्मं च तैर्भाषितम्।
चक्षुर्भूतमनन्तबुद्धवचनस्यालोचने देहिनाम्
योऽमुं मध्यमकं चकार कृपया नागार्जुनस्तं नमे॥
(चन्द्रकीर्तिकृतायाः प्रसन्नपदाया अन्तिमांशभूता
मध्यमकशास्त्रस्तुतिः, पृ० १५५)

སྟོན་པ་གཽ་ཏམ་དང་ནི་དེའི་ཆོས་ལ་ཞུགས་…
…རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་མཐའ་དག་དང་།།
རྒྱལ་བའི་སྲས་པོའི་ཚོགས་དང་དེ་དག་གིས་གསུངས་…
…ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས།།
སངས་རྒྱས་གསུང་མཐའ་ཡས་ལ་བལྟ་ཕྱིར་…
…ལུས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་མིག་གྱུར་དབུ་མ་ནི།།
གང་གི་ཐུགས་རྗེའི་སྒོ་ནས་མཛད་པའི་…
…ཀླུ་སྒྲུབ་དེ་ལ་བདག་ནི་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།
(དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་མཛད་བྱང་གི་ཆ་ཤས། དབུ་མ། 'འ' ༣༠༠)

आचार्यनागार्जुनविरचितः

चतुःस्तवः

༄༅། །བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་
བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་
བཞུགས་སོ།།

लोकातीतस्तवः

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ།

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

लोकातीत! नमस्तुभ्यं विविक्तज्ञान[1]वेदिने ।
यस्त्वं जगद्धितायैव खिन्नः करुणया चिरम् ॥ १ ॥

དབེན་པའི་ཡེ་ཤེས་རིག་གྱུར་པ། །
འཇིག་རྟེན་འདས་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །
གང་ཁྱོད་འགྲོ་ལ་ཕན་པའི་ཕྱིར། །
ཡུན་རིང་ཐུགས་རྗེས་ངལ་བར་འགྱུར། །༡

---

1. ग–ज्ञाय।

हे लोकातीत, विविक्त (शून्यता) ज्ञान को जाननेवाले आपको नमस्कार है। जो आप करुणा की वजह से जगत् के हित के लिए ही हमेशा खिन्न रहते हैं।

स्कन्धमात्रविनिर्मुक्तो न सत्त्वोऽस्तीति ते मतम्[1] ।
सत्त्वार्थं च परं[2] खेदमगमस्त्वं महामुने ॥ २ ॥

ཕུང་པོ་ཙམ་ལས་གྲོལ་བ་ཡི།[3] །
སེམས་ཅན་མེད་པར་ཁྱོད་བཞེད་ལ། །
སེམས་ཅན་དོན་ལའང་མཆོག་གཞོལ་བར། །
ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ཉིད་ཞུགས།[4] །༢

स्कन्धों से निरपेक्ष (कोई) सत्त्व नहीं है—ऐसा आपका मत है, फिर भी महामुनि, आप प्राणियों के हित के लिए अत्यन्त खिन्नता को प्राप्त हैं।

तेऽपि स्कन्धास्त्वया धीमन् धीमद्भ्यः सम्प्रकाशिताः ।
माया-मरीचि-गन्धर्वनगर-स्वप्नसन्निभाः ॥ ३ ॥

བློ་ལྡན་ཁྱོད་ཀྱི་ཕུང་དེ་ཡང་། །
སྒྱུ་མ་སྨིག་རྒྱུ་དྲི་ཟ་ཡི། །
གྲོང་ཁྱེར་རྨི་ལམ་ཇི་བཞིན་དུ། །
བློ་ལྡན་རྣམས་ལ་རབ་ཏུ་བསྟན། །༣

---

1. ख,ग-तेन तम।
2. क,ख,घ-परिखेद०।
3. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "ཕུང་པོ་ཙམ་ལས་རྣམ་གྲོལ་བའི།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
4. པེ། གསེར་བྲིས། - བཞུགས།

हे प्रज्ञावान्, आपने उन स्कन्धों को भी बुद्धिमान् लोगों के लिए माया, मरीचि, गन्धर्वनगर और स्वप्न के समान प्रकाशित किया (कहा) है।

हेतुतः सम्भवो येषां तदभावान्न सन्ति ये ।
कथं नाम न ते[1] स्पष्टं प्रतिबिम्बसमा मताः[2] ॥ ४॥

གང་དག་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ་རྣམས། ।
དེ་མེད་པར་ནི་ཡོད་མིན་པས། ।
གཟུགས་བརྙན་ཉིད་དང་མཚུངས་པ་རུ། ।
གསལ་བར་ཅི་ཡི་ཕྱིར་མི་འདོད།[3] ། ༤

जिन (धर्मों) का हेतुओं से उत्पाद होता है और उन (हेतुओं) का अभाव होने से जो विद्यमान नहीं होते हैं, वे (धर्म) स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्ब के समान कैसे नहीं माने जाते हैं? (अर्थात् मानना चाहिए)।

---

1. क,ख–तत्स्पष्टं।
2. क,ख–गताः (श्लोक–४, नास्ति 'घ' पाठे)।
3. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་བློ་གྲོས་ཀྱི་སྟོད་འཇུག་འགྲེལ་པར་བཀྲུངས་ཡོད་ཀྱང་ཁྱད་མི་ཆེ། (དབུ་མ་ 'ཡ' ༣༨༩) ཚིགས་བཅད་འདི་ཡིགས་སྦྱར་ 'ག' པར་ཚང་མེད། སློབ་དཔོན་ཟླ་བའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་དུ་ "གང་དང་རྒྱུ་ལས་འབྱུང་འགྱུར་ཞིང་། །གང་དག་དེ་མེད་པས་མེད་པ། །དེ་དག་གཟུགས་བརྙན་དང་མཚུངས་པར། །གསལ་བ་ཇི་ལྟ་བུར་མི་བཞེད།།" ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དབུ་མ། 'འ' ༡༣༥) ཡང་དེ་སློབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་དབང་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར་ཡང་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༨༧) ཡང་སློབ་དཔོན་བི་རོ་ཙན་རཀྵིཏས་མཛད་པའི་སྤྱོད་འཇུག་བཀའ་འགྲེལ་དུ་ "གང་ཞིག་རྒྱུ་རྣམས་ལས་སྐྱེས་པ། །དེ་ཡོད་མིན་ཕྱིར་མེད་པ་སྟེ།། ཇི་བཞིན་དུ་ནི་གསལ་བ་དེ། །གཟུགས་བརྙན་དང་ནི་མཚུངས་པར་འདོད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད་པས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ཞིང་། འདིར་ཚིགས་བཅད་དེ་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ་ "བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་" ཞེས་པའི་གསལ་ཁ་འཁོད་མེད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།། (དབུ་མ། 'ཤ' ༡༥༧)

भूतान्यचक्षुर्ग्राह्याणि तन्मयं चाक्षुषं कथम् ।
रूपं त्वयैवं ब्रुवता रूपग्राहो निवारितः ॥ ५ ॥

འབྱུང་བ་མིག་གིས་གཟུང་[1]མིན་པས། །
དེ་དངོས་མིག་གིས་ཇི་ལྟར་ཡིན། །
གཟུགས་ཉིད་གཟུང་བར་རབ་བཀག་པ། །
གཟུགས་ཉིད་ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་ལྟར་གསུངས།[2] །༥

(जब) महाभूत चक्षुष् के द्वारा अग्राह्य हैं, (तब) भूतविकार अर्थात् भौतिक पदार्थ कैसे चाक्षुष (चक्षु के विषय) हो सकते हैं। रूप को इस प्रकार (चक्षु का अविषय) कहते हुए आप (भगवान्) ने रूप (के प्रति अभिनिवेश) का निवारण किया है।

वेदनीयं विना नास्ति वेदनाऽतो निरात्मिका ।[3]
तच्च वेद्यं स्वभावेन नास्तीत्यभिमतं तव ॥ ६ ॥

ཚོར་བྱ་མེད་པར་དེ་མེད་པས། །
ཚོར་བ་ཉིད་ནི་བདག་མེད་པས། །
ཚོར་བ་དེ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས། །
ཡོད་པ་མིན་པར་ཁྱོད་ཉིད་བཞེད། །༦

---

1. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – མིག་གི་གཟུགས་
2. ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར་ "འབྱུང་བ་མིག་གིས་གཟུང་བྱ་མིན། །དེ་ལས་བྱུང་མིན་ཇི་ལྟ་བུ། །ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་ལྟར་གཟུགས་གསུངས་པ། །གཟུགས་སུ་འཛིན་པ་བཟློག་པར་མཛད།།" ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (རྒྱུད་ 'ཙུ' ༨༦)
3. घ-निरात्मक।

वेदनीय (अनुभव के विषय) के विना वेदना नहीं होती। अत: वेदना निरात्मक (नि:स्वभाव) है और वह वेद्य (वेदनीय) भी स्वभावत: विद्यमान नहीं है—ऐसा आपका निश्चित मत है।

संज्ञार्थयोरनन्यत्वे मुखं दह्येत[1] वह्निना ।
अन्यत्वेऽधिगमाभावस्त्वयोक्तं[2] भूतवादिना ॥ ७ ॥

མིང་དང་དོན་དག་ཐ་དད་མིན། །
མེ་ཡིས་ཁ་ཉིད་འཚིག་[3]པར་འགྱུར། །
གཞན་ནའང་རྟོགས་པ་[4]མེད་འགྱུར་ཞེས། །
བདེན་པར་གསུངས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྙན། །༧

नाम और अर्थ के अभिन्न होने पर अग्नि का उच्चारण करने से मुख जलने लगेगा तथा (नाम और अर्थ के) भिन्न होने पर (सम्बन्ध नहीं रहने से नाम के द्वारा अर्थ के) बोध का अभाव होगा—ऐसा यथार्थवादी आपके द्वारा कहा गया है।

कर्ता स्वतन्त्र: कर्मापि त्वयोक्तं व्यवहारत:[5] ।
परस्परापेक्षिकी तु सिद्धिस्तेऽभिमतानयो: ॥ ८ ॥

བྱེད་པོ་རང་དབང་ཉིད་ལས་ཀྱང་།[6] །
ཐ་སྙད་དུ་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྙན། །

---

1. घ-दह्यते।
2. क,ख-क्तो।
3. སྡེ ཅོ། ཚིག
4. བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ ‘རྟོག་པ་མེད།’ ཅེས་གསལ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།
5. घ-हरित:।
6. སྣར། པེ། གསེར་བྲིས། - ཉིད་ལས་ཉིད།

ཕན་ཚུན་ལྟོས་པ་ཅན་ཉིད་དུ། |
གྲུབ་པར་ཁྱོད་ནི་བཞེད་པ་ལགས། [1] |

(हे भगवन्) आपने स्वतन्त्र कर्ता और कर्म का भी अस्तित्व व्यवहारतः (ही) कहा है। इन (कर्ता और कर्म) दोनों की सिद्धि परस्पराश्रित है—ऐसा आपको इष्ट है।

न कर्ताऽस्ति न भोक्ताऽस्ति पुण्यापुण्यं प्रतीत्यजम् ।
यत् प्रतीत्य न तज्जातं प्रोक्तं वाचस्पते त्वया ॥ ९ ॥

བྱེད་པོ་ཡོད་མིན་སྤྱོད་པོའང་[2]མེད། |
བསོད་ནམས་དེ་མིན་རྐྱེན་འབྲེལ་སྐྱེས། |
རྐྱེན་[3]ནས་སྐྱེས་ཀྱང་མ་སྐྱེས་[4]ཞེས། |
ཚིག་གི་བདག་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། [5] |༩

(स्वभावतः) कर्ता नहीं है और भोक्ता (भी) नहीं है। पुण्य और पाप (कर्म) हेतु-प्रत्यय की अपेक्षा से उत्पन्न (प्रतीत्यसमुत्पन्न) हैं। जो हेतु-प्रत्यय की

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་བློ་གྲོས་ཀྱི་སྟོད་འགྲེལ་པར་ལུང་འདྲེན་མཛད་པ་ལྟར་ན། "བྱེད་པ་རང་དབང་ལས་ཀྱང་ནི། །ཐ་སྙད་དུ་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །ཕན་ཚུན་བལྟོས་ནས་གྲུབ་པ་ནི། །གཉིས་པོ་དེ་དག་བཞེད་པ་ཡིན།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དཔེ་མ། 'ལ' ३३५)
2. པེ། གསེར་བྲིས། – པའང་མེད་
3. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། - བརྟེན་ནས་
4. སྣ། – སྐྱེད་ཅེས་
5. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྟོད་འགྲེལ་དུ། "བྱེད་པོ་མེད་ཅིང་ཟ་བ་མེད། །བསོད་ནམས་ཡོད་མིན་རྐྱེན་འབྱུང་བ། །རྟེན་ནས་འབྱུང་བ་མ་སྐྱེས་ཞེས། །ཚིག་གི་དབང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དཔེ་མ། 'ལ' ३३५)

अपेक्षा से उत्पन्न होता है। वह (वस्तुतः) उत्पन्न नहीं होता—ऐसा हे वाक्पति, आपने कहा है।

अज्ञाप्यमानं[1] न ज्ञेयं विज्ञानं तद्विना न च ।
तस्मात् स्वभावतो न स्तो ज्ञानज्ञेये त्वमूचिवान्[2] ॥ १० ॥

ཤེས་པ་མེད་པར་ཤེས་བྱ་[3]མིན། །
དེ་མེད་རྣམ་པར་ཤེས་པའང་མེད། །
དེ་ཕྱིར་ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་དག །
རང་དངོས་མེད་ཅེས་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །༡༠

बिना ज्ञापित होते हुए ज्ञेय नहीं होता तथा उस ज्ञेय के बिना विज्ञान भी नहीं होता। इसलिए हे भगवन्, आपने ज्ञान और ज्ञेय दोनों को 'स्वभावतः नहीं है'—ऐसा कहा है।

लक्ष्याल्लक्षणमन्यच्चेत् स्यात्तल्लक्ष्य[4]मलक्षणम् ।
तयोरभावोऽनन्यत्वे[5] विस्पष्टं कथितं त्वया ॥ ११ ॥

མཚན་ཉིད་མཚོན་བྱ་གཞན་ཉིད་ན།༦ །
མཚོན་བྱ་མཚན་ཉིད་མེད་པར་འགྱུར། །

---

1. ग.घ–अज्ञाप्यमानाम्।
2. ग–मान।
3. པེ། གསེར་བྲིས། – ཤེས་པ་མིན།
4. क,ख,ग,घ–लक्षण०।
5. घ–मनात्वे।
6. པེ། གསེར་བྲིས། – ཉིད་ནི།

ཐ་དད་མིན་ན་འང་དེ་[1]མེད་པར། |
ཁྱོད་ཀྱིས་གསལ་པོ་ཉིད་དུ་བསྟན།[2] |༡༡

लक्ष्य से लक्षण भिन्न है तो लक्ष्य अलक्षण अर्थात् बिना लक्षण के हो जाएगा। यदि दोनों अभिन्न हैं तो दोनों का अभाव हो जाएगा—ऐसा आपने स्पष्ट रूप से कहा है।

लक्ष्यलक्षणनिर्मुक्तं वागुदाहारवर्जितम् ।
शान्तं जगदिदं दृष्टं भवता ज्ञानचक्षुषा ॥ १२ ॥

མཚན་ཉིད་མཚོན་བྱ་རྣམ་བྲལ་ཞིང་། |
ཚིག་གིས་བརྗོད་པ་རྣམ་སྤངས་པར།[3] |
ཁྱོད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སྤྱན་ཉིད་ཀྱིས། |
འགྲོ་བ་འདི་དག་ཞི་བར་མཛད།[4] |༡༢

यह (सम्पूर्ण) जगत् लक्ष्य और लक्षण से विनिर्मुक्त (रहित), वाग्-व्यवहार (अभिधान) से विवर्जित (शब्द का अविषय) और शान्त (प्रपञ्चरहित) है—ऐसा आपके द्वारा ज्ञानचक्षु से देखा गया है।

---

1. སྡེ། ཅོ། – མེད་དེ་པར།
2. ཚིགས་བཅད་འདི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་དུ་ལུང་འདྲེན་མཛད་པ་ལྟར་བྱས་ན། "མཚན་ཉིད་མཚན་གཞི་ལས་གཞན་ན། །མཚན་གཞི་དེ་མཚན་མེད་པར་འགྱུར། །ཐ་དད་མེད་ན་དེ་དག་ནི།། མེད་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་གསལ་བར་བསྟན།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དབུ་མ། 'འ' ༣༣)
3. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་སེང་བཟང་གི་རྒྱན་སྣང་དུ་གསལ་ཡོད་སྐོར་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་ཚིག་ཀང་དང་པོ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་གཉིས་གཏན་མི་འདྲ་སྟེ། དེ་ཉིད་ལས "མཚོན་བྱ་མཚན་ཉིད་རྣམ་སྤངས་ཤིང་། །ཚིག་ཏུ་བརྗོད་པ་དང་བྲལ་ནི། །དེ་ཉིད་མཚོན་བྱ་མཚན་ཉིད་དུ། །གནས་པ་བཏགས་པ་ཡིན་པར་རིགས།།" ཞེས་གསལ་བས་ཆེས་མི་འདྲའོ། । (ཤེར་ཕྱིན། 'ཅ' ༣༧)
4. ད་ཡོད་ཀྱི་ཞིགས་སྒྱུར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་ན། 'འགྲོ་བ་འདི་དག་ཞི་བར་གཟིགས།།' ཞེས་གསལ་ཡོད།

न सन्नुत्पद्यते भावो नाप्यसन् सदसन्न च ।
न स्वतो नापि परतो न द्वाभ्यां जायते कथम् ॥ १३ ॥

དངོས་པོ་ཡོད་པ་ཉིད་མི་སྐྱེས། །
མེད་པའང་མ་ཡིན་ཡོད་མེད་མིན། །
བདག་ལས་མ་ཡིན་གཞན་ལས་མིན། །
གཉིས་མིན་སྐྱེ་བ་ཇི་ལྟ་བུ།[1] །༡༣

सत् (विद्यमान) पदार्थ उत्पन्न नहीं होता, न तो असत् (अविद्यमान पदार्थ) और न सदसत् (विद्यमान और अविद्यमान उभयस्वरूप पदार्थ) ही उत्पन्न होता है। पदार्थ (भाव) न तो स्वहेतु (अपने को हेतु बनाकर उस) से, न पर (अन्य हेतुओं) से और न स्वपर (उभय हेतुओं) से उत्पन्न होता है। अतः वह (पदार्थ) कैसे उत्पन्न होता है? (अर्थात् उत्पन्न ही नहीं होता)।

न सतः[2] स्थितियुक्तस्य विनाश उपपद्यते[3] ।
नासतोऽश्वविषाणेन समस्य समता कथम् ॥ १४ ॥

ཡོད་པ་གནས་པར་རིགས་འགྱུར་གྱི། །
འཇིག་པར་འགྱུར་བ་[4]མ་ཡིན་ནོ། །
མེད་པ་མི་གནས་པར་རིགས་པས། །
འཇིག་པར་འགྱུར་བ་མ་ཡིན་ནོ། [5] །༡༤

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཞེར་འབྱུང་སྒྲོན་འགྲེལ་དུ་གསལ་ཡོད། དེར་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ "གཉིས་ཀ་ལས་མིན་ཇི་ལྟར་སྐྱེ།" །ཞེས་གསལ་ཡོད། (དབུ་མ། 'ཞ' ༣༥༠)
2. ग,घ,–सत्।
3. ग–उपपद्यन्ते।
4. ཡིགས་སྒྱུར་ལྟར་ན་ 'འཐད་མ་ཡིན་' ཞེས་གསལ།
5. ད་ཡོད་ཀྱི་ཡིགས་སྒྱུར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་ན་ "རྟའི་རྭ་ལྟར་མེད་ན་ནི། །ཀུན་ནས་མཉམ་པ་ཇི་ལྟར་འགྱུར།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།

जो (स्वभावतः) सत् (विद्यमान) है, अर्थात् जो स्थिति (-अवस्था) से युक्त है, उसका विनाश युक्तिसंगत नहीं है और जो अश्वविषाण (घोड़े के सींग) की तरह (सर्वथा) असत् (अविद्यमान) है, उसका (भी विनाश अयुक्तिसंगत है, अतः) उन दोनों (सत् और असत्) में समता (एक स्वभावता) कैसे हो सकती है। (अर्थात् कोई पदार्थ सत् और असत् उभयस्वभाव कैसे हो सकता है?)।

भावान्नार्थान्तरो[1] नाशो नाप्यनर्थान्तरो[2] मतः ।
अर्थान्तरे[3] भवेन्नित्यो[4] नाप्यनर्थान्तरे भवेत्[5] ॥ १५ ॥

དངོས་དང་འཇིག་པ་ཐ་དད་མིན། །
ཐ་མི་དད་པའང་བཞེད་མ་ཡིན། །
ཐ་དད་ན་ནི་རྟག་པར་འགྱུར། །
ཐ་མི་དད་ན་མེད་པར་འགྱུར། [6] །༡༥

नाश भाव (वस्तु) से अर्थान्तर (भिन्न) इष्ट नहीं है और न (वस्तु नाश से) अभिन्न ही इष्ट है। (नाश को वस्तु से) भिन्न मानने पर भाव नित्य (अनाशस्वभाव) हो जाएगा तथा (वस्तु को नाश से) अभिन्न मानने पर भाव होगा (रहेगा) ही नहीं। (अर्थात् अभावस्वभाव हो जाएगा)।

एकत्वेन[7] हि भावस्य विनाश उपपद्यते ।
पृथक्त्वे[8]न हि भावस्य विनाश उपपद्यते ॥ १६ ॥

---

1. ग,घ-रां।
2. ग,घ-रं मतम्।
3. घ-तरं।
4. १५ तः २५ पर्यन्तं श्लोकाः 'घ'-पाठेन सन्ति।
5. १५-१६ श्लोकयोर्भोटानुवादो नोपलभ्यते।
6. ཚིགས་བཅད་ཨང་ ༡༥ དང་ ༡༦ གཉིས་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་གསལ་མེད་པས་དེ་དག་བོད་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་གནང་སྐབས་ཚད་སྒྲོན་བྱུང་བ་ཞིག་གམ། ཡང་ན་སྐབས་དེར་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་མ་ཚང་བ་ཞིག་ཕྱག་ཏུ་སོན་པ་གང་ཡིན་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།།
7. क,ख-एकत्वे ही न।
8. क,ख-पृथक्केन न।

གཅིག་ཉིད་ཡིན་ཕྱིར་དངོས་རྣམས་ཀྱི། །
འཇིག་པ་འཐད་པར་འགྱུར་བ་ཡིན། །
ཐ་དད་གྱུར་ན་དངོས་པོ་ཡི། །
འཇིག་པ་འཐད་པར་འགྱུར་མ་ཡིན། [1] །༡༦

(भाव और विनाश दोनों का) एकत्व (अभेद) होने पर भाव का विनाश उपपन्न (युक्त) होगा तथा (भाव और विनाश दोनों के) पृथक् (भिन्न) होने पर भाव का विनाश उपपन्न (युक्त) नहीं होगा।

विनष्टात् कारणात् तावत् कार्योत्पत्तिर्न युज्यते ।
न [2]चाविनष्टात् स्वप्नेन तुल्योत्पत्तिर्मता तव ॥ १७॥

རེ་ཞིག་ཞིག་པའི་རྒྱུ་ལས་ཀྱང་། །
འབྲས་བུ་འབྱུང་བར་མི་རིགས་ལ། །
མ་ཞིག་ལས་མིན་རྨི་ལམ་དང་། །
འདྲ་བའི་སྐྱེ་བ་ཁྱོད་ཉིད་བཞེད། །༡༧

विनष्ट कारण से कार्य की उत्पत्ति युक्त नहीं है और न तो अविनष्ट (विद्यमान) कारण से (कार्य की उत्पत्ति ही युक्त है)। इसलिए (हे भगवन्) आपके मतानुसार उत्पत्ति तो स्वप्न (की उत्पत्ति) के समान है।

निरुद्धाद् वाऽनिरुद्धाद् वा बीजादङ्कुरसम्भवः ।
मायोत्पादवदुत्पादः सर्व एव त्वयोच्यते ॥ १८॥

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཡང་གོང་སྨོས་ལྟར་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་གསལ་མེད་པས་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།།
2. क,ख–न वा०।

ཞིག་དང་མ་ཞིག་པ་དག་གིས། །
རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་དག[1] །
སྒྱུ་མ་འབྱུང་བ་བཞིན་དུ་འབྱུང་། །
ཀུན་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།[2] །༡༨

(अत:) निरुद्ध (नष्ट) बीज से अथवा अनिरुद्ध (अविनष्ट) बीज से अङ्कुर का उत्पाद होना तो सभी उत्पादों का मायिक उत्पाद होने की भाँति है—ऐसा (भगवन्) आपके द्वारा कहा जाता है।

अतस्त्वया जगदिदं परिकल्पसमुद्भवम् ।
परिज्ञातमसद्भूतमनुत्पन्नं न नश्यति ॥ १९ ॥

དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱིས་འགྲོ་འདི་དག །
ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་ལས་འབྱུང་བར། །
ཀུན་དུ་ཤེས་བྱ་འབྱུང་བ་ནའང་། །
སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་འགག་མེད་[3]གསུངས། །༡༩

---

1. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "ཞིག་པའམ་ཡང་ན་མ་ཞིག་པའམ། །ས་བོན་ལས་བྱུང་མྱུ་གུ་དག" ཅེས་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ།།
2. ཚིགས་བཅད་ ༡༨ ནས་ ༣༠ བར་འདི་དག་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་ནང་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚུལ་དུ་གསལ་ཡོད་ཀྱང༌། སྤྱོད་འགྲེལ་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་གསལ་མེད་པས་ཆད་སྐྱོན་བྱུང་བར་མངོན་ནོ། །ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་འགྲེལ་པར་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ་ 'བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་' ཞེས་ཚིག་གིས་དངོས་སུ་ཟིན་ནས་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་དེ་ཕྱིས་སུ་བསྣན་པ་ཞིག་མིན་ནམ་སྙམ་པའི་དོགས་གཞི་ཡོད། (ལེའུ་དགུ་པ། ཤོག་གྲངས ༣༨༩)
3. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ 'འཇིག་མེད་' ཞེས་གསལ་ཡོད། ཚིགས་བཅད་འདི་ཡང་སྤྱོད་འགྲེལ་ལེགས་སྦྱར་ཐོག་གསལ་ཡོད་ཀྱང་བོད་འགྱུར་དུ་གསལ་མེད།

इसलिए (हे भगवन्) आपने इस जगत् को विकल्प (कल्पना) से उत्पन्न, असद्भूत (अवास्तविक) एवं (वस्तुतः) अनुत्पन्न (ही) जाना है। (अतः उत्पाद न होने से वह जगत्) नष्ट नहीं होता है। (अर्थात् जगत् का न उत्पाद है और न निरोध होता है)।

नित्यस्य संसृतिर्नास्ति नैवानित्यस्य संसृतिः ।
स्वप्नवत् संसृतिः प्रोक्ता त्वया तत्त्वविदांवर ॥ २० ॥

རྟག་ལ་འཁོར་བ་ཡོད་མ་ཡིན། །
མི་རྟག་པ་ལའང་འཁོར་བ་མེད། །
དེ་ཉིད་རིག་པའི་མཆོག་ཁྱོད་ཀྱིས། །
འཁོར་བ་རྨི་ལམ་འདྲ་བར་གསུངས།[1] །༢༠

नित्य (वस्तु) का संसरण (गतिशीलता) नहीं होता और न तो अनित्य (वस्तु) का संसरण सम्भव है। इसलिए हे तत्त्वद्रष्टाओं में श्रेष्ठ, आपने संसार को स्वप्न के समान कहा है।

स्वयंकृतं परकृतं द्वाभ्यां कृतमहेतुकम् ।
तार्किकैरिष्यते दुःखं त्वया तूक्तं प्रतीत्यजम् ॥ २१ ॥

སྡུག་བསྔལ་རང་གིས་བྱས་པ་དང་། །
གཞན་གྱིས་བྱས་དང་གཉིས་ཀས་བྱས། །
རྒྱུ་མེད་པར་ནི་རྟོག་གེ་འདོད། །
ཁྱོད་ཀྱིས་རྟེན་ནས་འབྱུང་བར་གསུངས།[2] །༢༡

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཡང་སྔོན་འགྲེལ་ལུགས་སྔར་དུ་གསལ་ཡོད་ཀྱང་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་གསལ་མེད།
2. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་ཟླ་བའི་ཚིགས་གསལ་དུ་གསལ་ཡང་འགྱུར་ཁྱད་མི་ཆེ། (དབུ་མ་ 'འ' ༡༨,༨༠)

तार्किकों (अन्य दार्शनिकों) द्वारा दुःख स्वयं (अपने से) किया हुआ, पर (अन्य हेतु-प्रत्ययों) से किया हुआ, स्व एवं पर दोनों से किया हुआ या अहेतुक (बिना हेतु के किया हुआ) माना जाता है, किन्तु भगवन्, आपने उसे (दुःख को) प्रतीत्यसमुत्पन्न कहा है।

यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यता सैव ते मता ।
भावः स्वतन्त्रो नास्तीति सिंहनादस्तवातुलः ॥ २२ ॥

རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་གང་འབྱུང་བ། །
དེ་ཉིད་ཁྱོད་ནི་སྟོང་པར་བཞེད། [1] །
དངོས་པོ་རང་དབང་ཡོད་མིན་ཞེས། །
མཉམ་མེད་ཁྱོད་ཀྱི་སེངྒེའི་སྒྲས།[2] །༢༢

(हे भगवन्) आपके मत में जो प्रतीत्यसमुत्पाद है, वही शून्यता है। (कोई भी) पदार्थ (भाव) स्वतन्त्र अर्थात् हेतु-प्रत्ययनिरपेक्ष नहीं है—ऐसा आपका अतुल (असाधारण) सिंहनाद है।

सर्वसङ्कल्पहानाय शून्यतामृतदेशना ।
यस्य तस्यामपि ग्राहस्त्वयाऽसाववसादितः ॥ २३ ॥

ཀུན་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤང་[3]བའི་ཕྱིར། །
སྟོང་ཉིད་བདུད་རྩི་སྟོན་མཛད་ན། །

---

1. ཚིགས་རྐང་འདི་གཉིས་སློབ་དཔོན་སེངྒེ་བཟང་པོའི་རྒྱན་སྣང་དུ་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚུལ་དུ་ཟུར་རྗེས་སྟོམ་ཚར་བདུན་བཀོད་པར་མཛད་ཡོད།
2. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – སེང་གེའི་སྒྲ། (ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་གི་སྒྲོན་འགྲེལ་དུ་དྲངས་པ་ལྟར་བྱས་ན་ "གང་ཞིག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། །དེ་ཉིད་ཁྱོད་ཀྱིས་སྟོང་པར་བཞེད། །དངོས་པོ་རང་དབང་ཅན་མེད་ཅེས། །ཁྱོད་ཀྱི་སེངྒེའི་སྒྲ་མཚུངས་མེད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད།) (དཔེ་མ 'ལ' ༢༧༢)
3. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – སྤངས།

གང་ཞིག་དེ་ལ་ཞེན་གྱུར་པ། ।
དེ་ཉིད་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་སྨད།[1] །༣༣

सभी संकल्पों (वितर्क-विचार या विकल्प) के प्रहाण के लिए (आपने) शून्यतारूपी अमृत की देशना की है। जिस व्यक्ति को उस (शून्यता) के भी अस्तित्व में अभिनिवेश है, उसको आपने हतोत्साहित किया है।

निरीहा वशिकाः शून्या मायावत् प्रत्ययोद्भवाः ।
सर्वधर्मास्त्वया नाथ निःस्वभावाः प्रकाशिताः ॥ २४॥

བེམ་པོ་གཞན་དབང་སྟོང་པ་ཉིད། །
སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྐྱེན་ལས་འབྱུང་། 2 །
མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ནི། །
རང་བཞིན་མེད་པ་རབ་ཏུ་བསྟན། 3 །༣༨

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་དྲངས་པ་ལྟར་ན་ "རྣམ་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤང་བའི་ཕྱིར། །སྟོང་ཉིད་བདུད་རྩི་བསྟན་པ་ཡིན། །གང་ཞིག་དེ་རུ་འཛིན་པ་ཡང་།། འདི་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་སྤངས་པ་ལགས།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དབུ་མ 'ལ' ༡༩༡) ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར "ཀུན་རྟོག་ཐམས་ཅད་སྤོང་བའི་ཕྱིར།། སྟོང་ཉིད་བདུད་རྩི་བསྟན་པ་ནི། །གང་ཡིན་དེ་ཡི་འཛིན་པ་ཡང་། །ཁྱོད་ཀྱིས་མེད་པར་མཛད་པ་ཡིན།" །ཞེས་གསལ་བས་ཁྱད་པར་ཆེ། (རྒྱུད 'ཙུ' ༥༩) ཡང་དེ་འཇུག་པ་རང་འགྲེལ་དུ་ཡང་གསལ་ཡོད། (དེབ། ༣༠༥)
2 སྡེ་དགེ་སོགས་སུ་ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ 'སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྐྱེན་འབྱུང་བར།' །ཞེས་གསལ་ཡང་ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།
3. ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གཉིས་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ "མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་ཀུན་གྱི། །དངོས་མེད་གསོམས་པར་མཛད་པ་ལགས།" །ཞེས་གསལ་ཡང་། ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་དྲངས་པའི་འགྱུར་དེ་ལེགས་སྦྱར་དང་མཐུན་ཆེ་བ་སོགས་ཀྱི་ལེགས་ཆ་ཆེ་བས་དེ་དང་མཐུན་པར་བཀོད་དོ། ། འགྲེལ་པ་དེར་ "འདོད་པ་མེད་པ་སྟོང་པ་ཉིད། །སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྐྱེན་ལས་འབྱུང་། །མགོན་པོ

हे नाथ, आपने सभी धर्मों को निरीह (तुच्छ) पराधीन, शून्य, माया की भाँति प्रतीत्यसमुत्पन्न एवं निःस्वभाव प्रकाशित किया है।

न त्वयोत्पादितं किञ्चिन्न[1] किञ्चिच्च निरोधितम् ।
यथा पूर्वं तथा पश्चात् तथतां बुद्धवानसि ॥ २५ ॥

ཁྱོད་ཀྱིས་ཅུང་ཞིག་མ་བསྐྱེད་ཅིང་། །
འགའ་ཡང་འགག་པ་མ་མཆིས་ལ། །
སྔོན་གྱི་ཇི་ལྟར་ཕྱིས་དེ་བཞིན། །
དེ་བཞིན་ཉིད་ནི་ཐུགས་སུ་ཆུད། །༣༥

आपके द्वारा (मतानुसार) न कुछ उत्पादित किया जाता है और न कुछ निरुद्ध किया जाता है। जैसे पूर्व में है, वैसे ही पीछे भी है—ऐसी (अविकार-स्वभाव) तथता को आपने जाना है।

आर्यैर्निषेवितामेना[2]मनागम्य हि भावनाम् ।
ना[3]निमित्तस्य विज्ञानं भवतीह कथञ्चन ॥ २६ ॥

འཕགས་པས་བརྟེན་པ་འདི་ལྟ་བུ། །
དངོས་པོས་རྟོགས་པ་མ་ཡིན་ཞིང་། །

ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་ནི། །རང་བཞིན་མེད་པར་རབ་ཏུ་བསྟན།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ། (དབུ་མ་ 'ཡ' ༣༨༠) ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར་ "འདོད་པ་མེད་དབང་དང་ལྡན་སྟོང་། །སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་རྐྱེན་བྱུང་བར། །མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཆོས་ཀུན་ནི། །དངོས་པོ་མེད་པར་སྟོན་པར་མཛད།" །ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༥༩)

1. ग–किञ्चिन्न चा।
2. ख,ग–०मेताम्।
3. क,ख,ग–अनिमि०।

རྒྱུ་མཚན་མེད་པས་རྣམ་ཤེས་ནི། །
ནམ་ཡང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ།[1] །༣༦

आर्यों द्वारा सेवित भावना की अपेक्षा किये बिना किसी तरह अनिमित्त (शून्यता) विषयक विज्ञान (बोध) यहाँ (महायान में) नहीं होता है।

अनिमित्तमनागम्य मोक्षो नास्ति त्वमुक्तवान् ।
अतस्त्वया महायाने तत् साकल्येन प्रदर्शितम्[2] ॥ २७॥

མཚན་མ་མེད་ལ་མ་ཞུགས་པར། །
ཐར་པ་མེད་ཅེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར། །
དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་ཆེན་ལས།[3] །
མ་ལུས་པར་ནི་དེ་ཉིད་བསྟན། [4] །༣༧

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་བསྟོད་ཚོགས་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ "འཕགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟན་པ་ཡི། །བསྒོམ་མ་ཞུགས་པར་མཚན་མེད་འདི། །རྣམ་པར་ཤེས་པར་འགར་གྱུར་རམ།།" ཞེས་ཚིག་ཀར་གསུམ་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། སློབ་དཔོན་ཟླ་བའི་སྟོང་ཉིད་བདུན་ཅུ་པའི་འགྲེལ་པར་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་ཡོད་པ་ཆ་ཚང་ཞིང་ལེགས་པས་དཀྱུས་སུ་བཞག་གོ། བསྟོད་ཚོགས་ཇུ་བར་གསལ་བ་དང་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ་གཉིས་ལ་ཚིག་ཀར་མང་ཉུང་ཙམ་དུ་མ་ཟད་འགྱུར་ཁྱད་དང་དོན་ལ་ཡང་ཁྱད་པར་ཤིན་ཏུ་ཆེན་པོ་ཡོད། (སྟོང་ཉིད་བདུན་ཅུ་པའི་འགྲེལ་པ། དབུ་མ། 'ཡ' ༣༧༥)
2. ग,घ–देशितम्।
3. བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ "དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་ཆེན་རྣམས།" ཞེས་གསལ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།
4. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་གྲགས་པའི་འཇུག་པ་རང་འགྲེལ་ལས། "མཚན་མ་མེད་པར་མ་རྟོགས་པར། །ཁྱོད་ཀྱི་ཐར་པ་མེད་པར་གསུངས། །དེ་ཕྱིར་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་ཆེན་ལས།། དེ་ནི་ཚང་བར་བསྟན་པ་ལགས།།" ཞེས་གསལ་ཡོད། (སེམས་བསྐྱེད་དང་པོ། ༣༥ དབ)

अनिमित्त (शून्यता) की अपेक्षा किए बिना मोक्ष नहीं होता—ऐसा आपने कहा है। इसलिए आपने महायान में उसे विस्तारपूर्वक दिखाया है।

यदवाप्तं[1] मया पुण्यं स्तुत्वा त्वां स्तुतिभाजनम् ।
निमित्त[2]बन्धनापेतं भूयात् तेनाखिलं जगत् ॥ २८ ॥

བསྟོད་པའི་སྣོད་ཁྱོད་བསྟོད་པ་ལས། །
བདག་གིས་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པ། །
དེས་ནི་འགྲོ་བ་མ་ལུས་རྣམས། །
མཚན་མའི་འཆིང་ལས་གྲོལ་གྱུར་ཅིག །༢༨

(हे भगवन्) स्तुतियोग्य आपकी स्तुति करके मैंने जो पुण्य अर्जित किया है, उसके फलस्वरूप यह सम्पूर्ण जगत् निमित्त रूपी बन्धनों से रहित (मुक्त) हो जाए।

॥ लोकातीतस्तवः समाप्तः[3] ॥

འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་ སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ། །རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཀྲྀཥྞཔཎྜིཏ་དང་། ལོ་ཙཱ་བ་ཚུལ་ཁྲིམས་རྒྱལ་བས་བསྒྱུར་ཅིང་ཞུས་ཏེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ། །

•

1. ग,घ-यदवाप्त।
2. घ-निमित्तं।
3. घ-प्रथम खण्डे लोकातीतस्तव समाप्तः, ग-इति लोका०।

निरौपम्यस्तवः

དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ།

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

निरौपम्य नमस्तुभ्यं निःस्वभावार्थवादिने ।
यस्त्वं दृष्टिविपन्नस्य लोकस्यैव हितोद्यतः ॥ १ ॥

གང་ཞིག་ལྟ་བས་ཕོངས་པ་ཡི། །
འཇིག་རྟེན་འདི་ལ་ཕན་བརྩོན་ཁྱོད། །
དངོས་པོ་མེད་པའི་དོན་རིག་པས།[1] །
དཔེ་མེད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་བསྟོད། །༡

जो आप दृष्टिविपन्न (मिथ्या दृष्टि वाले) लोक के हित के लिए ही (सदा) तत्पर हैं, हे निरुपम (उपमारहित), (सभी) वस्तुओं को निःस्वभाव कहनेवाले आपको (हमारा) प्रणाम है।

न च नाम त्वया किञ्चिद् दृष्टं बौद्धेन चक्षुषा ।
अनुत्तरा च ते नाथ दृष्टिस्तत्त्वार्थदर्शिनी ॥ २ ॥

གང་ཞིག་ཁྱོད་ཀྱིས་ཅུང་ཞིག་ཀྱང་། །
སངས་རྒྱས་སྤྱན་གྱིས་མ་གཟིགས་པ། །

---

1. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "རང་བཞིན་མེད་པའི་དོན་གསུངས་པ།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།

ཁྱོད་ཀྱི་གཟིགས་པ་བླ་མེད་དེ།[1] །

དེ་ཉིད་དོན་ནི་[2]རིག་པ་ལགས། །༢

आपने बुद्धचक्षु के द्वारा कुछ (वस्तु) भी (स्वभावत:सत्) नहीं देखा है। (इसलिए) हे नाथ, तत्त्व का साक्षात् करनेवाली आपकी दृष्टि (प्रज्ञा) अनुत्तर (सर्वश्रेष्ठ) है।

न बोद्धा न च बोद्धव्यमस्तीह परमार्थतः ।
अहो परमदुर्बोधां धर्मतां बुद्धवानसि ॥ ३ ॥

དོན་དམ་པ་ཡི་ཡོད་པ་ཉིད། །

རྟོགས་དང་རྟོགས་བྱ་མི་མངའ་ཞིང་། །

ཨེ་མའོ་མཆོག་ཏུ་རྟོགས་དཀའ་བའི། །

ཆོས་ཉིད་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱིས་རྟོགས། །༣

यहाँ (इस लोक में) परमार्थतः न कोई बोद्धा अर्थात् ज्ञाता है और न कोई बोद्धव्य अर्थात् ज्ञेय (ज्ञान का विषय) है। आश्चर्य है, अपने परम दुर्बोध धर्मता (शून्यता) का अवबोध किया है।

न त्वयोत्पादितः[3] कश्चिद् धर्मो नापि निरोधितः ।
समतादर्शनेनैव प्राप्तं पदमनुत्तरम्[4] ॥ ४ ॥

ཁྱོད་ཀྱིས་ཅུང་ཞིག་མ་བསྐྱེད་ཅིང་། །

ཆོས་རྣམས་བཀག་པའང་མ་ལགས་ལ། །

---

1. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "མགོན་ཁྱོད་གཟིགས་པ་བླ་མེད་དེ།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. སྣ། - དེ་ཉིད་དེ་ནི།
3. घ-तं।
4. ख-त्तमम्।

མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་བ་ཡིས། །
བླ་ན་མེད་པའི་གོ་འཕང་བརྙེས། །༨

(हे भगवन्) आपने किसी (स्वभावतः सत्) धर्म का न उत्पाद किया है और न (उसका) निरोध किया है। (सभी धर्मों में विद्यमान इस) समता (निः-स्वभावता) के दर्शन के कारण (आपने) अनुत्तर (बुद्धत्व) पद प्राप्त किया है।

न संसारापकर्षेण[1] त्वया निर्वाणमीप्सितम् ।
शान्ति[2]स्तेऽधिगता नाथ संसारानुपलब्धितः[3] ॥ ५ ॥

འཁོར་བ་སྤངས་པར་གྱུར་པ་ཡིས། །
མྱ་ངན་འདས་ཁྱོད་མི་བཞེད་ཀྱིས།[4] །
འཁོར་བ་མ་དམིགས་པ་ཉིད་ཀྱི། །
ཞི་དེ་མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་རྟོགས། [5] །༥

आपने संसार के अपकर्ष (प्रहाण) से निर्वाण की चाह नहीं की है, (अपितु) हे नाथ, संसार की (स्वभावतः) अनुपलब्धि के द्वारा आपने शान्ति (अप्रतिष्ठित निर्वाण) का अधिगम किया है।

त्वं विवेदैकरसतां संक्लेशव्यवदानयोः ।
धर्मधात्वविनिर्भेदाद् विशुद्धश्चासि सर्वतः ॥ ६ ॥

ཁྱོད་ཀྱིས་ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་དང་། །
རྣམ་བྱང་རོ་གཅིག་གྱུར་རིག་པས། །

---

1. क,ख,घ-संसारात्प्रकर्षेण।
2. घ-शान्त०।
3. क,ख,घ-संसारानपराधितः।
4. སྡེ། ཅོ། - ཀྱི
5. ཚིགས་བཅད་འདིའི་ཞིགས་སྒྱུར་རྒྱ་དཔེ་ལག་བྲིས་ཁག་གསུམ་ནང་མ་དག་པ་ཇི་སྙེད་ཅིག་ཡོད།

ཆོས་དབྱིངས་མངོན་པར་དབྱེར་མེད་པ། །
ཀུན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པར་གྱུར། །༦

आपने संक्लेश (अकुशलपक्ष) और व्यवदान (कुशलपक्ष) दोनों की एकरसता अर्थात् (निरात्मक होने से) एकस्वभावता को जाना है। धर्मधातु (नैरात्म्य या शून्यता) में भेद नहीं होने से आप पूरी तरह से विशुद्ध हैं।

नोदाहृतं त्वया किञ्चिदेकमप्यक्षरं विभो ।
कृत्स्नश्च वैनेयजनो धर्मवर्षेण तर्पितः[1] ॥ ७॥

གཙོ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་འགའ་[2]ཞིག་ཏུ། །
ཡི་གེ་གཅིག་ཀྱང་མ་གསུངས་ལ། [3] །
གདུལ་བྱའི་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ། །
ཆོས་ཀྱི་ཆར་གྱིས་ཚིམ་པར་[4]མཛད། [5] །༧

---

1. घ-तर्पिता।
2. སྣ། པེ། – ཀྱིས་གང་ཞིག
3. པེ། – གསུངས་པ
4. སྣ། པེ། – པའང་མཛད།
5. ཚིག་ཀང་ཕྱི་མ་གཉིས་ཤེར་འབྱུང་སྦྱོད་འགྲེལ་དུ་ "ཆོས་ཀྱི་ཆར་གྱིས་གདུལ་བྱ་ཡི། །འགྲོ་བ་མ་ལུས་ཚིམ་པར་མཛད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད། (དབུ་མ། 'ལ' ༣༧༨) ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་ "དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བར་" གསལ་ཡོད་ཀྱང་ཁྱད་ཆེ་བ་མེད། (རྒྱུད། 'ཕྱི' ༡༡༩) ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་བཻ་རོ་ཙ་ན་རཀྵི་ཏས་མཛད་པའི་སྦྱོད་འཇུག་དཀའ་འགྲེལ་ལས་ "བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་ཀྱང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་མངའ་བདག་ཁྱོད་ཀྱིས་ནི། ཡི་གེ་གཅིག་ཀྱང་མ་གསུངས་ཏེ། །གདུལ་བྱའི་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་ལ། ཆོས་ཀྱི་ཆར་པས་ཚིམ་པར་མཛད།" ཅེས་གསལ་ཡོད། (དབུ་མ་ 'ཤ' ༡༨༣)

हे प्रभो, आपने (कहीं भी) कुछ भी, एक अक्षर भी नहीं कहा है, फिर भी आपने सम्पूर्ण विनेयजनों को धर्म (उपदेश) की वर्षा से तृप्त किया है।

न तेऽस्ति सक्तिः स्कन्धेषु न धात्वायतनेषु च ।
आकाशसमचित्तस्त्वं सर्वधर्मेषु निश्रितः[1] ॥ ८ ॥

མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ཐུགས་མངའ་ཁྱོད། །
ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ། །
ཆགས་པར་གྱུར་པ་མི་མངའ་བས། །
ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་བརྟེན་མ་ལགས།[2] །༨

(हे नाथ) आपकी (पाँच) स्कन्धों, (बारह) आयतनों एवं (अठारह) धातुओं में (कुछ भी) आसक्ति नहीं है। आप सभी धर्मों में आकाश के समान (निर्विकार) चित्त वाले होते हुए आश्रित हैं।

सत्त्वसंज्ञा च ते नाथ सर्वथा न प्रवर्तते ।
दुःखार्तेषु[3] च सत्त्वेषु त्वमतीव कृपात्मकः ॥ ९ ॥

མགོན་ཁྱོད་སེམས་ཅན་འདུ་ཤེས་ཀྱིས། །
འཇུག་པ་ཀུན་ཏུ་མི་མངའ་ཡང་། །

---

1. भोट पाठे-अनिश्रितः।
2. སྡེ་དགེ་སྣར་མ་སོགས་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ "ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་བརྟེན་མ་ལགས།" ཞེས་དགག་པའི་རྣམ་པ་ཅན་དུ་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་ན་ "ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་བརྟེན་པ་ལགས།" །ཞེས་སྒྲུབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་ཡོད། ཚིགས་བཅད་འདིའི་བརྗོད་ཚིག་བཀོད་པའི་རིམ་པ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན། "ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་ལ། །ཆགས་པར་གྱུར་པ་མི་མངའ་བས། །མཁའ་དང་མཉམ་པའི་ཐུགས་མངའ་ཁྱོད། །ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་བརྟེན་པ་ལགས།" །ཞེས་བཀོད་ཡོད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།
3. ग-दुःखात् तेषु।

སྡུག་བསྔལ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་ལ། །
སྙིང་རྗེའི་བདག་ཉིད་གྱུར་པ་འང་ཁྱོད། [1] །༩

हे नाथ, आप में सत्त्वसंज्ञा बिलकुल ही प्रवृत्त नहीं है (फिर भी) दुःख से पीड़ित सत्त्वों के प्रति आप अत्यन्त करुणावान् हैं।

सुखदुःखात्मनैरात्म्यनित्यानित्यादिषु प्रभो ।
इति नानाविकल्पेषु बुद्धिस्तव न सज्जते ॥ १० ॥

བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་བདག་བདག་མེད། [2] །
རྟག་མི་རྟག་སོགས་ལ་[3]གཙོ་ཁྱོད། །
དེ་ལྟའི་རྣམ་རྟོག་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །
ཐུགས་ནི་ཆགས་པར་འགྱུར་མ་ལགས། །༡༠

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྒྲོན་འགྲེལ་དུ་ "མགོན་ཁྱོད་སེམས་ཅན་འདུ་ཤེས་ལ། །རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་འཇུག་མ་ཡིན། །སེམས་ཅན་སྡུག་བསྔལ་གྱིས་ཉེས་ལ། །ཁྱོད་ནི་ཤིན་ཏུ་ཐུགས་རྗེའི་བདག" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། ཚིགས་བཅད་འདི་ལུང་འདྲེན་མཛད་པའི་ཚེ་ "བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་" ཞེས་ཚིག་གིས་དངོས་སུ་ཟིན་ཡོད། (དཔེ་མ། 'ལ' ༣༩༠) ཡང་དབུ་མའི་མན་ངག་ཟ་མ་ཏོག་ཁ་ཕྱེ་བར་ཚིག་རྐང་ཕྱི་མ་གཉིས། "སྡུག་བསྔལ་ཅན་གྱི་སེམས་ཅན་ལ། །སྙིང་རྗེ་ཕན་གདོང་མཛད་པ་ཁྱོད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད། (དཔེ་མ། 'ཀི' ༡༡༡) ཡང་ཚིགས་བཅད་དེ་སློབ་དཔོན་བཻ་རོ་ཙན་རཀྵིཏས་མཛད་པའི་སྒྲོན་འཇུག་བཀའ་འགྲེལ་དུ་ཡང་། "དེ་སྐད་དུ་བསྟོད་པ་བཞི་པ་ལས་ཀྱང་། མགོན་ཁྱོད་སེམས་ཅན་འདུ་ཤེས་ཀྱིས། །རྣམ་པ་ཀུན་ཏུ་འཇུག་མི་མཛད། །སྡུག་བསྔལ་གྱིས་གཟིར་སེམས་ཅན་ལ། །ཁྱོད་ནི་ཤིན་ཏུ་བརྩེ་བར་ལྡན།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཤིན་ཏུ་གོ་བདེ་ཞིང་ལེགས་པར་མངོན་ནོ།། (དཔེ་མ 'ཤི' ༡༩༨)
2. ཚིག་རྐང་དང་པོ་བོད་འགྱུར་ཕལ་ཆེ་བར་ "བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་དེ་བཞིན་དུ།" ཞེས་གསལ་ཡོད། ཡང་སྣར་ཐང་སྣར་མར་ "བདེ་དང་སྡུག་བསྔལ་དེ་གྱུར་པ།" ཞེས་གསལ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེར་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ་བས་དཀྱུས་སུ་བཞག་གོ །
3. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – ལས་གཙོ་ཁྱོད།

हे प्रभो, सुख, दु:ख, आत्मा, निरात्मता, नित्य, अनित्य आदि नाना प्रकार के विकल्पों में आपकी बुद्धि आसक्त नहीं है।

न गतिर्नागतिः काचिद् धर्माणामिति[1] ते मतिः ।
न क्वचिद् राशितः प्रोक्तो धर्मार्थ[2]परमार्थवित् ॥ ११ ॥

ཆོས་རྣམས་གང་དུའང་འགྲོ་འོང་མེད། །
དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་བཞེད་པའང་ལགས།[3] །
འགའ་རུ་སྤུངས་པ་མ་མཆིས་པ།[4] །
ཆོས་དོན་དོན་དམ་རིག་པས་གསུངས།[5] །

आपकी बुद्धि (मत) के अनुसार धर्मों का न (कहीं) गमन है और न (उनका कहीं से) आगमन है तथा न कहीं उनका संचय होता है—ऐसा धर्मों और अर्थों के परमार्थ-स्वभाव को जानने वाले (भगवन्), आपने कहा है।

सर्वत्रानुगतश्चासि न च यातो[6]ऽसि कुत्रचित् ।
जन्मधर्मशरीराभ्यामचिन्त्यस्त्वं महामुने ॥ १२ ॥

ཀུན་གྱི་རྗེས་སུ་ཞུགས་གྱུར་ཀྱང་། །
འགའ་རུ་འབྱུང་བའང་[7]མ་ལགས་ལ། །

---

1. घ-मति।
2. ग-भावोऽस्ति अतोऽसि।
3. བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ "དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གཤེགས་པའང་ལགས།" ཞེས་གསལ་ཡང་ ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་དཀྱུས་སུ་བཞག་གོ།
4. སྣ། – སྤུངས་པའང་མ་ལགས་ལ། དེ་བཞིན་དོན་དམ།
5. བོད་བསྒྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ "དེ་ཕྱིར་དོན་དམ་རིགས་པའང་ལགས།" ཞེས་གསལ་ཡང་ ལེགས་སྦྱར་གྱི་མ་དཔེ་ཐལ་ཆེ་བར་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་དཀྱུས་སུ་བཞག་གོ།
6. ग,घ-जातो।
7. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – འགའ་རུ་འབྱུང་ཡང་།

ཐུབ་ཆེན་ཁྱོད་ཀྱི་སྐྱེ་བ་དང་། །
ཆོས་ཀྱི་སྐུ་དག་བསམ་མི་ཁྱབ། [1] །༡༢

आप सर्वत्र (सभी धर्मों में) अनुगत हैं, फिर भी कहीं गये नहीं हैं। हे महामुनि, जन्म और धर्मकाय की दृष्टि से आप सर्वथा अचिन्त्य हैं।

एकत्वान्यत्व[2]रहितं प्रतिश्रुत्कोपमं जगत् ।
संक्रान्तिनाशापगतं[3] बुद्धवान्[4] त्वमनिन्दितः ॥ १३ ॥

གཅིག་དང་གཞན་པ་རྣམ་[5]སྤངས་པ། །
བྲག་ཅན་ལྟ་བུའི་འགྲོ་བ་རྣམས། །
འཕོ་དང་འཇིག་པ་རྣམ་[6]སྤངས་པ། [7] །
སྨད་པ་མེད་པ་[8]ཁྱོད་ཀྱིས་རྟོགས། [9] །༡༣

---

1. ཚིག་རྐང་ཕྱི་མ་གཉིས་བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ "སྐྱེ་དང་ཆོས་དང་སྐུ་རྣམས་ཀུང་། །ཐུབ་ཆེན་ཁྱོད་ཀྱི་བསམ་མི་ཁྱབ།" །ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བསྡུན་ན་བརྗོད་ཚིག་བཀོད་པའི་རིམ་པ་གོང་གསལ་ལྟར་བྱས་ན་འཐད་ཆེ་བར་མངོན་ནོ། །
2. ग-एकानेकत्व।
3. प्रसन्नपदा-०मासाद्य।
4. प्रसन्नपद-बुद्धवांस्०।
5. སྡེ། ཅོ། – རྣམས་སྤངས་པ།
6. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – རྣམས་སྤངས།
7. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "འཕོ་དང་འཇིག་པ་རྣམ་བྲལ་བར།" །ཞེས་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ།།
8. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – མེད་པར་ཁྱོད།
9. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་ཟླ་བའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་དུ་ "འགྲོ་བ་སྒྲ་བརྙན་དང་འདྲ་བར།། གཅིག་ཉིད་གཞན་ཉིད་དང་བྲལ་ཞིང་། །འཕོ་དང་འཇིག་པ་དང་བྲལ་བར། །སྨད་མེད་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐུགས་སུ་ཆུད།" །ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ། (དཔེ་མ། 'འ' ༧༨)

यह जगत् एकत्व (अभेद) और अन्यत्व (भेद) से रहित है, प्रतिश्रुत्का (प्रतिध्वनि) के समान है तथा (परमार्थतः) संक्रान्ति (उत्पत्ति) और नाश (क्षय) से रहित है—ऐसा हे अनिन्दित, आपने जाना है।

शाश्वतोच्छेदरहितं लक्ष्य[1]लक्षणवर्जितम् ।
संसारमवबुद्धस्त्वं स्वप्नमायादिवत् प्रभो ॥ १४ ॥

རྟག་དང་ཆད་པ་དང་བྲལ་ཞིང་། །
མཚན་ཉིད་མཚོན་བྱ་རྣམ་སྤངས་པར། །
གཙོ་བོས་རྨི་ལམ་སྒྱུ་སོགས་བཞིན། [2] །
འཁོར་བ་ངེས་པར་རྟོགས་པ་ལགས། [3] །༡༤

यह संसार स्वप्न और माया के समान शाश्वत (नित्य) और उच्छेद—इन दोनों अन्तों से रहित है तथा लक्ष्य और लक्षण से विरहित है—ऐसा हे प्रभो, आपने जाना है।

वासनामूलपर्यन्ताः[4] क्लेशावद्या[5] विनिर्जिताः[6] ।
क्लेशप्रकृतितश्चैव त्वयामृतमुपार्जितम् ॥ १५ ॥

---

1. ग-लक्ष।
2. སྡེ་དགེ་པར་མ་སོགས་སུ་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "གཙོ་བོས་རྨི་ལམ་སྒྱུ་ཚོགས་བཞིན།" ཞེས་གསལ་ཡང་། སྣར་ཐང་དང་པེ་ཅིང་པར་མ་གཉིས་སུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་དེ་ནི་ལེགས་སྦྱར་དང་མཐུན་ནོ།།
3. ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གཉིས་ཀྱི་བརྗོད་ཚིག་བསྒྱུར་བའི་རིམ་པ་ "གཙོ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་འཁོར་བ་ནི། །རྨི་ལམ་སྒྱུ་སོགས་བཞིན་དུ་རྟོགས།" ཞེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་མངོན་ནོ། །
4. घ-पर्यन्तोः।
5. ग-क्लेशास्तेनद्या।
6. ग,घ-निर्जिताः।

ཉོན་མོངས་སྒྲིབ་པའི་གཞིར་གྱུར་པའི། །
མཐར་ཐུག་བག་ཆགས་ཀུན་ལས་རྒྱལ།།[1] །
ཉོན་མོངས་ཉིད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡང་། །
ཁྱོད་ཀྱིས་བདུད་རྩི་ཉིད་དུ་བསྒྲུབས། །༡༥

क्लेश और अवद्य को मूलभूत वासना के साथ (आपने) पराजित (प्रहाण) कर दिया है। क्लेश के स्वभाव से भी आपने अमृत ग्रहण कर लिया है।

अलक्षणं त्वया धीर[2]दृष्टं रूपमरूपवत् ।
लक्षणोज्ज्वलगात्रश्च दृश्यसे रूपगोचरे ॥ १६ ॥

དཔའ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་[3]གཟུགས་རྣམས་ཀྱི། །
མཚན་མ་མེད་མཐོང་གཟུགས་མེད་བཞིན། །[4]

---

1. བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ཚིག་རྐང་དང་པོ་གཉིས་ "བག་ཆགས་གཞིར་གྱུར་མཐར་ཐུག་པའི།། ཁྱོད་ཀྱིས་ཉོན་མོངས་སྒྲིབ་པ་སྤངས།།" ཞེས་གསལ་ཡང་ཞིགས་སྦྱར་ལྟར་ན་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ། །ཚིགས་བཅད་འདི་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་ཏུ་བྱེད་པ་ལས་ "མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཉོན་མོངས་པ། །བག་ཆགས་རྩ་བའི་མཐར་སྤངས་པ། །ཉོན་མོངས་རང་བཞིན་ཉིད་ལས་ནི། །ཁྱོད་ཀྱི་བདུད་རྩི་ཉེ་བར་བསྒྲུབས།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁུངས་ཆེ་ཞིང་གོ་དོན་ཆེས་བཟང་ངོ་། (རྒྱུད་ 'ཙུ' ༣༥)
2. ग–धीर।
3. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – ཁྱོད་ཀྱི
4. ཚིག་རྐང་དང་པོ་གཉིས་ "དཔའ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟུགས་མེད་བཞིན། །གཟུགས་ཀྱང་མཚན་ཉིད་མེད་པར་གཟིགས།།" །ཞེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་མངོན་སྣང་བས་དཔྱད་པར་བྱའོ། །བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ 'མཚན་མ་མེད་མཐོང་' ཞེས་གསལ་ཡང་ཞིགས་སྦྱར་དུ་ 'མཚན་ཉིད་མེད་མཐོང་' ཞེས་གསལ་ཡོད།

མཚན་གྱི་འབར་བའི་སྐུ་ཉིད་ཀུང་། །
གཟུགས་སུ་སྤྱོད་ཡུལ་ཉིད་དུ་མཐོང་། །༡༦

हे धीर, आपने अरूप के समान रूप को (भी) अलक्षण (ही) देखा है। (फिर भी) रूपी विषय के रूप में आप (३२) लक्षण (और ८० अनुव्यञ्जन) से विभूषित काय से युक्त दिखलाई पड़ते हैं।

न च रूपेण दृष्टेन दृष्ट[1] इत्यभिधीयसे ।
धर्मदृष्ट्या[2] सुदृष्टोऽसि धर्मता न च दृश्यते ॥ १७॥

གཟུགས་སུ་མཐོང་བས་མཐོང་ངོ་ཞེས། །
མངོན་པར་བརྗོད་པར་ནུས་མ་ཡིན། [3] །
ཆོས་མཐོང་བས་ནི་ཤིན་ཏུ་མཐོང་། །
ཆོས་ཉིད་མཐོང་བ་མ་ཡིན་ནོ། །༡༧

(आपके) रूप (रूपकाय) को देखने से आप 'देखे गये हैं'—यह नहीं कहा जा सकता। धर्म (प्रतीत्यसमुत्पाद या धर्मकाय) को देखने से आप अच्छी तरह देखे गये हैं, (फिर भी) धर्मता दृश्य नहीं है।

शौषिर्यं[4] नास्ति ते काये[5] मांसास्थिरुधिरं[6] न च ।
इन्द्रायुधमिवाकाशे[7] कायं[8] दर्शितवानसि ॥ १८॥

---

1. ग-दृष्टं।
2. ग-दृष्टे।
3. ཚིག་ཀང་དང་པོ་གཉིས་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ "གཟུགས་སུ་མཐོང་བས་མཐོང་མིན་ཡང་།། མཐོང་ངོ་ཞེས་ནི་བརྗོད་པར་བྱེད།" །ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བསྡུན་ནས་གཞུང་དོན་གྱི་བབས་ལ་བརྟགས་ན་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ །།
4. क-शौषिर्यो, ख-शोषीर्यो, चर्यामेलापकप्रदीप-सौशीर्यम्।
5. क-कायः, ख-कयो।
6. क,ख-०घिरो।
7. क,ख-इन्द्रायुधमिव।
8. क,ख-कायं विना ('ग' पाठ एवं पञ्चक्रमे-'विना' शब्द नास्ति)।

ཁོང་སྟོང་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ལ་མེད། །
ཤ་དང་རུས་པ་ཁྲག་མེད་ཀྱང་། [1] །
ནམ་མཁའི་དབང་པོའི་གཞུ་བཞིན་དུ། [2] །
ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ་ནི་སྟོན་པར་མཛད།[3] །༡༨

आपके काय (शरीर) में सुषिरता (खोखलापन) नहीं है और न (उसमें) मांस, अस्थि (हड्डी) और रुधिर (खून ही) है। (फिर भी) आकाश में इन्द्रधनुष की तरह आपने (माया) काय को दिखलाया है।

नामयो[4] नाशुचिः काये[5] क्षुत्तृष्णासम्भवो न च ।
त्वया लोकानुवृत्त्यर्थं दर्शिता लौकिकी क्रिया ॥ १९ ॥

སྐུ་ལ་བསྙུན་མེད་མི་གཙང་མེད།[6] །
བཀྲེས་དང་སྐོམ་པ་འབྱུང་མེད་ཀྱང་། །
ཁྱོད་ནི་འཇིག་རྟེན་རྗེས་འཇུག་ཕྱིར། །
འཇིག་རྟེན་སྤྱོད་པའང་[7]སྟོན་[8]པར་མཛད།[9] །༡༩

---

1. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – ཀྱང་མེད།
2. ཚིག་རྐང་འདི་རིམ་ལྔ་བོད་འགྱུར་དུ "ནམ་མཁའ་ལ་ནི་འཇའ་ཚོན་ལྟར།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
3. ཚིགས་བཅད་ ༡༧ དང་༡༨ གཉིས་གཞུང་འདིར་ཇི་ལྟར་གསལ་བ་ལྟར་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གསང་འདུས་རིམ་ལྔའི་ནང་ཚན་རིམ་པ་གསུམ་པ་བདག་བྱིན་བརླབ་བམ་སྒྱུ་ལུས་ཀྱི་རྣམ་བཞག་སྟོན་པའི་སྐབས་སུ་ཡང་གསལ་ཡོད་པས། སློབ་དཔོན་གྱིས་དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་དང་རིམ་ལྔ་གཉིས་གང་སྔོན་ལ་མཛད་ཡོད་མེད་དཔྱད་དགོས་པར་སྣང་ངོ་།། (རིམ་ལྔ། རྒྱུད། ངེ་. ༥༣)
4. पञ्चक्रम-या।
5. घ-कायो।
6. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – བསྙུན་མེད་རུས་པའང་མེད།
7. རིམ་ལྔར། – བྱ་བ (ལེགས་སྦྱར་དུ་ཡང་འདི་བཞིན་གསལ་ཡོད།)
8. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – བསྟེན་པར།
9. ཚིགས་བཅད་འདི་ཡང་གོང་སྨོས་བཞིན་སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་རིམ་ལྔར་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད་ ངེ་ ༥༣)

आपके काय (शरीर) में न रोग है और न अशुचि (गन्दगी) है तथा न उसमें भूख, प्यास की प्रवृत्ति (ही) है। फिर भी आपने लोक का अनुवर्तन करने के लिए (इन) लौकिक क्रियाओं को दिखलाया है।

कर्मावरणदोषश्च सर्वथाऽनघ नास्ति ते ।
त्वया लोकानुकम्पायै[1] कर्मप्लोतिः[2] प्रदर्शिता ॥ २० ॥

ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པའི་སྐྱོན་རྣམས་ནི།[3] །
སྡིག་མེད་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀུན་སྤངས་ཀྱང་། །
ཁྱོད་ཀྱིས་སེམས་ཅན་རྗེས་གཟུང་[4]ཕྱིར། །
ལས་སྤངས་པར་[5]ཡང་རབ་ཏུ་བསྟན། །२०

हे अनघ (पापरहित), आपके अन्दर कर्मावरण दोष बिलकुल नहीं है। (फिर भी) लोक के ऊपर अनुकम्पा करने के लिए आपने कर्म रूपी नौका प्रदर्शित की है।

धर्मधातोरसम्भेदाद् यानभेदोऽस्ति न प्रभो ।
यानत्रितयमाख्यातं त्वया सत्त्वावतारतः ॥ २१ ॥

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ལ་དབྱེར་མེད་ཕྱིར། །
གཙོ་བོ་ཐེག་དབྱེར་[6]མ་མཆིས་ཀྱང་། །

1. ग-पार्यं।
2. ग-कर्मप्लुति।
3. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – རྣམས་ཀྱང་
4. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – རྗེས་འཛུག
5. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – སྤངས་པ་ཡང་ (འདིར་ 'ལས་སྤངས་' ཞེས་པའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་སྐད་དོད་དེ་ར་ངེས་པ་ཉིད་དཀའ་བས་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།།)
6. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – ཐེག་དབྱེ

ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་པ་གསུམ་བསྟན་པ། [1] །
སེམས་ཅན་གཞུག་པའི་ཆེད་དུ་ལགས། [2] །༣༢

हे प्रभो, धर्मधातु (तथता या शून्यता) में भेद नहीं होने से यानों में भेद नहीं है (अर्थात् एक ही यान है), फिर भी, आपने (सभी) सत्त्वों (प्राणियों) के प्रवेश (धर्म में अवतरण) के लिए (उनके अध्याशय के अनुसार) तीन यानों की देशना की है।

नित्यो ध्रुवः शिवः[3] कायस्तव धर्ममयो जिन[4] ।
विनेयजनहेतोश्च दर्शिता निर्वृतिस्त्वया ॥ २२ ॥

རྟག་ཅིང་བརྟན་ལ་ཞི་བ་ཡི། །
ཆོས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱི་སྐུ། །
རྒྱལ་བས་གདུལ་བྱའི་དོན་[5]གྱི་ཕྱིར། །
ཁྱོད་ཉིད་[6]མྱ་ངན་འདས་པར་བསྟན། །༣༣

---

1. སྣར། – བསྟེན་པ།
2. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་ ‘དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བར་’ གསལ་ཡང་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ་བ་མེད། (རྒྱུད་ ‘ཕྱི’ ༡༡༩)
3. ग-शिव।
4. ग-जिन:।
5. སྡེ། ཅོ། – གདུལ་བྱ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར། སྣར། པེ། གསེར་བྲིས། – གདུལ་བྱ་དགྲོལ་བའི་ཕྱིར། ཞེས་གསལ་ཡོད་ཀྱང་ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ་བར་མངོན་ནོ། །ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་དབང་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར། “ཆོས་དབྱིངས་དབྱེ་བ་ཡོད་མིན་པས། །ཁྱོད་ཐེག་དབྱེ་བ་ཡོད་མིན་གྱི། །སེམས་ཅན་རྣམས་ནི་འཇུག་པའི་ཕྱིར། །ཐེག་པ་གསུམ་དུ་གསུངས་པ་ཡིན།” །ཞེས་གསལ་ཡོད། དེར་ “མཉམ་པ་མེད་པར་བསྟོད་པ་ལས་” ཞེས་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད་ ‘ཙུ’ ༨༣)
6. སྣར། པེ། གསེར་བྲིས། – ཁྱོད་ཀྱིས་

हे जिन (विजेता), आपका धर्मकाय नित्य (अक्षय), ध्रुव (स्थिर) एवं शिव (प्रपञ्चरहित) स्वरूप है, फिर भी, विनेयजनों के कल्याण के लिए आपने परिनिर्वाण का प्रदर्शन किया है।

लोकधातुष्वसंख्येषु त्वद्भक्तैः पुनरीक्ष्यसे[1] ।
च्युतिजन्माभिसम्बोधिचक्रनिर्वृतिलालसैः ॥ २३ ॥

གྲངས་མེད་འཇིག་རྟེན་ཁམས་རྣམས་སུ། །
འདས་དང་བལྟམས་དང་མངོན་བྱང་ཆུབ། །
འཁོར་བར་[2]ཐར་བར་མོས་རྣམས་ཀྱི། །
ཁྱོད་ལ་གུས་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་[3]མཐོང་། །༣༣

असंख्य लोकधातुओं में च्युति (परिनिर्वाण) जन्म, अभिसम्बोधि, (आदि) संसारचक्र से निर्वृत्ति के अभिलाषी आपके भक्तों के द्वारा (ये सब) देखे जाते हैं (अर्थात् आप ये सब लीलाएँ उन्हें दिखाते हैं)।

न तेऽस्ति मन्यना नाथ न विकल्पो न चेञ्जना ।
अनाभोगेन ते लोके[4] बुद्धकृत्यं प्रवर्तते ॥ २४ ॥

མགོན་པོ་སེམས་པ་མི་མངའ་ཞིང་། །
རྣམ་རྟོག་གཡོ་བ་མི་མངའ་ཡང་། །

---

1. घ-क्षसे।
2. སྣེ། ཅོ། – འཁོར་བའང་
3. སྣེ། ཅོ། – ཀྱི་ཡང་།
4. घ-लोकै।

སངས་རྒྱས་མཛད་པ་འཇིག་རྟེན་ལ། །

ལྷུན་གྱིས་འགྲུབ་པའི་ཚུལ་གྱིས་འཇུག།[1] །༣༨

हे नाथ, आप में विचार-वितर्क, विकल्प एवं प्रयत्न (चेष्टा) आदि नहीं हैं, फिर भी लोक में आपके बुद्धकृत्य अनाभोग (संकल्प रहित, प्रयत्न रहित) रूप से प्रवृत्त होते रहते हैं।

इति सुगतमचिन्त्यमप्रमेयं
गुणकुसुमैरवकीर्य मया प्राप्तम्[2]।
कुशलमिह भवन्तु तेन सत्त्वाः
परमगम्भीरमुनीन्द्रधर्मभाजनाः[3] ॥ २५ ॥

དེ་ལྟར་བདེ་གཤེགས་ཡོན་ཏན་ཚད་མེད་བསམ་མི་ཁྱབ།།
མི་རྟོག་གིས་བརྒྱན་པ་ལས་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པར།།[4]

---

1. ཚིག་ཁང་ཐ་མ་གཉིས་སྡེ་དགེ་སྣར་མ་སོགས་སུ་ "ཁྱོད་ཉིད་ངང་གིས་འཇིག་རྟེན་ལ། །སངས་རྒྱས་མཛད་པའང་འཇུག་པར་འགྱུར།" །ཞེས་དང་། སྣར་ཐང་སོགས་སུ་ "ཁྱོད་ཀྱིས་ངང་གིས་འཇིག་རྟེན་ལ།" །ཞེས་སོགས་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་དང་བསྡུན་ན་བརྗོད་ཚིག་བཀོད་པའི་རིམ་པ་གོང་གསལ་ལྟར་དགོས་པར་མངོན་ནོ། །ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེས་མཛད་པའི་ལྟ་བ་ངན་སེལ་དུ་ཡང་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད། 'ཕྱི' ༡༠༥) ཚིགས་བཅད་འདི་དབུ་མའི་མན་ངག་ལས། "མགོན་པོ་སེམས་དཔའ་མི་མངའ་ཞིང་། །རྣམ་རྟོག་གཡོ་བ་མི་མངའ་ཡང་། །ཁྱོད་ཉིད་ངང་གིས་སེམས་ཅན་ལ། །སངས་རྒྱས་འཕྲིན་ལས་མཛད་པར་འགྱུར།།" ཞེས་གསལ་ཡོད། (དབུ་མ། 'ཀི' ༡༡༡)
2. ग-जन्मयाप्तम्।
3. ग-धर्मभाजः।
4. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། – "དེ་ལྟར་བདེ་བར་གཤེགས་པ་བསམ་མི་ཁྱབ་མི་རྟོག་གིས་རྒྱན་པ་ལས་བདག་གི་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པར།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ།

གྱུར་པ་འདིས་ནི་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ་འདི་དག།

མཆོག་ཏུ་རྟོགས་དཀའ་ཟབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྣོད་གྱུར་ཅིག[1] །༣༥

इस प्रकार अचिन्त्य, अप्रमेय, सुगत पर गुणरूपी पुष्प बिखेरकर मैंने जो कुशल (पुण्य) प्राप्त किया है, उससे सभी सत्त्व (प्राणी) मुनीन्द्र (भगवान् बुद्ध) के परम गम्भीर धर्म के पात्र हो जाएँ।

॥ निरौपम्यस्तोत्र समाप्त[2] ॥

དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་

མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། ༎

རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ཀྲྀཥྞཔཎྜིཏ་དང་། ལོ་ཙྪ་བ་དགེ་སློང་ཚུལ་

ཁྲིམས་རྒྱལ་བས་བསྒྱུར་བའོ། །

•

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་དང་བསྟུན་ན་ "འདི་ལྟར་བདེ་གཤེགས་བསམ་མི་ཁྱབ་དང་ཚད་མེད་པའི། །ཡོན་ཏན་མེ་ཏོག་མངོན་པར་འཐོར་ལས་བདག་གིས་ནི། །ཐོབ་པའི་དགེ་བ་འདི་ཡིས་སེམས་ཅན་མ་ལུས་པ། །མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་ཐུབ་དབང་ཆོས་ཀྱི་སྣོད་གྱུར་ཅིག།" ཅེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་སྣང་བས་དཔྱད་པར་བྱའོ། །

2. ग–इति निरौपम्य०, घ–द्वितीय खण्डे निरोपम्य०।

༄ ཀཱ་རི་ཀཱ་ཡི་རུང་ཆུ་འདེབས་པ་ནས།།
ས་ཧ་ཛ་ཡི་བདེན་གཉིས་དབྱེར་མེད་བར།།
མདོ་སྔགས་བཅུ་དྲུག་ཆ་ཤས་ལམ་གྱི་ལུས།།
དཀྱིལ་འཁོར་གཅིག་ཏུ་རྫོགས་ཏེ་ཐུགས་མཁར་གསལ།།

སྒྱུ་ལུས་སྒྱུ་མའི་གླང་པོ་བཞིན་གྱུར་ཅིང་།།
འོད་གསལ་འོད་སྣང་ཡལ་བར་རྫོམ་པ་ན།།
ཟུང་དུ་སྦྲེལ་ཏེ་ཟུང་འཇུག་གནད་དང་བཅས།།
རྡོ་རྗེ་འཆང་དབང་རྡོ་རྗེའི་ཚིག་གིས་བཀྲལ།།
(རྗེ་ཀུང་ཐང་གི་གསུང་འཇམ་མགོན་རྒྱལ་བའི་བསྟོད་པ། པོད། 'ཛ' ༥༠༨, ༥༠༥)

བདེན་གཉིས་གཉིས་སུ་མི་ཕྱེད་སྒྱུ་ལུས་དང་།།
འོད་ཟུང་ཟུང་དུ་འཇུག་པའི་སྒྱུ་འཕྲུལ་གྱིས།།
ཀུན་ཁྱབ་ཁྱབ་བདག་དཔལ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་འཆང་།།
ལེགས་ཐོབ་ཐོབ་བྱའི་འབྲས་བུ་མཐར་ཐུག་ཡིན།།

ཀུན་མཁྱེན་མཁྱེན་རབ་རབ་གསལ་ཉི་མའི་འོད།།
གང་ཐུགས་ཐུགས་རྗེས་རྗེས་ཆགས་ཟླ་བའི་ཟེར།།
བསྟོད་དབྱངས་དབྱངས་སྙན་སྙན་དགུར་འཁྲོལ་བ་ཡིས།།
འགྲོ་ཀུན་ཀུན་མཁྱེན་མཁྱེན་བརྩེའི་དཔལ་ཐོབ་ཤོག།
(རྗེ་ཀུང་ཐང་གི་གསུང་། པོད། 'ཛ' ༨༩༩,༨༩༨)

अचिन्त्यस्तवः

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ།

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

प्रतीत्यजानां भावानां नैःस्वाभाव्यं जगाद यः ।
तं [1]नमामि सदा[2] बुद्धमचिन्त्य[3]मनिदर्शनम् ॥ १ ॥

གང་ཞིག་དངོས་པོ་རྟེན་འབྱུང་རྣམས། །
ངོ་བོ་མེད་པ་ཉིད་དུ་གསུངས། །
ཡེ་ཤེས་མཉམ་[4]མེད་བསམ་མི་ཁྱབ། །
དཔེ་མེད་དེ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །༡

जिसने प्रतीत्यसमुत्पन्न भावों (पदार्थों) की निःस्वभावता का कथन किया है, उस अचिन्त्य और अनुपम (अनिदर्शन) ज्ञान वाले (बुद्ध) को मैं हमेशा नमस्कार करता हूँ।

यथा त्वया महायाने धर्मनैरात्म्यमात्मना[5] ।
विदितं देशितं[6] तद्वत् धीमद्भ्यः करुणावशात् ॥ २ ॥

---

1. ख–तन्नमामि।
2. ग–समज्ञानं।
3. क–त्यनि०।
4. ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་རེ་ཟུང་ནང་ ‘ཡེ་ཤེས་མཉམ་མེད་’ ཅེས་པའི་ཐད་དུ་ ‘རྟག་ཏུ་’ ཞེས་པ་གསལ་ཡོད།
5. क,ख–नैरात्म्यं महात्मना।
6. क,ख–संदेशितं तद् बुद्धि।

ཇི་ལྟར་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་ཆེན་ལ། །
ཉིད་ཀྱིས་ཆོས་ལ་བདག་མེད་རྟོགས། །
དེ་བཞིན་བློ་དང་ལྡན་རྣམས་ལ། །
ཐུགས་རྗེའི་དབང་གིས་བསྟན་པར་མཛད། །༢

जैसे भगवन्, स्वयं आपने महायान में धर्मनैरात्म्य को जाना है, (ठीक वैसे ही) करुणा के वशीभूत होकर आपने (उत्तम) बुद्धिमानों के लिए देशना की है।

प्रत्ययेभ्यः समुत्पन्नमनुत्पन्नं त्वयोदितम् ।
स्वभावेन न[1] तज्जातमिति[2] शून्यं प्रकाशितम् ॥ ३ ॥

རྐྱེན་རྣམས་ལས་ནི་འབྲེལ་བྱུང་བ། །
མ་སྐྱེས་ལགས་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་མ་སྐྱེས། །
དེ་ཕྱིར་སྟོང་པར་རབ་ཏུ་བསྟན། །༣

हेतु-प्रत्ययों से जो उत्पन्न है, उसे आपने अनुत्पन्न कहा है। वह स्वभाव से उत्पन्न नहीं है, इसलिए उसे (आपने) शून्य प्रकाशित किया है।

यद्वत् प्रतीत्यजाच्छब्दात्[3] प्रतिशब्दसमुद्भवः ।
मायामरीचिवच्चापि त्वया भवसमुद्भवः ॥ ४ ॥

ཇི་ལྟར་རྟེན་འབྱུང་སྒྲ་ལས་ནི།[4] །
བྲག་ཅ་ཀུན་ཏུ་འབྱུང་བ་ལྟར། །

---

1. ख-च।
2. ग-तद् जातमिति।
3. ग,घ-यद्वत्च्छब्दं प्रतीत्यजा।
4. བོད་འགྱུར་ཕྱུར་མ་རྣམས་སུ "ཇི་ལྟར་འདི་ན་སྒྲ་བརྟེན་ནས།" ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེའོ།།

སྒྱུ་མ་སྨིག་རྒྱུ་བཞིན་དུ་ཡང་། །
དེ་བཞིན་སྲིད་པ་ཀུན་དུ་འབྱུང་། །༤

जिस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पन्न शब्द से प्रतिशब्द (प्रतिध्वनि) उत्पन्न होता है, वैसे ही आपने माया एवं मरीचि के समान भी जगत् की उत्पत्ति कही है।

मायामरीचिगन्धर्वनगर-प्रतिबिम्बकाः ।
यद्यजाताः सह[1] स्वप्नैर्न स्यात्तद् दर्शनादिकम् ॥ ५ ॥

སྒྱུ་མ་དང་ནི་སྨིག་རྒྱུ་དང་། །
དྲི་ཟའི་གྲོང་ཁྱེར་གཟུགས་བརྙན་དང་། །
རྨི་ལམ་གལ་ཏེ་མ་སྐྱེས་ན། །
མཐོང་བ་ལ་སོགས་དཔེ་མེད་འགྱུར། 2 །༥

यदि स्वप्न के साथ (सभी) माया, मरीचि, गन्धर्वनगर, प्रतिबिम्ब आदि अजात (अनुत्पन्न) है तो (उन मायोपम, स्वप्नोपम धर्मों का) देखना आदि नहीं हो सकेगा। अर्थात् 'माया के समान' आदि दृष्टान्त अनुपपन्न हो जाएँगे।

हेतुप्रत्ययसम्भूतां[3] यथा ते कृतकाः[4] स्मृताः ।
तद्वत् प्रत्ययजं विश्वं त्वयोक्तं नाथ सांवृतम् ॥ ६ ॥

---

1. भो-नास्ति।
2. ཚིགས་བཅད་འདི་ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་ལྟར་བྱས་ན་ "སྒྱུ་མ་སྨིག་རྒྱུ་དྲི་ཟ་ཡི། །གྲོང་ཁྱེར་གཟུགས་བརྙན་རྨི་ལམ་དང་། །འདྲ་བར་གལ་ཏེ་མ་སྐྱེས་ན། །མཐོང་བ་ལ་སོགས་མེད་པར་འགྱུར།" །ཞེས་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་སྣང་བས་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།། བོད་འགྱུར་དུ་གསལ་བའི་ 'དཔེ་མེད་' ཅེས་པའི་ཚིག་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེར་དངོས་སུ་མེད་ཀྱང་དོན་ཐོབ་ལ་དགོངས་ནས་བཀོད་དམ་དཔྱད་འཚལ།
3. घ-भूताः।
4. ग,घ-कृतका।

ཇི་ལྟར་རྒྱུ་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ། །
དེ་དག་བྱས་པ་ཅན་དུ་བཞེད། །
དེ་བཞིན་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བ་ཀུན། །
མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་ལྟར་གསུངས། [1] །༦

जिस प्रकार हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न (धर्मों को) आपने कृत्रिम (कृतक) माना है, उसी प्रकार हेतुप्रत्यय से उत्पन्न सारे विश्व को आपने हे नाथ, सांवृत (अज्ञानसमुत्पन्न कृत्रिम) कहा है।

अतस्तत्कर्तृकं[2] सर्वं यत् किञ्चिद् बाललापनम् ।
रिक्त[3]मुष्टि[4] प्रतिका[5]शमयथार्थं प्रकाशितम् ॥ ७॥

བྱིས་པ་གང་དག་ཅི་བརྗོད་པ། །
བགྱིས་པ་ཞེས་བགྱིད་དེ་མཆིས་ཏེ། །
ཆད་པ་སྟོང་པ་འདྲ་བ་ལགས། [6] །
དོན་བཞིན་མ་ལགས་རབ་ཏུ་བསྟན། །༧

जो उस (अज्ञान या संवृति) के द्वारा किया गया है और जो कुछ बाल-पृथग्जन कहते हैं, वह सब खाली मुट्ठी के समान है और अयथार्थ है—ऐसा (आपने) प्रकाशित किया है।

---

1. ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀུན་རྫོབ་གསུངས།" །ཞེས་བཀོད་དགོས་པར་མངོན།
2. क-०कृतकं, घ-कृतवान्, ग-अस्त्येतत्।
3. ख,ग,घ-रक्त।
4. घ-मुक्ति।
5. ख-प्रती०।
6. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ད་ཡོད་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བྱས་ན། "ལག་པ་སྟོང་པ་འདྲ་བ་ལགས།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།

कृतकं वस्तु नो जातं तदा किं वार्तमानिकम् ।
कस्य नाशादतीतं स्यादुत्पित्सुः किमपेक्ष्यते[1] ॥ ८ ॥

གང་ཚེ་བྱས་པའི་དངོས་མ་སྐྱེས། །
དེ་ཚེ་ད་ལྟ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། །
གང་ཞིག་ཟད་པས་འདས་པར་འགྱུར།[2] །
མ་འོངས་པ་ཡང་ཇི་ལྟར་ལྟོས། །༨

(हेतु-प्रत्ययों द्वारा) कृत (निर्मित) वस्तु (परमार्थतः) उत्पन्न ही नहीं है, तब (वह) कैसे वर्तमानकालिक होगी और किसके नाश से वह अतीत होगी तथा भविष्य में उत्पन्न होनेवाली वस्तु किसकी अपेक्षा करती है। अर्थात् अनुत्पन्न किसकी अपेक्षा करेगा?

स्वस्मान्न जायते भावः परस्मान्नोभयादपि ।
न सन्नासन्न सदसन्[3] कुतः कस्योद्भवस्तदा[4] ॥ ९ ॥

རང་ལས་དངོས་པོ་སྐྱེ་བ་མེད། །
གཞན་དང་གཉིས་ཀ་ལས་མ་ཡིན། །
ཡོད་མིན་མེད་མིན་ཡོད་མེད་མིན། །
དེ་ཚེ་གང་ལས་གཞན་ཞིག་འབྱུང་།[5] །༩

---

1. क-पेक्ष्यते, ख-क्ष्यसे, घ-क्षत।
2. བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ཚིག་རྐང་བར་པ་གཉིས་ "དེ་ཚེ་ད་ལྟར་བྱུང་བ་ཡི། །གང་ཞིག་པས་ན་འདས་པར་འགྱུར།" །ཞེས་གསལ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་ཅིང་། ཚིག་རྐང་གསུམ་པར་ 'གང་ཞིག་བས་ན་' པའི་ཆ་ཤས་ཀྱི་ 'བས' ཞེས་པ་བརྡ་སྙིང་ཟད་པའི་དོན་དུ་སྣང་ཡང་། རྒྱ་མཚན་སྟོན་པའི་ཚིག་དང་ནོར་ཉེན་ཆེ་བས་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་དོ།།
3. क-सत्।
4. ग-उदयस्तदा।
5. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ "དེ་ཚེ་གང་ལས་ཅི་ཞིག་འབྱུང་།།" ཞེས་གསལ་ཡོད། 'གཞན་' ཞེས་པའི་སྐད་དོད་གསལ་མེད། ཚིགས་བཅད་འདི་མཁན་ཆེན་ཞི་འཚོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྡུས་

भाव (वस्तु या पदार्थ) अपने से (अर्थात् अपने को हेतु बनाकर) उत्पन्न नहीं होता, पर (दूसरे हेतुओं) से भी उत्पन्न नहीं होता तथा (स्व और पर) दोनों से भी उत्पन्न नहीं होता। (अत:) वस्तु न सत है, न असत् है और न सदसत् है। तब (ऐसी स्थिति में) किसका उत्पाद होता है। अर्थात् किसी का उत्पाद नहीं होता।

अजाते न स्वभावोऽस्ति कुतः स्वस्मात् समुद्भवः ।
स्वभावाभावसिद्ध्यैव[1] परस्मादप्यसम्भवः ॥ १० ॥

མ་སྐྱེས་པ་ལ་རང་བཞིན་མེད། །
དེ་ཕྱིར་གང་ལས་ཀུན་དུ་འབྱུང་།[2] །
རང་བཞིན་དངོས་པོ་མེད་གྲུབ་པས། །
གཞན་ལས་ཀྱང་ནི་འབྱུང་བ་མེད། །༡༠

अनुत्पन्न (अजात) वस्तु में कोई स्वभाव ही नहीं है, तब कैसे वह अपने से (अपने को हेतु बनाकर) उत्पन्न हो सकती है? स्वभाव का अभाव सिद्ध होने से ही (आकाशपुष्प की भाँति) उस वस्तु का पर (हेतुओं) से भी उत्पाद असम्भव है।

स्वत्वे[3] सति परत्वं स्यात् परत्वे स्वत्व[4]मिष्यते ।
आपेक्षिकी तयोः सिद्धिः पारावारमिवोदिता[5] ॥ ११ ॥

པར་ "དངོས་རྣམས་རང་ལས་མི་སྐྱེ་ཞིང་། །གཞན་དང་གཉིས་ཀ་ལས་ཀྱང་མིན། །ཡོད་མིན་མེད་མིན་ཡོད་མེད་མིན། །གང་ཞིག་གང་ལས་དེ་ལྟར་འབྱུང་།" །ཞེས་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད་ 'ཙུ' ༣༧)

1. क,ख-सिद्धे च।
2. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ "ཇི་ལྟར་རང་ལས་ཀུན་དུ་འབྱུང་།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
3. घ-सत्त्वे।
4. घ-सत्त्व।
5. ग-०दितां।

རང་ཉིད་ཡོད་ན་གཞན་ཡོད་འགྱུར། །
གཞན་ཉིད་ཡོད་ན་རང་ཉིད་ཡོད། །
དེ་དག་ཕ་རོལ་ཚུ་རོལ་བཞིན། །
ལྟོས་པ་ཅན་དུ་གྲུབ་པར་གསུངས། [1] །༡༡

'स्व' होने पर 'पर' होता है और 'पर' होने पर 'स्व' माना जाता है। इन स्व और पर दोनों की सिद्धि (नदी के) 'इस पार' और 'उस पार' की भाँति परस्पर की अपेक्षा से कही गई है।

यदा नापेक्ष्यते किञ्चित् कुतः किञ्चित्तदा भवेत् ।
यदा नापेक्ष्यते दीर्घं कुतो[2] ह्रस्वादिकं तदा ॥१२॥

གང་ཚེ་ཅི་ལའང་མི་ལྟོས་པ། །
དེ་ཚེ་གང་[3]ལས་ཅི་ཞིག་འབྱུང་། །
གང་ཚེ་རིང་ལ་མི་ལྟོས་པ། །
དེ་ཚེ་ཐུང་སོགས་ག་ལ་མཆིས། །༡༢

जब किसी की अपेक्षा ही नहीं की जाती, तब किस (हेतु) से क्या (फल या कार्य) उत्पन्न होगा। जब दीर्घ की अपेक्षा नहीं की जाएगी, तब कैसे ह्रस्व आदि सम्भव होंगे।

---

1. ཚིག་ཀང་ཐ་མ་གཉིས་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ "དེ་དག་ལྟོས་པ་ཅན་དུ་གྲུབ། །ཕ་རོལ་ཚུ་རོལ་བཞིན་དུ་གསུངས།" ཞེས་གསལ་ཡང་། དཀྱུག་བསྒྱུར་གྱི་དཔང་དུ་བྱས་ན་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་ཚིག་པར་མངོན་ནོ། །
2. क-कुतः।
3. སྡེ་དགེ་སོགས་ 'སུ་གང་ལ་གང་ཞིག' ཅེས་གསལ་ཡོད།

अस्तित्वे सति नास्तित्वं दीर्घे ह्रस्वं यथा[1] सति ।
नास्तित्वे सति चास्तित्वं यत्तस्मादुभयं न सत्[2] ॥ १३ ॥

ཇི་ལྟར་རིང་དང་ཐུང་ངུ་བཞིན། །
ཡོད་ཉིད་མཆིས་ཚེ་མེད་ཉིད་མཆིས། །
མེད་ཉིད་མཆིས་ཚེའང་ཡོད་ཉིད་མཆིས། །
དེ་ཕྱིར་གཉིས་ཀ་རང་བཞིན་མེད། [3] །༡༣

जैसे दीर्घ होने पर ह्रस्व होता है, वैसे ही अस्तित्व होने पर नास्तित्व होता है। (इसी तरह परस्पर अपेक्षित होने के कारण) नास्तित्व होने पर अस्तित्व होता है। इसलिए (वास्तव में अस्तित्व और नास्तित्व) दोनों (स्वभावतः) सत् नहीं हैं।

एकत्वादि[4] तथाऽनेकमतीतानागतादि च ।
संक्लेशो[5] व्यवदानं[6] च सम्यग् मिथ्या स्वतः कुतः ॥ १४ ॥

གཅིག་སོགས་དེ་བཞིན་དུ་མ་དང་། །
འདས་དང་མ་འོངས་ལ་སོགས་པ། །

1. ग-तथा।
2. अयं श्लोकः भोट पाठे नास्ति।
3. ཚིགས་བཅད་འདི་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་རྩ་ཆད་ཀྱི་ཚུལ་དུ་གསལ་མེད་ཀྱང་། ལེགས་སྦྱར་ལ་ཡོད་པ་བཞིན་གསར་དུ་ཕབ་བསྒྱུར་བྱས་སོ། །ཐོག་མར་བོད་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་གནང་སྐབས་རྒྱ་དཔེ་མ་ཚང་བ་ཞིག་ཕྱག་ཏུ་སོན་པའམ་ཡང་ན་ཕབ་བསྒྱུར་གནང་རྒྱུ་ལྷག་ལུས་ཤོར་བའམ་ཡིག་བྲིས་པས་ཆད་ལུས་ཤོར་བ་སོགས་གང་ཡིན་དཔྱད་པར་བྱའོ། །
4. ग-एकत्वञ्च।
5. क,ख,घ-संकलेशं।
6. क-०व्यवदानञ्च।

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་རྣམ་བྱང་དག །
ཡང་དག་ལོག་པའང་རང་ལས་ཅི།[1] །༡༨

(उसी तरह) एकत्व और अनेकत्व आदि, अतीत और अनागत आदि तथा संक्लेश और व्यवदान स्वतः (स्वतन्त्र रूप से) सम्यक् या मिथ्या कैसे हो सकते हैं?

स्वत एव हि यो नास्ति भावः सर्वोऽस्ति कस्तदा ।
पर इत्युच्यते योऽयं न विना स्व[2]स्वभावतः ॥ १५ ॥

དངོས་གང་རང་ལས་མ་མཆིས་ན། །
དེ་ཚེ་ཐམས་ཅད་ཅི་ཞིག་མཆིས། །
གཞན་ཞེས་བརྗོད་པ་གང་ལགས་ཏེ། །
རང་གི་རང་བཞིན་མེད་ན་མིན། །༡༥

(एक भी वस्तु) जब स्वतः से ही (स्वभावतः सत्) नहीं है, तब सब (भाव) कैसे स्वभावतः सत् होंगे (अर्थात् एक-एक की अपेक्षा से ही 'सब' होता है। अतः 'सब' भी सत् नहीं है)। जो (लोक में) यह 'पर' (दूसरा) कहा जाता है, वह भी अपने निजी स्वभाव के बिना नहीं हो सकता। (अर्थात् जब स्व नहीं है, तब 'पर' भी नहीं हो सकता)।

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ "ཇི་ལྟར་གཅིག་སོགས་མ་མཆིས་པ། །འདས་དང་མ་འོངས་ལ་སོགས་པ། །ཉོན་མོངས་རྣམས་ཀྱང་དེ་བཞིན་ཏེ། །ཡང་དག་ལོག་པའང་རང་ལས་ཅི།" ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བསྒྱུར་བའི་ཚེ་ཚིག་དོན་ཆད་པ་དང་། ཡིག་ནོར་སོགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་པས། ལེགས་སྦྱར་དང་བསྟུན་ན་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་དགོས་པར་མངོན་ནོ།།
2. ग-सस्व०।

न स्वभावोऽस्ति भावानां परभाव[1]स्तदा[2]ऽस्ति न[3] ।
भावाग्रहग्रहावेशः[4] परतन्त्रोऽस्ति कस्तदा ॥ १६ ॥

དངོས་རྣམས་རང་དངོས་ནས་མེད་ན། །
དེ་ཚེ་གཞན་དངོས་འཐད་མ་ཡིན། །
དངོས་འཛིན་གདོན་གྱིས་ཐེབས་པའི་ཚེ། །
གཞན་དབང་གྱུར་པ་གཞན་ཅི་མཆིས།[5] །༡༦

जब भावों (वस्तुओं या पदार्थों) का स्वभाव नहीं है तब परभाव (दूसरे का अस्तित्व) भी नहीं है। (सभी अस्तित्व) भावाभिनिवेश रूपी ग्रह (भूत-प्रेत आदि) के आवेश (ग्रसित होने) की वजह से हैं। तब (ऐसी स्थिति में) हेतु-प्रत्ययाधीन परतन्त्र क्या है। (अर्थात् नहीं है)।

आदावेव शमं[6] याताः[7] स्वभावेन च निर्वृताः ।
अनुत्पन्नाश्च[8] तत्त्वेन तस्माद् धर्मास्त्वयोदिताः ॥ १७ ॥

---

1. क,ख-परभावो तदा०।
2. घ-यदा।
3. ग-अस्तिनो यदा।
4. घ-वेग।
5. བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ཚིགས་བཅད་འདི་ "གང་ཚེ་གཞན་གྱི་དངོས་མེད་པ། །དེ་ཚེ་དངོས་རྣམས་རང་བཞིན་མེད། །དེ་ཚེ་གཞན་དངོས་དངོས་འཛིན་པ། །དོན་གྱི་ཐེག་པ་ཅི་ཞིག་མཆིས།།" ཞེས་གསལ་ཡང་། ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བྱས་ན་གོང་གསལ་ལྟར་བཀོད་དགོས་པར་སྣང་ཞིང་། ལྷག་པར་དུ་བོད་འགྱུར་ཚིག་རྐང་བཞི་པ་ "དོན་གྱི་ཐེག་པ་ཅི་ཞིག་མཆིས།།" ཞེས་པ་ནོར་ཚབ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་སྟེ། "གདོན་གྱིས་ཐེབས་པ་" ཞེས་བཀོད་དགོས་རྒྱུ་ལ་ "དོན་གྱི་ཐེག་པ་" ཞེས་གནམ་སའི་ཁྱད་པར་ཡོད་པའི་མ་བརྟགས་ཉམས་དགའི་བརྗོད་ཚིག་འཕོད་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ། །
6. ग,घ-समं अदो।
7. ग-जाता।
8. ख,ग-अनुत्पन्नाश्च, घ-अनुत्पन्नाः च।

གདོད་མ་ཉིད་ནས་ཞི་གྱུར་པ། [1] །
རང་བཞིན་གྱིས་ཀྱང་མྱ་ངན་འདས། །
ཡང་དག་པར་ནི་མ་སྐྱེས་ལགས། །
དེ་སྐད་ཆོས་རྣམས་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །༡༧

इसलिए भगवान्, आपने सभी धर्मों को आदि से शान्त, स्वभाव से परिनिर्वृत्त एवं परमार्थतः अनुत्पन्न ही कहा है।

निःस्वभावास्त्वया धीमन् रूपाद्याः सम्प्रकाशिताः ।
फेन-बुद्बुदमायाभ्रमरीचिकदलीसमाः ॥ १८ ॥

བློ་ལྡན་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟུགས་ལ་སོགས། །
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་བསྟན་པ། །
དབུ་བ་ཆུ་བུར་སྒྱུ་ལ་སོགས།[2] །
སྨིག་རྒྱུ་ཆུ་ཤིང་འདྲ་བ་ལགས། །༡༨

हे प्रज्ञावान्, आपने रूप (वेदना) आदि सभी धर्मों को निःस्वभाव के रूप में प्रकाशित किया है। वे सब (धर्म) फेन के समान, बुलबुले के समान, माया, गन्धर्वनगर, मृगमरीचि एवं कदली (केले के वृक्ष) के समान (निःसार एवं तुच्छ) हैं।

इन्द्रियैरुपलब्धं यत्तत्तत्त्वेन भवेद् यदि ।
जातास्तत्त्वविदो बालास्तत्त्वज्ञानेन किं तदा ॥ १९ ॥

---

1. ཚིག་རྐང་དང་པོ་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ "གདོན་མ་ཉིད་ནས་མཉམ་གྱུར་པ།" ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།
2. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "དབུ་བ་ཆུ་བུར་སྒྱུ་མ་སྤྲིན།།" ཞེས་གསལ་ཡོད།

དབང་པོ་རྣམས་ཀྱིས་གང་དམིགས་དེ། །
གལ་ཏེ་ཡང་དག་མཆིས་གྱུར་ན། །
བྱིས་པས་ཡང་དག་རིག་པར་འགྱུར། །
དེ་ཚེ་ཡང་དག་ཤེས་པས་ཅི།[1] །༡༩

इन्द्रियों (चक्षुष्, श्रोत्र आदि) द्वारा जो विषय उपलब्ध होते हैं, वे यदि तत्त्व अर्थात् परमार्थसत्य हों, तब तो बाल-पृथग्जन भी तत्तविद् (तत्त्वद्रष्टा) हो जाएँगे, तब उन्हें तत्त्वज्ञान की क्या आवश्यकता है?

जडत्व[2]मप्रामणत्वमथाव्याकृतता[3]मपि ।
विपरीतपरि[4]ज्ञानमिन्द्रियाणां त्वमूचिवान् ॥ २० ॥

དབང་པོ་རྣམས་ནི་བེམ་པོ་དང་། །
ཚད་མ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་དང་། །
ལུང་མ་བསྟན་པ་ཉིད་དང་ནི། །
ལོག་པར་ཡོངས་ཤེས་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།[5] །༣༠

---

1. བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ "གང་ཚེ་ཡང་དག" ཅེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་ཚིག་སྦྱོར་གྱི་འགྲོས་དང་བསྟུན་ན་བཏོད་པ་བདེའོ། །ཚུལ་འདི་ཤེར་འབྱུང་གི་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་ཡང "དབང་པོས་གང་ཞིག་དམིགས་པ་དེ། །གལ་ཏེ་དེ་ཉིད་ཡིན་གྱུར་ན། །བྱིས་ལ་དེ་ཉིད་རྟོགས་སྐྱེ་བས། །དེ་ཚེ་དེ་ཉིད་ཤེས་ཅི་དགོས།།" ཞེས་གསལ་བས་སོ།། (དཔེ་མ། 'ལ' ༡༩༧) ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར "གང་ཞིག་དངོས་པོ་ཉེར་དམིགས་པ། །དེ་ནི་གལ་ཏེ་དེ་ཉིད་འགྱུར། །བྱིས་པ་དེ་ཉིད་རིག་འགྱུར་བས། །དེ་ཚེ་དེ་ཉིད་ཤེས་ཅི་དགོས།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙ' ༩༥)
2. क,ख-जातत्वम्।
3. क,ख-मथास्य कृत।
4. क,ख-परिविज्ञान।
5. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་ཀང་མཐའ་མ་གཉིས། "ལུང་མ་བསྟན་དང་ཕྱིན་ཅི་ལོག །རྣམ་པར་ཤེས་མིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།" ཞེས་པ་ལྟར་སྣང་བས། །གང་འཐད་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།། ཚིགས་བཅད་འདི་དབུ་མ་རིན་ཆེན་སྒྲོན་མེར་ཡང་གསལ་ཡོད། (དཔེ་མ། 'ཚ' ༣༧༠)

आपने (हे भगवन्) इन्द्रियों की जडरूपता, अप्रमाणता, अव्याकृतता (अर्थात् उनका कुशल, अकुशल न होना) तथा (उनके द्वारा) विपरीत रूप से ज्ञान होना कहा है।

अज्ञानेनावृतो येन यथावन्न प्रदृश्यते[1] ।
लोकस्तेन यथाभूतमिति मत्वा त्वयोदितम् ॥ २१ ॥

གང་གིས་ཅི་ཞིག་མ་རྟོགས་པ། །
ཡང་དག་ཇི་བཞིན་ཕྱུགས་ཆུད་ནས། །
དེས་ན་འཇིག་རྟེན་མི་ཤེས་པས། །
བསྒྲིབས་པ་ཞེས་ཀྱང་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།[2] །༢༡

अज्ञान से आवृत होने के कारण यह लोक (सत्त्व एवं भाजनलोक) यथावत् (जैसा वस्तुतः है, वैसा) नहीं दिखलाई पड़ता। ऐसा आपने यथाभूत (ठीक-ठीक) जानकर कहा है।

अस्तीति शाश्वती दृष्टिर्नास्तीत्युच्छेददर्शनम् ।
तेनान्तद्वयनिर्मुक्तो[3] धर्मोऽयं देशितस्त्वया ॥ २२ ॥

ཡོད་ཅེས་པ་ནི་རྟག་པར་ལྟ། །
མེད་ཅེས་པ་ནི་ཆད་པར་ལྟ། །

1. ग-प्रदद्यते।
2. བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་ཚིགས་བཅད་འདི་ཤིན་ཏུ་དཀྱུག་བསྒྱུར་གྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་ཅིང་། གཞུང་དོན་གོ་དཀའ་བས་ན་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བྱས་ན། "མི་ཤེས་པས་བསྒྲིབ་གང་ཞིག་གིས། ཡང་དག་ཇི་བཞིན་མཐོང་མི་འགྱུར། །ཁྱོད་ཀྱིས་འཇིག་རྟེན་དེ་ལྟ་བར། །ཕྱུགས་སུ་ཆུད་ནས་གསུངས་པར་མཛད།" ཅེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་སྣང་བས་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།།
3. घ-निर्मुक्तः।

དེས་ན་མཐའ་གཉིས་བྲལ་བ་ཡི། །
ཆོས་དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྟན་པར་མཛད། [1] །༢༢

'अस्ति' (सत्) ग्रहण करना शाश्वत (नित्य) दृष्टि है और 'नास्ति' (असत्) ग्रहण करना उच्छेद दृष्टि है, इसलिए हे भगवन्, आपने दोनों (शाश्वत और उच्छेद) अन्तों से रहित इस धर्म की देशना की है।

चतुष्कोटिविनिर्मुक्तास्तेन धर्मास्त्वयोदिताः ।
विज्ञानस्याप्य[2]विज्ञेया जाता विमुक्तगोचराः[3] ॥ २३ ॥

དེས་ན་ཆོས་རྣམས་མུ་བཞི་དང་། །
བྲལ་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་ལགས། །
རྣམ་ཤེས་བྱ་བའང་མ་ལགས་ལ། །
རྣམ་པར་གྲོལ་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལགས།[4] །༢༣

इसलिए (हे भगवन्) आपने सभी धर्मों को चतुष्कोटि (सत्, असत्, सदसत् [उभय] और अनुभय) [सत् और असत् दोनों से रहित] इन चारों (कोटियों) से रहित कहा है। (ये धर्म) विज्ञान द्वारा भी अविज्ञेय हैं और (अविद्या और तृष्णा से) विमुक्त (केवल आर्य लोगों के ही) गोचर हैं।

---

1. ཚིགས་བཅད་འདིའི་བརྗོད་བྱ་བསྟན་ཚུལ་ཕྱོགས་འདྲ་བ་ཞིག་དབུ་མ་རྩ་བ་ཤེས་རབ་ཏུ་ཡང་ "ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་རྟག་པར་འཛིན། །མེད་ཅེས་བྱ་བ་ཆད་པར་ལྟ། །དེ་ཕྱིར་ཡོད་དང་མེད་པ་ལ།། མཁས་པས་གནས་པར་མི་བྱའོ།།" ཞེས་གསལ་ཡོད། (རབ་བྱེད། ༡༥, ཚིགས་བཅད།–༡༠)
2. क,ख–व्स्यप्य।
3. चतुर्थचरण, भोट पाठे नास्ति।
4. བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ཚིགས་བཅད་འདིའི་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ཚང་མེད་པས། །དེ་ལེགས་སྦྱར་ལ་གཞི་བྱས་ནས་ཁ་བསྐང་གྲངས་ཚང་བཟོས་པའི་ཚིག་སྦྱོར་གོང་གསལ་ལྟར་རོ།།

[1]स्वप्नेन्द्रजालिकोद्भूतं[2] द्विचन्द्रोद्वीक्षणं[3] तथा ।
भूतं तद्वस्तु नोद्भूतं तथा दृष्टं जगत् त्वया ॥ २४॥

རྨི་ལམ་མིག་འཕྲུལ་ལས་བྱུང་དང་། །
ཟླ་གཉིས་ལ་[4]སོགས་མཐོང་བ་བཞིན། །
འགྲོ་བ་འབྱུང་བ་དེ་དངོས་སུ། །
མ་བྱུང་དེ་བཞིན་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟིགས། །༣༤

स्वप्न और इन्द्रजाल (माया) से उत्पन्न वस्तु तथा द्विचन्द्रदर्शन आदि, जैसे वास्तविक रूप में उत्पन्न वस्तु नहीं हैं, उसी तरह (हे भगवन्) आपने (सम्पूर्ण) जगत् को (अवास्तविक) देखा है।

उत्पन्नश्च स्थितो नष्टः स्वप्ने यद्वत् सुत[5]स्तथा ।
न चोत्पन्नः स्थितो नष्ट उक्तो लोको[6]ऽर्थतस्त्वया ॥ २५॥

སྐྱེ་དང་གནས་དང་འཇིག་པ་ཡང་། །
ཇི་ལྟར་རྨི་ལམ་བུ་སྐྱེས་བཞིན། །
སྐྱེ་འཇིག་གནས་པ་མེད་ན་ཡང་། །
འཇིག་རྟེན་དོན་དུ་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།[7] །༣༥

---

1. क,ख–स्वप्ने तु।
2. क,ख–जनकोद्भूतम्।
3. क,ख–द्विचन्द्रादीक्षणम्।
4. སྣ། པེ། གསེར་བྲིས། - ཟླ་བ་གཉིས་ལ།
5. क,ख–सत्।
6. क,ख–लोकार्थ।
7. གཞུང་འདིའི་བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ཚིགས་བཅད་འདིའི་བོད་འགྱུར་ཚང་མེད་ཀྱང་། ཤེར་འབྱུང་བློ་གྲོས་ཀྱི་སྦྱོད་འགྲེལ་དུ་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གཉིས་ "སྐྱེ་དང་གནས་དང་འཇིག་པ་ཡང་།། འཇིག་རྟེན་བསམ་པས་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས།" ཞེས་གསལ་བ་ལ་བརྟགས་པའི་ཚེ། དེར་གསལ་

स्वप्न में जैसे पुत्र उत्पन्न होता है, स्थित रहता है और नष्ट होता है, (लेकिन वस्तुतः) न उत्पन्न होता है, न स्थित होता है और न नष्ट होता है, फिर भी हे भगवन्, आपने लोकहित के लिए (इन सबका व्यवहार में) विद्यमान होना कहा है।

हेतुतः[1] सम्भवो दृष्टो यथा स्वप्ने तथेतरः ।
सम्भवः सर्वभावानां विभवोऽपि तथा मतः[2] ॥ २६ ॥

ཇི་ལྟར་རྒྱུ་ལས་རྨི་ལམ་ན། །
འབྱུང་བ་མཐོང་བ་དེ་བཞིན་དུ། །
དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བ་བཞིན། །
འཇིག་པའང་དེ་བཞིན་བཞེད་པ་ལགས། །༢༦

स्वप्न में जैसे हेतु (कारण) से उत्पाद देखा गया है, उसी तरह वैसा ही (स्वप्न से) भिन्न (जाग्रत् अवस्था में) सभी वस्तुओं का उत्पाद है और नाश भी वैसा (स्वप्नवत्) ही है—ऐसा आपने माना है।

रागादिकं तथा[3] दुःखं दुःख[4]संक्लेशसंसृतिः[5] ।
सम्भारपूरणान्मुक्तिः[6] स्वप्नवद् भाषितं त्वया[7] ॥ २७ ॥

བའི་ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ཀའི་ཚིག་རྐང་དང་པོ་གཉིས་ལ་མཐུན་པའི་ཆ་ཡོད། །དེ་ཡང་གཞུང་འདིའི་ཚིག་རྐང་དང་པོ་དང་བཞི་པ་ལྷན་དུ་བཀོད་པ་འདྲ་བ་ཞིག་ཡོད་པས། དངོས་དོན་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚིགས་བཅད་དེ་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་གཞུང་ཚིག་མིན་པར་སྣང་བས་དཔྱད་པར་བྱའོ། །ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བྱས་ན་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད། །ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་དང་གསུམ་པ་ལེགས་སྦྱར་ལ་གཞི་བྱས་ནས་གསར་དུ་པབ་བསྒྱུར་བྱས་སོ།།

1. क,ख–को नाशः, ग,घ–कारणात।
2. मतस्तथा (अयं श्लोकः भोटपाठे नास्ति पूर्णः)।
3. ग–रागदिजं यथा।
4. दुःख–'ग' पाटे नास्ति।
5. ग–संसृती तथा, घ–संसृताः।
6. क,ख–मोक्तिः।
7. ग–भाषितां त्वया, घ–भाषितस्त्वया।

དེ་བཞིན་ཆགས་སོགས་སྡུག་བསྔལ་དང་། །
འཁོར་བ་སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ཉོན་མོངས།[1] །
ཚོགས་རྫོགས་པ་ལས་[2]ཐར་པ་ཡང་། །
རྨི་ལམ་འདྲ་བར་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །༣༧

राग (द्वेष) आदि और दु:ख, उसी तरह दु:ख और क्लेशों का संसरण (परम्परा) तथा सम्भार (ज्ञान सम्भार और पुण्यसम्भार) की पूर्ति से मुक्ति (मोक्ष) सभी कुछ को हे भगवन्, आपने स्वप्न की भाँति कहा है।

जातं तथैव नो जातमागतं गतमित्यपि ।
मुक्तो बद्धस्तथा[3]ऽज्ञानी द्वयमिच्छेन्न तत्त्ववित् ॥ २८ ॥

དེ་བཞིན་སྐྱེས་དང་མ་སྐྱེས་དང་། །
འོངས་པ་དང་ནི་སོང་བ་ཡང་། །
དེ་བཞིན་བཅིངས་གྲོལ་ཡེ་ཤེས་ལ།[4] །
གཉིས་འདོད་ཡང་དག་རིགས་མ་ལགས། །༣༨

उत्पाद और अनुत्पाद, गमन और आगमन तथा बद्ध और मुक्त—ये सब द्वैत अज्ञानी देखता है, तत्त्वविद् नहीं देखता।

---

1. ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་བརྗོད་ཚིག་བཀོད་པའི་རིམ་པ་ལྟར་བྱས་ན་ "སྡུག་བསྔལ་ཀུན་ཉོན་འཁོར་བ་དང་།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. པོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ "ཚོགས་རྫོགས་པ་དང་" ཞེས་གསལ་ཡོད།
3. ग–बद्धोमुक्तस्तथा।
4. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་དཔེ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ "བཅིངས་གྲོལ་ལ་སོགས་མི་ཤེས་ལ།" །ཞེས་ཀྱང་གསལ་བས་གང་འཐད་དཔྱད་གཞི་ཆེའོ། །

उत्पत्तिर्यस्य नैवास्ति तस्य का[1] निर्वृतिर्भवेत् ।
मायागजप्रकाशत्वादादिशान्तत्वमर्थतः ॥ २९ ॥

གང་ལས་སྐྱེས་པ་ཡོད་མ་ལགས། །
དེ་ལ་མྱ་ངན་འདས་གང་ཡོད། །
སྒྱུ་མའི་གླང་པོ་འདྲ་བས་ན། །
དོན་དུ་གཟོད་ནས་ཞི་བ་ཉིད།[2] །༢༩

जिसकी उत्पत्ति नहीं है, उसकी निर्वृत्ति (निर्वाण) भी कैसे है? मायिक गज की भाँति आभासित होने के कारण (सभी धर्म) वास्तव में आदिशान्त हैं।

उत्पन्नोऽपि न चोत्पन्नो[3] यद्वन्मायागजो मतः ।
उत्पन्नं च तथा विश्वं न वोत्पन्नं[4] च तत्त्वतः ॥ ३० ॥

སྐྱེས་པ་ཉིད་ནའང་མ་སྐྱེས་པ། །
སྒྱུ་མའི་གླང་པོ་ཇི་བཞིན་བཞེད། །
དེ་བཞིན་ཐམས་ཅད་སྐྱེས་པའམ། །
ཡང་དག་པར་ནི་མ་སྐྱེས་ལགས། །༣༠

उत्पन्न होते हुए भी (वस्तु) आपके मतानुसार मायागज की भाँति (स्वभावतः) अनुत्पन्न है। इसी तरह सारा विश्व उत्पन्न है, किन्तु तत्त्वतः (परमार्थतः) अनुत्पन्न ही है।

---

1. क,ख–तस्मात्का।
2. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ། "གང་ལས་སྐྱེ་བ་ཡོད་མིན་ཉིད། །དེ་ལ་མྱང་འདས་ག་ལ་ཡོད། །འགྲོ་བ་སྒྱུ་མར་གསལ་བའི་ཕྱིར། །དང་པོ་ནས་གཞི་འབབ་མེད་པར།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དཔེ་མ། 'ལ' ༣༥༦)
3. क,ख–वोत्प०।
4. ग–मनुत्पन्नं।

अमेयैश्चाप्रमेयाणां प्रत्येकं निर्वृतिः कृता ।
लोकनाथैर्हि सत्त्वानां न कश्चिन्मोचितश्च तैः[1] ॥ ३१ ॥

འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་དཔག་མེད་ཀྱིས། །
སེམས་ཅན་དཔག་ཏུ་མ་མཆིས་པ། །
སོ་སོར་མྱ་ངན་འདས་མཛད་ཀྱང་། །
དེ་དག་གིས་ཀྱང་གང་མ་བཀྲོལ། །༣༢

अमेय (असीमित) लोकनाथों के द्वारा अप्रमेय (असंख्य) सत्त्वों में से प्रत्येक को निर्वाण में प्रतिष्ठित किया गया। फलतः उनके द्वारा कौन मुक्त नहीं किया गया?

ते च सत्त्वाश्च नो जाता ये निर्वान्ति[2] न ते स्फुटम् ।
न कैश्चि[3]न्मोचितः कश्चिदिति प्रोक्तं महामुने ॥ ३२ ॥

ཐུབ་ཆེན་གང་ཕྱིར་སེམས་ཅན་རྣམས། །
རང་ལས་མ་སྐྱེས་དེ་ཡི་ཕྱིར།[4] །
གང་ཡང་གང་གིས་མ་བཀྲོལ་ཞེས། །
དེ་སྐད་ཁྱོད་ཀྱིས་གསལ་བར་གསུངས། །༣༣

जो निर्वाण प्राप्त करते हैं, वे सत्त्व (वस्तुतः) स्पष्टतया उत्पन्न ही नहीं हैं, इसलिए किन्हीं के द्वारा कोई (स्वभावतः) मुक्त ही नहीं किया गया है—ऐसा हे महामुनि, आपने कहा है।

---

1. घ-चितचतैः।
2. क,ख-येनैव तेन।
3. ग-न कशित।
4. ལེགས་སྦྱར་ལ་ "རང་ལས" ཞེས་པའི་གསལ་ཁ་མེད།

मायाकारकृतं यद्वत् वस्तु शून्यं तथेतरत् ।
वस्तु शून्यं जगत् सर्वं त्वयोक्तं कारकस्तथा ॥ ३३ ॥

ཇི་ལྟར་སྒྱུ་མ་མཁན་གྱིས་བྱས། །
དངོས་པོ་སྟོང་པ་དེ་བཞིན་དུ། །
བྱས་པ་ཐམས་ཅད་དངོས་སྟོང་གཞན། [1] །
ཁྱོད་གསུང་དེ་བཞིན་བྱེད་པ་པོ། །༣༣

मायाकार द्वारा निर्मित वस्तु जैसे (स्वभावतः) शून्य है, इसी तरह अन्य (कृतक) वस्तु भी (स्वभावतः) शून्य है और इसी तरह सम्पूर्ण जगत् (स्वभावतः) शून्य है तथा उसी तरह (जगत् या वस्तु का) कर्ता भी शून्य है—ऐसा हे नाथ, आपने कहा है।

कारकोऽपि कृतो[2]ऽन्येन कर्तृत्वं[3] नातिवर्तते ।
अथवा तत्क्रियाकर्ता[4] कारकस्य प्रसज्यते ॥ ३४ ॥

བྱེད་པ་པོ་ཡང་གཞན་གྱིས་བགྱིས། །
བྱས་པ་ཅན་དུ་འགྱུར་བ་ལགས། །
ཡང་ན་དེ་ཡི་བྱ་བ་བྱེད། །
བྱེད་པ་པོར་ནི་ཐལ་བར་འགྱུར། །༣༤

---

1. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་དངོས་སྟོང་གཞན།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. घ-कृते।
3. ग-कृतत्वं, घ-कर्तुत्वं।
4. ग-कर्तृ।

कारक (कर्ता) भी अन्य के द्वारा किया गया है, ऐसी स्थिति में वह (अन्य) भी किसी अन्य के द्वारा किया गया है, फलतः इस कर्तृत्व-प्रक्रिया का अन्त नहीं होगा। अर्थात् अनवस्था दोष होगा। अथवा यदि कारक अपने ही उत्पाद की क्रिया करता है तो कर्म और कर्ता के एकत्व का प्रसङ्ग होगा।

नाममात्रं जगत् सर्वमित्युच्चैर्भाषितं त्वया ।
अभिधानात् पृथग्भूतमभिधेयं न विद्यते ॥ ३५ ॥

འདི་དག་ཐམས་ཅད་མིང་ཙམ་ཞེས། [1] །
ཁྱོད་ཀྱིས་གསང་[2]ཉེ་བསྟོད་དེ་གསུངས། །
བརྗོད་པ་ལས་ནི་གཞན་གྱུར་པ། །
བརྗོད་པར་བྱ་བ་ཡོད་མ་མཆིས། །༣༥

यह सम्पूर्ण जगत् नाममात्र है—ऐसा आपने उद्घोष (सिंहनाद्) किया है। अभिधान (नाम) से पृथग्भूत (अतिरिक्त) अभिधेय अर्थात् उसका विषय (अर्थ) भी नहीं है।

कल्पनामात्रमित्यस्मात् सर्वधर्माः प्रकाशिताः ।
कल्पनाऽप्यसती प्रोक्ता यया शून्यं विकल्प्यते ॥ ३६ ॥

དེ་ཕྱིར་ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ནི། །
རྟོག་པ་ཙམ་ཞེས་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། [3] །

---

1. ཅིག་ཀང་དང་པོ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་མིང་ཙམ་ཞེས།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. སྣ། - གསུང་ནི།
3. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཅིག་ཀང་གཉིས་པ་ "རྟོག་པ་ཙམ་ཞེས་གསལ་བར་མཛད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད།

གང་གིས་སྟོང་པར་རྣམ་རྟོག་པའི། །
རྟོག་པ་ཡང་ནི་མེད་ཅེས་གསུངས། [1] །༣༦

इसलिए सभी धर्म कल्पनामात्र हैं—ऐसा आपने प्रकाशित किया है। वह कल्पना भी असत् है, जिसके द्वारा शून्य (धर्म) कल्पित किये जाते हैं। (अर्थात् यद्यपि सभी धर्म शून्य हैं, किन्तु कल्पना उसमें वस्तुसत् धर्म का अभिनिवेश करती है।) ऐसी कल्पना भी सत् के रूप में उपलब्ध नहीं है।

भावाभावद्वयातीतमनतीतञ्च[2] कुत्रचित् ।
न च ज्ञानं[3] न च ज्ञेयं न चास्ति[4] नैव नास्ति तत्[5] ॥ ३७॥

དངོས་དང་དངོས་མེད་གཉིས་འདས་པ། །
ལ་ལར་མ་འདས་པ་ཡང་ལགས། །
ཤེས་པ་མེད་ཅིང་ཤེས་བྱའང་མེད། །
མེད་མིན་ཡོད་མིན་གང་ལགས་དང་། །༣༧

भाव (सत्), अभाव (असत्), उभय (भावाभाव या सद्सद् द्वय) अनतीत अर्थात् अनुभय (न सदसत्) ऐसा कोई कहीं हो—ऐसा न कोई ज्ञान है और न कोई ज्ञेय है, इसलिए 'अस्ति' (अस्तित्व भी) नहीं है और नास्ति (नास्तित्व) भी नहीं है।

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྒྲོན་འགྲེལ་དུ་ "དེ་ཕྱིར་བརྟགས་པ་ཙམ་ཉིད་དུ། །ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་བསྟན་པ་ཡིན། །གང་གིས་སྟོང་ཉིད་རྣམ་བརྟགས་པས། །རྟོག་པའང་མེད་པར་བརྗོད་པའོ།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དབུ་མ། 'ཡ' ༣༧༥)
2. ग,घ-तश्च।
3. ग-ज्ञातं।
4. ख-चास्तिज्ञा।
5. क,ख-नैव नास्तिवत्, ग-न च नास्ति यत्, घ-नैवमास्ति तत्।

यन्न चैकं न चानेकं नोभयं न च नोभयम् ।
अनालयमथाव्यक्तमचिन्त्यमनिदर्शनम् ॥ ३८ ॥

གང་ཡང་གཅིག་མིན་དུ་མའང་མིན། །
གཉིས་ཀ་མ་ཡིན་གཉིས་མེད་མིན། [1] །
གཞི་མེད་པ་དང་མི་གསལ་དང་། །
བསམ་མི་ཁྱབ་དང་དཔེ་མེད་དང་། [2] །༣༨

जो न एक है, न अनेक है, न उभय (एक और अनेक दोनों) है तथा न तो अनुभय (अर्थात् जिसमें एक और अनेक दोनों स्वभाव नहीं हो—ऐसा कोई भाव) ही है। (सभी) अनालय (निराश्रय), अव्यक्त (अस्फुट) अचिन्त्य (ज्ञान के अविषय) और अनिदर्शन (वस्तुतः उपमारहित) हैं।

यन्नोदेति न च व्येति नोच्छेदि न च शाश्वतम् ।
तदाकाश[3]प्रतीकाशं नाक्षरज्ञानगोचरम् ॥ ३९ ॥

གང་ཡང་མི་སྐྱེ་མི་འགག་དང་། །
ཆད་པ་མེད་ཅིང་རྟག་མེད་པ། །

---

1. པོད་འགྱུར་ཁ་ཅིག་ཏུ་ "གཉིས་ཀ་མ་ཡིན་ཅི་ཡང་མེད།" །ཅེས་གསལ་ཞིང་སྣར་ཐང་སྡེར་མ་སོགས་སུ་ "གཉིས་ཀ་མ་ཡིན་གཅིག་ཀྱང་མེད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ་བར་མངོན་ནོ།།
2. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་རྐང་བཞི་པ་ "བསམ་མི་ཁྱབ་དང་བསྟན་མེད་དང་།" །ཞེས་གསལ་ཡོད། ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར། "གང་ཞིག་གཅིག་མིན་དུ་མ་མིན།། གཉིས་མིན་གཉིས་མིན་པ་ཡང་མིན། །གནས་མེད་གསལ་བ་མེད་པ་དང་། །བསམ་དུ་མེད་ཅིང་བསྟན་དུ་མེད།" །ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༧༣)
3. क–न चाकाशं, ख–न चाकाश०, ग,घ–तदाकाशं।

དེ་ནི་ནམ་མཁའ་འདྲ་བ་ལགས། [1] །
ཡི་གེ་ཡི་ཤེས་སྤྱོད་ཡུལ་མིན།[2] །༣༩

जो उत्पन्न नहीं होता और नष्ट नहीं होता तथा न जिसका उच्छेद होता है और जो न शाश्वत (नित्य) होता है, वह आकाश के समान है और वह शब्द और कल्पना ज्ञान का विषय भी नहीं है।

यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यता सैव ते मता ।
तथाविधश्च सद्धर्मस्तत्समश्च तथागतः ॥ ४० ॥

དེ་ནི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། །
དེ་ནི་སྟོང་པར་ཁྱོད་བཞེད་ལགས། །
དམ་པའི་ཆོས་ཀྱང་དེ་ལྟ་བུ། །
དེ་བཞིན་གཤེགས་པའང་དེ་དང་མཚུངས། [3] །༤༠

जो प्रतीत्यसमुत्पाद है, वही आपके मतानुसार शून्यता है। उसी प्रकार सद्धर्म और उसी के समान तथागत है। (अर्थात् सभी प्रतीत्यसमुत्पन्न एवं शून्य हैं)।

---

1. ལེགས་སྦྱར་གྱི་དཔེ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ "དེ་ནི་ནམ་མཁའ་འདྲ་མ་ཡིན།" །ཞེས་དགག་ཚིག་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་དོན་ལ་འཐད་པར་མ་མཐོང་ངོ་།།
2. ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པ། "གང་ཞིག་སྐྱེ་མེད་འཇིག་པ་མེད། །ཆད་པ་མེད་ཅིང་རྟག་པ་མེད། །དེས་ན་མཁའ་ལྟར་སོ་སོར་སྣང་། །ཡི་གེས་ཤེས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་མིན།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༩༣)
3. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྤྱོད་འགྲེལ་དུ་ "གང་ཞིག་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་། །དེ་ལ་ཁྱོད་ནི་སྟོང་པར་བཞེད། །དེ་བཞིན་དུ་ནི་དམ་ཆོས་ཏེ། །དེ་དང་མཚུངས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས།།" ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (དབུ་མ། 'ལ' ༣༥༦) ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར་ཡང་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༩༣)

तत्तत्त्वं परमार्थोऽपि तथता द्रव्यमिष्यते ।
भूतं तदविसंवादि तद्बोधाद् बुद्ध उच्यते ॥ ४१ ॥

དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོན་དང་ནི། [1] །
དེ་བཞིན་ཉིད་དང་རྫས་སུ་བཞེད། [2] །
དེ་ནི་ཡང་དག་མི་བསླུ་བ། །
དེ་རྟོགས་པས་ན་སངས་རྒྱས་བརྗོད། [3] །༤༡

वही तत्त्व (शून्यता) परमार्थ भी है, तथता और द्रव्य (वास्तविक) भी वही माना जाता है। वही वास्तविक और अविसंवादी है। उसी का बोध होने से 'बुद्ध' कहा जाता है।

बुद्धानां सत्त्वधातोश्च तेनाभिन्न[4]त्वमर्थतः ।
आत्मनश्च परेषां[5] च समता तेन ते मता ॥ ४२ ॥

---

1. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་དང་པོ་ "དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོན་དམ་དུའང་།" །ཞེས་གསལ་ཡོད། སྔོད་འགྲེལ་དུ་དྲངས་པ་དེར་ "དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོན་མེད་པའང་།" །ཞེས་དགག་པའི་རྣམ་ཅན་དུ་བཀོད་པ་ཇི་ལྟར་འཐད་དཔྱད་པར་བྱའོ། །
2 ཚིག་རྐང་དང་པོ་གཉིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར། "དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོན་དམ་པ། །དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དངོས་པོར་འདོད།" ཅེས་གསལ་ཡོད།
3. ཚིགས་བཅད་འདི་ཤེར་འབྱུང་སྔོད་འགྲེལ་དུ། "དེ་ནི་དེ་ཉིད་དོན་མེད་པའང་། །དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་རྫས་སུ་བཞེད། །ཡང་དག་དེ་ནི་མི་བསླུ་བ། དེ་རྟོགས་པ་ནི་སངས་རྒྱས་བརྗོད།" ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ་ཞིང་། ཚིག་རྐང་ཐ་མ་འདིར་གསལ་བ་ལྟར་ལེགས་སྦྱར་དང་མཐུན་ཆེ་བས་དེ་ཉིད་དཀྱུས་སུ་བཞག་གོ ། (དབུ་མ། 'ཙ' ༣༥༧) སྡེ་དགེ་སོགས་སུ་ "དེ་རྟོགས་པས་ན་སངས་རྒྱས་བརྗོད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད། །
4. क,ख-भिन्नस्त्व०।
5. क-परेषांश्च।

སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་སེམས་ཅན་ཁམས། །
དོན་དུ་ཐ་དད་མེད་པའི་ཕྱིར། །
དེས་ན་བདག་ཉིད་དང་ནི་གཞན། །
མཉམ་པ་ཉིད་དུ་ཁྱོད་བཞེད་ལགས། [1] །༤༣

बुद्धों और अन्य प्राणियों (के धर्मधातु अर्थात् प्रकृतिगोत्र) में भिन्नता नहीं है। उस कारण हे भगवन्, आपने स्वयं में और दूसरों में समता मानी है।

भावेभ्यः शून्यता नान्या न च भावोऽस्ति तां विना।
तस्मात् प्रतीत्यजा भावास्त्वया शून्याः प्रकाशिता॥ ४३॥

དངོས་པོ་རྣམས་ལས་སྟོང་གཞན་མིན། །
དེ་མེད་པར་ཡང་དངོས་པོ་མེད། །
དེ་ཕྱིར་རྟེན་ཅིང་འབྱུང་བའི་དངོས། །
སྟོང་པ་ལགས་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྟན། །༤༣

भावों (वस्तुओं) से भिन्न शून्यता नहीं है और न भाव ही उस (शून्यता) के बिना विद्यमान है। इसलिए हे भगवन्, आपने सभी प्रतीत्यसमुत्पन्न वस्तुओं को (परमार्थतः) शून्य (के रूप में) प्रदर्शित किया है।

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ། "སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་ཆོས་དབྱིངས་དང་།། དེས་ན་དོན་དུ་ཐ་མི་དད། །བདག་ཉིད་དང་ནི་གཞན་རྣམས་དང་། །དེས་ན་མཉམ་པར་ཁྱོད་བཞེད་ལགས།" །ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད། ཡང་ཚིགས་བཅད་འདི་གོང་གསལ་ལྟར་ཤེར་འབྱུང་སྒྲོན་འགྲེལ་དུ་ཡང་། "སངས་རྒྱས་རྣམས་དང་སེམས་ཅན་ཁམས། །དོན་གྱིས་དེ་དང་ཐ་དད་མེད། །བདག་ཉིད་ཀྱང་ནི་གཞན་རྣམས་ཀྱང་། །དེ་དང་མཉམ་པར་ཁྱོད་བཞེད་ལགས།" །ཞེས་གསལ་ཡོད། (དབུ་མ་ 'ཡ' ༣༨༡)

हेतुप्रत्ययसम्भूता परतन्त्रा च संवृतिः ।
परतन्त्र इति प्रोक्तः[1] परमार्थस्त्वकृत्रिमः[2] ॥ ४४ ॥

རྒྱུ་དང་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བའང་ལགས། །
གཞན་གྱི་དབང་ལས་ཀུན་རྫོབ་སྟེ། །
གཞན་གྱི་དབང་ཞེས་རབ་ཏུ་གསུངས། །
དམ་པའི་དོན་ནི་བཅོས་མ་ཡིན། །༤༤

संवृति हेतु और प्रत्ययों से उत्पन्न और परतन्त्र (कृत्रिम) है। इसलिए (सभी हेतु-प्रत्यय से उत्पन्न धर्म) परतन्त्र (-स्वभाव) कहे गये हैं। परमार्थ तो अकृत्रिम (हेतु-प्रत्यय के बिना) है।

स्वभावः प्रकृतिस्तत्त्वं द्रव्यं वस्तु सदित्यपि ।
नास्ति वैकल्पितो[3] भावः परतन्त्रस्तु विद्यते ॥ ४५ ॥

ངོ་བོ་ཉིད་དང་རང་བཞིན་དང་། །
ཡང་དག་རྫས་དངོས་ཡོད་པའང་ལགས།[4] །
བརྟག་པའི་དངོས་པོ་མེད་པ་ཉིད། །
གཞན་གྱི་དབང་ནི་ཡོད་པ་ལགས།[5] །༤༥

---

1. क,ख-परतन्त्रमिति प्रोक्तम्।
2. ग-कृतिमः।
3. क,ख-वैकल्पिको।
4. ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ "ཡང་དག་རྫས་དངོས་ཡོད་གྱུར་ཀྱང་།།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
5. བོད་འགྱུར་པར་མ་རྣམས་སུ་ཚིག་རྐང་བཞི་པ། "གཞན་གྱི་དབང་ནི་ཡོད་མ་ལགས།" །ཞེས་དགག་པའི་རྣམ་ཅན་དུ་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ་བར་མངོན་ནོ།།

(वही परमार्थ परिनिष्पन्न) स्वभाव है, प्रकृति है, तत्त्व, वस्तु एवं सत् भी है। (विकल्प द्वारा निर्मित) परिकल्पित-भाव नहीं है, किन्तु परतन्त्र (हेतु-प्रत्यय समुत्पन्न) तो विद्यमान है।

अस्तीति कल्पिते भावे समारोपस्त्वयोदितः ।
नास्तीति कृतकोच्छेदादुच्छेदश्च प्रकाशितः ॥ ४६ ॥

བརྟག་[1]པའི་དངོས་པོ་ཡོད་ཅེས་པ། །
སྒྲོ་འདོགས་ལགས་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །
བྱས་པ་ཆད་ནས་མེད་ཅེས་པ། །
ཆད་པ་ལགས་པར་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །༤༦

कल्पित (असद्) वस्तु में 'यह 'अस्ति' है' (इस प्रकार के अभिनिवेश को) हे भगवन्, आपने 'समारोप (शाश्वत) अन्त' कहा है। कृत (हेतु-प्रत्ययसमुत्पन्न) का नाश होने से वह सर्वथा 'नास्ति' (नहीं है)—इस प्रकार के कथन को (आपने) 'उच्छेद अन्त' प्रकाशित किया है।

तत्त्वज्ञानेन [2]नोच्छेदो न च शाश्वतता[3] मता ।
वस्तुशून्यं जगत् सर्वं मरीचिप्रतिमं मतम् ॥ ४७ ॥

ཡང་དག་ཤེས་པས་ཆད་པ་མེད། །
རྟག་པ་ཉིད་ཀྱང་མེད་པར་བཤད། [4] །

---

1. སྣ། པེ། - བརྟགས་པའི།
2. क,ख-चोच्छेदो, घ-वोच्छेदो।
3. घ-शाश्वतते।
4. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ "རྟག་པ་ཉིད་ཀྱང་མེད་པར་བཞེད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད།

འགྲོ་བ་དངོས་པོས་སྟོང་པ་ལགས། [1] །
དེ་སྨྲད་སྨིག་རྒྱུ་འདྲ་བར་བཞེད། [2] །༤༧

तत्त्वज्ञान (सम्यग्ज्ञान) के द्वारा न तो उच्छेद अन्त माना जाता है और न ही शाश्वत अन्त माना जाता है। हे भगवन्, यह सम्पूर्ण जगत् वस्तुतः (स्वभावतः) शून्य और मृगमरीचिका के समान आपने माना है।

मृगतृष्णाजलं यद्वन्नोच्छेदि न च शाश्वतम् ।
तद्वत् सर्वं जगत् प्रोक्तं नोच्छेदि न च शाश्वतम् ॥ ४८ ॥

ཇི་ལྟར་རི་དྭགས་སྐོམ་ཆུ་ནི། །
ཆད་མེད་རྟག་པ་ཡོད་མ་ཡིན། །
དེ་བཞིན་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །
ཆད་མེད་རྟག་པ་མེད་པར་གསུངས། [3] །༤༨

जिस प्रकार मृगतृष्णा का जल न तो उच्छिन्न है और न ही शाश्वत है, उसी प्रकार सम्पूर्ण जगत् न तो उच्छिन्न है और न ही शाश्वत है—ऐसा आपने कहा है।

---

1. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "འགྲོ་ཀུན་དངོས་པོས་སྟོང་པ་ལགས།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. ཚིགས་བཅད་འདི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པར། "དེ་ཉིད་ཤེས་ལ་ཆད་པ་དང་། །རྟག་པ་ཉིད་དུ་འདོད་མིན་ཏེ། །འགྲོ་ཀུན་དངོས་པོས་སྟོང་པ་སྟེ། །སྨིག་རྒྱུ་དག་དང་མཚུངས་པར་འདོད།།" ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༨༨)
3. ཚིགས་བཅད་འདི་ཡང་དེ་ཉིད་ལས། "ཅི་ལྟར་སྨིག་རྒྱུ་དག་གི་ཆུ། །རྟག་དང་ཆད་པ་ཡོད་མ་ཡིན།། དེ་བཞིན་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་དག །རྟག་དང་ཆད་པ་མེད་པར་བཤད།" །ཅེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཤིན་ཏུ་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༨༨)

द्रव्यमुत्पद्यते यस्य तस्योच्छेदादिकं[1] भवेत् ।
अन्तवान्नान्तवांश्चापि[2] लोकस्तस्य प्रसज्यते ॥ ४९ ॥

གང་ལ་རྫས་ཤིག་སྐྱེ་འགྱུར་བ། །
དེ་ལ་ཆད་སོགས་འཇིག་པ་འབྱུང་། [3] །
དེ་ལ་འཇིག་རྟེན་མཐའ་ཡོད་དང་། །
མཐའ་མེད་པར་ཡང་འགྱུར་བ་ལགས། [4] །༤༩

जिसके मत में द्रव्य का (स्वभावत:) उत्पाद होता है, उसके मत में उच्छेद (शाश्वत) आदि 'अन्त' होंगे। (इतना ही नहीं) उसके मत में लोक के अन्तवान् एवं अनन्तवान् होने का प्रसङ्ग होगा।

ज्ञाने सति यथा ज्ञेयं ज्ञेये ज्ञानं तथा सति ।
यत्रो[5]भयमनुत्पन्नमिति बुद्धं [6]तदाऽस्ति किम् ॥ ५० ॥

ཤེས་པ་ཡོད་པས་ཤེས་བྱ་བཞིན། །
ཤེས་བྱ་ཡོད་པས་དེ་ཤེས་བཞིན། །
གང་ཚེ་གཉིས་ཀ་མ་སྐྱེས་པར། །
རྟོགས་པ་དེ་ཚེ་ཅི་ཞིག་ཡོད། །༥༠

---

1. क,ख-तस्योत्पादादिकं।
2. क-वाञ्चापि।
3. ཚིག་ཀང་གཉིས་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་དཔེ་ཁ་ཅིག་ཏུ། "དེ་ལ་སྐྱེ་སོགས་འབྱུང་བར་འགྱུར།།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
4. ལེགས་སྦྱར་དུ་ཚིག་ཀང་ཐ་མ "མཐའ་མེད་པར་ཡང་ཐལ་བར་འགྱུར།།" ཞེས་གསལ་ཡོད།
5. क,ख-यदो।
6. क,ख-बुद्धे।

जिस प्रकार ज्ञान होने पर ज्ञेय होता है, उसी प्रकार ज्ञेय होने पर ज्ञान होता है। जब (ज्ञान और ज्ञेय) दोनों उत्पन्न नहीं हैं—ऐसा जान लिया, तब (वस्तुतः) क्या है। (अर्थात् ज्ञान, ज्ञेय आदि किसी का भी स्वभावतः अस्तित्व नहीं है)।

इति मायादिदृष्टान्तैः स्फुटमुक्त्वा भिषग्वरः[1] ।
देशयामास सद्धर्मं सर्वदृष्टिचिकित्सितम्[2] ॥५१॥

དེ་ལྟར་སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་དཔེ། །
སྨན་པའི་མཆོག་གིས་གསལ་བསྟན་ནས། །
ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་འགོག་བྱེད་པའི། །
དམ་པའི་ཆོས་ནི་བསྟན་པ་ལགས། [3] །༥༡

इस प्रकार (सभी धर्मों को) माया (स्वप्न) आदि के दृष्टान्त द्वारा (निः-स्वभाव) कहकर भिषग्वर (भगवान् बुद्ध) ने जिस सद्धर्म की देशना की है, वह सद्धर्म सभी (मिथ्या) दृष्टि (रूपी रोगों) के प्रहाण के लिए औषधि है।

एतत्तत् परमं तत्त्वं निःस्वभाव[4]**त्वदेशना** ।
भावग्रहगृहीतानां चिकित्सेयमनुत्तरा ॥५२॥

ངོ་བོ་མེད་པ་ཉིད་བསྟན་པ། །
དེ་ནི་ཡང་དག་དམ་པ་ལགས། །

---

1. घ-भिषट्वरः।
2. ग,घ-चिकित्सिकम्।
3. ཚིག་རྐང་ཐ་མ་གཉིས་དོན་གྲོལ་གྱི་དབང་དུ་བྱས་ནས་བསྒྱུར་ན་ "ལྟ་བའི་ནད་རྣམས་གསོ་བྱེད་པའི། །དམ་པའི་ཆོས་ནི་བསྟན་པ་ལགས།" །ཞེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་མངོན་ནོ། །
4. ग-०भावार्थदेशना।

དངོས་པོའི་གདོན་གྱིས་ཟིན་རྣམས་ཀྱི།[1] །
གསོ་བ་དེ་ནི་བླ་ན་མེད། །༥༣

जो भगवान् द्वारा प्रदत्त निःस्वभावता की देशना है, वह परम तत्त्व है। यह (देशना) भावाभिनिवेश (वस्तुसत्ता के प्रति आग्रह) से ग्रस्त लोगों के लिए अनुत्तर (सर्वश्रेष्ठ) चिकित्सा है।

धर्मयाज्ञिक, तेनैव धर्मयज्ञं[2] निरन्तरम्[3] ।
अभीष्टमीजे[4]त्रैलोक्ये निष्कषाये निरन्तरम्[5] ॥ ५३ ॥

དེས་ན་ཆོས་ཀྱི་མཆོད་སྦྱིན་པ། །
སྐྱོན་བྲལ་དྲི་མ་མེད་པ་ཡིས། [6] །
མཆོད་སྦྱིན་རིམ་པས་རྟག་རྒྱུན་དུ། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་སྦྱིན་སྲེག་མཛད། [7] །༥༣

---

1. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་དོན་ཐོབ་ཀྱི་དབང་དུ་བྱས་ན་ "དངོས་འཛིན་གདོན་གྱིས་ཟིན་རྣམས་ཀྱི།།" ཞེས་བཀོད་ཆོག་པར་མངོན་ནོ།།
2. ग–यज्ञो।
3. ग,घ–निरन्तरः।
4. ग–अभीज्ञमिष्ट, घ–अभिज्ञमिष्ट।
5. ग–निष्कपातो निरद्मलः।
6. ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་འདི་བོད་འགྱུར་རྣམས་སུ་གསལ་མེད་ཀྱང་ལེགས་སྦྱར་ལ་བརྟག་ན་གོང་དུ་བཀོད་པ་དེ་འདྲ་ཞིག་མིན་ནམ་སྙམ་པ་འདུག་པས་ཞིབ་ཏུ་དཔྱད་པར་འཚལ། གཞི་རྩའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་མ་དཔེ་ཆེས་བགྲེས་སོང་དེ་ཚོའི་ཚིག་སྦྱོར་ལ་མ་མཐུན་པ་མང་བ་སོགས་ཀྱི་ཁྱད་ཆེ་བས་མཐའ་ཅིག་ཏུ་ཁ་ཚོན་བཅད་དཀའ་བའི་གནས་སུ་མངོན་ནོ།།
7. བོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ "འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་སྦྱིན་སྲེག་མཛད།" །ཅེས་གསལ་ཡང་ལེགས་སྦྱར་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།

इसीलिए हे धर्मयाज्ञिक (धर्मयज्ञ करने वाले), आपने निष्कषाय (दोषरहित) तीनों लोकों में इष्ट धर्मयज्ञ का निरन्तर यजन किया है।

वस्तुग्राहभयोच्छेदी कुतीर्थ्यमृगभीकरः ।
नैरात्म्यसिंहनादोऽयमद्भुतो नदितस्त्वया ॥ ५४ ॥

དངོས་འཛིན་འཇིགས་པ་གཅོད་བགྱིད་ཅིང་། །
མུ་སྟེགས་རི་དྭགས་འཇིགས་བགྱིད་པ། །
བདག་མེད་སེངྒེའི་ང་རོའི་སྒྲ། །
རྨད་བྱུང་དེ་ནི་ཁྱོད་ཀྱིས་གསུངས། །༥༨

वस्तुग्राह रूपी भय का उच्छेद (नाश) करने वाले, कुतैर्थिक (गलत अबौद्ध मत को मानने वाले) रूपी मृगों को भयभीत करने वाले नैरात्म्य (शून्यता) रूपी इस अद्भुत सिंहनाद का हे भगवान्, आपने नदन (गर्जन) किया है।

शून्यताधर्मगम्भीरा धर्मभेरी पराहता ।
नैःस्वाभाव्यमहानादो धर्मशंखः प्रपूरितः ॥ ५५ ॥

སྟོང་པ་ཉིད་དང་ཆོས་ཟབ་པའི། །
ཆོས་ཀྱི་རྔ་ཆེན་བརྡུངས་པ་[1]ལགས། །
ངོ་བོ་ཉིད་མེད་སྒྲ་[2]བོ་ཆེའི། །
ཆོས་ཀྱི་དུང་ནི་བུས་པ་ལགས། །༥༥

(हे भगवन् आपने) गम्भीर शून्यता धर्म (का उद्घोष करने) वाली धर्मभेरी को बजाया तथा निःस्वभावता का महानाद करने वाले धर्मशंख को पूरित किया। (अर्थात् शंखनाद किया)।

---

1. སྣ། པེ། གསེར། - བརྡུང་བ་
2. སྣ། - དགྲ་བོ་ཆེ་

धर्मयौतक[1]माख्यातं बुद्धानां शासनामृतम् ।
नीतार्थमिति चोद्दिष्टं[2] धर्माणां शून्यतैव हि ॥ ५६ ॥

སངས་རྒྱས་བསྟན་པ་བདུད་རྩི་ཡི། །
ཆོས་ཀྱི་གནང་སྦྱིན་བཀའ་བསྩལ་ལགས། །[3]
ཆོས་རྣམས་[4]ཀུན་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད། [5] །
ངེས་པའི་དོན་དུ་ཞེས་ཀྱང་བསྟན། །༥༦

बुद्धों का शासन रूपी अमृत धार्मिक सम्पत्ति कही गई है। धर्मों की (स्वभावत:) शून्यता को ही आपने नीतार्थ कहा है।

या [6]तूत्पादनिरोधादिसत्त्वजीवादि[7]देशना ।
नेयार्था सा मता नाथ[8] भाषिता संवृतिश्च सा ॥ ५७ ॥

གང་ཡང་སྐྱེ་དང་འགག་ལ་སོགས། །
སེམས་ཅན་སྲོག་ལ་སོགས་བསྟན་པ།[9] །

---

1. ग,घ–धर्मयोतु०।
2. ग–निर्दि०।
3. བོད་འགྱུར་སྔར་མ་རྣམས་སུ་ "ཆོས་ཀྱི་རྫས་ནི་གསུངས་པ་ལགས།" ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བསྟུན་ན་གོང་གསལ་ལྟར་དགོས་པར་སྣང་བས་བརྟགས་འཚལ།།
4. སྣ། པེ། གསེར། – ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ནི་
5. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ "ཆོས་རྣམས་ཀུན་གྱི་སྟོང་པ་ཉིད།" ཅེས་ཀྱང་བཀོད་ཆོག་པར་མངོན།
6. क,ख–या उत्पाद।
7. क,ख–सर्वज्ञत्वादि, घ–सर्वजीदि।
8. ग–चत्वार्य नाथ, घ–सा नाथ।
9. ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་འདི་ད་ཡོད་ཀྱི་རྒྱ་དཔེ་ཁག་གཅིག་ཏུ། "ཐམས་ཅད་མཁྱེན་ལ་སོགས་བསྟན་པ།" །ཞེས་གསལ་ཡོད་ཀྱང་བོད་འགྱུར་རྣམས་དང་རྒྱ་དཔེ་ཕལ་ཆེ་བར་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ་བར་མངོན་ནོ། །ཚིགས་བཅད་འདི་མཁན་ཆེན་ཞི་འཚོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྒྲུབ་པར་

དེ་ནི་བཀྲི་དོན་ཀུན་རྫོབ་ཏུ། །
མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་བསྟན་པ་ལགས། 1 །༥༧

उत्पाद, निरोध आदि तथा सत्त्व, जीव (पुरुष, पुद्गल) आदि की जो देशना है, वह (देशना) नेयार्थ मानी गई है। हे नाथ, आपने उस देशना को 'संवृति' कहा है।

प्रज्ञापारमिताम्बोधेर्योऽत्यन्तं पारमागतः[2] ।
स पुण्यगुणरत्नाढयस्त्वद्गुणार्णवपारगः ॥ ५८ ॥

ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་མཚོ་ཡི། །
ཕ་རོལ་གང་གིས་རང་ཕྱིན་ཏེ། 3 །
བསོད་ནམས་ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་ཕྱུག། །
མགོན་ཁྱོད་ཡོན་ཏན་ཕ་རོལ་ཕྱིན། །༥༨

जो प्रज्ञापारमिता रूपी सागर के अत्यन्त पार चला गया है, वह पुण्य एवं गुण रूपी रत्नों से समृद्ध (सम्पन्न) है और आपके (बुद्ध के) गुण रूपी सागर के भी पार चला गया है।

इति स्तुत्वा जगन्नाथमचिन्त्यमनिदर्शनम् ।
यदवाप्तं मया पुण्यं तेनास्तु त्वत्समं जगत् ॥ ५९ ॥

"སྐྱེ་དང་འབྱུང་བ་འཛིགས་ཚོགས་དང་། །སེམས་ཅན་སྲོག་སོགས་སྟོན་མཛད་པ། །མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་དེ་དྲང་དོན། །གསུངས་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་ཡིན།" །ཞེས་གསལ་བས་འགྱུར་ཁྱད་ཆེ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༣༦)

1. ཚིག་རྐང་ཕྱི་མ་གཉིས་ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་བྱས་ན་ "དེ་ནི་དྲང་བའི་དོན་དུ་བཞེད། །ཀུན་རྫོབ་ཡིན་པར་མགོན་ཁྱོད་གསུངས།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. ग-परमागतः।
3. ཚིག་རྐང་གཉིས་པ་ལེགས་སྦྱར་དུ་ "གང་ཞིག་ཤིན་ཏུ་ཕ་རོལ་ཕྱིན།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།

དེ་ལྟར་དཔེ་མེད་བསམ་མི་ཁྱབ། ।
འགྲོ་བའི་མགོན་པོ་བསྟོད་པ་ཡིས། ।
བདག་གིས་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་དེས། ।
འགྲོ་བ་ཁྱོད་དང་མཚུངས་པར་ཤོག། །༥༨

इस प्रकार अचिन्त्य, अनिदर्शन जगन्नाथ (भगवान् बुद्ध) की स्तुति करके मैंने जो पुण्य अर्जित किया है, उस (पुण्य) से यह सम्पूर्ण जगत् (प्राणी मात्र) आप (बुद्ध) के समान हो जाएं। अर्थात् बुद्धत्व पद को प्राप्त हो जाए।

॥ इति अचिन्त्यस्तवः समाप्तः ॥

བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞལ་སྔ་
ནས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། ༎

•

परमार्थस्तवः

དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ།

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

कथं स्तोष्यामि ते [तं] नाथमनुत्पन्नमनालयम् ।
लोकोपमामतिक्रान्तं वाक्पथातीतगोचरम् ॥ १ ॥

སྐྱེ་བ་མེད་ཅིང་གནས་མེད་པ། །
འཇིག་རྟེན་དཔེ་ལས་ཤིན་ཏུ་འདས། །
ངག་གིས་བརྗོད་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་མིན། [1] །
མགོན་ཁྱོད་ཇི་ལྟར་བསྟོད་པར་[2]བགྱི། །༡

अनुत्पन्न, अनालय (आसक्तिरहित), लौकिक उपमाओं से अतिक्रान्त (अर्थात् जिन्हें लोक की कोई उपमा नहीं दी जा सकती, जो सभी उपमाओं से ऊपर हैं) एवं जो वाक्पथ (अभिधान) के गोचर (विषय) नहीं हैं, उस नाथ (भगवान् बुद्ध) की मैं कैसे स्तुति (गुणों का आख्यान) करूँ?

तथापि यादृशो वाऽसि तथतार्थेषु गोचरः ।
लोकप्रज्ञप्तिमागम्य स्तोष्येऽहं भक्तितो गुरुम् ॥ २ ॥

དེ་ལྟ་ན་ཡང་གང་འདྲ་བས། །
དེ་བཞིན་ཉིད་དོན་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི། །

---

1. ཚིག་རྐང་གསུམ་པ་ལེགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ "ངག་ཚིག་སྤྱོད་ཡུལ་ལས་འདས་ཤིང་།" །ཞེས་གསལ་ཡོད།
2. སྣ། པེ། གསེར། - བརྗོད་པར་བགྱི

འཇིག་རྟེན་བཏགས་པ་ལ་གནས་ནས། །
གུས་པ་ཆེན་པོས་བདག་གིས་བསྟོད། [1] །༣

आप जैसे भी हों, (चाहे आप) तथता के अर्थों (परमार्थ) में ही गोचर (विषय) हों, फिर भी लोकव्यवहार का आश्रय करके भक्तिपूर्वक मैं गुरु (भगवान् बुद्ध) की स्तुति करूँगा।

अनुत्पन्नस्वभावेन उत्पादस्ते न विद्यते ।
न गतिर्नागतिर्नाथ अभावाय[2] नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

སྐྱེ་བ་མེད་པའི་ངོ་བོ་ཡིས། །
ཁྱོད་ལ་སྐྱེ་བ་ཡོང་མི་མངའ། །
མགོན་ཁྱོད་གཤེགས་དང་བྱོན་མི་མངའ། །
དངོས་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །༣

(स्वभावत:) अनुत्पन्न होने के कारण आपका उत्पाद नहीं है, न कहीं से आगमन और न कहीं गमन है। हे नाथ, अभावस्वरूप आपको मेरा नमस्कार है।

न भावो नाप्यभावोऽसि नोच्छेदो नापि शाश्वतः ।
न नित्यो नाप्यनित्यस्त्वमद्वयाय नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

དངོས་མེད་མ་ལགས་དངོས་མ་ལགས། །
ཆད་པ་མ་ལགས་རྟག་མ་ལགས། །

---

1. ཞིགས་སྦྱར་ལྟར་ན་ཚིག་རྐང་བཞི་པ་ "གུས་པས་བླ་མར་བདག་གིས་བསྟོད།" །ཅེས་གསལ་ཡོད།
2. ग-स्वभावायन।

མི་རྟག་མ་ལགས་རྟག་མ་ལགས། ।
གཉིས་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །८

न तो आपका भाव (स्वभावतः) अस्तित्व है और न ही अभाव (संवृतितः) अभाव है। न आपका उच्छेद (सन्तति का उच्छेद) है और न आप शाश्वत (निरपेक्षतः सत्) हैं, न आप नित्य हैं और न अनित्य हैं। इस तरह अद्वय-स्वरूप आपको मेरा नमस्कार है।

न रक्तो[1] हरितमाञ्जिष्ठो वर्णस्ते नोपलभ्यते ।
न पीतः शुक्लः कृष्णो वा अवर्णाय नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

དམར་དང་ལྗང་དང་བཙོད་མདོག་མིན། །
སེར་དང་གནག[2]དང་དཀར་མ་ལགས། །
ཁྱོད་ལ་ཁ་དོག་ཡོད་མི་དམིགས། ।
མདོག་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །५

न रक्त, न हरा, न माञ्जिष्ठ (मजीठ), न पीत, न शुक्ल (सफेद), न कृष्ण (आशय यह है कि) कोई भी वर्ण आपका उपलब्ध नहीं होता है। इस तरह वर्णरहित आपको (हे नाथ) मेरा नमस्कार है।

न महान् नापि ह्रस्वोऽसि न दीर्घः परिमण्डलः ।
अप्रमाणगतिं प्राप्तोऽप्रमाणाय नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

ཆེན་པོ་མ་ལགས་ཆུང་མ་ལགས། ।
རིང་དང་ཟླུམ་པ[3]མ་ལགས་ལ། ।

1. क,ख–रक्ते।
2. སྣ། པེ། གསེར། – སེར་དང་ནག
3. སྣ། པེ། གསེར། – ཟླུམ་པས།

ཚད་མེད་པ་ཡི་དངོས་བརྙེས་པ། |

ཚད་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། །༦

न आप महान् (बृहदाकार) हैं और न सूक्ष्म (अत्यन्त छोटे) हैं। न लम्बे और गोलाकार हैं। आप (किसी भी) माप (नाप) से रहित स्वरूप वाले हैं। इस तरह अमेय स्वभाव आपको (हे नाथ) मेरा नमस्कार है।

न दूरे नापि चासन्ने नाकाशे नापि वा क्षितौ ।
न संसारे न निर्वाणे अस्थिताय नमोऽस्तु ते ॥ ७॥

རིང་མིན་ཉེ་བ་མ་ལགས་ཤིང་། |

ནམ་མཁའ་མ་ལགས་ས་མ་ལགས། |

འཁོར་མིན་མྱ་ངན་འདས་མ་ལགས། |

གནས་མི་མངའ་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། [1] །༧

न आप दूर में, न समीप में, न आकाश में न पृथ्वी में, न संसार में और न निर्वाण में स्थित हैं। इस तरह अस्थित (कहीं भी स्थित नहीं) स्वभाव वाले आपको मेरा नमस्कार है।

अस्थितः[2] सर्वधर्मेषु धर्मधातुगतिं गतः ।
परां गम्भीरतां प्राप्तो गम्भीराय नमोऽस्तु ते ॥ ८॥

ཆོས་རྣམས་ཀུན་ལ་མི་གནས་པས། |

ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་དངོས་གྱུར་ཅིང་། |

---

1. ཚིགས་བཅད་འདི་སློབ་དཔོན་ཆོས་ཀྱི་དབང་པོའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་སྙིང་པོ་བསྡུས་པ། "ཉེ་བར་མ་ཡིན་རིང་བར་མིན། །ནམ་མཁར་མ་ཡིན་སར་ཡང་མིན། །འཁོར་དང་མྱ་ངན་འདས་པར་མིན། །གནས་མེད་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།" །ཅེས་གསལ་ཡོད། (རྒྱ 'ཙུ' ༨༣)
2. ग–अस्थितं।

མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་ཉིད་[1]བརྙེས་པ། [2] །
ཟབ་མོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་འདུད། [3] །༨

हे भगवान्, आप सभी धर्मों में अस्थित (अर्थात् किसी भी धर्म में आश्रित नहीं), धर्मधातु (शून्यता) के स्वरूप को प्राप्त तथा परम गम्भीरता को प्राप्त हैं। इस तरह गम्भीर (स्वरूप) आपको मेरा नमस्कार है।

एवं स्तुते[4] स्तुतो भूयादथवा किमुत[5]स्तुतः ।
शून्येषु सर्वधर्मेषु कः स्तुतः केन वा स्तुतः ॥ ९ ॥

དེ་ལྟའི་བསྟོད་པས་བསྟོད་བགྱི་འམ། །
ཡང་ན་འདིར་[6]ནི་ཅི་ཞིག་བསྟོད། །
ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ལ། །
གང་ལ་བསྟོད་ཅིང་གང་གིས་བསྟོད། [7] །༩

इस प्रकार (के स्तोत्र से) स्तुति करने पर (आप) स्तुत (जिनकी स्तुति की गई है) होंगे अथवा कैसे स्तुत होंगे? (अर्थात् नहीं होंगे, क्योंकि) सभी धर्मों के शून्य होने पर कौन स्तुत होता है और किसके द्वारा स्तुति की गई है?

---

1 སྡེ་དགེ་སྣར་ཐང་ "མཆོག་ཏུ་ཟབ་པ་གཉིས་" ཞེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་འགྱུར་གཞན་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་གསལ་ཡོད་པ་འཐད་ཆེ།
2. སྣ། པེ། གསེར། - བརྙེས་པས་
3. སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་སྣར་ཐང་ "ཕྱག་འཚལ་བསྟོད།" ཅེས་གསལ་ཡང་། ལེགས་སྦྱར་དང་བོད་འགྱུར་གཞན་དུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད།
4. ग–स्तुतः, घ–स्तुतेः।
5. क,ख–किं वत्, घ–वतः।
6. སྣ། པེ། གསེར། - འདི་ནི།
7. ལེགས་སྦྱར་ན། ཚིག་རྐང་ཐ་མ་ "གང་ལ་བསྟོད་དམ་གང་གིས་བསྟོད།" ཅེས་གསལ་ཡོད།

कस्त्वां शक्नोति संस्तोतुमुत्पादव्ययवर्जितम् ।
यस्य नान्तो न मध्यं वा ग्राहो ग्राह्यं[1] न विद्यते ॥ १० ॥

སྐྱེ་དང་འཇིག་པ་རྣམ་སྤངས་ཤིང་། །
གང་ལ་མཐའ་དང་དབུས་མེད་པ།[2] །
གཟུང་དང་འཛིན་པ་མི་མངའ་བ།[3] །
འདིར་ནི་ཁྱོད་བསྟོད་ནུས་པ་གང་། །༡༠

जो उत्पाद और भङ्ग से रहित है, जिसका न अन्त है और न मध्य है तथा न ग्राहक है और न ग्राह्य है, उस भगवन्, आपकी कौन स्तुति करने में समर्थ है? अर्थात् कोई नहीं।

न गतं नागतं स्तुत्वा सुगतं गतिवर्जितम् ।
तेन पुण्येन लोकोऽयं व्रजतां सौगतीं गतिम् ॥ ११ ॥

གཤེགས་དང་བྱོན་པ་མི་མངའ་ཞིང་། །
འགྲོ་སྤངས་བདེ་བར་གཤེགས་བསྟོད་པའི།[4] །
བསོད་ནམས་དེས་ནི་འཇིག་རྟེན་རྣམས། །
བདེ་གཤེགས་གནས་སུ་འགྲོ་བར་ཤོག །༡༡

जिसका न गमन है और न आगमन है, उस गतिरहित सुगत (भगवान् बुद्ध) की स्तुति करके (जो मैंने पुण्य अर्जित किया है) उस पुण्य से यह संसार

---

1. क,ख-ग्राह्यग्राहो, घ-ग्राह्यग्राहं।
2. སྣ། པེ། གསེར། - མེད་ལ།
3. སྣ། པེ། གསེར། - མ་མཆིས་པས།
4. སྣ། པེ། གསེར། - བསྟོད་པས།

(समस्त प्राणी) सुगत (बुद्ध) की अवस्था को प्राप्त करें। अर्थात् बुद्धत्व पद प्राप्त करें।

॥ इति परमार्थस्तवः समाप्त ॥

कृतिराचार्यनागार्जुनपादानामिति[1]।

དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ་སློབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་
མཛད་པ་རྫོགས་སོ།། །།

भवतुसर्वमङ्गलम्



1. घ-चतुर्थ खण्डे परमार्थस्तवः समाप्तम्।

तापाच्छेदाच्च निकषात् सुवर्णमिव पण्डितैः।
परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचो न तु गौरवात्॥
तुलनीय- श्रीमहाबलतन्त्रराज (स्दे-दगे संस्करण 'ग' पृ० २१६)

བསྲེགས་བཅད་བདར་བའི་གསེར་བཞིན་དུ།།

ཡོངས་སུ་བརྟགས་ནས་ང་ཡི་བཀའ།།

བླང་བར་བྱ་ཡི་མོས་པའམ།།

གཞན་གྱིས་མཁས་པ་འཇུག་མི་བྱ།།

(དཔལ་སྟོབས་པོ་ཆེའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ། སྡེ། བཀའ། རྒྱུད། 'ག' ༣༡༨)

ཇི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ལས་དང་ཉོན་མོངས་···

རྒྱུར་བཅས་བྱེད་རྒྱུར་ལྡན་འབྱུང་དང་།།

ལས་དང་ཉོན་མོངས་པ་དག་ལྡོག་རྒྱུ···

དེ་ཡང་འདྲེན་པས་རབ་ཏུ་གསུངས།།

གང་ན་སྐྱེ་དང་ན་དང་རྒུད་པའི···

སྡུག་བསྔལ་ངེས་པར་མི་གནས་པ།།

ཐར་པའི་མཆོག་དེ་སླ་བའི་བྱུ་མཆོག···

དེ་ཡིས་རང་གིས་མཁྱེན་ཏེ་གསུངས།།

(འདུས་པ་རིན་པོ་ཆེ་ཏོག་གི་གཟུངས། མདོ། 'ན' ༡༥༥)

परिशिष्ट भाग
(१-५)

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་སྡེ་ཚན།

(༡-༥)

༄ ཚིག་གི་སྡེབ་སྦྱོར་སྦྱོར་བའི་རྩལ་ལ…

…རྩལ་བཞིན་ཤེས་པའི་ཤེས་ལྡན་ཞིང་།།

དོན་གྱི་རིན་ཆེན་ཆེན་པོའི་ཆེན་པོས…

…ཆེས་ཆེར་མཛེས་བྱེད་སྣ་ཚོགས་ཀྱི།།

གང་བློའི་ཁང་མཛེས་མཛེས་པར་རབ་སྤྲས…

…སྤྲོས་པས་སྤྲོས་པའི་ཡིད་དབང་ཕྱིར།།

གཞན་གྱི་སྙན་དངགས་ངག་གི་དཔལ་འཕྲོག…

…འཕྲོག་བྱེད་ཡིད་རབ་འཕྲོག་པ་སྦྱར།།

བསྟོད་འོས་རྣམས་ལ་བསྟོད་དབྱངས་སྙན་པའི་སྒྲས། །

བསྟོད་པའི་དགེ་བ་གང་དེས་ལུས་ཅན་ཀུན། །

བསྟོད་བྱར་གྱུར་ནས་དེ་དག་རྣམས་ལ་བདག །

བསྟོད་བྱེད་སྙན་དངགས་མཁན་དུ་འང་འགྱུར་བར་ཤོག །

(འགྲོ་མགོན་ཆོས་རྒྱལ་གྱི་གསུང་བསྟོད་དབྱངས་རྒྱ་མཚོ་སྙན་དངགས་རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱན་རྣམ་པར་བཀྲ་བ། བོད། 'བ' ༡༠༦)

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་དང་པོ།།

प्रथम परिशिष्ट

བཀའ་བསྟན་ནང་བཞུགས་བསྟོད་ཚོགས་རྒྱས་པའི་ངོ་སྤྲོད།

विस्तृत स्तोत्रगण का परिचय

༄༅། །བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་འོས་ཀྱི་ཞིང་མཆོག་ཏུ་གྱུར་པ་རྒྱལ་བ་རྡོ་རྗེ་འཆང་དང་ངོ་བོ་དབྱེར་མ་མཆིས་པའི་བླ་མ་ཡི་དམ་དང་། སངས་རྒྱས་བྱང་སེམས་སོགས་ལ། བསྟོད་པ་མཛད་པ་པོ་ཡང་ཆེ་བའི་ཆེས་མཆོག་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སོགས་འཕགས་ཡུལ་གྱི་ཚད་མར་གྱུར་པའི་སྐྱེས་མཆོག་གསེར་གྱི་རི་བོ་མཚར་དུ་མང་ར་བ་ལྟ་བུ་བྱོན་པ་དེ་དག་གིས་མཛད་པའི་བསྟོད་ཅིང་བསྔགས་པའི་བརྗམས་ཆོས་ཆེས་རྨད་དུ་བྱུང་ཞིང་། རྒྱ་ཆེ་ལ་རྣམ་གྲངས་མང་དག་ཅིག་བཀའ་དགོངས་འགྲེལ་དང་བཅས་པའི་མདོ་སྔགས་ཀྱི་གསུང་རབ་རྣམས་སུ་ཇི་ལྟར་གསལ་བའི་བསྟོད་པ་རྣམས་ཆེ་ལོང་རགས་པ་ནས་ཕྱོགས་བསྡུ་དང་འབྲེལ། ནང་གསེས་ཕྱེ་ནས་གསལ་ཁ་དོད་པོས་མཚན་བྱང་བཀོད་དགོས་གལ་ཆེ་བར་མཐོང་སྟེ། བསྟོད་པའི་སྐོར་གྱི་ཆོས་ཚན་རྣམས་སྤྱིར་བཀའ་བསྟན་གཉིས་སུ་ཕྱེ་ཞིང་། དེ་དག་རེ་རེ་ལ་ཡང་མདོ་ཕྱོགས་དང་སྔགས་ཕྱོགས་གཉིས་སུ་ཕྱེ་ནས་བཀོད་ཡོད།

དེ་གཉིས་ལས་དང་པོ་བཀའ་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་ཆ་མཚོན་ན་མདོ་སྔགས་གཉིས་ཀའི་ནང་ཆོས་ཚན་རང་མཚན་པ་བསྟོད་པའི་སྐོར་

ཡིན་པའི་ཞལ་གསལ་དངོས་སུ་འཁོད་པ་དང་། དེ་ལྟར་མིན་ཡང་ལེའུའི་ནང་གསེས་སུ་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་པའི་གསལ་ཁ་འཁོད་པ་དང་། དེ་དག་ལ་འགྲེལ་པ་ཡོད་པ་ཁག་གི་གསལ་ཁ་དང་། དེ་དག་ལས་གཞན་པའི་བསྟོད་པའི་ཞལ་གསལ་གང་རྙེད་རྣམས་ཀྱི་གསལ་ཁ་རེ་རེ་བཞིན་བཀོད་ཡོད།

གཉིས་པ་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར་ལ་སྤྱིར་ད་ཡོད་བསྟན་འགྱུར་སྤར་མ་ཚང་མའི་དབུར་བསྟོད་ཚོགས་ཞེས་སྡེ་མཚན་གཅིག་ཟུར་དུ་བཀོད་ཡོད། འོན་ཀྱང་དེ་དག་ཏུ་འཁོད་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་ཕྱག་དཔེ་རྣམས་ནི་མདོ་ཕྱོགས་ཀྱང་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་ལས། མདོ་སྔགས་གསུང་རབ་དགོངས་འགྲེལ་དང་བཅས་པར་གསལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་མཐའ་དག་པ་དང་། ཆ་ལག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་གསལ་མེད་པས་བསྟོད་ཚོགས་ཕྱོགས་རེ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། དེ་དག་ཏུ་གསལ་བའི་བསྟོད་ཚོགས་རྣམས་དཀར་ཆག་ཁག་ཏུ་གསལ་བ་ལྟར་ཆོས་ཚན་རང་མཚན་པའི་ཚུལ་དུ་གསལ་ཁ་འཁོད་པའི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་པ་ལས། ལེའུའི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བ་དང་། དེ་དག་གི་འགྲེལ་པ་ཁག་ཏུ་གསལ་བ་རྣམས་དེར་འཁོད་མེད། དེས་ན་གོང་སྨོས་བསྟན་འགྱུར་ཁག་ནང་གསལ་བའི་བསྟོད་ཚོགས་དེ་ནི་བཀའ་བསྟན་གཉིས་ལས་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་དང་། མདོ་སྔགས་གཉིས་ལས་མདོ་ཕྱོགས་ཀྱང་པའི་བསྟོད་པ་རྣམས་ཕྱོགས་བསྡུ་མཛད་པ་ཞིག་ཡིན་ནོ། །འདིར་མདོ་སྔགས་གཉིས་ཀའི་བསྟན་བཅོས་རྣམས་སུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པ་རྣམས་གོང་སྨོས་ལྟར་ཆ་མྱེ་ནས་བཀོད་པའི་རྩོལ་བ་བྱས་ཡོད།

ད་ལམ་འདིར་བསྡོད་ཚོགས་རྒྱས་ཙམ་ཞིག་བཀོད་ཡོད་པ་བཞིན་རྒྱལ་བའི་བཀའ་ལ་གཉིས་སུ་ཕྱེ་བའི་རྒྱུད་འབུམ་ནང་བཞུགས་བསྡོད་པའི་སྐོར་ལ་ཚོས་ཚན་རང་མཚན་པ་གྲངས་ ༡༣ དང་། ལེའུ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བ་ ༣༩ དང་། ལེའུ་ནང་ཚན་ལ་འགྲེལ་པའི་ཞལ་གསལ་ཡོད་པ་ ༡༦ བཅས་ཁྱོན་ ༥༣ ཡོད། བཀའ་འགྱུར་མདོ་ཕྱོགས་ལ་བསྡོད་པའི་སྐོར་གྱི་ཕྱག་དཔེ་རང་མཚན་པ་དེ་འདྲ་རྙེད་སོན་མ་བྱུང་ཡང་། ལེའུའི་ནང་ཚན་གྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ་གྲངས་ ༧ དང་། དེ་དག་ལ་འགྲེལ་པའི་ཞལ་གསལ་ཡོད་པ་ ༥ བཅས་ཁྱོན་ ༡༣ ཡོད།

བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྡོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་ཚོས་ཚན་རང་མཚན་པའི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པས། བཀའ་འགྱུར་ལྟར་སྡེ་ཚན་མང་པོར་དབྱེ་མ་དགོས་པར་མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་རྣམས་ཕལ་ཆེ་བ་དཀར་ཆག་ཁག་ཏུ་ཇེ་ལྟར་གསལ་བ་ལྟར་དང་། དེ་ནས་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་དང་། བསྟན་འགྱུར་ཁ་སྐོང་ནང་བཞུགས་རྣམས་ཞིབ་ཚགས་པོས་འཚོལ་བསྡུ་བྱས་ནས་བཀོད་ཡོད། དེ་ཡང་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་ལ་བསྡོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་ ༡༣༡ ཙམ་དང་། མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་ལ་བསྡོད་པ་རྒྱས་བསྡུས་རྩ་འགྲེལ་དང་བཅས་ ༧༣ ཡོད། དེ་དག་གི་སྙིང་སྡེ་དགེ་དང་ཅོ་ནེ་སྤར་མ་གཉིས་ལ་མེད་ཅིང་། པེ་ཀིང་དང་སྣར་ཐང་སྤར་མ་སོགས་ལས་ཁ་བསྐང་བའི་བསྡོད་པ་མང་དག་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། འདིར་བཀོད་པའི་པོད་དང་ཤོག་གྲངས་ཀྱི་གསལ་ཁ་དག་ནི་དར་ཐང་བཀའ་བསྟན་གྱི་ཁ་སྐོང་དུ་གསལ་བ་ལྟར་པེ་ཀིང་སྤར་མ

གཞི་བཟུང་ཡིན། དེ་ཡང་ཕལ་ཆེ་བ་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་སྐོར་ཡིན། དེའི་ནང་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ ༥༦ ཡོད། དེས་ན་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་ཁྱོན་བསྡོམས་བསྟོད་པ་གྲངས་ ༣༥༠ ཡོད།

མདོར་ན་བཀའ་འགྱུར་ནང་བཞུགས་ཆོས་ཚན་རང་མཚན་པ་དང་། ལེའུའི་ནང་མཚན་དང་། འབྲེལ་པའི་ནང་གསལ་ཁ་འཕོད་པ་བཅས་ཁྱོན་ ༦༥ དང་། བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་ ༣༥༠ བཅས་ཁྱོན་བསྡོམ་བསྟོད་པའི་སྐོར་གཞུང་རྒྱས་བསྡུས་འདྲ་མིན་ ༣༡༥ ཙམ་ཡོད། དེ་དག་གི་སྙིང་དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོའི་བསྟོད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་ནང་གསེས་སུ་བསྟོད་པ་ ༡༣ དང་། མདོ་སྡེ་རྒྱ་ཆེར་རོལ་པའི་མངོན་པར་བསྟོད་པའི་ལེའུའི་ནང་ཚན་གྱི་བསྟོད་པ་ ༡༣ བཅས་བསྣན་ན་ཁྱོན་བསྟོད་པ་ ༣༣༨ ཙམ་ཡོད་པ་བཞིན་དེ་དག་གི་མཚན་བྱང་དང་པོད་དང་ཤོག་གྲངས་སོགས་ཀྱི་ཞལ་གསལ་རྣམས་འདིར་བཀོད་ཡོད།

བསྟོད་པ་འདི་དག་གང་ལས་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱ་ཡུལ་གྱི་གཞི་འཛིན་སའི་བཀའ་བསྟན་སྣར་ཐང་མའི་ངོ་སྤྲོད་དང་། སྣར་ཐང་ཁག་གི་དཀར་ཆག་ནང་བསྟོད་པའི་གྲངས་བགྲེ་ཚུལ་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བསྟོད་པ་ཇི་ཡོད་སོགས་ཀྱི་གསལ་བཤད་དང་། སྤྱིར་བསྟོད་པ་དང་འབྲེལ་བའི་གནད་དོན་གལ་ཆེ་མང་དག་ཅིག་གི་སྐོར་དེབ་འདིའི་སྔོན་གླེང་དང་གླེང་བརྗོད་བཅས་སུ་བཀོད་ཡོད་པས་དེ་དག་ལ་གཟིགས་པར་འཚལ།། ||

ཀ བཀའ་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་ཚོགས་སྐོར།

काग्युर संग्रहान्तर्गतः स्तोत्रगणः

༡ སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

तन्त्रसम्बद्धः स्तुतिवर्गः

༡ 438- རྗེ་བཙུན་སྒྲོལ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གིས་བསྟོད་པ་ཕན་ཡོན་དང་བཅས་པ།[1] (རྒྱུད། 'ཙ' ༨༢–༨༣)
नमस्तारैकविशंतिस्तोत्रं अनुशंसासहितम्।

༢ 551- བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་འཇམ་དཔལ་རྣོན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'པ' ༡༥)
भगवता तीक्ष्णमञ्जुश्रियः स्तोत्रम्।

༣ 552- འཇམ་དཔལ་ངག་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་བུ་མོ་བརྒྱད་ཀྱིས་བསྟོད་པ།[2] (རྒྱུད། 'པ' ༡༥-༡༦)
अष्टानां कुमारीणां वागीश्वरमञ्जुश्रियः स्तोत्रम्।

---

༡ བསྟོད་པ་ཆེས་ཤིན་ཏུ་གྲགས་ཅན་འདི་དེང་སང་ཡང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཉམ་མེད་བཞུགས་ཡོད་པར་མ་ཟད། དཔེ་དེབ་མང་པོའི་ནང་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

༢ བསྟོད་པ་འདི་ཡོངས་གྲགས་ལ་འདོན་སྲོལ་ཆེ་བའི་ 'གཞོན་ནུའི་སྐུ་ལུས་འཆང་བ་པོ། །ཤེས་རབ་སྒྲོན་མེས་རབ་བརྒྱན་ཅིང་།' །ཞེས་སོགས་ཀྱི་བསྟོད་ཚིག་དེ་དག་དེར་གསལ་ཡོད། བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་དུ་ 'འཇམ་དཔལ་ལ་ལྷ་མོ་བརྒྱད་ཀྱིས་བསྟོད་པ་' ཞེས་པ་ཞིག་གསལ་ཡོད་པ་དེ་དང་འདི་གཉིས་གཅིག་མི་གཅིག་བརྟག་དགོས་པར་གསུངས་ཡོད། (བུ། ཆོས་འབྱུང་། ༣༥༨ དེབ་)

༤ 671- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོའི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོའི་རྒྱུད།[1] (རྒྱུད་ ‘བ’ ༣༠༣-༣༠༦)

श्रीदेवीकालीप्रशंसाराजतन्त्रम्।

༡ ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་དགེ་བ་བཅུའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༣)

༢ གནོད་སྦྱིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་རྣམ་ཐོས་སྲས་ཀྱིས་ལམ་རྣམ་པ་ལྔའི་ཚུལ་གྱིས་བསྟོད་པ། (༣༠༣)

༣ མིའམ་ཅིའི་རྒྱལ་པོ་ལྗོན་པ་རྟ་མགོ་ཅན་གྱིས་གཉིས་སུ་མེད་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༤)

༤ དྲི་ཟའི་རྒྱལ་པོ་ཟུར་ཕུད་ལྔ་པས་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༤)

༥ ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་དགའ་བོས་སྐུའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༥)

---

༡ བསྟོད་པ་འདིའི་ནང་གསེས་བཞི་པར་ཡོངས་གྲགས་ལ་འདོན་སྲོལ་ཆེ་བའི་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོའི་བསྟོད་པ ‘སེམས་ཉིད་འཕྲིན་ལས་རྣམ་བཞིའི་ཁྱད་པར་ནི།’ །ཞེས་སོགས་གསལ་ཡོད། ཡང་དེའི་ནང་ཆན་བརྒྱད་པར ‘དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་དཔག་པར་དཀའ་བའི་དོན། །ཐབས་ཀྱི་ཆོ་འཕྲུལ་ནམ་མཁའི་མཁའ་ལ་སྤྱོད།’ །ཅེས་སོགས་གསལ་ཡོད་པས། མདོར་ན་ཡོངས་གྲགས་ལ་བསྟེན་སྲོལ་ཆེ་བའི་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་དང་། འདིར་གསལ་བའི་དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ཞུ་བ་གཉིས་གཅིག་པ་ཡིན་པར་མངོན་སྣང་བས་དཔྱད་འཚལ།

༦ གྲུལ་བུམ་གྱི་རྒྱལ་པོ་སྦྲུལ་མགོ་དགུ་པས་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༥)

༧ ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཐག་ཟངས་རིས་ཀྱིས་དོན་དམ་པའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༦)

༨ ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་རྒྱལ་པོ་རྡོ་རྗེ་གསེར་མིག་ཅན་གྱིས་བསྟོད་པ། (༣༠༦)

༩ ནམ་མཁའི་ལྷ་བྲན་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༣༠༧)

༡༠ གཤིན་རྗེ་ནག་པོས་ཆེ་བའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༨)

༡༡ བྲམ་ཟེ་མཆོག་སྲིད་ཀྱིས་ཀུན་རྫོབ་ཀྱི་བདེན་པ་ལ་བརྟེན་པར་བསྟོད་པ། (༣༠༨)

༡༣ དྲང་སྲོང་ཆེན་པོ་ཀཽཎྜིནྱས་དཔེ་བྱད་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པ། (༣༠༩)

༥ 673- ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་བསྟོད་པ།[1] (རྒྱུད། 'བ' ༣༡༡)

---

༡ བསྟོད་པ་འདིའི་ནང་གསེས་བཞི་པར་ཡོངས་གྲགས་ལ་འདོན་སྲོལ་ཆེ་བའི་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོའི་བསྟོད་པ་ 'སེམས་ཉིད་འཕྲིན་ལས་རྣམ་བཞིའི་ཁྱད་པར་ནི།' །ཞེས་སོགས་གསལ་ཡོད། ཡང་དེའི་ནང་ཚན་བརྒྱད་པར་ 'དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་དཔག་པར་དཀའ་བའི་དོན། །ཐབས་ཀྱི་ཆོ་འཕྲུལ་ནམ་མཁའི་མཁའ་ལ་སྤྱོད།' །ཞེས་སོགས་གསལ་ཡོད་པས། མདོར་ན་ཡོངས་གྲགས་ལ་བསྙེན་སྲོལ་ཆེ་བའི་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་དང་། འདིར་གསལ་བའི་དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ཞྭ་བ་གཉིས་གཅིག་པ་ཡིན་པར་མངོན་སྣང་བས་དཔྱད་འཚལ།

देवेन्द्रेण कृतंस्तोत्रम्।

༦ 738- དཔལ་ལྷ་མོ་སྒྲ་དབྱངས་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཚ' ༣༣༩–༣༣༠)

श्रीदेवीसरस्वतीस्तोत्रम्।

༧ 756- ཁྲོ་བོའི་རྒྱལ་པོ་སྨེ་བརྩེགས་ལ་བསྟོད་པའི་སྔགས། (རྒྱུད། 'ཞ' ༧–༨)

क्रोधभुर्कुङ्कूटराजस्तोत्रमन्त्रम् ।

༨ 844- འཇིག་རྟེན་མཆོད་བསྟོད་སྒྲུབ་པ་རྩ་བའི་རྒྱུད། (རྙིང་རྒྱུད། 'ག' ༣༦༨–༣༨༧)

लोकस्तोत्रपूजाकल्पमूलतन्त्रं नाम।

༩ 1070(225)- བསྟོད་པའི་གཟུངས། (གཟུངས་འདུས། 'ཞི' ༣༣༩)

स्तोत्र-धारणी

༡༠ 1089(244)- ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་བསྟོད་པ།[1] (གཟུངས་འདུས། 'ཞི' ༣༥༢–༣༥༥)

देवेन्द्रण कृतं-स्तोत्रम्।

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་ཡང་དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་དེ་ཉིད་ཀྱི་བསྟོད་པ་ཡིན། འདི་དང་དཔལ་ལྷ་མོ་སྒྲ་དབྱངས་ལ་བསྟོད་པ་གཉིས་གཟུངས་འདུས་ཀྱི་ནང་དུ་ཡང་གསལ་ཡོད།

༡༡ 1090(245)- ནད་ཀྱི་བདག་མོ་ལ་བསྟོད་པ།[༡] (གཟུངས་འདུས་ ‘ཕྱི’ ༣༥༥)

रोगाधिपतिस्तोत्रम्।

༡༢ 1091(246)- ལྷ་མོ་ནམ་གྲུ་ལ་བསྟོད་པ། (གཟུངས་འདུས། ‘ཕྱི’ ༣༥༥–༣༥༦)

देवरेमतीस्तोत्रम्।

༡༣ 1092(247)[3]- དཔལ་ལྷ་མོ་སྒྲ་དབྱངས་ལ་བསྟོད་པ། (གཟུངས་འདུས། ‘ཕྱི’ ༣༥༦)

श्रीदेवीसरस्वतीस्तोत्रम्।

ལེའུ་རྣམས་ཀྱི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

परिच्छेदान्तर्गतः स्तुतिवर्गः

360- འཇམ་དཔལ་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔའི་དོན་དམ་པའི་མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པ།

---

༡ བསྟོད་པ་འདིའི་མཇུག་བྱང་དུ་ ‘ལྷ་མོ་ཆེན་མོ་ལ་བསྟོད་པ་བརྒྱད་པ་བྲམ་ཟེ་མཆོག་སྲིད་ཀྱིས་བྱས་པ་རྫོགས་སོ།’ །ཞེས་གསལ་ཡོད་པས། བྲམ་ཟེ་དེས་མཛད་པ་ཡིན་ན་བཀའ་འགྱུར་ནང་བཀོད་པ་ཇི་ལྟར་ཡིན་ནམ། གོང་གསལ་དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོའི་བསྟོད་པའི་ནང་གསེས་བཅུ་གཅིག་པ་དེའི་མཛད་པ་པོ་དང་གཅིག་གམ་མི་གཅིག་དང་། ཡང་ན་དེ་རྗེས་སུ་གནང་བ་དང་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པའི་བཀའ་ཡིན་མིན་སོགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཀྱང་དཔྱད་དགོས་པར་མངོན་ནོ།།

༣ ཤད་འགྲུག་ནང་བཀོད་པའི་ཨང་རིམ་དེ་དག་གཟུངས་འདུས་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཏུ་འཁོད་པའི་ཆོས་ཚན་ཇི་ཡོད་ཀྱི་ཨང་རིམ་ཡིན།

मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य परमार्थनमसंगीतिः

༡༨ ༡༠- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བསྟོད་པ་ཚིགས་བཅད་ལྔ་པ། (རྒྱུད། 'ཀ' ༤)

422- དཔལ་ཡེ་ཤེས་ཐིག་ལེ་རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་མཆོག་ཏུ་རྨད་དུ་བྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ།
श्रीज्ञानतिलकयोगिनीतन्त्रराजपरममहाद्भुतं नाम

༡༥ ༣༩- བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'ང'· ༡༣༦)

༡༦ ༣༠- རྣམ་པར་ཤེས་པ་དྲུག་གི་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'ང'· ༡༣༦)

453- དཔལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གསང་བ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་མཉམ་པ་ཉིད་གཉིས་སུ་མེད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་རྡོ་རྗེ་དཔལ་མཆོག་ཆེན་པོ་བརྟག་པ་དང་པོ་ཞེས་བྱ་བ།
श्रीसर्वतथागतगुह्यतन्त्रयोगमीहराजाद्वयसमताविजयो नाम वज्रश्री-वरमहाकल्पादिः।

༡༧ ༡༡- དཔལ་གསང་བ་ཆེན་པོ་རབ་ཏུ་རྒྱས་པའི་མཆོད་ཅིང་བསྟོད་པའི་ལེའུ།[1] (རྒྱུད། 'ཆ'· ༡༡༩–༡༣༠)

---

[1] ལེའུ་དེའི་ནང་ "མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ་ཡེ་ཤེས་ཆེ།" །ཞེས་སོགས་འདུས་པའི་ལྷ་ ༣༣ ཚ་ཚང་གི་བསྟོད་པ་གསལ་ཡོད། གསང་འདུས་རྩ་རྒྱུད། ལེའུ་ ༡༧ པའི་དབུར་ཡང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔའི་བསྟོད་པ་གསལ་ཡོད། (རྒྱུད་ 'ཅ' ༡༣༤)

458- དཔལ་རྡོ་རྗེ་གཏུམ་པོ་ཐུགས་གསང་བའི་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ།
श्रीवज्रचण्डचित्तगुह्यतन्त्रम्

༢༨ ༣༡- འཁོར་གྱིས་མངོན་པར་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'ཛ'· ༣༨–༣༩)

458- བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་གསང་བ་མངོན་པར་བསྟན་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ།
भगवद्वज्रपाणिगुह्याभिदेशतन्त्रराजनाम

༢༩ ༣༠- མཆན་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་གིས་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'ཛ'· ༤༨–༤༩)

490- དཔལ་རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ།
श्रीवज्रमण्डलालंकारो नाम महातन्त्रराज:

༣༠ ༡༣- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། 'ཐ'· ༣༣)

555- འཕགས་པ་གསེར་འོད་དམ་པ་མཆོག་ཏུ་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་མདོ་སྡེའི་རྒྱལ་པོ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།[1]
आर्यसुवर्णोत्तमपरमविजयसूत्रराजो नाम महायानसूत्रम्।

---

[1] གསེར་འོད་དམ་པའི་མདོ་རྒྱས་འབྲིང་བསྡུས་གསུམ་བཞུགས་པ་ལས་རྒྱས་པ་ལེའུ ༣༡ བྱས་པ་དེ་རྒྱ་ནག་གི་སྐད་ལས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་ཞིང་། དེར་གསལ་བའི་བསྔགས་པའི་སྐོར་ལེའུ་ལྔ་ཡོད་པ་དེ་དག་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན། ཞིབ་ཏུ་བརྟགས་ན་རྒྱས་འབྲིང་བསྡུས་གསུམ་གྱི་ལེའུའི་ཆ་མང་པོར་འདྲ་བའི་ཆ་ཡོད། མདོ་དེ་དག་རྒྱུད་འབུམ་ནང་འཇོག་དགོས་པའི་རྒྱུ་མཚན་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

३१ ༧- པདྨ་ལྟ་བུའི་དཔེས་བསྔགས་པ་བརྗོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'པ'· ༧༢–༧༤)

३२ ༢༧- ཕྱོགས་བཅུའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་བསྔགས་པ་བརྗོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'· ༡༤༥–༡༤༦)

३३ ༢༨- བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་མཛེས་པའི་མེ་ཏོག་གིས་བསྔགས་པ་བརྗོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'· ༡༤༦–༡༤༧)

३४ ༢༩- བྱང་ཆུབ་ཤིང་གི་ལྷ་མོས་བསྔགས་པ་བརྗོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'· ༡༤༥–༡༤༨)

३५ ༢༠- ལྷ་མོ་སྤོབས་པ་ཆེན་མོས་བསྔགས་པ་བརྗོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'· ༡༤༨)

556- འཕགས་པ་གསེར་འོད་དམ་པ་མདོ་སྡེའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།[1]
आर्यसुवर्णप्रभासोत्तमसूत्रेन्द्रराजो नाम महायानसूत्रम्

३६ ༧- འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་ཡང་དག་

[1] མདོ་འབྲིང་བར་ལེའུ་ ༢༩ ཡོད། དེའི་ལེའུ་ ༧ པ་དང་། རྒྱས་པའི་ལེའུ་ ༧ པ་དང་། བསྡུས་པའི་ལེའུ་ ༥ བཅས་ལ་ཁྱད་པར་ཆེར་མེད། ལེའུ་དེ་དག་གི་ནང་གསལ་གྱི་བསྟོད་པ་དེ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ **'बौद्धस्तोत्रसंग्रह'** ཞེས་པའི་ནང་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད། ཚིགས་བཅད་མང་ཉུང་གི་ཁྱད་པར་ཤན་བུ་ཡོད། ལྷག་པར་དུ་མདོ་འདིའི་ལེའུ་ ༢༧,༢༨ གཉིས་དང་། མདོ་བསྡུས་པའི་ལེའུ་ ༡༩,༢༠ གཉིས་ལ་ཁྱད་པར་གཏན་ནས་མེད།

པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ།
(རྒྱུད། 'པ'་ ༣༠༠–༣༠༣)

३७ ༣༧- བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་དང་རིན་པོ་ཆེའི་འབྱུང་གནས་གདུགས་བརྩེགས་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'་ ༣༧༣)

३८ ༣༨- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'པ'་ ༣༧༡–༣༧༣)

557- འཕགས་པ་གསེར་འོད་དམ་པ་མདོ་སྡེའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།[༡]
आर्यसुवर्णप्रभासोत्तमसूत्रेन्द्रराजो नाम महायानसूत्रम्

३९ ༥- འདས་པ་དང་མ་འོངས་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ་མི་ཏོག་པདྨའི་འབྱུང་གནས་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། 'ཕ' ༡༡–༡༣)

४० ༡༩- བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་དང་རིན་པོ་

---

༡ མདོ་འབྲིང་བ་དང་བསྡུས་པ་གཉིས་ལིགས་སྒྲུར་ལས་བོད་སྐད་དུ་བསྒྱུར་བ་ཡིན། དེང་སང་ལིགས་སྒྲུར་སྐད་ཐོག་དངོས་སུ་བཞུགས་པ་དེ་ནི་མདོ་བསྡུས་པ་དེ་ཡིན། དེ་ལ་ལེའུ་ ༣༡ ཡོད། ལིགས་སྒྲུར་རྒྱ་དཔེའི་ལེའུ་བཅུ་པ་ "སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚན་ལིགས་པར་འཛིན་པ་" ཞེས་པ་དེ་བོད་དཔེར་མེད་ལ། བོད་དཔེར་ཡོད་པའི་ལེའུ་ ༡༩ པ་ 'བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་བསྟོད་པ་' ཞེས་པ་དེ་ལིགས་སྒྲུར་ལ་མེད།

ཆེའི་འབྱུང་གནས་གདུགས་བརྩེགས་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘ཕ’ ༦༠–༦༡)

༣༡ ༣༠_ དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘ཕ’ ༦༡)

726- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་སྒྲོལ་མ་ལས་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད།
सर्वतथागतमातृताराविश्वकर्मभवतन्त्रम्

༣༢ ༣_ བསྟོད་པའི་གཟུངས་སྔགས་ཀྱི་ལེའུ། (རྒྱུད། ‘ཚ’ ༣༠༤–༣༠༥)

828- ཆོས་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པ་ཆེན་པོ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀུན་བྱེད་རྒྱལ་པོ།
सर्वधर्ममहासंधिबोधिचित्तकुलराजः

༣༣ ༨༣_ རྗེས་སུ་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྙིང་རྒྱུད། ‘ཀ’ ༨༣–༨༤)

831- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་གསང་བའི་ཡེ་ཤེས་དོན་གྱི་སྙིང་པོ་ཁྲོ་བོ་རྡོ་རྗེའི་རིགས་ཀུན་འདུས་རིག་པའི་མདོ་རྣལ་འབྱོར་གྲུབ་པའི་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།
सर्वतथागतचित्तगुह्यज्ञानार्थगर्भक्रोधवज्रकुलतन्त्रपिण्डार्थविद्यासू-त्रयोगसिद्धं नाम महायानसुत्रम्

༣༤ ༣༣_ ངོ་མཚར་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྙིང་རྒྱུད། ‘ཁ’ ༡༡༠)

842- མཁའ་འགྲོ་མ་མེ་ལྕེ་འབར་བའི་རྒྱུད།
डाकिन्यग्निजिह्वाज्वालातन्त्रम्

३५ ༣༠- བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྙིང་རྒྱུད། 'ག' ༣༥༠–༣༥༣)

844- འཇིག་རྟེན་མཆོད་བསྟོད་སྒྲུབ་པ་རྩ་བའི་རྒྱུད་ཅེས་བྱ་བ།
लोकस्तोत्रपूजाकल्पमूलतन्त्रम्

३६ ༥- མཆོད་བསྟོད་ཉེ་བར་བསྒྲུབ་པའི་ལེའུ། (རྙིང་རྒྱུད། 'ག' ༣༧༧–༣༨༣)

३७ ༦- ཟབ་མོའི་མཆོད་བསྟོད་གནད་ཀྱི་ལེའུ། (རྙིང་རྒྱུད། 'ག' ༣༨༣)

[ཞར་བྱུང་།]

ལེའུའི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པ་རྣམས་ཀྱི་འགྲེལ་པའི་སྐོར།

परिछेदान्तर्गतः स्तुतिवृत्तिवर्गः

1180- ཀྱེ་རྡོ་རྗེའི་བསྡུས་པའི་དོན་གྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ།
हेवज्रपिण्डार्थटीका

३८ ༡- འདོད་པའི་ལྷ་ལ་བསྟོད་ཅིང་རྒྱུད་ལ་འཇུག་པ་སྤྱི་ཡོངས་སུ་བཅད་པ་དང་པོ། (རྒྱུད། 'ཀ' ༡–༥) ཀུན་དགའ་སྙིང་པོས་མཛད་པ། **(आनन्दगर्भः)**

1336- དཔལ་དགའ་བའི་མེ་ཏོག་གི་ཕྲེང་བ།
श्री आनन्दपुष्पमाला

མཛད་པ་པོ། ཨིན་དྲ་བྷུ་ཏི། (इन्द्रभूतिः)

७९ १८- དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་ཞི་བའི་བསྟོད་པའི་མཆོད་སྦྱིན་གྱི་དོན་བསྟན་
པ། (རྒྱུད། 'ཏ' ३१९)

1357- དཔལ་ལྡན་རྒྱུ་སྐར་གྱི་འཁོར་གྱི་སྒྲུབ་ཐབས་ཡན་ལག་བཅུ་
གཅིག་པ།

श्रीमद्नक्षत्रमण्डलसाधनैकादशाङ्गं नाम

མཛད་པ་པོ། ཀཱ་ལ་ཙཀྲ་པཱ་ད། (कालचक्रपादः)

८० ९- མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པའི་ཡན་ལག (རྒྱུད། 'པ' ४९–९०)

1400- འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་
མངོན་རྟོགས།
आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीत्यभिसमयः
མཛད་པ་པོ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་སྤྱན་རས་གཟིགས།
(अवलोकितेश्वरः)

८१ ३५- རྩ་བའི་རྒྱུད་ལས་གསུངས་པའི་བསྟོད་པའི་ངེས་པ། (རྒྱུད།
'ཕ' ३०८–३०५)

1688- བཅོམ་ལྡན་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་
པའི་སྒྲུབ་ཐབས།
भगवतीतारदेव्येकविंशतिस्तोत्रसाधनम्
མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༨༢ ༡-༣༡ བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པས་རྡོ་བཙུན་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་༣༡ གི་སྒྲུབ་ཐབས། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༥–༣༥)

1827- སྒྲུབ་པའི་སྤྱོད་པ་ལ་འཇུག་པ།

सिद्धिचर्यावतार:

མཛད་པ་པོ། དཔལ་ཛྙཱ་ན་བཛྲ། (श्रीज्ञानवज्र:)

༨༣ ༡༠- བསྟོད་པའི་ལེའུ། (རྒྱུད། 'ཅི' ༡༡༨–༡༡༥)

2094- མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་ཉེ་བར་བསྡུས་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་གེ་ཞེས་བྱ་བ།

नामसंगीत्युपसंहारवितर्क:

མཛད་པ་པོ། དཔལ་གཉིས་མེད་རྡོ་རྗེ། (अद्वयवज्र:)

༨༤ ༥- མི་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཆི' ༧༠–༧༣)

༨༥ ༦- ཡེ་ཤེས་ལྔའི་བསྟོད་པའི་དོན་བསྡུས་པ། (རྒྱུད། 'ཆི' ༧༠–༧༣)

2174- གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་ཅན་གྱི་སྒྲུབ་ཀ་ཆེན་པོའི་ཆོ་ག

महायक्षसेनपतिनीलाम्बरधरवज्रपाणिमहागणविधि:

མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་བྷ་བ་པ། (आचार्यभवप:)

༨༦ ༡༣- བསྟོད་པའི་སྒྲུབ་ཀ (རྒྱུད། 'ཇི' ༥–༦)

2185- ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལྕེ་དབབ་ཀྱི་འགྲེལ་པ་མུ་ཏིག་ཕྲེང་བ།
वज्रपाण्यतलजिह्ववृत्तिमुक्तावलिः
མཛད་པ་པོ། རྒྱལ་བ་སྦྱིན་གྱི་ཤུགས་ཅན། (मेघवेगिन्)

४७ ༣- བསྟོད་པ་དང་མཆོད་པའི་རིམ་པ། (རྒྱུད། 'ཛི' ༥༢—༥༣)
2533- འཕགས་མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་
མཚན་གསང་སྔགས་ཀྱི་དོན་དུ་རྣམ་པར་ལྟ་བ་ཞེས་བྱ་བ།
आर्यनामसंगीतिटीका नाममन्त्रार्थावलोकिनी
མཛད་པ་པོ། སྒེག་པའི་རྡོ་རྗེ། (लीलावज्रः)

४८ ༦- ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ལ་
བསྟོད་པའི་རིམ་པའི་དབང་དུ་བྱས་པ། (རྒྱུད། 'ཁུ' ༤༨—
༦༥)

४९ ༧- མི་ལྡོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་བསྟོད་པའི་རིམ་
པ། (རྒྱུད། 'ཁུ' ༦༥—༦༦)

५० ༨- སོ་སོར་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་རིམ་
པ། (རྒྱུད། ༦༧—༨༨)

५१ ༩- མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱིས་བསྟོད་པའི་རིམ་
པ། (རྒྱུད། ༨༩—༩༩)

५३ ༡༠- བྱ་བ་ནན་ཏན་གྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་རིམ་པ། (རྒྱུད། ༩༩–༡༠༥)

५३ ༡༡- ཉེ་བར་བསྡུ་བའི་སྒོ་ནས་བསྟོད་པའི་རིམ་པ། (རྒྱུད། ༡༠༥)

༣ མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

सूत्रसम्बद्धः स्तुतिवर्गः

ལེའུའི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པའི་ཞལ་གསལ།

(परिच्छेदान्तर्गतः स्तुतिवर्गः)

12- འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པ་ཞེས་བྱ་བ།

आर्य-अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता

५४ ༩- བསྟོད་པའི་ལེའུ།[༡] (ཤེར་ཕྱིན། 'ཀ' ༡༡༣–༡༡༦)

13- བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་སྡུད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ།

भगवद्रत्नगुणसञ्चयगाथा

५५ ༩- བསྟོད་པའི་ལེའུ། (ཤེར་ཕྱིན། 'ཀ' ༦–༧)

---

༡ ཤེར་ཕྱིན་བརྒྱད་སྟོང་པ་དང་། མདོ་བསྡུད་པ་གཉིས་ཀྱི་ལེའུ་དགུ་པར་ 'བསྟོད་པའི་ལེའུ' ཞེས་པ་རེ་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། བསྟོད་པ་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་སོགས་ཀྱི་ཞལ་གསལ་མངོན་དཀའ་བས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

44- སངས་རྒྱས་ཕལ་པོ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།

बुद्धावतंसकनाम महावैपुल्यसूत्रम्

५६ ༡༨- ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་གྱིས་བསྟོད་པའི་བཀྲིས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ།[༡] (དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རི་རབ་ཀྱི་རྩེར་གཤེགས་པའི་ལེའུ། ཕལ་ཆེན། 'ཀ' ༢༣༩)

५७ ༢༩- ལྷའི་རྒྱལ་པོ་རབ་མཆེ་མས་བསྟོད་པའི་བཀྲིས་ཀྱི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ། (རབ་མཆེ་མའི་གནས་ན་རྣམ་པར་འཕྲུལ་པའི་ལེའུ། ཕལ་ཆེན། 'ཀ' ༣༦༧–༣༦༨)

५८ ༢༨- ལྷའི་རྒྱལ་པོ་རབ་དགའ་ལྡན་གྱིས་བསྟོད་པའི་བཀྲིས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ། (དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བཞུད་པ་དང་། གཤེགས་པ་དང་། བཞུགས་པའི་རྒྱན་ཅེས་བྱ་བའི་ལེའུ་ ཕལ་ཆེན། 'ཀ' ༣༦༧–༣༦༨)

95- འཕགས་པ་རྒྱ་ཆེར་རོལ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།[༢]

आर्यललितविस्तरो नाम महायानसूत्रम्

---

༡ མདོ་ཕལ་ཆེན་ནང་གསལ་བཀྲིས་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་ཁག་གསུམ་པོ་འདི་དག་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་ཚུལ་བུ་སྟོན་ཆོས་འབྱུང་དུ་གསལ་ཡོད། (བུ། ཆོས་འབྱུང་། ༢༢༦ རིག)

༢ མདོ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པར་མ་ཟད་ཧིན་སྐད་ཐོག་ལ་ཡང་ཕབ་བསྒྱུར་ཞུས་ཡོད།

५९ ༣༣_ མངོན་པར་བསྟོད་པའི་ལེའུ། (མདོ། 'ཁ' ༡༧༡–༡༧༦)

༡ གནས་གཙང་མའི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༡)

༢ འོད་གསལ་བའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ།(༡༧༢)

༣ ཚངས་པ་སོགས་ཚངས་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༢)

༤ བདུད་ཀྱི་བུ་དཀར་པོའི་ཕྱོགས་པ་དག་གིས་བསྟོད་པ། (༡༧༣)

༥ གཞན་འཕྲུལ་དབང་བྱེད་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༣)

༦ རབ་འཕྲུལ་གྱི་ལྷའི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༤)

༧ དགའ་ལྡན་གྱི་རིས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༤)

༨ འཐབ་བྲལ་གྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༤)

༩ ལྷའི་དབང་པོ་བརྒྱ་བྱིན་སོགས་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་གྱི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༥)

༡༠ རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་བཞི་སོགས་རྒྱལ་ཆེན་རིས་བཞིའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༥)

༡༡ བར་སྣང་གི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༦)

༡༢ ས་བླའི་ལྷ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (༡༧༦)

༣༤_ ག་གོན་དང་བཟང་པོའི་ལེའུ། (མདོ། 'ཁ' ༡༧༧-༡༨༧)

६० ༡_ འདོད་པ་ལ་སྤྱོད་པའི་ལྷའི་བུ་རྣམས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (མདོ། 'ཁ' ༡༧༧–༡༨༠)

[ཞར་བྱུང་།]

ལེའུའི་ནང་ཚན་དུ་གསལ་བའི་བསྟོད་པ་རྣམས་ཀྱི་འགྲེལ་པའི་སྐོར།

परिछेदान्तर्गतः स्तुतिवृत्तिवर्गः

3791- འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པའི་

བཤད་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རྒྱན་གྱི་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ།[1]

आर्य-अष्टसाहस्रिका-प्रज्ञापारमिताव्याख्या अभिसमयालंकारालो-
को नाम

མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་སེངྒེ་བཟང་པོ། (हरिभद्रः)

ཞ– བསྟོད་པའི་ལེའུ། (ཤེར་ཕྱིན། 'ཀ' ༡༧༣–༡༨༣)

3792- བཅོམ་ལྡན་འདས་ཡོན་ཏན་རིན་པོ་ཆེ་སྡུད་པའི་ཚིགས་སུ་

བཅད་པའི་བཀའ་འགྲེལ་ཞེས་བྱ་བ།

भगवद्रत्नगुणसञ्चयगाथा नाम पञ्जिका

མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་སེངྒེ་བཟང་པོ། (हरिभद्रः)

༦༣ ཞ– བསྟོད་པའི་ལེའུ། (ཤེར་ཕྱིན། 'ཛ' ༣༥–༣༦)

3855- དབུ་མ་སྙིང་པོའི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ།

मध्यमकहृदयकारिका

---

[1] འགྲེལ་པ་འདིར་གསལ་བ་ལྟར་རིན་འབྱུང་ཞི་བས་མཛད་པའི་སྙིང་པོ་མཆོག (3803)དང་། འཇིགས་མེད་འབྱུང་གནས་སྦས་པས་མཛད་པའི་གནད་ཀྱི་ཟླ་འོད་ (3805) དང་། ཛགད་དྷ་ལར་གནས་པས་མཛད་པའི་མན་ངག་རྗེས་འབྲང་ (3811)བཅས་ཀྱི་ལེའུ་དགུ་པ་རྣམས་སུ་ཡང་བསྟོད་པའི་སྐོར་དེ་གསལ་ཡོད་པས་རིགས་བསྒྲེ་བར་བྱའོ། །

མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་ལེགས་ལྡན་འབྱེད། (भावविवेक:)

༦༣ ༡༡- བསྟོད་པ་དང་མཚན་བསྟན་པའི་ལེའུ། (དབུ་མ། 'ཛ' ༤༠)

3856- དབུ་མ་སྙིང་པོའི་འགྲེལ་པ་རྟོག་གེ་འབར་བ།
मध्यमकहृदयवृत्ति: तर्कज्वाला
མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་ལེགས་ལྡན་འབྱེད། (भावविवेक:)

༦༤ ༡༡- བསྟོད་པ་དང་དེའི་མཚན་བསྟན་པའི་ལེའུའི་འགྲེལ་པ། (དབུ་མ། 'ཛ' ༣༣༥–༣༣༩)

3860- དབུ་མ་རྩ་བའི་འགྲེལ་པ་ཚིག་གསལ་བ་ཞེས་བྱ་བ།
मूलमध्यमकवृत्ति: प्रसन्नपदा नाम
མཛད་པ་པོ། སློབ་དཔོན་ཟླ་བ་གྲགས་པ། (चन्द्रकीर्ति:)

༦༥ ༣༧- དབུ་མའི་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་བསྟོད་པ།[༡] [གཞུང་དེའི་མཛད་བྱང་གི་ཚུལ་དུ་ཡོད་པ།] དབུ་མ། 'འ' (༡༩༩–༣༠༠)

---

[༡] གསར་དུ་བཀོད་པའི་བསྟོད་པ་འདི་ནི་དཔལ་ལྡན་ཟླ་བའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་མཛད་བྱང་བསྟན་མེད་ཡིན་པ་ལ་དོགས་གནས་སྤྱི་ཙམ་མེད་མོད། འོན་ཀྱང་དེང་སང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་གསར་དུ་པར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་པ་འདྲ་མིན་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱས་པའི་དེབ་ 'बौद्धस्तोत्रसंग्रह' ཞེས་པར་གོང་སློས་ཀྱི་མཛད་བྱང་གི་ཆ་ཤས་སུ་གྱུར་པའི་ཚིགས་ཁྲོད་དུ་འཕགས་པའི་རྩོམ་རྒྱལ་དང་ལྡན་པའི་ཚིགས་བཅད་ ༡༤ ཡོད་པ་དེ་དག་ལ་ "དབུ་མའི་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་བསྟོད་པ་" 'मध्यमकशास्त्रस्तुति:' ཞེས་པའི་མཚན་བྱང་དང་བཅས་དེར་བཀོད་ཡོད། དེ་ལ་གལ་གནད་ཅིག་ཡོད་པར་བསམ་ནས་འདིར་ཡང་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་མཚན་བྱང་ནང་བཀོད་པ་ཡིན། མཛད་བྱང་གི་ཆ་ཤས་དེ་གཞུང་ངོ་མའི་མཐར་བོད་འགྱུར་

मध्यमकशास्त्रस्तुति:

ཁ བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་ཚོགས་སྐོར།

तनग्युर–संग्रहान्तर्गतः स्तोत्रगणः

༡ སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།

तन्त्रसम्बद्धः स्तुतिवर्गः

༨༨ 1126- རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ།[1] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༤–༧༨)

महावज्रधरस्तोत्रम्

ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ། (वज्रपणि:)

སྤྱིར་མ་ཚང་མར་གསལ་བ་ལྟར་ཡིག་ཆ་སྔར་གྱི་རྒྱ་དཔེར་ཡང་གསལ་དགོས་ངེས་སུ་སྣང་ཡང་། དེང་སང་དངོས་སུ་ཡིག་སྔར་གྱི་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་རྒྱ་དཔེའི་ཞབས་ལ་དེ་དག་གསལ་མེད་པ་ནི་ཆད་སྐྱོན་ཏུ་ཅང་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡིན་པ་གདོན་མི་ཟ། གཞི་རྩའི་དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་ཡིག་སྔར་རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ཀྱི་དབར་ལ་ཚང་མ་ཚང་གི་ཁྱད་པར་ཏུ་ལས་དགོས་པའི་ཆེན་པོ་ཡོད་པ་འདི་ནི། བསྟན་བཅོས་གཞན་གང་ལ་ཡང་གཏན་བྱུང་མ་སྲོང་ཞིག་རེད་ཅེས་བརྗོད་ཀྱང་མ་ཆོག་པ་མེད་པ་ནི་དངོས་སུ་མཚུངས་བསྡུར་གནང་ན་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ།།

༡ བསྟོད་པ་འདི་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་ཚོགས་ནང་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེར་གསལ་བ་ཕལ་ཆེ་བ་མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་ཚོགས་ཡིན། དེས་ན་འདི་སྔགས་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བ་ཡིན་པས་འདིར་བཀོད་པ་ཡིན། བསྟོད་པ་དེའི་མཛད་བྱང་དུ "ནམ་མཁའ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བ། རྡོ་རྗེ་འཆང་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེས་མཛད་པ" ཞེས་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། བཀའ་འགྱུར་ནང་ "ནམ་མཁའ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ" ཞེས་པ་ཞིག་ཡོད་ཀྱང་། དེར་བསྟོད་པ་འདིའི་སྐོར་གསལ་མེད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

༦༧ 1222- ཀྱེ་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཉ' ༣༣)

[हेवज्रस्तोत्रम्]

མཚོ་སྐྱེས་རྡོ་རྗེ། (सरोरुहवज्रः)

༦༨ 1304- དཔལ་དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ད' ༣༢༢–༣༢༣)

श्रीहेवज्रस्तोत्रम्

རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། (रत्नवज्रः)

༦༩ 1307- བདག་མེད་མ་ལྷ་མོ་བཅོ་ལྔ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ད' ༣༢༧–༣༢༩)

नैरात्म्यदेवी पञ्चादशस्तोत्रम्

མི་ཐུབ་ཟླ་བ། (दुर्जयचन्द्रः)

༧༠ 1317- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ཀུ་རུ་ཀུལ་ལའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ད' ༣༨༣–༣༨༨)

आर्यताराकुरुकुल्लास्तोत्रम्

ཌོཾ་བྷཱི་ཧེ་རུ་ཀཱ (डोम्बीहेरु कः)

ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༧༡ 1381- དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་བསྟོད་པ་རྒྱུན་ཆགས་པ་ཞེས་བྱ་བ།[1] (རྒྱུད། 'པ' ༣༦༧–༣༧༠)

---

[1] ཀ་ལིང་ཀའི་རྒྱལ་པོའི་བླ་མ་སྡེ་སྣོད་གསུམ་སྟོན་པའི་མཁས་པ་ཆེན་པོ་ལེགས་པའི་གྲགས་པས་མཛད་པའི་རྒྱུན་ཆགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་འདིར་ཚིགས་བཅད་གཉིས་ལས་མེད་ཀྱང་། དཔེ་རིང་

श्रीकालचक्रदण्डकस्तुतिनाम

འཕགས་པའི་གྲགས་པ། (साधुकीर्तिः)

༧༣ 1425- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་མཚན་བརྒྱ་རྩ་བརྒྱད་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༡༧༡–༡༧༣)

श्रीचक्रसंवरनाम शताष्टकस्तोत्रम्

༧༤ 1428- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བསྟོད་པ་དོན་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ་རྣམ་དག་གཙུག་གི་ནོར་བུ་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༡༩༣–༡༩༧)

श्रीचक्रसंवरस्तोत्रं सर्वार्थसिद्धिविशुद्धचूडामणिः नाम

དཱ་རི་ཀ་པ། (दारिकपः)

༧༥ 1440- དཔལ་འཁོར་ལོའི་སྡོམ་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༣༩–༣༥༠)

श्रीचक्रसंवरस्तोत्रम्

ཨིནྡྲབྷཱུཏི། (इन्द्रभूतिः)

༧༦ 1441- དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ལ་བསྟོད་པ་རིན་པོ་ཆེ་རྫུ་འཕྲུལ་སྤྲིན། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༥༠–༣༥༣)

मण्डलदेवस्तोत्ररत्नमायादानं नाम

རྡོ་རྗེ་དྲིལ་བུ། (वज्रघण्टः)

ངོས་ཤོག་བདུན་ཡོད། ཚིག་རྐང་རེར་ཚིག་བར་ ༦༥༠ ཙམ་དང་། དཔེ་རིང་གི་ཡིག་ཕྲེང་ ༡༡ ཙམ་རེའི་ཚད་ཅན་དུ་ཡོད།

༢༦ 1442- དཔལ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོའི་བསྟོད་པ་རྒྱན་ཆགས་ཞེས་བྱ་བ།[1]
(རྒྱུད། 'ཤ' ༣༤༣–༣༤༣)
श्रीवज्रडाकस्तोत्रदण्डकं नाम
དཔལ་ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པ། (धर्मकीर्तिः)

༢༧ 1517- ཀྲང་པ་བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པ་བསྒྲུར་བའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཟ' ༣༥–༣༦)
[अष्टाचत्वारिंशत्पादस्तोत्रम्]

༢༨ 1520- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཟ' ༣༨–༣༩)
श्रीचक्रसंवरस्तोत्रं नाम
བྱམས་པ། (मैत्रिपः)

༢༩ 1530- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཟ' ༨༩–༩༡)
श्रीचक्रसंवरमण्डलस्तोत्रं नाम
སུ་རཀཱ་ལ་ཤ། (सूरकलशः)

---

[1] རྒྱན་ཆགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་འདི་རྟོག་གེ་བའི་ཚོགས་ཀྱི་གཙུག་གི་ནོར་བུ་དཔལ་ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པས་མཛད་ཅིང་། དེ་ནི་ཚིགས་བཅད་གཅིག་གི་བདག་ཉིད་ཅན་དང་། ཚིག་རྐང་རེ་རེར་ཚེགས་བར་༣༩༥ ཙམ་དང་། དཔེ་རིང་ཡིག་ཕྲེང་ ༥ ཙམ་གྱི་ཚད་ཅན་དུ་ཡོད། རྒྱན་ཆགས་སྡེབ་སྦྱོར་གྱི་ཚིགས་བཅད་རིང་པོའི་རྩོམ་ཁྱད་པར་ཅན་དེ་འདྲ་རྒྱལ་བ་དགེ་འདུན་གྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་འདུལ་ཊཱིཀ་རིན་ཆེན་ཕྲེང་བ་དང་། འདུལ་བའི་སྙིང་འབུམ་ཆེན་མོ་བཅས་ཀྱི་མཛད་བྱང་དུ་བརྩམས་པར་མཛད་ཡོད། ཁོ་བོས་ཀྱང་རྩལ་དེ་དག་གི་རྗེས་སུ་སློབ་པའི་ཕྱིར་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་འགྲེལ་གྱི་སྙིང་བརྗོད་དུ་དེ་འདྲའི་རྒྱན་ཆགས་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་བྲིས་ཁུལ་བྱས་ཡོད།

༥༠ 1531- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས་ལ་
བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཞ' ༩༡–༩༣)
श्रीचक्रसंवरमण्डलदेवगणस्तोत्रं नाम
རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། (रत्नवज्रः)

༥༡ 1532- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཞ' ༩༣–༩༣)
श्रीचक्रसंवरस्तोत्रम्
རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། (रत्नवज्रः)

༥༢ 1574- དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་ཤེས་རབ་གསལ་བྱེད་མའི་བསྟོད་པ།
(རྒྱུད། ' འ' ༥–༦)
श्रीवज्रवाराहीप्रज्ञालोककृत्यस्तोत्रम्
ཀོངྐ་བྱིན། (कोङ्कदत्तः)

༥༣ 1587- རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་བསྟོད་པ[༡] (རྒྱུད། 'འ' ༡༠༣–
༡༠༤)
वज्रायोगिनीस्तोत्रम्
མར་མེ་མཛད། (दीपंकरः)

༥༤ 1594- རྡོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་བསྟོད་པ།[༢] (རྒྱུད། 'འ' ༡༡༣–
༡༡༤)

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ 'སྣྲི' དུས་དེབ་བཅུ་གཅིག་པའི་ཆོས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཁག་གི་རྩ་བའི་མ་དཔེའི་དཔེ་ཐོའི་ནང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་གྱི་ཞལ་གསལ་བཀོད་ཡོད། (༩༦)

༢ བསྟོད་པ་འདི་ཡང་ 'སྣྲི' དུས་དེབ་བཅུ་གཅིག་པའི་ཆོས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཁག་གི་རྩ་བའི་མ་དཔེའི་དཔེ་ཐོའི་ནང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་གྱི་ཞལ་གསལ་བཀོད་ཡོད། (༩༦)

वज्रयोगिनीस्तोत्रम्

མར་མེ་མཛད། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༨༥ 1595- རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་མདོར་བསྡུས་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཞ' ༡༡༩)

वज्रवाराहीसंक्षिप्तस्तोत्रम्

ཨབྷིསཾཀྲྀད། (अभिसंकतः)

༨༦ 1603- རྡོ་རྗེ་ཕག་མོའི་བསྟོད་པ་རིམ་པ་གཉིས་པ། (རྒྱུད། 'ཞ' ༡༣༦–༡༣༨)

क्रमद्वयवज्रवाराहीस्तोत्रम्

དཔལ་ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (श्रीवनरत्नः)

༨༧ 1631- མཧཱམཱཡཱའི་ཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཡ' ༣༩༥)

[श्रीमहामायासाधनमण्डलविधिः]

ཀུ་ཀུ་རི་པ། (कुकुरिपः)

༨༨ 1638- རིགས་ལྔ་མཁའ་འགྲོའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཡ' ༣༦༧)

[पञ्चकुलडाकस्तोत्रम्]

ནག་པོ་པ། (कृष्णः)

༨༩ 1639- དཔལ་ཧེ་རུ་ཀ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཡ' ༣༦༧-༣༦༨)

[सानुचरश्रीहेरुकस्तोत्रम्]
ནག་པོ་པ། (कृष्णः)

༦༠ 1685- ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་པའི་སྒྲུབ་ཐབས།
(རྒྱུད། 'ཤ' ༦-༡༠)
तारादेवीस्तोत्रं एकविंशत्कसाधनं नाम
ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༦༡ 1688- བཅོམ་ལྡན་འདས་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་
པའི་སྒྲུབ་ཐབས།[༡] (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༥-༣༥)
भगवतीतारादेव्येकविंशतिस्तोत्रसाधनम्
ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༦༢ 1689- ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ཉི་ཤུ་རྩ་གཅིག་ལ་བསྟོད་པ་རྣམ་དག་གཙུག་གི་
ནོར་བུ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༥-༣༨)
देवीतारैकविंशतिस्तोत्रं विशुद्धचूडामणिः नाम
ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༦༣ 1690- ཕྲེང་བ་འཛིན་པའི་བསྟོད་པ།[༢] (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༨-༤༣)

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་ 'དྷཱིཿ' (धीः) དུས་དེབ་བཅུ་པའི་ནང་ཞལ་གསལ་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་ཚང་མེད་སྐོར་གསལ་ཡོད།

༢ བསྟོད་པ་གྲགས་ཅན་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པར་མ་ཟད། ཧིན་དྷི་དང་དབྱིན་སྐད་དུ་ཡང་བསྒྱུར་ཡོད། དེ་ལ་སློབ་དཔོན་ཛིན་རཀྵིད་ (རྒྱལ་བ་འཚོ་) ཞེས་པས་མཛད་པའི་འགྲེལ་པ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་ཀྱང་བོད་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་མེད། བསྟོད་པ་ཨང་རིམ་

स्रग्धरास्तोत्रम्
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བཤེས་གཉེན། (सर्वज्ञमित्रः)

༩༤ 1691- མེ་ཏོག་ཕྲེང་འཛིན་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༤༣-༤༦)
स्रग्धरास्तोत्रम्
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བཤེས་གཉེན། (सर्वज्ञमित्रः)

༩༥ 1692- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་མེ་ཏོག་ཕྲེང་བ་འཛིན་པའི་བསྟོད་པ།
(རྒྱུད། 'ཤ' ༤༦-༤༩)
आर्यतारास्रग्धरास्तोत्रम्
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བཤེས་གཉེན། (सर्वज्ञमित्रः)

༩༦ 1693- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༤༩-༥༡)
आर्यतारास्तोत्रम्
ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༩༧ 1694- ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་སྙི་ངག་གིས་གསོལ་བ་འདེབས་པ་ཞེས་བྱ་
བའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༥༡-༥༣)
देवीताराकुवाक्याध्याशयेन नामस्तोत्रम्
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་བཤེས་གཉེན། (सर्वज्ञमित्रः)

༩༣,༩༤ གཉིས་འགྱུར་མ་འདྲ་བ་ཙམ་ལས་གཞུང་གཅིག་པ་ཡིན། སྔ་མ་འགྱུར་ལེགས་པ་ཡོད་ཀྱང་དེ་ལ་འགྱུར་བྱང་གསལ་མེད། དེ་གཉིས་དབར་འགྱུར་མ་འདྲ་བའི་ཁྱད་པར་ཧ་ཅང་ཆེན་པོ་ཡོད།

༩༨ 1695- སྒྲོལ་མ་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༥༣)

[त्रिरत्नतारास्तोत्रम्]

༩༩ 1703- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ་དོན་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པའི་རྒྱལ་པོ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༥༨-༦༠)

आर्यातारादेवीस्तोत्रसर्वार्थसिद्धिनाम स्तोत्रराज:

མ་ཏི་ཙི་ཏྲ། (मतिचित्रम्)

༡༠༠ 1716- གནས་ཆེན་གྱི་རིམ་པའི་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༨༣-༨༤)

पीठक्रमतारादेवीस्तोत्रम्

མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ། (अक्षोभ्यवज्र:)

༡༠༡ 1717- ཞིང་གི་དབང་ཕྱུག་མའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༨༤-༨༦)

पीठेश्वरीस्तोत्रम्

བློན་པོའི་རིགས་ཤིན་ཏུ་དགའ་བ། (मन्त्रिकुलसुरत)

༡༠༢ 1724- རྡོ་རྗེ་ཕག་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༩༡)

वज्रवाराहीतारास्तोत्रम्

ཟླ་བ་གྲགས་པ། (चन्द्रकीर्ति:)

༡༠༣ 1725- སྒྲོལ་མ་ཁྲོ་མོ་ལ་རྩ་བའི་སྔགས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༩༡)

उग्रतारामूलमन्त्रस्तोत्रं नाम

༡༠༤ 1773- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་རྐང་པ་བརྒྱད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༦༨-༣༦༩)

श्रीमहाकालाष्टपदस्तोत्रं नाम

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༡༠༥ 1774- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ།[1] (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༦༩)

श्रीमहाकालस्तोत्रम्

མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༡༠༦ 1775- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༦༩-༣༧༠)

श्रीमाहाकालस्तोत्रम्

ཨབདྷུ་ཏི་པ། (अवधुतिपः)

༡༠༧ 1776- རྗེ་བཙུན་དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༧༠-༣༧༡)

श्रीभट्टारकमहाकालस्तोत्रम्

ཙ་མི་སངས་རྒྱས་གྲགས་པ། (चमिबुद्धकीर्तिः)

༡༠༨ 1777- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ་བརྒྱད་པ། (རྒྱུད། 'ཤ' ༣༧༡-༣༧༣)

श्रीमहाकालीदेवीस्तोत्राष्टकं नाम

---

[1] བསྟོད་པ་ཡང་ 1774,1775,1776 འདི་དག་ཞིགས་སྒྱུར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་དྷཱིཿ (धीः पत्रिका) དུས་དེབ་བཅུ་གཅིག་པའི་ནང་གསལ་ཁ་གདོང་ཡོད།

མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༡༠༩ 1778- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་ཀང་པ་བརྒྱད་པ། (རྒྱུད། 'ཁ' ༣༧༢-༣༧༣)
श्रीमहाकालाष्टमन्त्रस्तोत्रं नाम
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༡༡༠ 1779- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ་ཀང་པ་བརྒྱད་པ། (རྒྱུད། 'ཁ' ༣༧༣-༣༧༤)
श्रीमहाकालाष्टमन्त्रस्तोत्रं नाम
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༡༡༡ 1780- རྡོ་རྗེ་ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་བརྒྱད་པ།[1] (རྒྱུད། 'ཁ' ༣༧༤-༣༧༥)
वज्रमहाकालाष्टस्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༡༡༢ 1828- དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷའི་སྐུ་ལ་བསྟོད་པ།[2] (རྒྱུད། 'ཅི' ༡༡༥-༡༡༧)
श्रीगुह्यसमाजमण्डलदेवकायस्तोत्रं नाम
མི་གནས་རྡོ་རྗེ། (अस्थिरवज्रः)

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག "बौद्धस्तोत्रसंग्रह" ཞེས་པའི་ནང་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད། དེ་དང་བོད་འགྱུར་དབར་ཁྱད་པར་ཅི་ཆེ་ཡོད།

༢ བསྟོད་པ་འདིར་དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་ལྷ་ ༣༢ ཆ་ཚང་གི་བསྟོད་པ་གསལ་ཡོད།

༡༡༣ 1837- དད་པ་སྨྲ་བ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཅི' ༣༠༦-༣༠༨)

श्रद्धाप्रलापनाम स्तवः

༡༡༤ 1894- དཔལ་གསང་བ་འདུས་པའི་བསྟོད་པ།[1] (རྒྱུད། 'པི' ༣༣༣)
श्रीगुह्यसमाजस्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༡༡༥ 1925- རྡོ་རྗེ་དབྱངས་ཅན་མའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༣༣-༣༨)
वज्रसरस्वतीस्तोत्रम्
དཔལ་འཛིན། (श्रीधरः)

༡༡༦ 1968- གཤིན་རྗེ་གཤེད་ནག་པོའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༡༠༧-༡༠༩)

कृष्णयमारिमण्डलस्तुति नाम
གྲགས་པ། (कीर्तिः)

༡༡༧ 1969- རྡོ་རྗེ་འཛིན་པས་གཤིན་རྗེ་གཤེད་པོ་ལ་བསྟོད་པའི་རྒྱུད། (རྒྱུད། 'མི' ༡༠༩-༡༡༠)

यमारिस्तुतिः तन्त्रवज्रधृक्

༡༡༨ 2008A- དཔལ་རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ཀྱི་བསྟོད་པ།[2] (རྒྱུད། 'པི' ༣༡༨)

---

༡ འདི་ཡང་འདུས་པའི་ལྷ་ཚོགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་ཡིན།

༢ བསྟོད་པ་འདི་ཉི་འོངས་ནས་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་དཀར་ཆག་དེབ་གཟུགས་ (TOHOKU) ནང་གསལ་མེད་པ་ཆད་སྐྱོན་དུ་མངོན།

श्रीवज्रभैरवस्तुतिः

༡༡༩ 2009- དེ་ཉིད་ལྔ་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༣༡༨-༣༡༩)
पञ्चतत्त्वस्तोत्रम्

༡༢༠ 2010- དཔལ་རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ཀྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༣༡༩)
[श्रीवज्रभैरवस्तुतिः]

༡༢༡ 2011- དཔལ་རྡོ་རྗེ་འཇིགས་བྱེད་ཀྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༣༡༩-༣༢༠)
श्रीवज्रभैरवस्तुति
དོན་ཡོད་རྡོ་རྗེ། (अमोघवज्रः)

༡༢༢ 2012- འཇམ་དཔལ་འཇིགས་བྱེད་ཀྱི་མཚན་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མི' ༣༢༠-༣༢༡)
मञ्जुश्रीवज्रभैरवनाम स्तुतिः
ལས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ། (कार्मराजः)

༡༢༣ 2128- དཔལ་བཅོམ་ལྡན་འདས་རལ་པ་གཅིག་པ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཙི' ༡༧༣-༡༧༥)
श्रीभगवद्-एकजटास्तोत्रम्

༡༢༤ 2164- གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལག་ན་རྡོ་རྗེ་གོས་སྔོན་ཅན་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཙི' ༣༦༨-༣༧༠)
नीलाम्बरधरवज्रपाणिमहायक्षसेनापतिचक्रमहादेवगणमण्डलस्तोत्रं नाम

ཛཔ་རི་པ། (जबरिपा:)

༡༣༥ 2621- འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་མཚན་ཡང་དག་པར་བརྗོད་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཙུ' ༡༣༠-༡༣༡)

आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीतिसर्वमण्डलस्तोत्रम्

སོམ་ཤྲཱི། (सोमश्री)

༡༣༦ 2698- ཚེ་དཔག་མེད་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཏུ' ༦༦-༦༧)

अमतायु: स्तोत्रम्

ཛེ་ཏཱ་རི་དགྲ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ། (जेतारिविनयशत्रु:)

༡༣༧ 2706- ངག་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཏུ' ༧༥)

वागीश्वरस्तोत्रम्

༡༣༨ 2707- འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཏུ' ༧༥-༧༦)

आर्यमञ्जुश्रीस्तोत्रम्

༡༣༩ 2708- འཕགས་པ་ངག་གི་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཏུ' ༧༦)

आर्यवागीश्वरस्तोत्रम्

ཐིག་ལེ་བུམ་པ། (तिलकलश:)

༡༤༠ 2709- གུར་གུམ་གཞོན་ནུ་ལྟ་བུའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཏུ' ༧༦-༧༧)

नवकुङ्कुस्तव:

སེངྒེ་མི་གཡོ་བ། (सिंहाचल:)

༡༢༡ 2710- བཅོམ་ལྡན་འདས་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་བསྟོད་པ་བྱིན་རླབས་དང་བཅས་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༧༧-༧༨)
भगवदार्यमञ्जुश्रीसाधिष्ठानस्तुति:
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༢༢ 2711- དཔལ་ཡེ་ཤེས་ཡོན་ཏན་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ།[༡] (རྒྱུད། 'ནུ' ༧༨-༨༩)
श्रीज्ञानगुणभद्रनामस्तुति:
རྡོ་རྗེ་མཚོན་ཆ། (वज्रायुध:)

༡༢༣ 2712- འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་དབྱངས་ཀྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༧༩)
आर्यमञ्जुघोषस्तोत्रम्

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ཡོངས་གྲགས་ལ་འདོན་སྲོལ་ཆེ་བའི་ 'གང་བློ་མ' ཞེས་པ་དེ་ཡིན། བསྟོད་པ་འདི་ཡོངས་གྲགས་ཅན་དེའི་མཛད་པ་པོའི་སྐོར་ལ་བསྟན་འགྱུར་ཐར་མ་རྣམས་སུ་གོང་གསལ་ལྟར་ཡོད་ཀྱང་། བློ་གླིང་གྲྭ་ཚང་གིས་ཐར་བསྐྲུན་ཞུས་པའི་ཆོས་སྤྱོད་དུ "དཔལ་ན་ལེནྡྲའི་མཁན་པོ་སྨྲ་གཅན་འཛིན་བཟང་པོས་དབྱར་གྲོལ་བའི་སྐབས་པཎ་གྲུབ་རྣམས་ལ་རྩོམ་པར་བསྐུལ་ཏེ་བརྩམས་པའི་བསྟོད་ཚིག་རྣམས་མཁྱེན་དབྱངས་གཅིག་གི་བདག་ཉིད་དུ་གྲུབ་པའི་བྱིན་རླབས་ཀྱི་ཚན་ཁ་ཤིན་ཏུ་ཆེ" ཞེས་གསལ་ཡོད། ཡང་བསྟོད་པ་དེའི་འགྲེལ་པ་ཞིག་ཏུ "ནུབ་གཅིག་པཎྜིཏ་ལྔ་བརྒྱ་ཚོགས་ཏེ་བསྟོད་པ་རེ་རྩོམ་པའི་ལས་ལ་ཞུགས་པའི་ཚེ། རྗེ་བཙུན་གྱིས་བྱིན་གྱིས་རླབས་ཏེ་པཎྜིཏ་རྣམས་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་གཅིག་ཁོ་ན་བྱུང་" ཞེས་སོགས་གསལ་ཡོད་པས་གང་འཐད་དཔྱད་པར་འཚལ།

ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོ། (दिङ्नागः)

༡༣༤ 2718- འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༨༤-༨༥)
आर्यमञ्जुश्रीस्तोत्रं नाम
བློ་གྲོས། (मतिः)

༡༣༥ 2720- འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ལྷ་ལྔའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༨༦-༨༧)
आर्यामोघपाशपंचदेवस्तोत्रम्
ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༣༦ 2721- འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་ཚོགས་ལ་བསྟོད་པ་དྲི་མ་མེད་པའི་འོད། (རྒྱུད། 'ནུ' ༨༧-༨༩)
आर्यामोघपाशमण्डलदेवगणस्तोत्रं विमलप्रभा नाम

༡༣༧ 2722- འཇིག་རྟེན་མགོན་པོའི་བསྟོད་པ་ཡིད་འཕྲོག་སྡིག་འཇོམས། (རྒྱུད། 'ནུ' ༨༩-༩༡)
मनोहरपापविदारणं नाम लोकनाथस्तोत्रम्
ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༣༨ 2723- ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་ཅིང་བསྐུལ་བ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༩༡-༩༣)
महाकारुणिकस्तोत्रचोदना
ཟླ་བ། (चन्द्रः)

༡༣༩ 2724- འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༩༣-༩༣)
लोकेश्वरस्तोत्रं नाम
ཙརྤ་ཏི། (चर्पतिः)

༡༤༠ 2725- འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ལྷ་ལྔའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༩༣)
आर्यामोघपाशपञ्चदेवस्तोत्रम्
ཨེ་ར་པ་ཏི། (एरपतिः)

༡༤༡ 2726- འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་ཙརྤ་ཊིས་བརྩམས་པའི་བསྟོད་པ།[1] (རྒྱུད། 'ནུ' ༩༣-༩༥)
आर्य-अवलोकितेश्वरस्य चर्प्पटिरचितस्तोत्रम्
ཙ་རྤ་ཊི། (चर्प्पटिः)

༡༤༢ 2728- འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ་བརྒྱ་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༩༦-༡༠༧)
लोकेश्वरशतकस्तोत्रम्
དཔལ་རྡོ་རྗེ་ལྷ། (श्रीवज्रदेवः)

༡༤༣ 2729- འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༠༧)
लोकेश्वरस्तोत्रम्
དཔལ་མོ། (लक्ष्मीः)

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་གྱི་གསལ་ཁ་ དྷཱི: (धीः) དུས་དེབ་བཅུ་པའི་ནང་བཀོད་ཡོད། (༡༠༣)

༡༤༤ 2730- ནོར་བུ་གླིང་གི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལྷ་ལྔ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༠༧-༡༠༡)
मणिद्वीपमहाकारुणिकपञ्चदेवस्तोत्रम्
རྟ་དབྱངས། (अश्वघोषः)

༡༤༥ 2731- འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༠༨)
आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्
ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༤༦ 2732- ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་སྨྲེ་སྔགས་ཀྱིས་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༠༨-༡༡༠)
महाकरुणिककुवाक्यस्तोत्रं नाम
ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༤༧ 2733- ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་སྨྲེ་སྔགས་ཀྱིས་བསྟོད་པ་བྱིན་རླབས་ཅན། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༡༡-༡༡༣)
महाकरुणिककुवाक्यस्तोत्रं साधिष्ठानं नाम
ཟླ་བ་གྲགས་པ། (चन्द्रकीर्तिः)

༡༤༨ 2733A- འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་ལ་བསྟོད་པ་གཟུངས་སྔགས་དང་བཅས་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༡༣)
आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रं धरणीसहितम्

༡༤༩ 2734- སྙིང་རྗེ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༡༢-༡༡༣)
करुणास्तोत्रम्
ཀུན་སྦྱིན། (सर्वदत्तः)

༡༥༠ 2735- དཔལ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ།
(རྒྱུད། 'ནུ' ༡༡༣-༡༡༨)
श्री-आर्यावलोकितेश्वरस्तुतिर्नाम
ཟླ་མཛེས། (चन्द्रसुन्दरी)

༡༥༡ 2735A- འཕགས་པ་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་ལ་ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་ནོར་རྒྱལ་གྱིས་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༡༨)
आर्यलोकेश्वरस्य वासुकिनागराजस्तोत्रम्
ཀླུའི་རྒྱལ་པོ་ནོར་རྒྱལ་གྱི་བུ། (नागराजवासुकिः)

༡༥༢ 2738- འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད།
'ནུ' ༡༢༥-༡༢༦)
आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्
དཔལ་མོ། (लक्ष्मीः)

༡༥༣ 2739- འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད།
'ནུ' ༡༢༦-༡༢༧)
आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्
དཔལ་མོ། (लक्ष्मीः)

༡༥༤ 2740- ཧེ་བཙུན་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༣༧)
भट्टारकमहाकरुणिकस्तोत्रम्
དཔལ་མོ། (लक्ष्मी:)

༡༥༥ 2859- འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་སེངྒེ་སྒྲ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༩༧-༡༩༨)
लोकेश्वरसिंहनादस्तोत्रं नाम
ཏི་ལཀ (तिलक:)

༡༥༦ 2889- དཔལ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༡༤༠-༡༤༡)
श्रीवज्रपाणिस्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञान:)

༡༥༧ 2890- བཅོམ་ལྡན་འདས་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༣༤༡)
भगवद्वज्रपाणिस्तोत्रम्

༡༥༨ 2896A- སྦྱིན་སྲེག་གི་དུས་སུ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༣༥༠)
होमकालिकस्तोत्रम्
ཉིན་མཛད་རྡོ་རྗེ། (दिवाकरवज्र:)

༡༥༩ 2915- དཔལ་རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་འཇོམས་པ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ནུ' ༣༡༤-༣༡༥)
श्रीवज्रविदारणास्तोत्रम्
ནོར་བུ་རྡོ་རྗེ། (मणिवज्र:)

༡༧༠ 3060- ཁྲོ་བོའི་རྒྱལ་པོ་འཕགས་པ་མི་གཡོ་བ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༡༡༦)
आर्याचलक्रोधराजस्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༡༧༡ 3061- ཁྲོ་བོའི་རྒྱལ་པོ་འཕགས་པ་མི་གཡོ་བ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༡༡༦-༡༡༧)
आर्याचलक्रोधराजस्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༡༧༢ 3109- གཙུག་ཏོར་གདུགས་དཀར་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༣༠༥)
उष्णीषसितातपत्रास्तोत्रम्

༡༧༣ 3115- བཅོམ་ལྡན་འདས་མ་གཙུག་ཏོར་རྣམ་པར་རྒྱལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༣༡༥)
भगवत्युष्णीषविजयास्तोत्रम्
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༧༤ 3116- འཕགས་མ་གཙུག་ཏོར་གདུགས་དཀར་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༣༡༥-༣༡༦)
आर्योष्णीषसितातपत्रास्तोत्रम्

༡༦༥ 3145- རྡོ་རྗེ་འཛིན་པས་ཞིགས་པར་གསུངས་པའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཕུ' ༡༦༩-༡༧༠)

वज्रधरसंगीतिस्तुति:

༡༦༦ 3146- བསྟོད་པའི་ཕན་ཡོན། (རྒྱུད། 'པུ' ༡༧༠)

स्तुत्यनुशंस:

༡༦༧ 3667- དཔལ་ཆེན་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༧༩-༣༨༡)

श्रीमहातारास्तोत्रं नाम

ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༦༨ 3668- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་ཚིགས་སུ་བཅད་པ་བཅུ་གཉིས་པ།[1] (རྒྱུད། 'མུ' ༣༨༡)

आर्यतारास्तोत्रं द्वादशगाथा

ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༦༩ 3669- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ་འཕྲིན་ལས་སྒྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༨༡-༣༨༣)

आर्यतारास्तोत्रं कर्मसाधनं नाम

ཙན་དྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་དང་། གཞན་གསལ་ཁ་སྐོང་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པ་ཨང་ ༣༧༥ དེ་གཉིས་བསྟོད་པ་གཅིག་ཡིན་ཡང་མཚན་བྱང་མི་འདྲ་བ་དང་། འགྱུར་མི་འདྲ་བ་ལ་བརྟེན་ནས་སྔ་རྗེས་གཉིས་སུ་འཁོད་ཡོད།

༡༧༠ 3670- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་མེ་ཏོག་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༤༣-༣༤༨)
आर्यतारादेवीस्तोत्रं पुष्पमाला नाम
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༧༡ 3671- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༤༨)
आर्यतारादेवीस्तोत्रं नाम
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༡༧༢ 3688- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༣༣)
आर्यतारास्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दिपंकरश्रीज्ञानः)

༡༧༣ 3692- མེ་ཏོག་ཕྲེང་འཛིན་གྱི་སྒྲུབ་པ་བསྟོད་པ་དང་བཅས་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༣༥-༣༣༧)
स्रग्धरासाधनसंस्तुतिः

༡༧༤ 3693- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༣༧)
आर्यतारास्तोत्रम्
མཱ་ཏྲི་ཙེ་ཊ། (मातृचेटः)

༡༧༥ 3694- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'མུ' ༣༣༧-༣༣༤)
आर्यतारास्तोत्रम्
འབུམ་ཕྲག་གསུམ་པ། (त्रिलक्षः)

༡༧༦ 3695- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘མུ’ ༣༢༨)

आर्यतारादेवीस्तोत्रम्

༡༧༧ 3698- ཚངས་པའི་བུ་མོ་དབྱངས་ཅན་མ་ལ་བསྟོད་པས་གྲུབ་པ་ངག་གི་འོད་ཟེར་ཞེས་བྱ་བ། (རྒྱུད། ‘མུ’ ༣༢༩-༣༣༠)

ब्रह्मपुत्रीसरस्वतीस्तोत्रसिद्धिः वाक्यप्रभा नाम

ཕུར་བུ། (बृहस्पतिः)

༡༧༨ 3704- ལྷ་མོ་དབྱངས་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘མུ’ ༣༤༤-༣༤༥)

सरस्वतीस्तोत्रं नाम

ནག་མོ་ཁོལ། (कालिदासः)

༡༧༩ 3739- འཕགས་པ་ཚོགས་ཀྱི་བདག་པོ་ཆགས་པ་རྡོ་རྗེའི་དམ་ཚིག་གི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘ཚི’ ༧༤-༧༥)

आर्यगणपतिरागवज्रसमयस्तोत्रं नाम

དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༡༨༠ 3747- འཕགས་པ་རྨུགས་འཛིན་ཆུའི་དབང་པོ་ལ་ཁྱད་པར་གྱི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘ཚུ’ ༨༣-༨༤)

आर्यजम्भलजलेन्द्रविशेषस्तोत्रं नाम

ནོར་འཛིན་དཔལ། (वसुधरश्रीः)

༡༨༡ 3748- འཕགས་པ་རྨུགས་འཛིན་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། ‘ཚུ’ ༨༤)

आर्यजम्भलस्तोत्रम्

བཙུན་པ་ཟླ་བ། (चन्द्रगोमिन्)

༡༨༢ 3749- འཕགས་པ་ཛམྦྷ་ལ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཚུ' ༨༣)
आर्यजम्भलस्तोत्रम्
ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ། (ज्ञानवज्र:)

༡༨༢ 3750- ཛམྦྷ་ལའི་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཚུ' ༨༣-༨༤)
जम्भलस्तोत्रम्
ཉི་མ་རྣམ་པར་གནོན་པ། (विक्रमादित्य:)

༡༨༣ 3751- ཛམྦྷ་འཛིན་འཆོལ་བའི་མན་ངག་གི་བསྟོད་པ།[1] (རྒྱུད། 'ཚུ' ༨༤-༨༥)
उच्छुष्मजम्भलोपदेशस्तोत्रम्
རྗེ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ། (ध० बोधिसत्व:)

༡༨༤ 3752- ལྷ་མོ་ནོར་རྒྱུན་མ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཚུ' ༨༥)
देवीवसुधारास्तोत्रम्
ཛམཱ་རི། (जमारि:)

༡༨༥ 3759- བླ་མ་དམ་པ་བསོད་ནམས་དཔལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་བསྟོད་པ། (རྒྱུད། 'ཚུ' ༡༡༢-༡༡༣)
परमगुरुपुण्यश्रीनामस्तोत्रम्
དྲི་མེད་བཤེས་གཉེན། (विमलश्री)

---

༡ བསྟོད་པ་འདིའི་མཛད་བྱང་དུ "ཛམྦྷ་འཛིན་འཆོལ་བའི་མན་ངག་གི་བསྟོད་པ་བླ་མ་རྗེ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་མཛད་པ་རྫོགས་སོ། །ཁ་ཅིག་སློབ་དཔོན་ཉི་མ་སྦས་པས་མཛད་དོ་ཞེས་ཀྱང་ཟེར་སྐད་དོ།" །ཞེས་གསལ་ཡོད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

༣ མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པའི་སྐོར།[༡]

(सूत्रसम्बद्धः स्तुतिवर्गः)

༡༥༧ 1109- ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པའི་བསྟོད་པ།[༢] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡-༨)

विशेषस्तवः

མཐོ་བཙུན་གྲུབ་བྱེད། (उद्भटसिद्धस्वामिन्)

༡༥༨ 1110- ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པའི་བསྟོད་པའི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༥-༨༢)

विशेषस्तवनामटीका

ཤེས་རབ་གོ་ཆ། (प्रज्ञावर्मन्)

༡༥༩ 1111- ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༨༢-༨༣)

सर्वज्ञमहेश्वरस्तोत्रं नाम

མཐོ་བཙུན་གྲུབ་བྱེད། (उद्भटसिद्धस्वामिन्)

༡༦༠ 1112- ལྷ་ལས་ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བསྟོད་པ།[༣] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༨༣-༨༥)

---

༡ སྡེ་ཚན་འདིའི་ནང་ཡོད་བསྟོད་པ་ཕལ་ཆེ་བ་བསྟན་འགྱུར་ནང་བཞུགས་བསྟོད་ཚོགས་ལྟར་ཡིན།

༢ བསྟོད་པ་གྲགས་ཅན་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་རྙེད་སོན་བྱུང་མེད་ཀྱང་། རྩ་འགྲེལ་གཉིས་ཀ་ཧིན་སྐད་ཐོག་བསྒྱུར་ཡོད།

༣ བསྟོད་པ་འདིའི་ལེགས་སྦྱར་རྒྱ་དཔེ་རྙེད་སོན་བྱུང་བ་བཞིན་འདྲ་བཏུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་དབྱིན་ཧིན་སྐད་ཐོག་ཏུ་ཕབ་བསྒྱུར་དང་སྒྲིགས་སྒྲར་འདེབས་ཞུས་ཡོད།

देवातिशयस्तोत्रम्
བདེ་བྱེད་བདག་པོ། (शंकरस्वामिन्)

༧༨༡ 1113- ལྷ་ལས་ཕུལ་དུ་བྱུང་བར་བསྟོད་པའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ།
(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༤༥-༦༡)
देवातिशयस्तोत्रटीका
ཤེས་རབ་གོ་ཆ། (प्रज्ञावर्मन्)

༧༨༢ 1114- སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༡)
बुद्धस्तोत्रम्
ནོར་རྒྱུན་མ། (वसुधारा)

༧༨༣ 1115- ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་གནས་པའི་ཡོན་ཏན་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ་ལ་
བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༡-༦༣)
धर्मकायाश्रयासामान्यगुणस्तोत्रम्
ཐོགས་མེད། (असंगः)

༧༨༤ 1116- དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༣-༦༣)
तत्त्वस्तवः
དཔལ་གྱི་གོ་ཆ། (श्रीवर्मन्)

༧༨༥ 1117- བདུད་བཏུལ་བ་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༣)
मारजित्स्तोत्रम्
རབ་དགའི་ལྷ། (प्रमुदितदेवः)

༢༩༦ 1118- ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སུ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༣-༦༧)

धर्मधातुस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༢༩༧ 1119- དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ།[1] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༧-༦༨)

निरौम्यस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༢༩༨ 1120- འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༨-༦༩)

लोकातीतस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༢༩༩ 1121- སེམས་ཀྱི་རྡོ་རྗེའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༦༩-༧༠)

चित्तवज्रस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༠ 1122- དོན་དམ་པར་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༠)

परमार्थस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

---

[1] བསྟོད་པ་ཡང་རིམ་ ༢༩༧, ༢༩༨, ༣༠༠, ༣༠༥ འདི་དག་ནི་སྐབས་སུ་བབས་པའི་གཞུང་ 'བསྟོད་པ་རྣམ་པ་བཞི' (चतु:स्तव) ཞེས་པ་དེའི་ཁོངས་གཏོགས་ཡིན་པས། དེབ་འདིའི་ནང་འདུ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་འབྲེལ་ཉིད་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྒྱུར་བྱས་ནས་བཀོད་ཡོད།

༣༠༡ 1123- སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ་[1]ཞེས་བྱ་བ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༠-༧༡)

कायत्रयस्तोत्रं नाम

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༠༢ 1124- སྐུ་གསུམ་ལ་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་པར་འགྲེལ་པ།

(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༡-༧༤)

कायत्रयस्तोत्रं नाम विवरणः

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༠༣ 1125- སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱ་བའི་བསྟོད་པ།[2] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༤-༧༥)

सत्त्वाराधनस्तवः

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༠༤ 1127- ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་མའི་བསྟོད་པ།[3] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༦)

प्रज्ञापारमितास्तोत्रम्

---

༡ བསྟོད་པ་འདིའི་རྒྱ་བ་ཕལ་ཆེ་བ་ "དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བཀའ་འགྲེལ" ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པ་དེའི་ལེའུ་བཅུ་པར་ལུང་འདྲེན་གྱི་ཚུལ་དུ་རྙེད་སོན་བྱུང་།

༢ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག (बौद्धस्तोत्रसंग्रह) ཞེས་པའི་དེབ་དེའི་ནང་བཀོད་ཡོད།

༣ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག (बौद्धस्तोत्रसंग्रह) ཞེས་པའི་དེབ་དེའི་ནང་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། དེར་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་མཚན་ཐོག་ལ་མ་བཀོད་པར་ (श्रीलक्षाभागवती) ཞེས་པའི་མཚན་ཐོག་ལ་བཀོད་ཡོད་པ་ཇི་ལྟར་འཐད་དཔྱད་པར་བྱའོ། །

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༥ 1128- བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༦-༧༩)

अचिन्त्यस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༦ 1129- བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ།[1] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༩)

स्तुत्यतीतस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༧ 1130- བླ་ན་མེད་པའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༧༩-༨༠)

निरुत्तरस्तव:

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༨ 1131- འཕགས་པ་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དཔལ་གྱི་དོན་དམ་པའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༨༠)

आर्यभट्टारकमञ्जुश्रीपरमार्थस्तुतिर्नाम

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुन:)

༣༠༩ 1132- རྗེ་བཙུན་འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གྱི་སྙིང་རྗེ་ལ་བསྟོད་པ།

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་བོད་འགྱུར་ལ་གཞི་མཛད་ནས་དེང་དུས་ཀྱི་རྒྱ་གར་མཁས་པ་ "प्रभुभाई पटेल" ཞུ་བ་དེས་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཉམས་གསོ་བྱས་ནས་ (IHQ, VOL, VIII, 701) ཞེས་པའི་དུས་དེབ་ནང་སྤར་བསྒྲུན་ཞུས་ཡོད།

(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༤༠-༤༡)

आर्यमञ्जुश्रीभट्टारककरुणास्तोत्रम्

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༠ 1133- གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༤༡-༤༣)

अष्टमहास्थानचैत्यस्तोत्रम्

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༡ 1134- གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༤༣)

अष्टमहास्थानचैत्यस्तोत्रम्

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༢ 1135- མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་བསྟོད་པ།[1] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༤༣-༤༣)

द्वादशाकारनामनयस्तोत्रम्

---

[1] ཡོངས་གྲགས་ཀྱི་ཆོས་སྤྱོད་ཁག་ནང་གསལ་ཞིང་འདོན་སྲོལ་ཆེ་བའི་རྒྱལ་དུ་ཡོད་པའི་བསྟོད་པ་འདིའི་དཔེར་ཡོད་པའི་ཚིགས་བཅད་དང་པོ་"ཐབས་མཁས་ཐུགས་རྗེས་ཤཱཀྱའི་རིགས་ཞིང་།" ཞེས་སོགས་འདིར་གསལ་མེད་ཅིང་། ཚིགས་བཅད་དེ་མཁན་ཆེན་ཞི་འཁྲུངས་ཤིང་།" ཞེས་སོགས་འདིར་གསལ་མེད་ཅིང་། ཚིགས་བཅད་དེ་མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཚོས་མཛད་པའི་ "དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བརྒྱད་ལ་བསྟོད་པ་" ཞེས་པ་དེར་གསལ་ཡོད་པ་འཚོས་མཛད་པའི་ "དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བརྒྱད་ལ་བསྟོད་པ" ཞེས་པ་དེར་གསལ་ཡོད་དོན་བཞིན་ཕྱིས་སུ་བོད་པའི་མཁས་པ་ཞིག་གིས་ཚིགས་བཅད་དེ་དེ་ནས་བཞེས་ཏེ་གོང་གསལ་དོན་བཞིན་ཕྱིས་སུ་བོད་པའི་མཁས་པ་ཞིག་གིས་ཚིགས་བཅད་དེ་དེ་ནས་བཞེས་ཏེ་གོང་གསལ་ཀྱི་བསྟོད་པ་དེའི་དཔེར་བསྣན་ནས་ཆོས་སྤྱོད་ཁག་ནང་འདོན་སྤྱོལ་མཛད་པ་ཞིག་ལས། ཚིགས་བཅད་དེ་བོད་པའི་མཁས་པས་བརྩམས་པར་འདོད་པ་ནི་འཐད་པར་མི་མངོན་ནོ།།

ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༣ 1136- ཕྱག་འཚལ་བའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༩༣)
वन्दनास्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༨ 1137- དམྱལ་བ་ནས་འདྲེན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ།[༡] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༩༣-༩༨)
नरकोद्धारं नाम स्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༡༥ 1138- སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བསྟོད་པ་བསྔགས་པར་འོས་པ་ལ་བསྔགས་པ།[༢] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༩༨-༡༠༠)

---

༡ བསྟོད་པ་དེ་ཕྱིས་སྒྱུར་སྐད་ཐོག "बौद्धस्तोत्रसंग्रह" ཞེས་པར་གསལ་ཡོད་ཀྱང་། དེར་མཇུག་པ་པོའི་མཚན་གྱི་གསལ་ཁ་འཁོད་མེད།

༢ བསྟོད་པ་གྲགས་ཅན་འདིའི་མཚན་བྱང་བསྟན་འགྱུར་སྤྱར་མ་རྣམས་སུ་གསལ་བ་དེ་ནི་ལེའུ་དང་པོ་ཁོ་ནའི་མཚན་བྱང་ལས་གཞུང་སྤྱིའི་མཚན་བྱང་མིན་པ་ནི་ལེའུ་རེ་རེ་བཞིན་གཟིགས་ན་མཁྱེན་ཐུབ། གོང་གསལ་གྱི་མཚན་བྱང་དེའི་ཐོག་ལེའུ་ ༡༣ ལྡན་དུ་ཡོད་པ་ཞིག་དང་། ཡང་ལེའུ་གཅིག་ཟུར་དུ་ཡོད་པ་བཅས་ཁྱོན་ལེའུ་ ༡༣ ཡོད། འོན་ཀྱང་ད་ཡོད་ཀྱི་ཕྱིས་སྒྱུར་རྒྱ་དཔེར་ལེའུ་ ༡༣ ལས་མེད། བསྟོད་པ་དེའི་ཐོག་ཕྱི་རྒྱལ་གྱི་མཁས་པ་ཁག་ལྔ་ཙམ་ནས་ཕྱིས་སྒྱུར་སྐད་ཐོག་དང་། དབྱིན་སྐད་ཐོག་ཁག་གསུམ་དང་། དེ་བཞིན་བོད་སྐད་དང་རྒྱ་མིའི་སྐད་སོགས་ཀྱི་ཐོག་ལ་འདྲ་བསྡུར་བསྒྱུར་ཞིབ་དང་ཕབ་བསྒྱུར་ཅི་རིགས་ཀྱི་ཕྱག་ལས་ཆེས་མང་པོ་གནང་ཡོད། དེ་དག་གི་གསལ་ཁ་དར་ཐང་བཀའ་བསྟན་གྱི་དཀར་ཆག

वर्णार्हवर्णभगवतो बुद्धस्य स्तोत्रम्

མཱ་ཏྲི་ཙེ་ཊ།[༡] (मातृचेटः)

३१६ 1139- དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་བཀྲིས་ཀྱི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༠-༡༠༡)

त्रिरत्नमङ्गलस्तोत्रम्

མཱ་ཏྲི་ཙེ་ཊ། (मातृचेटः)

३१७ 1140- ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཚན་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༡-༡༠༣)

सम्यक्संबुद्धलक्षणस्तोत्रम्

མཱ་ཏྲི་ཙེ་ཊ། (मातृचेटः)

३१८ 1141- གཅིག་ལས་འཕྲོས་པའི་བསྟོད་པ།[༣] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༣)

རྒྱས་པར (VOL-3, 24-26) གསལ་ཡོད། བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཏྲིཿདུས་དེབ་ ༣༠-༣༦ བར་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

༡ མཛད་པ་པོའི་མཚན་ལ་བོད་འགྱུར་སྤར་མ་ཕལ་ཆེ་བའི་ནང་ 'མ་ཏྲི་ཙེ་ཊ' ཞེས་གསལ་ཡང་། ཕྱིས་སུ་བསྒྱུར་ཞུས་བྱས་པ་དག་ཏུ་ 'མཱ་ཏྲི་ཙེ་ཊ' ཞེས་པ་ 'མ་འཁོལ་' ཞེས་པའི་དོན་དུ་བཀོད་ཡོད། སྔ་མ་ལྟར་ན་ 'བློ་གྲོས་སྣ་ཚོགས་' ཞེས་པར་འགྱུར་སྣང་བས་གང་འཐད་དཔྱད་པར་བྱའོ།།

༣ བསྟོད་པ་འདིར་ཆོས་གཅིག་དང་། འཇིག་རྟེན་མིག་གཅིག་ཅེས་སོགས་ནས་སྟོབས་བཅུའི་བར་གྲངས་འདྲེན་འདྲ་མིན་ལ་སྦྱར་ནས་བསྟོད་པ་མཛད་ཡོད། རྒྱལ་དེ་འདྲ་བ་ཞིག་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་དགེ་འདུན་གྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་འདུལ་བའི་སྙིང་འབུམ་ཆེན་མོའི་དཔྲར་ཡང་མཆོད་བརྗོད་དང་བསྟོད་ཕྱག་གི་རྒྱལ་དུ་མཛད་ཡོད། (དེབ་ཆེན། ༡-༣)

एकोत्तरिकास्तव:
མཱཏྲྀཙེཊ། (मातृचेट:)

༣༢༩ 1142- བདེ་བར་གཤེགས་པ་སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔའི་བསྟོད་པ་མཚན་རིན་པོ་ཆེས་སྤྲས་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༣-༡༠༨)
མཱཏྲྀཙེཊ། (मातृचेट:)

༣༣༠ 1143- ཚིག་བརྒྱད་པའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༨)
पदाष्टकस्तोत्रम्
མཐའ་ཡས་ལྷ། (अनन्तदेव:)

༣༣༡ 1144- དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༨-༡༠༥)
त्रिरत्नस्तोत्रम्
མཱཏྲྀཙེཊ། (मातृचेट:)

༣༣༢ 1145- དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༥-༡༠༩)
त्रिरत्नस्तोत्रवृत्ति:
རྒྱལ་བའི་སྲས། (जिनपुत्र:)

༣༣༣ 1146- དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༠༩-༡༡༠)
त्रिरत्नस्तोत्रम्

དབྱིག་གཉེན། (वसुबन्धुः)

३३८ 1147- བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ།[༡] (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༡༡༠-༡༡༦)

शतपञ्चाशत्कं नाम स्तोत्रम्

རྟ་དབྱངས། (अश्वघोषः)

३३५ 1148- བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ། (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༡༡༦-༡༧༨)

शतपञ्चाशत्क नामस्तोत्रटीका

དགའ་བྱེད་སྙན་པ། (आनन्दप्रियः)

३३६ 1149- གཎྜཱིའི་བསྟོད་པའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ།[༣] (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༡༧༨-༡༨༡)

---

༡ ལེའུ་བཅུ་གསུམ་གྱི་བདག་ཉིད་ཅན་གྱི་བསྟོད་པ་གྲགས་ཅན་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པ་མ་ཟད། དེའི་ཐོག་ཕྱི་རྒྱལ་གྱི་མཁས་པ་མང་པོས་སྐད་ཡིག་འདྲ་མིན་ཐོག་ཕྱུག་ལས་མང་པོ་གནང་ཡོད། ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ལ་ཁག་དགུ་དང་། དབྱིན་སྐད་ཐོག་གསུམ། ཇར་མན་དང་། ཉི་འོངས་སྐད་ཐོག་གཉིས་གཉིས་དང་། བོད་སྐད་དང་། རྒྱ་སྐད་ཐོག་རེ་རེ་བཅས་ཁྱོན་བཅུ་དགུ་ཙམ་དང་། དེ་མིན་པ་གསུམ་བཅས་ཀྱི་གསལ་ཁ་དག་དར་ཐང་བཀའ་བསྟན་གྱི་དཀར་ཆག་རྒྱས་པར་གསལ་ཡོད། (VOL-3, 31-33) བསྟོད་པ་འདི་ ‘‘**बौद्धस्तोत्रसंग्रहः**’’ ཞེས་པར་ཡང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད།

༣ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་ཤིང་དེ་ལ་ཚིགས་བཅད་ ༣༥ ཡོད་ཀྱང་། བོད་འགྱུར་ནང་ ༣༣ ལས་མེད་པས་ཚིགས་བཅད་མཐའ་མ་གཉིས་ཚང་མེད། ལེགས་སྦྱར་ནང་བསྟོད་པ་དེའི་མཚན་བྱང་ ‘‘**बुद्धगण्डीस्तवः**’’ སངས་རྒྱས་གཎྜཱིའི་བསྟོད་པ་ཞེས་གསལ་ཡོད།

गण्डीस्तोत्रगाथा
རྟ་དབྱངས། (अश्वघोष:)

༣༣༧ 1150- སྤྲེལ་མར་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ།[1] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༨༡-༡༩༣)
मिश्रकस्तोत्रं नाम
མཱ་ཏྲྀ་ཙེ་ཊ་དང་ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོ། (मातृचेट: तथा दिङनाग:)

༣༣༨ 1151- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༩༣-༡༩༦)
सर्वतथागतस्तोत्रम्

༣༣༩ 1152- བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༩༦)
भगवच्छाक्यमुनिस्तोत्रम्
དཀོན་མཆོག་གསུམ་གྱི་འབངས། (त्रिरत्नदास:)

༣༣༠ 1153- དཔལ་ལྡན་རྗེ་བཙུན་བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༡༩༥)
श्रीमन्महाबोधिभट्टारकस्तोत्रम्

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་གོང་གསལ་སློབ་དཔོན་དཔའ་བོས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་བརྒྱ་ལྔ་བཅུ་པ་ཞེས་པ་དེ་གཞི་རྩར་བཟུང་ནས་སློབ་དཔོན་ཕྱོགས་གླང་གིས་མཛད་པ་ཞིག་ཡིན། ཚུལ་འདི་ལས་རྩོམ་འགྲོས་ཀྱི་ལིགས་ཆ་བཞིས་པའི་སྔོ་ནས་ཚངས་སྲས་བཞད་པའི་སྒྲ་དབྱངས་ཀྱིས་རྟེན་འབྲེལ་བསྟོད་པའི་སྤྲེལ་མར་བསྟོད་པ་ཞེས་པ་དེ་མཛད་ཡོད།

མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༣༣༡ 1154- སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟོད་པ་བཅུ་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༢༩༥-
༢༩༦)
दशबुद्धस्तवः
ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्नः)

༣༣༢ 1155- ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་པར་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས།
'ཀ'༢༩༦-༣༠༠)
गुणापर्यन्तस्तोत्रम्
དཀོན་མཆོག་འབངས། (त्रिरत्नदासः)

༣༣༣ 1156- ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་པར་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ། (བསྟོད་
ཚོགས། 'ཀ'༣༠༠-༣༠༣)
गुणापर्यन्तस्तोत्रटीका
ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོ། (दिङ्नागः)

༣༣༤ 1157- ཡོན་ཏན་མཐའ་ཡས་པར་བསྟོད་པའི་དོན་གྱི་ཚིག་ལེའུར་
བྱས་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༠༣)
गुणापर्यन्तस्तोत्रपदकारिका
ཕྱོགས་ཀྱི་གླང་པོ། (दिङ्नागः)

༣༣༥ 1158- སངས་རྒྱས་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ།
(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༠༣-༣༠༤)
बुद्धपरिनिर्वाणस्तोत्रम्

ཆོས་ཀྱི་གྲགས་པ། (धर्मकीर्तिः)

༣༣༦ 1159- བཤགས་བསྟོད། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༠༥-༣༠༦)
देशनास्तवः
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༣༣༧ 1160- གཤགས་པའི་བསྟོད་པའི་འགྲེལ་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༠༦-༣༣༩)
देशनास्तववृत्तिः
སངས་རྒྱས་ཞི་བ། (बुद्धशान्तिः)

༣༣༨ 1161- སངས་དབང་བསྐུར་བ་ཞེས་བྱ་བའི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༣༠-༣༣༠)
बुद्धाभिषेको नाम स्तोत्रम्

༣༣༩ 1162- བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བསྟོད་པ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་འཛིན་གྱི་དབྱངས་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༣༡)
श्रीवज्रधरसंगीतिभगवत्स्तोत्रम्
ཞི་བ་འཚོ། (शान्तरक्षितः)

༣༤༠ 1163- བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་བསྟོད་པ་དཔལ་རྡོ་རྗེ་འཛིན་གྱི་དབྱངས་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་བཤད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༣༡-༣༣༧)
श्रीवज्रधरसंगीतिभगवत्स्तोत्रटीका
ཞི་བ་འཚོ། (शान्तरक्षितः)

༣༤༡ 1164- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྔ་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༣༧)

पञ्चतथागतस्तोत्रम्

ཞི་བ་འཚོ། (शान्तरक्षितः)

༣༤༢ 1165- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བདུན་གྱི་བསྟོད་པ།[༡] (བསྟོད་ཚོགས།
'ཀ' ༣༣༧-༣༣༨)

सप्ततथागतस्तोत्रम्

༣༤༣ 1166- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བརྒྱད་ལ་བསྟོད་པ།[༢] (བསྟོད་ཚོགས།
'ཀ' ༣༣༨-༣༣༩)

अष्टतथागतस्तोत्रम्

ཞི་བ་འཚོ། (शान्तरक्षितः)

༣༤༤ 1167- རབ་ཏུ་སྔ་བར་རྣམ་ལངས་པའི་བསྟོད་པ།[༣] (བསྟོད་ཚོགས།
'ཀ' ༣༣༩-༣༤༠)

सुप्रभातस्तोत्रम्

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ནང་པའི་བསྟོད་པ་མང་པོ་ཕྱོགས་བསྡུ་བྱས་པའི་ ''बौद्धस्तोत्रसंग्रहः'' ཞེས་པའི་ནང་གསལ་ཡོད།

༢ མཁན་ཆེན་ཞི་འཚོས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་ཁྱད་པར་ཅན་འདིའི་ནང་ཡོངས་གྲགས་འདོན་སྤྱོད་ཆེ་བའི་ "ཐབས་མཁས་ཐུགས་རྗེས་ཤཱཀྱའི་རིགས་འཁྲུངས་ཤིང་།" །ཞེས་སོགས་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་དང་པོ་དེ་དེར་གསལ་ཡོད་པས། དེ་བོད་པའི་མཁས་པས་བརྩམས་པར་འདོད་པ་འཐད་པར་མི་སྣང་ཡང་། དགོས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་ལ་གཟིགས་ནས་ཕྱིས་སུ་ཚིགས་བཅད་དེ་སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་ "མཛད་པ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་བསྟོད་པ་" ཞེས་པ་དེའི་དབུར་བོད་པའི་མཁས་པས་བསྣན་པ་ཞིག་ཅིས་ཀྱང་ཡིན་ཆོག་པར་མངོན་ནོ།།

༣ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ནང་པའི་བསྟོད་པ་ཕྱོགས་བསྡུས་ ''बौद्धस्तोत्रसंग्रहः'' ཞེས་པ་དེར་གསལ་ཡོད། (༣༥༤ - ༣༥༧)

ཧརྵ་དེ་བ། (हर्षदेव:)

३८५ 1168- གནས་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཆོད་རྟེན་ལ་ཕྱག་འཚལ་བའི་བསྟོད་པ།[༡] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༨༠-༣༨༡)
अष्टमहास्थानचैत्यवन्दनास्तव:
ཧརྵ་དེ་བ། (हर्षदेव:)

३८६ 1169- དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མཚན་བརྗོད་བསྐལ་བཟང་རྒྱན་གྱི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ།[༢] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ'༣༨༡-༣༨༦)
तथागतनामसंगीतिकल्पिकभद्रालंकारमाला नाम
ཤཱཀྱ་ཤྲཱི། (शाक्यश्री:)

३८७ 1170- སྦྱོར་བ་བཞིའི་ལྷ་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༨༦-༣༨༩)
योगचतुर्देवस्तोत्रम्

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ཡོད་སྐོར་ 'ཧྲཱིཿ' དུས་དེབ་བཅུ་པར་གསལ་ཡོད། (༩༠)

༢ གཞུང་འདི་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་པའི་ཞལ་གསལ་དངོས་སུ་མངོན་དཀའ་ཡང་བུ་སྟོན་གྱི་བསྟན་འགྱུར་དཀར་ཆག་དག་ཏུ་བསྟོད་པའི་སྐོར་ཡིན་པའི་གསལ་ཁ་གཏོད་ཡོད། གཞུང་དེའི་མཛད་བྱང་དུ་སྦྱིར་མདོ་སྡེ་བསྐལ་བཟང་ནང་སངས་རྒྱས་སྟོང་རེ་རེ་ལ་ཡུལ་དང་། རིགས་རུས་དང་ཡབ་ཡུམ་དང་། བསྟན་པའི་གནས་ཚད་སོགས་དོན་ཚན་བཅོ་ལྔ་རེའི་སྒོ་ནས་བསྟན་ཡོད་ཀྱང་། འདིར་སངས་རྒྱས་སྟོང་གི་མཚན་རྣམས་ཚིགས་སུ་བཅད་པའི་ལམ་ནས་བསྟན་ཡོད་སྐོར་གསུངས་ཡོད། འདི་བྱིན་རླབས་ཀྱི་ཚན་ཁ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བར་མངོན་ནོ། །པེ་ཅིང་དཀར་ཆག་ཏུ་གཞུང་འདི་ 'རྒྱལ་བའི་སྲས་' ཀྱིས་མཛད་སྐོར་གསལ་ཡོད།

རིན་ཆེན་གྲགས་པ། (रत्नकीर्तिः)

༣༤༨ 1171- མཁས་པ་ཆེན་པོ་གྲགས་པ་རྒྱལ་མཚན་ལ་བསྟོད་པ།[1]
(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༤༩-༣༥༠)
महापणिडतकीर्तिध्वजस्तोत्रम्
(सुगतश्रीः)

༣༤༩ 1172- བླ་མ་དམ་པ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༥༠)
परमगुरुधर्मराजस्तोत्रंनाम
མཁས་པ་ཆེན་པོ་ལཀྵྨཱི་ཀ་ར། (पण्डितलक्ष्मीकरः)

༣༥༠ 1173- རྗེ་བཙུན་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་སེངྒེའི་སྒྲ་ལ་བསྟོད་པ།
(བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༥༠-༣༥༡)
सिंहनादलोकेश्वरभट्टारकस्तुतिः
པཎྜིཏ་གཉིས་སྐྱེས་སྐྱུང་བ།

༣༥༡ 1174- འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ་རིན་པོ་ཆེའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ།[3] (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༥༡-༣༥༣)
लोकेश्वररत्नमालास्तवो नाम

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་ས་ཆེན་གོང་མ་རྣམ་ལྔའི་ནང་ཚན་རྗེ་བཙུན་གྲགས་པ་རྒྱལ་མཚན་གྱི་བསྟོད་པ་ཡིན། དེ་རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་ 'སུགཏཤྲཱིས' བོད་གངས་ཅན་གྱི་མཁས་པ་དེ་ཉིད་ལ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བརྩམས་ནས་བསྟོད་པ་མཛད་པ་ཞིག་ཡིན་ནོ། །

[3] བསྟོད་པ་འདི་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ 'དྷཱིཿ' (धीः) དུས་དེབ་བཅོ་ལྔ་པའི་དབུར་བཀོད་ཡོད། དེར་མཛད་པ་པོའི་མཚན་གསལ་མེད།

ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्ना:)

༣༥༣ 1175- ཚོགས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༣༥༣)

गणेश्वरस्तव:

ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्ना:)

༣༥༣ 1176- དཔལ་རི་ཁྲོད་ཞབས་ཀྱི་བསྟོད་པ་རིན་པོ་ཆེ། (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༣༥༣-༣༥༥)

श्रीशवरपादस्तोत्ररत्न

ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्ना:)

༣༥༤ 1177- དཔལ་ལྡན་བླ་མ་ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན་གྱི་བསྟོད་པ་བདུན་པ་ (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༣༥༥)

श्रीगुरुवनरत्नस्तोत्रसप्तकम्

ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्ना:)

༣༥༥ 1178- སྐྱེས་པ་རབས་ཀྱི་བསྟོད་པ།[༡] (བསྟོད་ཚོགས། ‘ཀ’ ༣༥༥-༣༥༧)

जातकस्तव:

ཡེ་ཤེས་གྲགས་པ། (ज्ञानकीर्ति:)

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་བསྟན་འགྱུར་ནང་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཡིག་དང་བོད་སྐད་ཤན་སྦྱར་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་ཡོད།

३५६ 1179- བླ་མ་དམ་པ་ལ་བསྟོད་པ། (བསྟོད་ཚོགས། 'ཀ' ༣༥༨)
सद्गुरुस्तोत्रम्
ཆོས་ཀྱི་ཉི་མ། (सूर्यधर्मः)

३५७ 4136- འདུལ་བ་ལ་བསྟོད་པ།[1] (འདུལ་བ། 'སུ' ༡༣༣-༡༣༩)
विनयस्तोत्रम्
ཆོས་ཀྱི་ཚོང་དཔོན། (धर्मश्रेष्ठिन्)

३५८ 4137- འདུལ་བ་ལ་བསྟོད་པའི་ཚིག་གི་རྣམ་པར་བཤད་པ།[2]
(འདུལ་བ། 'སུ' ༡༣༩-༡༩༡)
विनयस्तोत्रपदव्याख्यानम्
དུལ་བའི་ལྷ། (विनीतदेवः)

३५९ 4305- སྤེལ་སྦྱོར་གྱི་ཕྲེང་བའི་བསྟོད་པ།[3] (སྣ་མདོ། 'སེ' ༣༧༨-༣༨༩)

---

[1] གཞུང་འདི་བསྟོད་པ་ཡིན་པ་ལ་དགོངས་ནས་བཀའ་འགྱུར་ནང་ཆན་དགེ་སློང་པའི་འདུལ་བ་རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་དབུར་ཡང་བཀོད་ཡོད། (འདུལ་བ་ 'ཅ' ༣༡) དེའི་རྒྱུན་བྱས་ནས་མཁས་པ་འགའ་རེས་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཚེ་ 'ལུང་རྣམ་འབྱེད་ལས' ཞེས་བཀོད་པ་ཡང་བྱུང་ཡོད།

[2] སློབ་དཔོན་དུལ་བ་ལྷས་མཛད་པའི་འདུལ་བསྟོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་ཟུར་དུ་ཡོད་པ་དེ་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ལུང་རྣམ་འབྱེད་ཀྱི་དབུར་གསལ་བའི་འདུལ་བསྟོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་གཉིས་གཞུང་གི་དབུ་ཞབས་དང་རྒྱས་བསྡུས་སོགས་ལ་བརྟགས་པའི་ཚེ། འགྲེལ་བྱེད་མཁན་པོ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་འགྲེལ་པ་གཅིག་ཉིད་ཡིན་པ་ལ་གཞུང་དོན་འགྲེལ་ཚུལ་གྱི་ཆ་ནས་ཁྱད་པར་ཤིན་ཏུ་ཆེན་པོ་ཡོད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།

[3] བསྟོད་པ་ཨང་རིམ ༣༥༧, ༣༥༨, ༣༥༩, བཅས་འདི་གསུམ་མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ་ཡིན་ཡང་། བསྟན་འགྱུར་བསྟོད་ཚོགས་ཁག་ནང་གསལ་མེད།

वृत्तमालास्तुतिः
ཡེ་ཤེས་དཔལ་བཤེས་གཉེན། (ज्ञानश्रीमित्रम्)

ག བསྟན་འགྱུར་ཁ་སྐོང་ནང་བཞུགས་བསྟོད་པའི་སྐོར།༡

तनग्युर सम्पूरकान्तर्गतः स्तोत्रगणः

(པེ་ཀིང་རྒྱུད་འགྲེལ་ནང་ཚན།)

༣༦༠ 4505- དཔལ་འཁོར་ལོ་སྡོམ་པའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕ' ༥༦-༥༧)
श्रीचक्रसंवरस्तोत्रम्
མཻ་ཏྲི་པ། (मैत्रीपादः)

༣༦༡ 4515- དཔལ་ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཉུ' ༣༣༩)
श्रीवज्रपाणिस्तोत्रम्
བརྩོན་འགྲུས་ཟླ་བ། (वीर्यचन्द्रः)

༣༦༢ 4521- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༣༣༥)
महाकालस्तोत्रम्
མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

---

༡ འདིར་བཀོད་པའི་ཁ་སྐོང་ནང་བཞུགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་རྣམས་པེ་ཀིང་པར་མ་གཞི་བཟུང་ཡིན་ཡང་། ཕྱིར་པེ་ཀིང་པར་མ་དང་སྣར་ཐང་གཉིས་འདྲ་བས། བསྟོད་པ་འདི་དག་དེ་གཉིས་ཀར་གསལ་ཡོད།

३६३ 4524- སངས་རྒྱས་རྗེ་བཙུན་ལ་རྒྱུན་ཆགས་ཀྱི་ཚིགས་སུ་བཅད་པས་བསྟོད་པ།[༡] (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། ‘པུ’ ༡-༣)
बुद्धभट्टारकस्य दण्डकवृत्तेन स्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

३६४ 4525- མི་ཕམ་མགོན་པོ་ལ་བསྟོད་པ་འཆི་བླུ་མ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། ‘པུ’ ༤)
[अजितनाथस्तुतिःमृत्युवञ्चनानाम]
འཇིགས་མེད་གྲགས་པ། (अभयकीर्तिः)

३६५ 4526- དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། ‘པུ’ ༤-༥)
सर्वतथागतस्तवो नाम
ཀླུ་ཡི་བློ། (नागबुद्धिः)

३६६ 4547- བཅོམ་ལྡན་འདས་བདེ་མཆོག་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། ‘པུ’ ༡༡༦-༡༣༤)
भगवच्छंवरस्तोत्रम्
ཛཱལནྡྷ་རི་པ། (जालन्धरिपः)

---

༡ རྒྱུན་ཆགས་ཀྱི་བསྟོད་པ་འདི་ཚིགས་བཅད་གཅིག་གི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་ལེགས་སྦྱར་སྒྲགས་ཡིག་དང་བོད་བསྒྱུར་ཤན་སྦྱར་གྱི་ཚུལ་དུ་ཡོད་མོད། འོན་ཀྱང་ཡི་གེ་ཤིན་ཏུ་ཆུང་ཞིང་གསལ་པོ་མེད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ཡིག་ངོ་འཕྲོད་དཀའ་བའི་ཚུལ་དུ་ཡོད། ཚིགས་བཅད་དེ་དཔེ་རིང་ངོས་ཤོག་བཞི་ཙམ་གྱི་ཚད་ཅན་དུ་ཡོད།

༣༦༧ 4573- དཔལ་འཁོར་ལོ་བསྡོམ་པ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'པུ' ༣༥༧)
श्रीचक्रसंवरस्तोत्रम्
མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ། (अक्षोभ्यवज्रः)

༣༦༨ 4575- བཅོམ་ལྡན་འདས་བདེ་མཆོག་འཁོར་ལོའི་བསྟོད་པ་དཎྜ་ཀ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'པུ' ༣༥༩-༣༦༠)
भगवच्चक्रसंवरस्तोत्रंदण्डकं नाम

༣༦༩ 4619- བདག་མེད་མ་ལྷ་མོ་བཅོ་ལྔ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕུ' ༣༢༢-༣༢༣)
नैरात्म्यापञ्चदशदेवीस्तोत्रम्
འཕགས་པ་ལྷ། (आर्यदेवः)

༣༧༠ 4626- རྗེ་བཙུན་མ་ཀུ་རུ་ཀུལླེ་ལ་བསྟོད་པ་འཕྲིན་ལས་ཉེ་བར་བསྐུལ་བ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕུ' ༣༣༢-༣༣༣)
कुरुकुल्लेभट्टारिकस्तोत्रं कर्मसंचोदनं नाम
ཡེ་ཤེས། (ज्ञानः)

༣༧༡ 4730- འཇམ་དབྱངས་དཔའ་བོ་གཅིག་གྲུབ་ཀྱི་བསྟོད་པ་གསེར་གྱི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༢༠-༢༢༣)
सिद्धैकवीरमञ्जुधोषस्तोत्रं सुवर्णमाला नाम
ངག་གི་དབང་ཕྱུག་གྲགས་པ། (वागीश्वरकीर्तिः)

༣༨༢ 4761- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་མུ་ཏིག་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༧༨-༡༨༡)
आर्यतारादेवीस्तोत्रं मुक्तिकामाला नाम
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༣༨༣ 4762- འཕགས་མ་ལྷ་མོ་སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༨༡-༡༨༣)
आर्यतारादेवीस्तोत्रम्
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༣༨༤ 4763- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་སྨོན་ལམ་གྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ།[1] (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༨༣-༡༨༣)
आर्यतारास्तोत्रं प्रणिधानसिद्धिर्नाम
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

༣༨༥ 4764- བཅོམ་ལྡན་འདས་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༨༣-༡༨༤)
भगवत्यार्यतारास्तोत्रं नाम
དད་བྱེད་གོ་ཆ། (श्रद्धाकरवर्मन्)

---

[1] བསྟོད་པ་འདི་དང་གོང་དུ་བཀོད་པའི་བསྟོད་པ་ཡང་ ༡༦༨ བྱས་པ་གཉིས་བསྟོད་པ་གཅིག་ཡིན་ཡང་མཚན་བྱང་མ་འདྲ་བའི་འབྲུལ་གཞི་བྱས་ནས་སྔ་རྗེས་གཉིས་སུ་བཀོད་པར་མངོན་མོད། འོན་ཀྱང་དེ་གཉིས་ལ་འགྱུར་མ་འདྲ་བའི་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་པས་སོར་བཞག་བྱས་སོ།།

३७६ 4765- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་འཇིགས་པ་ཆེན་པོ་བརྒྱད་ལས་སྒྲོལ་བའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༨༣-༢༨༥)
आर्याष्टमहाभयोत्तारतारास्तव:
ཙནྡྲ་གོ་མི། (चन्द्रगोमिन्)

३७७ 4766- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༨༥)
आर्यतारास्तोत्रम्
མར་མེ་མཛད་བཟང་པོ། (दीपंकरभद्र:)

३७८ 4767- འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༨༦-༢༨༧)
आर्यतारास्तोत्रम्
མི་བསྐྱོད་རྡོ་རྗེ། (अक्षोभ्यवज्र:)

३७९ 4768- དམ་ཚིག་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༨༧-༢༨༩)
समयतारास्तव:
ངག་གི་དབང་ཕྱུག (वागीश्वर:)

३८० 4769- བདེ་བའི་འབྱུང་གནས་དཔལ་ལྡན་རྗེ་བཙུན་མ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༨༩-༢༩༠)
सुखाकरश्रीमतीभट्टारिकास्तोत्रम्

༣༤༡ 4770- སྒྲོལ་མའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༩༠-)
तारास्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༤༢ 4771- རྗེ་བཙུན་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མ་ལ་མཚན་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་ཀྱི་
བསྟོད་པ་དོན་ཐམས་ཅད་གྲུབ་པར་བྱེད་པ་རིན་ཆེན་རྒྱན་འདྲ་
ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༩༠-༡༩༣
आर्यताराभट्टारिकानामद्वात्रिंशत्कस्तोत्रं सर्वार्थसाधकरत्नालंकार-
संनिभो नाम
ཉི་མ་སྦས་པ། (सूर्यगुप्तः)

༣༤༣ 4773- སེང་ལྡེང་ནགས་ཀྱི་སྒྲོལ་མ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་
འགྲེལ། 'ཟུ' ༡༩༦-༡༩༧)
खदिरवनीतारास्तोत्रम्
ཀླུ་སྒྲུབ། (नागार्जुनः)

༣༤༦ 4784- ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པའི་ཕྲེང་བ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་།
རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༣༧༦-)
महाकालस्तोत्रमाला नाम
མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༣༤༨ 4785- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ'
༣༧༦-༣༧༨)
महाकालस्तोत्रम्

བྷཝ་ལྷ། (भवदेवः)

༣༥༦ 4786- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༧༦༥)

महाकालस्तोत्रम्

མཻ་ཏྲི་པ། (मैत्रिपः)

༣༥༧ 4787- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༧༦༥-༧༦༦)

महाकालस्तोत्रम्

འཇིག་མེད། (अभयः)

༣༥༨ 4788- དཔལ་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༧༦༦)

श्रीमहाकालस्तोत्रम्

མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༣༥༩ 4789- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༧༦༦-༧༦༧)

महाकालस्तोत्रम्

སྤྱན་ཆེན་པོ། (महाचक्षुः)

༣༦༠ 4790- ལྷ་མོ་ནག་མོའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༣༦༧-༣༦༨)

देवीकालीस्तोत्रम्
མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༣༨༡ 4791- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ། (ཡི་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཇུ' ༣༦༨-༣༦༩)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम
མཆོག་སྲེད། (वररुचिः)

༣༨༢ 4792- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ། (ཡི་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཇུ' ༣༦༩-༣༧༠)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम

༣༨༣ 4793- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (ཡི་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཇུ' ༣༧༠)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम
དྲང་སྲོང་ཀོ་ཊི་ལ། (ऋषिकौटिल्यः)

༣༨༤ 4794- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (ཡི་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཇུ' ༣༧༠)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम
མཻ་ཏྲི་པ། (मैत्रिपः)

༣༨༥ 4795- དཔལ་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (ཡི་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཇུ' ༣༧༠-༣༧༡)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम

འཇིགས་མེད། (अभय:)

༢༩༦ 4796- དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་ནག་མོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༧༡)
श्रीदेवीकालीस्तोत्रं नाम

༢༩༧ 4797- ལས་མཁན་གྱི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༧༢-༢༧༣)
कर्मकरस्तोत्रम्
མཆོག་སྲེད། (वररुचि:)

༢༩༨ 4798- གནོད་སྦྱིན་ནག་མོའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༧༣-༢༧༤)
यक्षकालस्तोत्रम्
མཆོག་སྲེད། (वररुचि:)

༢༩༩ 4800- དམག་དཔོན་ཆེན་པོ་ཞལ་བཞི་པའི་བསྟོད་པ་ཤློཀ་ཉི་ཤུ་པ་ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཟུ' ༢༧༥-༢༧༦)
महासेनापतिचतुर्मुखस्तोत्रं श्लोकविंशक नाम
རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། (रत्नवज्र:)

༣༠༠ 4815- ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ་ཛམ་པ་སྒྲ་སྒྲོགས། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཙུ' ༡༡)
महाकालस्तोत्रं आक्षेपो नाम
མཆོག་སྲེད། (वररुचि:)

३०१ 4816- མགོན་པོའི་གཞུང་བསྟོད། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཧུ' ༡༣)
नाथसमयस्तोत्रम्
རཱ་ཧུ་ལ། (राहुलः)

३०२ 4817- ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཧུ' ༡༣)
महाकालस्तोत्रम्
ས་ར་ཧ། (सरहः)

३०३ 4818- ནག་པོ་ཆེན་པོའི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཧུ' ༡༣)
महाकालस्तोत्रम्
ཤ་བ་རི་པ། (शवरिपः)

३०४ 4820- ཡེ་ཤེས་མགོན་པོ་གྲི་གུག་ཅན་གྱི་བདག་བསྐྱེད་བཟླས་པ་བསྟོད་པ་དང་བཅས་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཧུ' ༡༩)
कर्तरिधरज्ञाननाथात्मोत्पादनजपस्तोत्रम्
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

३०५ 4821- ནག་པོ་ཆེན་པོ་ཕྱག་གཉིས་པའི་བསྟོད་པ།[1] (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཧུ' ༡༦-༡༨)
द्विभुजमहाकालस्तोत्रम्

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་པེ་ཀིང་སྤར་མར་ལེགས་སྦྱར་སྡེབས་ཡིག་དང་བོད་སྐད་ཤན་སྦྱར་ཐོག་བཀོད་ཡོད།

ཆོས་ཀྱི་ཉིན་བྱེད་ཞབས། (धर्मादित्यपाद:)

༣༠༦ 4842- གནོད་སྦྱིན་ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ་རིན་པོ་ཆེས་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ།
(པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕུ' ༥༩-༦༠)
यक्षमहाकालरत्नस्तुतिर्नाम
ཀ་ན་རི་པ། (कनरिप:)

༣༠༧ 4852- འཕགས་པ་ཚོགས་ཀྱི་བདག་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་།
རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕུ' ༨༨-༨༩)
आर्यगणपतिस्तुति:
ནག་པོ་པ། (कृष्णप:)

༣༠༨ 4864- འཕགས་པ་ཚོགས་ཀྱི་བདག་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་།
རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཕུ' ༡༠༠)
आर्यगणपतिस्तुति:
ནག་པོ་པ། (कृष्णप:)

༣༠༩ 4866- ཚོགས་ཀྱི་བདག་པོ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ།
'ཕུ' ༡༠༣)
गणपतिस्तोत्रम्
དོན་ཡོད་རྡོ་རྗེ། (अमोघवज्र:)

༣༡༠ 4868- འདོད་པའི་དབང་ཕྱུག་གི་བསྟོད་པ། (པེ་ཀིང་། རྒྱུད་འགྲེལ།
'ཕུ' ༡༠༨)

कामेश्वरस्तोत्रम्
ཙནྡྲ་པ། (चन्द्रपः)

༣༡༡ 4873- འཕགས་པ་ཛམྦྷ་ལ་ལ་བསྟོད་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ།
'ཁུ' ༡༡༦)
आर्यजम्भलस्तोत्रं नाम
རིན་ཆེན་རྡོ་རྗེ། (रत्नवज्रः)

༣༡༢ 4874- ནོར་བདག་གཙོ་འཁོར་ལྔའི་བསྟོད་པ་དབྱིག་གི་ཆར་འབེབས་
ཞེས་བྱ་བ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ། 'ཁུ' ༡༡༧)
वसुपत्युपाधिपञ्चकस्तोत्रं वसुमेघावेशो नाम
དཔལ་མར་མེ་མཛད་ཡེ་ཤེས། (दीपंकरश्रीज्ञानः)

༣༡༣ 4969- བསྟོད་པ་རིན་པོ་ཆེ་བདུན་པ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་འགྲེལ།
'ལུ' ༡༣༤-༡༣༥)
रत्नस्तोत्रसप्तकः
ཉི་མ། (सूर्यः)

༣༡༤ 4970- དཔལ་ཤ་བ་རིའི་བསྟོད་པ་རིན་པོ་ཆེ། (པེ་ཅིང་། རྒྱུད་
འགྲེལ། 'ལུ' ༡༣༥-༡༣༦)
श्रीशबरस्तोत्रत्नम्
ནགས་ཀྱི་རིན་ཆེན། (वनरत्नः)

༣༧༥ 5055- སེམས་ཅན་མགུ་བར་བྱ་བའི་ཚིགས་སུ་བཅད་པ།[༡] (པེ་ཅིང་། དབུ་མ། 'གི' ༡༥༠-༡༥༡)

सत्त्वाराधनगाथा

ཀླུ་སྒྲུབ། (नार्गाजुन:)

སརྦམངྒལཾ།

अनेन पुण्येन तु सर्वदर्शिता-
मवाप्य निर्जित्य च दोषविद्विषः।
जरा-रुजा-मृत्युमहोर्मिसंकुलात्
समुद्धरेयं भवसागराज्जगत्॥
(जातकमाला-श्लोक ५५ पृ० ५२ दरभङ्गा:)

བསོད་ནམས་འདི་ཡིས་ཐམས་ཅད་གཟིགས་པ་ཉིད།།

ཐོབ་ནས་ཉེས་པའི་དགྲ་རྣམས་ཕམ་བྱས་ཏེ།།

རྒ་ནད་འཆི་བའི་རླབས་ཆེན་འཁྲུགས་པ་ཡི།།

སྲིད་པའི་མཚོ་ལས་འགྲོ་བ་འདོན་པར་བགྱི།།

(སྐྱེས་རབས། སྡེ། བསྟན། 'ཧུ' ༣༩)

---

༡ བསྟོད་པ་འདི་གོང་གསལ་མདོ་ཕྱོགས་ཀྱི་བསྟོད་ཚོགས་ནང་གསལ་ཡང་ ༢༠༣ བྱས་པ་དེ་དང་ གཅིག་པ་ཡིན་ཡང་འགྱུར་མ་འདྲ་བའི་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་པའི་དགོས་དབང་ལ་བརྟེན་ནས་ ཁ་སྐོང་ནང་བཀོད་པར་མངོན་སྣང་ཞིང་། གོང་དུ་དེའི་མཚན་བྱང་ལ་ "སེམས་ཅན་མགུ་ བར་བྱ་བའི་བསྟོད་པ་" ཞེས་གསལ་ཡོད། བསྟོད་པ་དེ་ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག 'बौद्धस्तोत्रसंग्रह' ཞེས་པའི་ནང་སྤར་བསྐྲུན་ཞུས་ཡོད། གོང་གསལ་བསྟན་འགྱུར་ཁ་སྐོང་ ནང་ཡོད་བསྟོད་པ་རྣམས་ལས་འདི་ཁོ་ན་མདོ་ཕྱོགས་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ་ཡིན།

मोहस्यास्य परिक्षयाय च यतो दृष्टाः प्रतीत्यादय-
स्तत्त्वं तत् प्रतिपच्च सैव सुगतैः संकीर्तिता मध्यमा।
कायो धर्ममयो मुनेः स च यतः सा शून्यतेत्युच्यते
बुद्धानां हृदयं स चापि महती विद्योति संकीर्त्यते॥ ३॥

आचार्य चन्द्रकीर्तिकृतायाः प्रसन्नपदाया
अन्तिमांशभूता (मध्यमकशास्त्रस्तुतिः) पृ० १५३)

གང་ཕྱིར་རྟེན་འབྱུང་གཏི་མུག་དེ་ཟད་...

...བྱེད་པར་མཐོང་སྟེ་དེ་ནི་དེ་ཉིད་ཡིན།།

དེ་ཉིད་བདེ་བར་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས...

...དབུ་མའི་ལམ་དུ་ཡང་དག་བསྒྲགས་པར་འགྱུར།།

དེ་ནི་ཐུབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རང་བཞིན་སྐུར...

...འདོད་དེ་ནི་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད།།

སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཐུགས་ཡིན་དེ་ནི...

...རིགས་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཀྱང་བསྒྲགས།།

དབུ་མ་ཚིག་གསལ་གྱི་མཇུག་བྱང་གི་ཆ་ཤས།

(སྡེ། བསྟན། དབུ་མ། 'འ' ༡༩༩)

ཕྱོགས་གླང་གྲགས་པའི་རིགས་ལམ་ཟབ་མོ་ཡིས།།

ཕྱོགས་ལས་རྣམ་རྒྱལ་ཇ་གསང་ལྡིར་བ་ནི།།

ཕྱོགས་འཛིན་སྨོངས་པས་མཛོན་ལྷོམ་གྱིས་མཐོ་བའི།།

ཕྱོགས་སྤྱ་ཀུན་གྱི་སྙིང་རྩ་སློག་མར་གྲོས།།

(ཇེ་ཀུང་ཐང་གི་གསུང་། པོད་'ཛ'༥༠༧)

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་གཉིས་པ། द्वितीयं परिशिष्टम्

संस्कृत में प्राप्त बौद्ध स्तोत्रों की सूची

ལེགས་སྦྱར་སྐད་ཐོག་བཞུགས་པའི་ནང་པའི་བསྟོད་ཚོགས།

१. पाण्डुलिपियों में प्राप्त अप्रकाशित स्तोत्रों की सूची

སྔར་དུ་མ་ཐོན་ཞིང་ལག་བྲིས་ཡིག་སྙིང་ཐོག་ཡོད་པའི་བསྟོད་པའི་མཚན་བྱང་།

पाण्डुलिपियों और तत्सम्बन्धित अनेक सूचियों से प्राप्त स्तोत्रों की विस्तृत सूची यहाँ जो दी गयी है, वह दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग की शोधपत्रिका 'धी:' से संकलित की गयी है। इन पत्रिकाओं में ''दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों का परिचय'' और ''दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों की आधार सामग्री'' ये दो स्थायी स्तम्भ के रूप में प्रकाशित होते हैं। इन दोनों स्तम्भों में संक्षिप्त विवरणों के साथ अनेक स्तोत्रों का संकलन किया गया है। अत: इन दो में दिये गये स्तोत्रों का तुलनात्मक विश्लेषण के साथ यहाँ संग्रह करने का प्रयास किया गया है।

विशेषत: डॉ० ठाकुरसेन नेगी (शोध-अधिकारी) के द्वारा ''दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों की आधार सामग्री'' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित ग्रन्थ सूचियों को संगृहीत करके दो भागों में उनका संस्थान से प्रकाशन हुआ है, उन दोनों ग्रन्थों और 'धी:' पत्रिका के १५वें अंक में प्रकाशित स्तोत्र सूची को आधार बनाकर हमने अधिकांश स्तोत्रों की सूची तैयार की है। शेष स्तोत्र 'धी:' पत्रिका के ३०वें और ३१वें अंक से लिये गये हैं।

क्र०स०	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अंक	पृष्ठ
१.	अपराजितामहाप्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्		१९	८०
२.	अम्बुधा(यशोध)रास्तव:		१०	९०
३.	अभिषेकवज्रमहाकल्पस्तव:		१९	८०
४.	अभिषेकवज्रमहाकल्पस्तव:		,,	,,
५.	अरुणवरुणस्तोत्रम्		१०	९०

६.	अष्टमङ्गलगाथास्तोत्रम्	१०	९०
७.	अष्टमङ्गलाष्टकम् (नानास्तोत्रम्)	२९	८४
८.	अष्टमङ्गलस्तवः	१०	९०
९.	अष्टमङ्गलस्तवः	,,	,,
१०.	अष्टमहाविद्यास्तोत्रम्	१०	९२
११.	अष्टमहास्थानचैत्यवन्दनास्तोत्रम्	१०	९०
१२.	अष्टमातृकानवग्रहगणेशमहाकाल-महाभैरवीस्तोत्रम्	१०	९२
१३.	अष्टमातृकास्तुतिः	९	८२
१४.	अष्टमातृकास्तुतिः	१०	९२
१५.	अष्टमातृकास्तुतिः	,,	,,
१६.	अष्टमातृकास्तुतिः	,,	,,
१७.	अष्टमातृकास्तुतिः	,,	,,
१८.	अष्टमातृकास्तोत्रम्	,,	,,
१९.	अष्टलोकपालस्तोत्रम्	,,	,,
२०.	अष्टविधसत्त्वनामस्तोत्रम्	,,	,,
२१.	अष्टश्मशानस्तोत्रम्	,,	,,
२२.	अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता-एकविंशतिस्तोत्रम्	१०	९४
२३.	आदिद्वादशकस्तोत्रम् (मञ्जुश्रीः)	१०	९४
२४.	आदिबुद्धद्वादशस्तोत्रम्	२०	२५
२५.	आर्यतारा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	१०	९४
२६.	आर्यतारा-एकविंशतिस्तोत्रम्	,,	,,
२७.	आर्य-ताराबौद्धस्तोत्राणि	१०	९६
२८.	आर्यतारास्तोत्रम् (भिक्षुजिनरक्षितः)	१	५२
२९.	आर्यतारास्तोत्रम् (सर्वज्ञमित्रबालार्कः)	,,	,,
३०.	आर्यतारास्तोत्रम्	१०	९६
३१.	आर्यतारास्तोत्रम्	,,	,,
३२.	आर्यतारास्तोत्रम्	,,	,,

३३.	आर्यतारास्तोत्रम्		"	"
३४.	आर्य-पद्मपाणिलोकेश्वरस्तोत्रम्		"	"
३५.	आर्यस्तवः		"	"
३६.	आर्यसिद्धैकवीरसाधनसंग्रहः		१५	१७०
३७.	अनन्तनागराजस्तवः		१०	९६
३८.	आर्यावलोकितेश्वर-अनन्तनागराजस्तोत्रम्		"	"
३९.	आर्यावलोकितेश्वरकरुणास्तोत्रम् (वन्धवाचार्यः)		"	"
४०.	आर्यावलोकितेश्वरत्रिगुणात्मकस्तोत्रम् (जयप्रतापमल्लः)		१०	९८
४१.	आर्यावलोकितेश्वरमणिमालास्तोत्रम्		"	"
४२.	आर्यावलोकितेश्वररक्षकस्तवः		"	"
४३.	आर्यावलोकितेश्वररञ्जकास्तवः		"	"
४४.	आर्यावलोकितेश्वररत्नमालास्तोत्रम्		"	"
४५.	आर्यावलोकितेश्वररूपस्तोत्रम्		"	"
४६.	आर्यावलोकितेश्वरवन्दनास्तवः		१०	१००
४७.	आर्यावलोकितेश्वरवन्दनास्तोत्रम्		"	"
४८.	आर्यावलोकितेश्वरवेदनास्तोत्रम्		"	"
४९.	आर्यावलोकितेश्वरसप्ताक्षरस्तोत्रम्		"	"
५०.	आर्यावलोकितेश्वरस्तवः		"	"
५१.	आर्यावलोकितेश्वरस्तवराजः	(जयप्रतापमल्लदेवः)	२	४४
५२.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(चन्द्रिकान्ता भिक्षुणी)	२	४३
५३.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(यमराजः)	१०	१०२
५४.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(बलिराजः)	"	"
५५.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(महेश्वरः)	"	"
५६.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(उमादेवी)	"	"
५७.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(वासुकिनागः)	"	"
५८.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(अनन्तनागः)	१०	१०४
५९.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(चन्द्रकान्ता भिक्षुणी)	३१	५२
६०.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(वासुकिनागराजः)	"	"

६१.	आर्यावलोकितेश्वरस्तोत्रम्	(श्रीवीरकुशः)	,,	,,
६२.	आर्यावलोकितेश्वरस्वरूपस्तोत्रम्		१०	१०४
६३.	उग्रतारास्तुतिः	(गौतमः)	२	५१
६४.	उग्रतारास्तोत्रम्		१०	१०६
६५.	उग्रतारास्तोत्रम्		,,	,,
६६.	उग्रतारास्तोत्रम्		,,	,,
६७.	उग्रतारास्तोत्रशतकम्		१०	१०४
६८.	उग्रतारास्नानस्तोत्रम्		१०	१०६
६९.	उग्रतारा(ही?)स्तवः		,,	,,
७०.	उमामहेशकृतस्तवः		,,	,,
७१.	एकजटाध्यानस्तोत्रम्		१०	१०८
७२.	एकजटिभट्टारिकानामस्तोत्रम्		१०	१०६
७३.	एकजटिस्तोत्रम्		,,	,,
७४.	कथास्तोत्रम्		१०	१०८
७५.	कमलाकरसर्वतथागतस्तुतिः		,,	,,
७६.	करवीरचण्डमहारोषणस्तोत्रम्		,,	,,
७७.	करुणामयस्तोत्रम्		,,	,,
७८.	कल्पान्तिकस्तोत्रम्		,,	,,
७९.	कल्याणत्रिंशिकास्तोत्रम्		१०	११०
८०.	कल्याणपञ्चविंशतिकास्तुतिः		१८	५४
८१.	कायू(यो)त्तरस्तोत्रम्		१०	११०
८२.	कालिकास्तवः		,,	,,
८३.	कालीस्तोत्रम्		,,	,,
८४.	कुलिशेश्वरस्तोत्रम्		,,	,,
८५.	खसर्पणस्तोत्रम्		२१	६६
८६.	गणपतिस्तोत्रम्		१०	११२
८७.	गणपतिहृदयस्तोत्रम्		,,	,,
८८.	गीतस्तोत्रादिसंग्रहः		,,	,,

२२९. बुद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२३०. बुद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२३१. बुद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२३२. बुधतिस्तोत्रम्		११	१०२
२३३. बोधिसत्त्वषोडशनामस्तोत्रम्		११	८४
२३४. बौद्धस्तवः		११	८०
२३५. बौद्धस्तुतिसंग्रहः		,,	,,
२३६. बौद्धस्तोत्रम्		११	८२
२३७. बौद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२३८. बौद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२३९. बौद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२४०. बौद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२४१. बौद्धस्तोत्रम्		,,	,,
२४२. बौद्धस्तोत्रप्रत्यङ्गिरा		,,	,,
२४३. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० २००)	,,	,,
२४४. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० १००)	,,	,,
२४५. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० ५१)	,,	,,
२४६. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० ७९)	,,	,,
२४७. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० ५९)	,,	,,
२४८. बौद्धस्तोत्रसंग्रहः	(प० सं० ४६)	,,	,,
२४९. भगवतीपञ्चरक्षास्तुतिः		३१	६२
२५०. भगवतीहारीतीभट्टारिकास्तुतिः		११	८४
२५१. भद्रकल्पावदानोद्धृतदण्डपाणिकृत-नागार्जुनस्तवः		,,	,,
२५२. भद्रचरीस्तोत्रम्		,,	,,
२५३. भवरत्नाद्विनिर्गत-श्रीहारीत्या बालकरक्षाकरस्तोत्रम्		,,	,,
२५४. भीमराजस्तुतिः		,,	,,
२५५. भीमराजस्तोत्रम्		,,	,,
२५६. भीमराजेश्वरस्तोत्रम्		११	८६

३६९.	श्रीलोकेश्वरस्तोत्रम्		,,	,,
३७०.	षडक्षरस्तवः		११	१०८
३७१.	षड्गतिस्तोत्रम्		,,	,,
३७२.	षड्भुजमहाकालसाधनस्तोत्रम्		,,	,,
३७३.	षोडशयोगिनीस्तवः		,,	,,
३७४.	सप्तबुद्धस्तवः		११	११०
३७५.	सप्ताक्षरस्तोत्रम्	(लोकनाथभट्टारकः)	,,	,,
३७६.	समन्तभद्रस्तोत्रम्	(कृत्तिकानागः)	१	५४
३७७.	सरस्वतीशतनामस्तोत्रम्		११	११०
३७८.	सरस्वतीस्तवः		,,	,,
३७९.	सरस्वतीस्तोत्रम्	(कौण्डिन्यब्राह्मणः) सुवर्णप्रभः	१	५६
३८०.	सरस्वतीस्तोत्रम्		११	५६
३८१.	सरस्वतीस्तोत्रम्		,,	,,
३८२.	सरस्वतीस्तोत्रम्		,,	,,
३८३.	सरस्वतीस्तोत्रम्		,,	,,
३८४.	सरस्वतीस्तोत्रम्		,,	,,
३८५.	सर्वज्ञानोत्तरतन्त्रम्		१३	८२
३८६.	सर्वनीवरणविष्कम्भिकस्तोत्रम्	(ओडियानाचार्यः)	१	५४
३८७.	संकटादेवीस्तवराजः		११	१०८
३८८.	संघरत्नस्तोत्रम्		११	११२
३८९.	साहस्रप्रमर्दिनीस्तोत्रम्		,,	,,
३९०.	सूर्यद्वादशनामधारणीस्तोत्रम्		,,	,,
३९१.	सूर्यस्तोत्रम्		,,	,,
३९२.	स्रग्धरास्तोत्रम्		११	११४
३९३.	स्वकरास्तवः		११	११६
३९४.	स्वयम्भूचैत्यस्तोत्रम्		,,	,,
३९५.	स्वयम्भूधर्मधातुचैत्यवन्दनास्तोत्रम्		,,	,,
३९६.	स्वयम्भूनाथस्तवः		,,	,,

३९७. स्वयम्भूबुद्धगीतस्तोत्रम्		,,	,,
३९८. स्वयम्भूभट्टारकश्रीविश्वबुद्धकृतस्तोत्रम्		,,	,,
३९९. स्वयम्भूभट्टारकस्तोत्रम्	(जयप्रतापमल्लदेवः)	,,	,,
४००. स्वयम्भूस्तवः	(चतुर्महाराजानः)	,,	,,
४०१. स्वयम्भूस्तवः	(शाक्यसिंहः)	१	५०
४०२. स्वयम्भूस्तुतिः	(शिखी)	,,	,,
४०३. स्वयम्भूस्तुतिः	(विश्वभुवः)	,,	,,
४०४. स्वस्तिवाक्यमङ्गलस्तोत्रम्		११	११८
४०५. हरसिद्धिस्तोत्रम्		,,	,,
४०६. हारतीस्तुतिः		,,	,,
४०७. हारतीस्तोत्रम्		,,	,,
४०८. हारतीस्तोत्रम्		,,	,,
४०९. हेरुकचतुर्विंशतिस्तोत्रम्		,,	,,
४१०. हेरुकयोगाम्बरकालचक्रहेवज्रस्तोत्रम्		,,	,,
४११. हेरुकविशुद्धिस्तोत्रम्		,,	,,
४१२. हेरुकस्तुतिः	(कण्हपादः)	,,	,,
४१३. हेवज्रयोगिनीस्तुतिः		,,	,,
४१४. हेवज्रस्तुतिः	(समाधिवज्रः)	,,	,,
४१५. हेवज्रस्तोत्रम्		,,	,,

(२) प्रकाशित ग्रन्थों में प्राप्त स्तोत्रों की सूची

སྤར་དུ་ཐོན་པའི་བསྟོད་ཚོགས་ཀྱི་མཚན་བྱང་།

१. बौद्ध स्तोत्र संग्रह (वाराणसी से प्रकाशित)[१]

यह स्तोत्र संग्रह दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के कार्यकारी निदेशक पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय द्वारा १९९४ में सम्पादित करके प्रकाशित किया गया

१. मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी-१९९४ ।

है। जिसमें बौद्ध-धर्म से सम्बन्धित १०८ स्तोत्रों का संकलन किया गया है। इसमें अनेक स्तोत्र ऐसे हैं, जो बहुत महत्त्वपूर्ण और सुप्रसिद्ध हैं। इसमें दिये गये आधे से अधिक स्तोत्र तन्त्र से सम्बन्धित और भोट-भाषा में अननूदित प्रतीत होते हैं।

२. **बौद्धस्तोत्रसंग्रह** (नेपाल से प्रकाशित)

यह स्तोत्र संग्रह एक पूजापाठ के रूप में नेपाल से प्रकाशित है। वैसे तो इस ग्रन्थ की विषय सूची में ४४ प्रकार के विषय हैं। इसमें धारणी, प्रणिधान आदि अन्य विषयों से सम्बद्ध ही अधिक हैं, उसमें स्तोत्रों की संख्या अधिक नहीं है और इनमें भी कुछ स्तोत्र ऐसे भी हैं, जो कि बौद्धेतर मतों से सम्बद्ध प्रतीत होते हैं, अतः वे सब यहाँ नहीं दिये गये हैं।

३. धी: पत्रिकाओं में प्रकाशित स्तोत्रों की सूची (अंक १-३१)

अब तक प्रकाशित 'धी:' पत्रिका के १-३१ अंक तक ५१ बौद्ध स्तोत्रों का संकलन किया गया है। प्रत्येक अंक में दो स्तोत्र दिये हुए हैं। २० से २६ अंक तक महाकवि आचार्य मातृचेट द्वारा विरचित वर्णार्हवर्णे बुद्धस्तोत्र के १२ परिच्छेदों को क्रमश: दिया गया है। 'धी:' पत्रिका में जितने भी स्तोत्र दिये गये हैं, वे सब दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के नियमानुसार जहाँ तक जानकारी है, उसके अनुसार अन्य में अप्रकाशित एवं दुर्लभ आधार सामग्री (पाण्डुलिपियों) से खोजकर प्रकाशित किये गये हैं। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक स्तोत्र पं० जनार्दन पाण्डेय द्वारा १९९४ ई० में संकलित एवं प्रकाशित बौद्ध स्तोत्र संग्रह में भी उपलब्ध होते हैं।

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	अंक	पृष्ठ
१. श्रीवज्रयोगिनीप्रणामैकविंशिका		१	१
२. श्रीवज्रविलासिनीस्तोत्रम्		१	४

४. प्रकीर्ण स्तोत्र सूची

•

(ཀ) ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་གསུམ་པ།

(क) तृतीयं परिशिष्टम्

སློབ་དཔོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

༄༅། །རྒྱ་གར་སྐད་དུ། སྟུཏྱཏཱིཏསྟཝཿ། བོད་སྐད་དུ། བསྟོད་པ་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ། འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཟླ་མེད་ལམ་ལས་གཤེགས་པ་ཡི། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བསྟོད་འདས་ཀྱང་། །གུས་ཤིང་སྤྲོ་བའི་སེམས་ཀྱིས་ནི། །བདག་གིས་བསྟོད་འདས་བསྟོད་པར་བགྱི།༡[༡] བདག་དང་གཞན་དང་གཉིས་ཀ་ལས། །རྣམ་པར་དབེན་པའི་དངོས་གཟིགས་ཀྱང་། །ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་སེམས་ཅན་ལས། །མ་ལོག་པ་ནི་ངོ་མཚར་ལགས།༢། ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་སྐྱེས་ཤིང་། །ཚིག་ལས་འདས་པའི་སྤྱོད་ཡུལ་གྱི། །ཆོས་རྣམས་ཁྱོད་ཀྱིས་གང་བསྟན་པ། །དེ་ནི་ཁྱོད་ཀྱི་ངོ་མཚར་ལགས།༣། ཕུང་པོ་ཁམས་དང་སྐྱེ་མཆེད་རྣམས། །ཁྱོད་ཀྱིས་བསྒྲགས་པར་མཛད་ལགས་ཀྱང་། །དེ་དག་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི། །སླད་ཀྱིས་ཀྱང་ནི་བཟློག་པར་མཛད།༤། གང་ཞིག་རྐྱེན་ལས་དེ་མ་མཆིས། །དངོས་རྣམས་རྐྱེན་ལས་ཇི་ལྟར་སྐྱེ། །དེ་སྐད་མཁས་པ་ཁྱོད་གསུངས་པས། །གྲོས་པ་རྣམས་ནི་བཅད་པ་ལགས།༥། གང་དག་ཚོགས་ལས་རབ་གྲུབ་ན། །ཚོགས་པ་རྒྱུ

[༡] པེ། བགྱིད།

ལས་འབྱུང་མཐོང་བ། །དེ་དག་མཐའ་གཉིས་བརྟེན་པར་ནི། །ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་གཟིགས་པ་ལགས།༦ དངོས་པོ་རྐྱེན་ལ་བརྟེན་གྲུབ་པར། །ཁྱོད་ནི་ཤིན་ཏུ་བཞེད་པ་ལགས། །དེ་ལྟར་བྱས་པའི་སྐྱོན་ལགས་པར། །འདི་ལྟར་སྟོན་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་གཟིགས།༧ གང་ནས་ཀྱང་ནི་མཆི་མ་ལགས། །གང་དུ་ཡང་ནི་མཆིས་མ་ལགས། །དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་གཟུགས་བརྙན་དང་། །མཚུངས་པར་ཁྱོད་ནི་བཞེད་པ་ལགས།༨ ལྟ་བ་ཐམས་ཅད་སྤང་བའི་ཕྱིར། །མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་སྟོང་པ་གསུངས། །དེ་ཡང་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པ་སྟེ། །དངོས་སུ་མགོན་པོ་ཁྱོད་མི་བཞེད།༩ སྟོང་དང་མི་སྟོང་བཞེད་མ་ལགས། །གཉིས་ཀར་ཁྱོད་དགྱེས་མ་ལགས་ཏེ། །དེ་ལ་རྩོད་པ་མ་མཆིས་པར། །ཁྱོད་ཀྱིས་[1]གསུང་ཆེན་སྒྲོད་པ་ལགས།༡༠ གཞན་མིན་དངོས་པོ་ཡོད་མིན་ཞིང་། །གཞན་མིན་གཉིས་མིན་ཞེས་ཀྱང་གསུངས། །གཅིག་དང་གཞན་ཉིད་སྤངས་པས་ན། །ཇི་ལྟ་བུར་ཡང་དངོས་མ་མཆིས།༡༡ གལ་ཏེ་སྐྱེ་སོགས་གསུམ་མཆིས་ན། །འདུས་བྱས་མཚན་ཉིད་མཆིས་པར་འགྱུར། །དེ་དག་གི་ཡང་སྐྱེ་ལ་སོགས། །གསུམ་པ་ཐ་དད་འགྱུར་བ་ལགས།༡༢ སྐྱེ་སོགས་གསུམ་པོ་སོ་སོ་ནི། །འདུས་བྱས་ལས་ལ་ནུས་མ་ལགས། །གཅིག་ལ་གཅིག་ཏུ་འདུས་པ་རྣམས། །ཕྲད་པར་ཡང་ནི་མཆིས་མ་ལགས།༡༣ དེ་ལྟར་མཚན་གཞི་མཚན་མ་མཆིས། །དེ་ལྟར་གྲུབ་པ་མ་ལགས་པས། །འདུས་བྱས་གྲུབ་པ་མ་ལགས་ན། །འདུས་མ་བྱས་ལྟ་ག་ལ་གྲུབ།༡༤ སྨྲ་བའི་སེངྒེས་དེ་སྐད་དུ། །ཁྱོད་ཉིད་གསུངས་ན་སེངྒེ་ཡིས། །

---

[1] གསེར་བྲིས། པ། - ཀྱི།

འབིགས་བྱེད་གླང་ཆེན་སྣ་རྣམས་ཀྱི། །རྒྱུགས་པ་བསལ་བར་གྱུར་པ་བཞིན།༡༥
ལམ་ཞུགས་གནོད་པ་སྣ་ཚོགས་དང་། །ལྟ་བའི་ལམ་ངན་མི་བསྙེན་[1]ལྟར། །ཁྱོད་
ལ་བརྟེན་ནས་ཡོད་པ་དང་། །མེད་པ་ཉིད་ལའང་བརྟེན་[2]མ་ལགས།༡༦། ཁྱོད་
ཀྱིས་དགོངས་ནས་གསུངས་པ་དང་། །གང་དག་གིས་ནི་དེ་ལྟར་རྟོགས། །དེ་
དག་ཁྱོད་ཀྱིས་དགོངས་གསུངས་པ། །ཕྱིར་ཞིང་རྟོགས་པར་བགྱི་མི་འཚལ།༡༧།
དངོས་ཀུན་སྟོང་ཉིད་འདས་མཚུངས་པར། །དེ་ལྟར་གང་གིས་རྣམ་ཤེས་པ། །དེ་
ཆེ་དེ་ལ་ཇི་ལྟ་བུར། །ངར་འཛིན་ཀུན་ཏུ་འབྱུང་བར་འགྱུར།༡༨། དེ་ལྟར་ཡང་
དག་རིག་པའི་མཆོག །དེ་ཉིད་རིག་པ་ཁྱོད་བསྟོད་པའི། །བདག་གི་[3]བསོད་
ནམས་གང་ཡིན་དེས། །འཇིག་རྟེན་ཡང་དག་རིག་མཆོག་ཤོག༡༩། བསྟོད་པ་
ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ་སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཞལ་སྔ་ནས་
མཛད་པ་རྫོགས་སོ། །

---

[1] སྡེ། ཅོ། - མི་རྟེན།

[2] གསེར་བྲིས། - བསྙེན། སྡེ། ཅོ། - རྟེན།

[3] སྡེ། ཅོ། - བདག་གིས།

(ख) तृतीयं परिशिष्टम्

[श्री प्रभुभाई पटेल-महोदयेन पुनरुद्धारितः]

स्तुत्यतीतस्तवः

अनुत्तरमार्गगतं स्तुत्यतीतं तथागतम् ।
भक्त्योत्सुकेन चित्तेन स्तुत्यतीतं स्तवीम्यहम् ।। १ ।।

स्वपरोभयतो भावान् विविक्तानपि पश्यतः ।
अद्भुतं तव सत्त्वेभ्यः करुणा न निवर्तते ।। २ ।।

अनुत्पन्नाः स्वभावेन वाक्पथातीतगोचराः ।
यत्त्वया देशिता धर्मास्तदेतदद्भुतं तव ।। ३ ।।

स्कन्धायतनधातूनामुद्देशेऽपि कृते त्वया ।
तेषां परिग्रहः पश्चात्त्वयेह विनिवर्तितः ।। ४ ।।

नास्ति तत्प्रत्ययाद्यत्स्याद् भावाः स्युः प्रत्ययात्कथम्।
प्रपञ्चोछेद एवं ते प्राज्ञस्य वचनाद्भवेत्[1] ।। ५ ।।

उत्पादं ये तु पश्यन्ति सामग्र्याद्धेतुतोऽथवा ।
अन्तद्वयाश्रितास्ते हि त्वया समवलोकिताः[2] ।। ६ ।।

भावः प्रत्ययमाश्रित्य सिध्यतीत्यभिमन्यसे ।
एवं कृतकतादोषः शास्तरित्थं त्वमीक्षसे[3] ।। ७ ।।

---

१. भोटभाषानुसारम् अयं पाठः समीचीनः प्रतिभाति—
हेतुजातं न जातं तद् वस्तु तत् प्रत्ययात् कथम् ।
प्रपञ्चोच्छेद एवं ते धीमतो वचनाद् भवेत् ।।५।।

२. भावान् पश्यन्ति सामग्र्यात् सामग्रीं हेतुसम्भवाम् ।
अन्तद्वयाश्रितास्ते हि त्वया समवलोकिताः ।।६।।

३. भावः प्रत्ययमाश्रित्य सिध्यतीत्यभिमन्यसे ।
कारकेण कृते दोषः शास्त्रा त्वया समीक्ष्यते ।।७।।

कुतश्चिन्नैव भवति न कुत्रापि च विद्यते ।
सर्वे भावास्त्वया तस्मात्प्रतिबिम्बसमा मताः ।। ८ ।।

सर्वदृष्टिप्रहाणाय शून्यं नाथ त्वयोच्यते ।
एतदपि समारोप्य भावो नाथ न ते मतः[१] ।। ९ ।।

न शून्यं नापि चाशून्यं न चोभयं मतं तव ।
विवादस्तत्र न प्राप्त उक्तस्त्वया महानयः[२] ।। १० ।।

भावो न विद्यतेऽनन्यो नान्योऽन्तभय उच्यते ।
विहायैकत्वमान्यत्वं न कीदृगपि विद्यते[३] ।। ११ ।।

उत्पादादित्रये प्राप्ते प्राप्तं संस्कृतलक्षणम्[४] ।
तेषामपि पुनर्भिन्नमुत्पादादित्रयं भवेत् ।। १२ ।।

उत्पादाद्यास्त्रयो व्यस्ता नालं संस्कृतकर्मणि ।
एकैकस्मिन् समस्तानामपि योगो न गम्यते ।। १३ ।।

लक्ष्यलक्षणयोरेवं सद्भावो नैव सिध्यति ।
असिद्धे संस्कृते सिध्येत् क्वासंस्कृतस्य दर्शनम्[५] ।। १४ ।।

वादिसिंह तवैवैवं वादसिंहेन [सर्वतः] ।
वादिविन्ध्यमहानागगर्वापनयनं कृतम् ।। १५ ।।

नैति मार्गागतो दृष्टिकुमार्गं विविधाशिवम् ।
त्वामाश्रित्य तथा भावोऽभावश्चापि निराश्रयः ।। १६ ।।

---

१. आरोपितं हि तन्नाथ वस्तु नैव च ते मतम् ।। ९ ।।
२. विवादस्तत्र नैवास्तीत्युक्तं त्वया महावचः ।। १० ।।
३. अन्यो भावो न चानन्यो ह्यभयो नापि कथ्यते ।
विहायैकत्वमन्यत्वं कीदृगुँ वस्त्वपि नो भवेत् ।। ११ ।।
४. उत्पादादित्रयं चेत् स्याद् युक्तं संस्कृतलक्षणम् ।
५. यदा न संस्कृतं सिद्धं सिद्धिः क्वासंस्कृतस्य तु ।। १४ ।।

ये तथैवावगच्छन्ति सन्धयावाक्यानि ते ततः[1] ।
ज्ञानं न खलु तैः सन्धावाक्येभ्यो बहिरिष्यते[2] ।। १७।।

निर्वाणसदृशा भावा इति येनावगम्यते ।
आत्मग्राहस्तदा तस्य कथं नु खलु सम्भवेत् ।। १८।।

एवं सम्यविग्वदां श्रेष्ठ तत्त्वविच्छ्रावकस्य मे[3] ।
यत्पुण्यं तेन लोकोऽयं भूयात्तत्त्वविदुत्तमः ।। १९।।

।। महाचार्यार्यनागार्जुनपादेन प्रणीतः ।।

स्तुत्यतीतस्तवः समाप्तः ।।

•

---

१. ....सन्ध्यावाक्यानि ते ततः ।। १७।।
२. ....सन्ध्यावक्यानां बहिराप्यते ।। १७।।
३. ....तत्त्ववित्स्तावकस्य मे ।

ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་བཞི་པ།

चतुर्थं परिशिष्टम्

(ཀ) (སློབ་དཔོན་གྱི་སྐུ་ཚེའི་རྣམ་ཐར་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ།)

आचार्य की जीवनी से सम्बद्ध स्तोत्र

ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་ལ་བསྟོད་པ་མཆོག་ཏུ་དད་པའི་སྒྲ་དབྱངས།

[རྒྱལ་བ་དགེ་འདུན་རྒྱ་མཚོས་མཛད་པ།]

༄༅། །མགོན་པོ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཞབས་ཀྱི་པདྨ་ལ་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཉི་མའི་གཉེན་གྱི་ལྡུགས་ཡངས་པདྨོའི་མཚོར། ལུང་བསྟན་བྱུང་བའི་དར་དིར་འབུམ་འཁྲིགས་པས། །དྲི་ཟའི་འཕང་འགྲོ་ལྷ་བུར་ཁྱོད་བསྔགས་ན། །བདག་ལྟས་ཅུང་ཞིག་བསྟོད་ལ་ཅི་ཞིག་བལྟོས། །འོན་ཀྱང་རྙེད་དཀའི་ལུས་འདི་རོ་འཛིན་བཅས། །སྙིང་པོར་བགྱི་སླད་མགོན་ཁྱོད་ཡོན་ཏན་གྱི། །རྒྱ་མཚོ་ཆེ་ལས་སྤོབས་པའི་ཛ་ཡབ་རྩེས། །ཕྲ་མོའི་ཆུ་ཐིགས་སླངས་ཏེ་གར་བགྱིད་དོ། །མཐའ་དབུས་ཀུན་བྲལ་ཟབ་ཡངས་ཡིད་བཞིན་མཚོར། །ལྷ་ཟེར་ཕྲེང་བས་སྨུག་པོའི་མུན་གནག་འཇོམས། །ས་གསུམ་རིན་ཆེན་གཅིག་གྱུར་གདེངས་ཀ་ཅན། །དཔལ་ལྡན་ཀླུ་ཡི་དབང་པོར་ཕྱག་བགྱིད་དོ། །གཉིས་མེད་གསུང་བའི་སྒྲོ་ལྡན་གཅིག་གིས་ཀྱང་། །སྨོངས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་སུམ་བརྩེགས་མཐར་མཛད་པས། །སྲིད་སྒྲུབ་ལྡ་པའི་མཐའ་ལ་བསྐྱིགས་གྱུར་ཅིང་། །མདའ་ལྡ་པས་ཀྱང་ལུས་མེད་གནས་སྐབས་བསྙེན། །མཁར་ཉལ་སར་གཤེགས་བེ་ཏའི་གྲོང་ཁྱེར་དུ། །སྨུགས་འཛིན་ལ་འཁྲུ་འགྱུར་བའི་བང་མཛོད་ཅན། །རིག་བྱེད་གཏེར་

གྱུར་གཉིས་སྐྱེས་དབང་པོ་ཡི། །སྲས་སུ་ལེགས་པར་འཁྲུངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་ཚེ་མཚན་མཁན་དག་ལ་ལེགས་བསྟན་པས། །མཚན་བཟང་མན་ཏྲ་ར་ཡི་ཕྲེང་རྒྱས་ཀྱང་། །ཚེ་ཡི་ཚད་ནི་ཞག་བདུན་གཉིས་སྐྱེས་དང་། །དགེ་སློང་བརྒྱ་ལ་ཆོས་སྟོན་གསོལ་བ་ན། །ལོ་བདུན་འཚོ་ཞེས་སླས་ལས་ཕ་མ་ཡིས། །ཉི་མའི་བུ་ཡི་མཆེ་བའི་ཕྲག་ཏུ་ནི། །ཞུགས་པ་ལྷ་བར་མ་བཟོད་གྲོགས་དང་བཅས། །གླིངས་ལས་ནཱ་ལེན་དྲར་གཤེགས་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །དེར་ནི་ལྔ་བརྒྱའི་གཙུག་ནོར་འོད་ཟེར་དང་། རབ་མཛེས་ཐུན་མཚམས་སུ་ཤར་ཟླ་འོད་བཞིན། མདའ་བསྟན་ཞབས་སེན་མཆོག་གི་དངོས་གྲུབ་ནི། །རྣམ་པ་དང་བཅས་ཁྱོད་ཀྱི་སྤྱི་བོར་ལྷུང་། །ངུར་སྨིག་རྒྱལ་མཚན་གྱིས་ཀླུབས་ཚེ་དཔག་མེད། འཆི་བདག་འཇོམས་པའི་དཀྱིལ་འཁོར་དུ་དབང་བསྐུར། །དུས་ཀྱི་བེ་ཅོན་རི་མོའི་གནས་བཀོད་དེ། །འཆི་བདག་གཡུལ་ལས་རྒྱལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྒྲ་གཅན་འཛིན་ལས་དགེ་སློང་དངོས་པོ་ནི། །ལེགས་བཞེས་དཔལ་ལྡན་ཐུབ་པའི་མཚན་འཆང་བ། །ཐུན་མཚམས་སྤྲིན་ཆགས་འཆི་མེད་རི་བོ་ཡི། །མཛེས་པ་ཕམ་པར་མཛད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དཔལ་སྟུག་དབྱར་སྐྱེས་མངལ་ལས་ལེགས་ཐོན་པའི།། མཐའ་མེད་མདོ་དང་རྒྱུད་སྡེའི་ཆུ་ཀླུང་དག །རྣམ་དཔྱོད་ཏུབ་ཐེངས་གཅིག་གིས་ཞལ་གྱི་སྣོར། །ལེགས་དྲངས་མཁྱེན་པའི་གཏེར་གྱུར་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །རྒྱལ་དང་རྒྱལ་སྲས་སེམས་མའི་ཚོགས་རྣམས་དང་། ཕྱོགས་ཀྱི་མགོགས་འགྲོ་མ་ལུས་ལྷན་ཅིག་ཏུ། །མི་བསྐྱོད་ཞིང་དུ་ཐིམ་ཚེ་མཁའ་ཁྱབ་ཏུ། །སྒྲུ་འཕྲུལ་དྲ་བའི་རོལ་གར་འཛིན་ལ་འདུད། །མགོན་ཁྱོད་དབང་བཅུ་བརྙེས་ཀྱང་གསེར་

འགྱུར་གྱི། །རྩེ་ཡི་ཐོལ་ལས་ཟླ་བའི་སྤྲིན་ཟླ་བཞིན། །འདོད་དགུའི་ཆར་ཕབ་དགེ་འདུན་འདུས་པའི་སྡེ། །ཕོངས་པའི་དགྲ་ལས་སྐྱོང་མཛད་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །ཀུན་ཏུ་གཏོང་བ་ཡངས་པའི་ཕྱག་བརྐྱངས་ནས། །རྫོགས་ལྡན་བཞིན་དུ་འགྲོ་ཀུན་ཚིམ་མཛད་པས། །སྐྲིངས་པས་སྟོབས་ལྡན་ས་འོག་ཏུ་ཞུགས་ཤིང་། །ཟླ་བའི་མ་མ་ཀུན་ཏུ་འདར་བ་སྐམ། །གདེངས་ཅན་འདྲེན་པས་རང་གི་ཕོ་བྲང་དུ། །སྤྲིན་དྲངས་ནོར་བུའི་ཁྲི་ལ་ཞབས་བཀོད་དེ། །སྐལ་ལྡན་ལྷ་འགྲོའི་ཚོགས་རྣམས་མ་ལུས་པ། །ཐེག་མཆོག་བདུད་རྩིས་ཚིམ་མཛད་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །རྒྱལ་བ་ཀུན་ཡུམ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་པ་དང་། །རྡོ་རྗེའི་འཇོམས་པ་མང་པོ་ལེགས་བསྒམས་ཏེ། །འཛམ་གླིང་མཆོད་རྟེན་བྱེ་བས་མཛེས་བྱས་ཤིང་།། བགྲང་ཡས་མཁས་ལ་ཆོས་སྟོན་མཛད་ཕྱག་འཚལ། །རྒྱལ་བའི་གསུང་ལ་དྲང་ངེས་ལེགས་ཕྱེ་ཞིང་། །ཐུབ་པའི་ཆོས་ཚུལ་ཀུན་གྱི་བླ་མ་མཆོག །དཔལ་ལྡན་འདུས་པ་ལ་སོགས་བཀའ་ཀུན་གྱི། །དགོངས་པ་རང་དབང་འགྲེལ་མཛད་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །མདོ་རྒྱུད་དགོངས་པ་འགྲེལ་བའི་བསྟན་བཅོས་དང་། །གསོ་རིག་ལ་སོགས་ཐུན་མོང་རིག་གནས་དང་། །འཇིག་རྟེན་ལུགས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་མང་མཛད་ནས། །ས་གསུམ་འགྲོ་འདི་སྣང་མཛད་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །རྫུ་འཕྲུལ་རོལ་པས་སྒྲ་མི་སྙན་དུའང་གཤེགས། །གཞོན་ནུ་བདེ་སྤྱོད་རྒྱལ་པོར་ལུང་བསྟན་ཅིང་། །བདེ་སོགས་བདག་པོའི་འཁོར་པས་རྣམ་རྩེན་ཏེ། །རྩུལ་བྲལ་བཀུར་སྟི་ཁྱོད་ཞབས་རིང་དུ་མཆོད། །དྲུག་གིས་བཅིངས་པའི་བརྒྱ་ཕྲག་ལོ་ཚིགས་སུ། །བསྟན་པ་བསྐྱངས་ནས་ཐུགས་རྗེས་སློང་བ་ལ། །རང་གི་དབུ་སྐུལ་

བདེ་བ་ཅན་གྱི་ཞིང་། །གཤེགས་པའི་ཚུལ་བསྟན་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །རྣམ་ཀུན་མཆོག་ལྡན་འཇའ་ལུས་རྡོ་རྗེའི་སྐུ། །གྲིབ་བྲལ་འོད་གསལ་དབྱིངས་དང་རོ་གཅིག་པ། །ཁ་སྦྱོར་བདུན་ལྡན་གོ་འཕང་མངོན་མཛད་དེ། །ཁམས་གསུམ་འགྲོ་བའི་སྐྱབས་གྱུར་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ། །དེ་ལྟར་མགོན་ཁྱོད་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་ལས། །ཆུ་ཐིགས་ཙམ་ཞིག་བརྗོད་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱིས། །བརྒྱ་ཕྲག་དཀའ་བ་སྤྱད་ལ་མ་ལྟོས་པར། །ཚེ་འདི་ཉིད་ལ་སྐུ་གསུམ་ཐོབ་གྱུར་ཅིག །མདོ་དང་སྔགས་ཀྱི་རྒྱལ་བའི་ཆོས་ཚུལ་ཀུན། །མགོན་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་བཞིན་ལེགས་བཀྲལ་བའི། །དགོངས་དོན་བདེ་བླག་ཉིད་དུ་རྟོགས་གྱུར་ཏེ། །ཐུབ་བསྟན་ཕྱོགས་དུས་ཀུན་ཏུ་རྒྱས་བྱེད་ཤོག །

ཅེས་དཔལ་མགོན་འཕགས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ལ་རྣམ་ཐར་དང་མཐུན་པར་ཅུང་ཟད་བསྟོད་པ་འདི་ནི་སྟེ་སྣོད་འཛིན་པ་དགེ་འདུན་ལྷུན་གྲུབ་ཀྱིས་ཀུང་ཉེ་བར་བསྐུལ་ཅིང་། ཁྱད་པར་རང་གི་དད་པས་ཀུན་ནས་བསླངས་ཏེ་བཙུན་པ་དགེ་འདུན་རྒྱ་མཚོའི་དཔལ་གྱིས་ཆོས་འཁོར་རྒྱལ་བཀྲ་ཤིས་ལྷུན་གྱིས་གྲུབ་པའི་གཙུག་ལག་ཁང་དུ་སྦྱར་བའོ།། །།

(ཁ) (སློབ་དཔོན་གྱིས་ཟབ་མོའི་ལྟ་བ་གསུངས་ཚུལ་དང་འབྲེལ་བའི་བསྟོད་པ།)

आचार्य का गम्भीरदर्शन प्रतिपादक स्तोत्र

མགོན་པོ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་ལ་བསྟོད་པ་དབུ་མའི་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

[རྗེ་གུང་ཐང་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མེས་མཛད་པ།]

རྒྱལ་བས་ཆོས་ཚུལ་གང་བསྟན་པ། །འགྲོ་བ་མུན་པས་ཁེབས་པ་ལ།། འོད་གསལ་བ་ཡི་ཕྱིར་ཡིན་པས། །སྒྲོན་མ་ཀླུ་སྒྲུབ་རྒྱལ་གྱུར་ཅིག །དམིགས་ལས་དམིགས་པ་རྣམ་མང་བས། །འགྲོ་བ་དུབ་པར་གྱུར་བ་རྣམས། །དམིགས་པ་མེད་པ་ཞི་བའི་བདེར། །འཁྲིད་པ་ཁྱོད་ནི་དེད་དཔོན་ལགས། །ཤེས་རབ་ཕར་ཕྱིན་ཤེས་རབ་བསླབ། །ཤེས་རབ་མདོ་སྡེའི་མཆོག་གྱུར་ཕྱིར། །ཤེས་རབ་གཞུང་མཆོག་མཛད་པ་ཁྱོད། །བསྟན་འཛིན་ཀུན་ལས་བླ་མར་གྱུར། །རིག་གནས་ཤེས་བྱར་སྲིད་ཀུན་ལ། །མུན་སངས་བློ་གྲོས་རབ་རྒྱས་པས། །སངས་རྒྱས་གཉིས་པ་ཀླུ་སྒྲུབ་ཅེས། །དངོས་པོར་སྨྲ་བ་རྣམས་ཀྱང་འདུད། །མ་རིག་འགག་པས་ཡན་ལག་ཀུན། །འགག་པར་མདོ་སྡེ་ཀུན་གསུངས་ཀྱང་། །གབ་པ་སྲིད་པའི་སྒྲོག་ཙ་ནི། །གསལ་བར་གཅོད་པའི་རིགས་པ་བྱིན། །གཞན་དག་སྟོང་ཞེས་བཀག་པར་དང་། །བརྟེན་ཞེས་སྒྲུབ་པ་ཉིད་གོ་བས། །ཐག་མཁན་སྟབས་བཞིན་ཕྱོགས་སུ་ལྷུང་། །ཁྱོད་ཀྱིས་བཟློག་སྟེ་བདེ་བར་བཞུགས། །རྒྱུ་རྐྱེན་ཡན་ལག་དུ་མ་ཞིག །ཚོགས་ནས་ཕར་ལ་འཇོག་དགོས་པ། །ཚུགས་ཐུབ་རང་དབང་གྲུབ་པའི་རྟགས། །དེས་ནི་རྟེན་འབྱུང་སྟོང་པར་བཤད། །རང་དབང་ངོ་

བོས་མ་དམིགས་ཀྱང་། །སྣ་ཚོགས་སྣང་བ་མི་འགག་པས། །རྐྱེན་ཚོགས་འཇའ་ཚོན་སྣང་ཙམ་དང་། །འདྲ་བར་སྟོང་པས་རྟེན་འབྱུང་གསུངས། །མ་ཚོགས་པ་ལ་གནས་མེད་ཅིང་། །བརྒྱ་སྟོང་ཚོགས་ལ་གཅིག་པ་མེད། །གཅིག་མེད་པ་ལ་དུ་མ་མེད། །གཅིག་དང་གཞན་མིན་ཅི་ཡང་མེད། །དངོས་པོ་རྫས་དང་ལྡོག་པ་ལས། །གཅིག་དང་ཐ་དད་རྣམ་འབྱེད་པ། །གཉིས་ལ་བློ་གཉིས་སྨྲ་བའི་ཚིག །རྗེ་བཞིན་བདེན་པར་ག་ལ་འགྱུར། །དེ་བཞིན་ལ་ལར་སྐྱེ་དང་ཡོད། །གཞན་འགར་འགག་དང་མེད་པ་སོགས། །རེས་འགའ་བ་ཀུན་རྫུན་པ་སྟེ། །བདེན་པ་གཅིག་ལས་འགྱུར་བ་མེད། །ཡོད་ན་རྟག་ཏུ་ཡོད་པ་ལ། །རྐྱེན་གྱིས་ཅི་བྱ་གཉིས་ཀ་མཉམ། །མེད་པར་བདེན་པ་འབྱུང་མི་སྲིད། །ཤི་བ་བོས་ཀྱང་མགྲོན་དུ་མིན། །རྒྱུ་ལ་རྒྱུ་ཡི་དངོས་གནས་ཆེ། །འབྲས་བུར་དེ་འཆར་སྨུག་བཞིན་ན། །སྟོང་ཕྱིར་སྟོང་ཙམ་དེར་འཆར་དེ། །མཁའ་ཉིད་སྣང་དང་མུན་པ་བཞིན། །ཐ་དད་ལྡོས་མེད་རྒྱུ་འབྲས་མིན། །ཡང་ན་ཀུན་ཀྱང་དེར་བརྗོད་རུང་། །ཐེར་ཟུག་རྒྱུ་ནི་འབྲས་བུའི་གེགས། །དེ་ཡིས་གྲོལ་བའི་སྐབས་ཀྱང་ཅི། །དབང་བསྒྱུར་བདེན་པ་བཙོས་མེད་པ། །བདེན་མིན་བཅིངས་ཀྱང་ཐབས་གཞན་ལྡན། གྲོལ་སོགས་རུང་ཞེས་བདེན་གཉིས་ཀྱི། །སྒྲུབ་པས་ཐར་འདོད་དབུགས་དབྱུང་མཛད། །ལྟ་ངན་ཀུན་གཙོ་འཇིག་ཚོགས་ལ། །ལྟ་བ་སྲིད་པའི་རྩ་བ་ནི། ལྟ་ཀུན་མཆོག་གྱུར་མཐའ་བྲལ་གྱི། །ལྟ་བས་བཅད་ཉིད་ཐར་པར་བཞེད། །དེ་ཕྱིར་བགྲོད་གཅིག་ཤེས་རབ་སྨད། །འོན་ཀྱང་ཐེག་ཆེན་ནམ་མཁའ་ལྟར། །བྱེད་པོ་ཐབས་ནི་དེ་བས་སྨད། །དེས་ན་ཟབ་རྒྱས་ཟུང་དུ་མཛད།།

སྟོང་ཡང་སྣང་ངོ་ཞེས་བྱ་འདིས། །བདེན་པའི་བྱ་བྱེད་རང་རོང་གི །འགལ་འདུའི་མི་བདེ་ཀུན་བསལ་བས། །སླན་ཀའི་གོ་སྐབས་ཡོངས་ལས་འདས། །ཡོད་མེད་མཐའ་བྲལ་དབུ་མའི་ལམ། །ཡོད་མེད་མཐའ་སྤངས་ཟུང་འཇུག་དོན། །གསལ་བར་ལུང་བསྟན་གསལ་བ་གཉིས། །རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་ཚད་མར་གནས། །མར་མེ་མཛད་ཀྱང་བྱོན་པའི་ཐུར། །ལུང་བསྟན་བརྙེས་པས་དཔག་དཀའ་ཡང་། །ཞལ་པ་ལྷ་བུར་བྱིན་རླབས་པ། །རྒྱལ་བའི་རྣམ་འཕྲུལ་བསམ་མི་ཁྱབ། །རུང་མིན་དོན་མིན་ཀུན་བསལ་ཏེ། །ཆོས་འདུལ་ལྷ་དང་འདུས་པའི་གནད། །གསལ་མཛད་སངས་རྒྱས་གཉིས་པ་དང་། །རྒྱལ་བ་གཉིས་པ་མཚན་དོན་གཅིག །དེ་དག་གཤེགས་བཞུགས་ནང་གནས་ཀྱང་། །འཕྱེ་བོ་བདག་ཅག་འགྲོད་ནུས་མིན། །རྗེས་སུ་འོ་དོད་འབོད་པ་བཞིན། །གདུང་བའི་དབྱངས་ཀྱིས་གསོལ་བ་འདེབས། །གུས་པས་གསོལ་བཏབ་དགེ་སྦྱིན་པས། །རྒྱ་ཆེན་ཐབས་ཀྱི་གཤོག་རླབས་ཅན། ཟབ་མོའི་དེ་ཉིད་རིག་པ་ཡིས། །དོན་གཉིས་མཁའ་ལ་བགྲོད་གྱུར་ཅིག །ཅེས་དཔལ་མགོན་ཀླུ་སྒྲུབ་ཞབས་ལ་བསྟོད་པ་དབུ་མའི་སྣང་བ་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་ཚུལ་འདིར་མོས་པའི་བློ་ཅན་ཏལ་ཏ་རབ་འབྱམས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་བསྐུལ་ངོར་༧བཙུན་པ་དཀོན་མཆོག་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མེས་སྦྱར་བའི་ཡི་གེ་པ་ནི་སྔགས་རམ་པ་དཀོན་མཆོག་ཀུན་དགའོ།། །།

༄ གང་གིས་རབ་རྒྱས་སྙེ་བཞིའི་ལུང་དང་ཤིན་ཏུ་མདོར་བསྡུས་ཀཱ་རི་**ཀཱ**

ཀ་མ་ལ་ལྟར་དག་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ལྷུར་བླང་ཆོས་གོས་གུར་གུམ་**ཁ**།

ཁ་དོག་མཛེས་པས་ཀུན་ནས་ཀླུབས་པའི་སྐུ་ནི་བཏྟུ་ཧཱི་བ་**ག**།

ག་ནས་བལྟས་ཀྱང་བརྗིད་པ་ཇི་བཞིན་འགྲོ་མང་དབུས་ན་ཉམ་མི་**ང**།

ང་ཡི་གཙུག་གི་རྒྱན་གྱུར་བླ་མ་མཆོག་དེས་འགྲོ་ལ་དགེ་ལེགས་སྩོལ།

(རྗེའི་གསུང་བྱ་དཀའི་སྙན་ངག་ངོ་མཚར་ཅན། པོད། 'ཁ' ༡༨)

ངོ་མཚར་ཟད་མི་ཤེས་པ་ལུང་རྟོགས་ཀྱི།
ཡོན་ཏན་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་གཏིང་དང་མཐའ།
རྒྱལ་ཀུན་མཁྱེན་པའི་དཔལ་དང་ནམ་མཁའི་ཁྱོན།
ལྷན་ཅིག་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་བརྗོད་ལས་འདས།

དྲང་ངེས་རི་ཀླུང་བཀོད་པ་མཐའ་ཡས་ཀྱང་།
རྟོན་པ་རྣམ་བཞིའི་མཁའ་ལ་ལྡིང་བ་ཡི།
རྣམ་དཔྱོད་གྲིབ་མ་མཐུན་པར་འཇུག་པ་ནི།
འགལ་བའི་གཙོང་རོང་བརྒྱ་ཡིས་དགག་ཏུ་མེད།

(རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་འཇམ་མགོན་རྒྱལ་བའི་བསྟོད་པ། པོད། 'ཇ' ༥༠༣,༥༠༨)

(क) पञ्चमं परिशिष्टम्

श्लोकार्धानुक्रमणी

१. लोकातीतस्तवः

२. निरौपम्यस्तवः

३. अचिन्त्यस्तवः

४. परमार्थस्तव:

लक्ष्मीधरः कांचनपर्वताभस्त्रिलोकनाथस्त्रिमलप्रहीणः ।
बुद्धो विबुद्धाम्बुजपत्रनेत्रस्तन्मंगलं भवतु शान्तिकरं तवाद्य ।।

ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་མངའ་བ་གསེར་གྱི་རི་བོ་འདྲ། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་གྱི་མགོན་པོ་དྲི་མ་གསུམ་སྤངས་པ། །
སངས་རྒྱས་པདྨ་འདབ་མ་རྒྱས་འདྲའི་སྤྱན་མངའ་བ། །
དེ་ནི་དེ་རིང་ཁྱོད་ལ་ཞི་བྱེད་བཀྲིས་ཤོག །

तेनोपदिष्टः प्रवरस्त्वकम्प्यः ख्यातस्त्रिलोके नरदेवपूज्यः ।
धर्मोत्तमः शान्तिकरः प्रजानां तन्मंगलं भवतु शान्तिकरं तवाद्य ।।

དེ་ཡིས་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་མཆོག་རབ་མི་གཡོ་བ། །
འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་གྲགས་ཤིང་ལྷ་དང་མིས་མཆོད་པ། །
ཆོས་ཀྱི་དམ་པ་སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་ཞི་བྱེད་པ། །
དེ་ནི་དེ་རིང་ཁྱོད་ལ་ཞི་བྱེད་བཀྲིས་ཤོག། །

सद्धर्मयुक्तः श्रुतिमंगलाढ्यः संघो नृदेवासुरदक्षिणीयः ।
श्रीह्रीनिवासः प्रवरो गणानां तन्मंगलं भवतु शान्तिकरं तवाद्य ।।

དགེ་འདུན་དམ་པའི་ཆོས་ལྡན་ཐོས་པའི་བཀྲིས་ཕྱུག །
མི་དང་ལྷ་དང་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་མཆོད་པའི་གནས། །
ཚོགས་ཀྱི་མཆོག་རབ་ངོ་ཚ་ཤེས་དང་དཔལ་གྱི་གཞི། །
དེ་ནི་དེ་རིང་ཁྱོད་ལ་ཞི་བྱེད་བཀྲ་ཤིས་ཤོག །

(क्रियासमुच्चय, पृ० १७१)
(བྱ་བ་བསྡུས་པ། རྒྱུད། ·བུ· ༡༧༢)

(ཁ) ཁ་སྐོང་ལྷན་ཐབས་ལྔ་པ།

(ख) पंचमं परिशिष्टम्

ཚིགས་བཅད་ཨང་རིམ་ཀ་ཕྲེང་ལྟར་བཀོད་པ།

श्लोकसूची (भोटपाठः)

(༡) འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པར་བསྟོད་པ། **लोकातीतस्तवः**

(३) དཔེ་མེད་པར་བསྟོད་པ། निरौपम्यस्तवः

(༢) བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པར་བསྟོད་པ། अचिन्त्यस्तवः

སརྦམངྒལམ།